पुस्तक प्राप्तिस्थान

१ भी विवय मेमि-विशान-कस्तुरस्ररि शानमदिर क्षेतुग-सूरत

२ भी जैन प्रकासन मंदिर

• चैन सेवासन शक्ष नकीय करो---शहसदाबाद-६

१ सरस्वती पुस्तक मंडार

तम्बोक वर्गनाय-भइसश्वाद-१ ४ भी संपंत्र केन पुस्तक मेडार

हे जेरीजीची चाल देवा माढे दीफारहीय,--शुंबई-र

५ मी सीमर्थन् सी. पाइ हे बोरन नितन गाने पामीसामा (सीवफ)

व्यक्तिकाल क्षणालाक काई, वी नंदरनात दि, तेल, चीकांश रोप व्यवस्थान,

भी बाचार्ये दिनग्रक्त ज्ञान मन्द्रार पदपूर

स्तीय आवृष्टि अंगे मकाञ्चकीय काईक

मा प्राप्तन विद्वान पारमान्त्रमाँ भीत्री भाषाति प्रयो करतान्त्र मान असमें सकतो है है कादर्र एक सुद्धारण है. आ प्रंप प्राप्टतभाषाता

नम्बाती मार्ट एक आधिवाद 🛊 ते का पुलाको कनकोकतार कोई वब विकासी कारण्युं नहीं, प्राष्ट्रयमाधामा मान्यास गाउँ गीजी एव स्पेत प्रिक्तममी प्रसिद्ध को छे एन वे सर्वगां का स्वॉक्टर है. या सर्वोत्तम रेगो विशिष्टराको गाँचै प्रारूपे के एक रो कामो श्रीनिष्टदेगनंद्र प्रकालकानम क्षत्रकावाचा प्राप्तत विभागती क्षतमय धर्व विषय ग्रेकी बीवो के. बीहा एक कड़ी एक काम्स्वना एवी के के--केनी जिलाला मञ्चल करनारने बार्स्ट करें. जीज बारबो संबंधरे शेवना विवास वाकाला क्लामके प्राचीन नाहित्यमंत्री राश्वीने योज्या के बातनीता पण बीनमर्गा निर्मक दोन अपै संस्कारोनी पूरतथी बाज ए माटे चाछ सम्ब राजनामां बाल्युं हे. केटबाक केवाचे बाला पाटप-प्रसाकीमां बातवो

प्रकारका प्रको संगे बचाराम्य उत्तरीनै न्युकडीने एक परिश्वित सबसास भारते के के मानुसा बनो बादे काई मानेदर्शन बारे हैस के ना इराजने जनम भी सम्बंधर बाहेरे शतभन हों. बीक क्या मी हिरासास ८ कावडीजा बाहेरे की पं साम्रसंद

हारा पीरान्य अंका विवासे रह करे छ बैक्स पव इच्छापैव नवीं एवं बामां कररामां मान्यं नदी जोतं पालक एक्कीय अने प्राप्ता छापक-माना न्यालामां व्याला हे ने नुसारि गारे वाल वाहना छ. पीचई पारमाज्ञान्य अंते धान्याची केटकाक सुनिवरी छवा विदार्वीमा शारा

म गांधीय सम्बर्ग है. वे की को देखा सामग्री क्षेत्रे

क्षेत्रजं पूज्य भावाय श्रीवित्रपश्चरतुरस्रिती महाराजनी रक्तर से सम्मर्ट गानश जोईए हे ऋता सर्व कोई के मा प्रसादनी बाब के तराज निक्रम स्थानहार्य के. प्रेमचार नियान-प्राचीत साथे किया-स्पान कावार्त क्ष ए काना परिवासने अस्त्रक सह कोने विचित्र क क्रमे देशका सर्वकर्ता क्रक्रिक में क्राईए

म्य प्रेममा प्रचालकार्ग करवारी काविक सरकेकी पेम्पास्त्रकी चंद्रोदयविश्वयत्री सक्रिय वपश्च आपी क्रमेक अभिकान अस न्याची

शारी क स माने असे सकत पन भागी और पु भुनिमक्षारात्र श्रीत्रथचेत्रवित्रपत्ती मः उत्त पु भुनि मदाराज भी मदाप्रचेत्रविजयत्री सदाराजे वृष्ट्रेंचोपना करें स्थान सारी के ए मारे अभे एमनो सामार सामीए कीए केवड अभे बाना ब्यानार सामीक्षे का पुरुषका अन्याप करवाराओनो के बैसना उपयोग राज भारत तुरुर पुरुषकोता एत स्वार रोकर्ड आव. क्रेस राजी निवेत बच्चोय करे देन अमारी बस्तव क्य काली रहे. एउटे विराधाओं रा क्रांत्रने मारणारे दरली मामा नाचे निर्मीए धीन केन.

ri)

समर्पणम्

मा प्राप्त विक्रम प्रस्मास

परमञ्ज्ञ नमस्त्र नारमञ्जातिष मानार्वदेश धीमध् निजन विज्ञानस्रीध्वरकी महाराज माहेत तथा शम्मरूच मिद्रालक्ष्योदिक प्राप्तन विश्वास्त्र स्वकार्वदेश भीमद् विश्वक कस्तुरस्रीऋती महाराज स्थोपनी परम करक मिथामां रजी पुरुवधीना राजवरीया आराजक वाय-पुरान दृढ विध्यांपरमांची पूज्य वंन्यासभी खंद्रोक्यभित्रयत्री समि ए सुनिशी रिक्टि चंद्रविजयजी म पू. मुन्धिं सहीक्तर्यद्वयिजयजी स. पू. तुनिधी अञ्चयस्त्रेविश्वयत्ती न. पू. मृन्धिमी अञ्चयसङ्ग विजयक्ती स. पू. तुम्की प्रवोषचंत्रविजयकी स. पू. सुनिकी सक्रित्रचंद्रविवयजी म. ए. मु^{ल्रि}भी देवचंद्रविक्रयजी म. पु. सुनिभी नयर्थाङ्गविजयज्ञी म. माहेशनिए क्रोह बरलीका केवी महत्त्रमध्यांची निर्मित मारावनाची पूर्व निर्मिते रलंबयी सामक प्रत्युवामिनंत्मरचीव पूज्य धमन-भगाणी समर्व राने तथा प्राहरमध्यामा भश्यातीमाने संस्टर सर्वात ।

লী০ সমাদ্র

पूर्व प्रकाशित वे मुख्य प्रन्थ

१ समियात किन्द्रायणि शासकोष

athra dur the da

या बारता प्राय पत्र पूर्व प्रकारणे कार्य कार्य स्टेडिये मॉनकाम प्रायम, कम मिनोक-नंतरप्रतीत्त्र कार्यमानी देशव विदेश क्युक्याचित्र विदेश सामग्रीहृत्य का प्रकारत कार्यमानीचे कार्य वेदुं क

६ पास्य विम्लासकता

का क्या-बंदीए प्राप्तक प्राप्तक क्षान्य के त्रक श्रीम को कात राजस्थानी जाता देखा देखी क्षेत्र क्षा को देश देशी तेलदेशों के प्राप्त क्षात्र कात कर वहलेकाची स्था भारत तित को का वर्ष

रे इसह करिये

बेचर्र सरेण एक क्ष्मुचन इस्ते हिंदूको सर्वेद स्टेन वा वे क्ष्मेंन रिप्तु अनकार काले उनेत्री हाती स्वयंत्र के बीक वंश्य पर्द बांध स्वयंत्री क्ष्मेंच काल बेदी स जेते [कि.स.ण] स्वयंत्र अपने

पारीय बरेना स्वीकान पु सन्तर्गरंड वीदिस्कानपूर्णकर्षे यः सनीर स

श्री विविध पूजासमह

माग १ यी १० व भी गोरमिजनमा स्मी सन्तर्मा क्ष्मिमी वेरक्ट्या व

न्पवित्रवारी तथा भी क्षमानाभगोइतः स्नात्रपुणाओः इत्रवियनस्रिकत करा. पंडित की बीर्शितयजी कृत वंबक्रवनकर्ना पूरा का प्रचारी नगार्नुप्रकारी बाग्यरुची पीर्तामीच बाद्याची बाद्यप्रकारी पुत्रा, पंजित कपश्चित्रयजी कृत वेबच्यानको पूत्रा वेबग्रानवी र्वापरकारक तरकी चीरताबीत कालानी की देवचित्रपत्री कुल नक्षमधे पूरा भी विजयसदमीसूची स्रुत संस्थानको पूर्व भी शक्कां बाजी उपाच्याय कत रच्योकारा है पूर्व कारमेरी पूरा जो मैक्स्प्रमुमिक्क्य स्त्यामेपी पूरा व क्यी यशोबिक्सपत्री इस नक्तर पूर्व में भी पद्मविजयत्री इस्त कालर पूरा करे न्तालं अभियेकमी पृशा भीकर्मकंत्रजो इन नंदीभाग्रीसनी पृशा भी रीयनिजनजी इस भद्रापरजीनी पूजा भी बामाएमाजी इस शक्तमेरी पुत्रा भी नुदिवासमध्री इत शास्त्रकपुत्रा राजा वाहेक्नी पुत्रा भी मानेनविद्युधे क्षत रहानीर पंत्रकलालक पूरा भी शास्त्रक तृता त्या भी स्लामसरिती क्या चारित्र वंचतीर्थ पामेति वजाओ गदित तंतर भागवती बेरेन गारे की स एक्क

> कलोः-दैन मकाश्चम महिर १९/४ रोजनावनै रेक्ट समहाबाद

ननार्ध जुत्र प्रकादनी ९ दिदिया प्रशासन्तर मा १ मी ६ जन्म प्राचीम प्रे बार्च निर्देशन प्रश्लोगी नाम प विकिथ पृश्च सम्बद्ध मा ९ वी) विकिय पूक्त सल्द भा १ औं १९ किन स्वाच्याच स्टांबर्सर नाम केन भारताबादावा (भाषा) ६ क्यारमान्या (क्यामा गरित) पंच्यानिकारा विशेष प्रदेश -14 वै प्रशिक्षान विकि महिन किन्द्ररहेंव बीचीर्ग (व्यक्तिपुर्वा) वदस्तान (तन्त्रित्र) ५ क्रकाय (पोरंड) ***** सामाजिक स्व (विन्दी अस्पाध) ६ स्टान्यनिक सम्र (र्श्वनम्) a interest R uftarer fefe nite - पत्र अधिकारण विश्वि सकिन s विशिष्य प्रश्ना कंद्रका था. ५ थी। विदिव पूछ सम्बद्ध का ५ की ५ रंच प्रतिकाम श्र हे सिवाय बैनधर्मना समाम प्रकारना पुरसक्ते, प्रदी चर्गर मध्या वश् माडे स्विपन मेगालो मदर्गतमाम गिर्मरहाक शह केन सम्राटन संविद्, ३ ५/४ वोषीवाचान भेड, समवाबाद-१

FOREWORD

It is a matter of great pleasure to me towrite a foreword to this book of Vigaya Kastura Sunji highly esteemed for his crudition and sandly character. This is the Second edition, and as such it is a great improvement on the First, regarding both the Gujarati language and matter.

(This book mainly deals with Marahatthi (This book mainly deals with Addhamagahi (Tammit) Preculanties, which a student is ordinarily expected to know The learned untroduction of Pt L B Gandhi who has rightly emphasized the necessity of studying Prakrit and shown the great importance of its study enhances the value of this book The two glossaries along with aphorisms from Siddha Homachandra (VIII) and their explanation make this book worth recommending to High School students.

I congratulate the learned author for the splendid service he has done and request him to prepar. a similar book for the study of "Apabbrams a" (strake) of which the Gujarati language is one of the well-known daughters

M T B College Surat.

1st. September 1948

Hiralal R. Kapadia
M. A.

Professor of Ardia
macadhi

Foreword

(First Edition)

It gives me much pleasure to recommend this handy volume of Prakrita Vijmanapathamala, so ably prepared by Acharya Shri Kasturvijayaji. It is a matter highly creditable to the Acharya Shri to have known the needs and tastes of the present-day students of Ardhamagadhi, a udying in secondary schoolsas well as in Arts Colleges. Acharya Shri (Kasturvijayaji, is a leened saint, engoing the privilege of being the pupil of Acharya Vijaya Vijnansuri one of the chief disciples of the wellknown great Jan Acharya Vijaya Nemisuriswarji and his deep knowledge and scholarship of the Agams and Prakrit Literature are well reflected in the present book.

The study of the present volume is expected to give a double advantage. Not only it introduces the student to the field of Ardha-magadhi Literature, but it makes him also familiar with the benutiful passages of the Agama Literature. I have seen about a dozon elementary books of this type, but I am grad to note that the present book sur

passes all these books in as much as it presents techniques of grammar in a very lucid

and clear manner. The passages at the end styled Paragairaparramala are choice passages

arranged in the order of chronology and they are intended to create a genuine taste for Prakrit n the minds of the students. The undersigned desires that the student

world would take with pleasure to the study of the present volume and give encouragement to the author in making further attempts in this direction for the advancement of Ardha-magadhi study

K. V Abhyankar

Gujarat College
March, 1943 Professor of Sanskrit and Ardha magadhi.

मस्तादना

प्रस्तुत अञ्चल निहान-पाटमाचारी प्रश्नाविक वर्षी को नीचीं कारतिका प्रदेश भारे क्षत्र क्यावुं-के प्रेरवावी कार्दि चीडें क्यारा प्रकृत वर्षो हुं

शास्त्रभारणं विश्वन बात्यारी वा प्रधानामी एका स्थानमा प्रभिक्ष कार्यकं भ्रीविकायनिम्माद्दिल्यान् विश्वन प्रमानं भ्रीविकायनिम्माद्दिल्यान् विश्वन प्रमानं भ्रीविकायनिम्माद्दिल्यानं प्रमानं भ्रीविकायनिकारम् दिल्यानं प्रधिकारम् एक्स प्रधानक्ष्म क्ष्म व्यवस्थानं प्रभावनं प्रधानक्षम क्ष्म व्यवस्थानं प्रभावनं प्रधानक्षम क्ष्म व्यवस्थानं प्रधानक्षम क्ष्म व्यवस्थानं प्रधानक्षम क्ष्म व्यवस्थानं क्ष्म व्यवस्थानं क्ष्म व्यवस्थानं क्ष्म व्यवस्थानं क्ष्म विश्वन व्यवस्थानं क्ष्म विश्वन प्रधानक्षम क्ष्म विश्वन व्यवस्थानं क्ष्म विश्वन व्यवस्थानं क्ष्म विश्वन व्यवस्थानं क्ष्म विश्वन व्यवस्थानं विश्वन व्यवस्थानं क्ष्म विश्वन व्यवस्थानं क्ष्म विश्वन व्यवस्थानं विश्वन व्यवस्थानं क्ष्म विश्वन व्यवस्थानं विश्वन विश

व्य पारच पुलिक्ष कंत्रत केरायड कार्यमी कुपल्य-कप्पान वर्ष पर्म होंगे असे त माने पारची तपत्रमी मानती बाह्य होंगे मेंनी एक्सारी केरायित करहरूपार क्या तथी का पीती बार्याची पत्री प्रमाण-वर्षात पार्ची प्रमाणनी कार्य के राज्य वर्षना कंदर कार्यों त्ये गानी पुरुपत्रिती वर्ष-मी का पारच कुलक्ष्मी किनायी करावित वर्ष हैं।

पुर्माध्य आचाय श्रीहेमचीट सियहेमचेत्र धम्मनुसासमा बारमा अध्यादमी शैक्तदमाया द्वारा प्राकृत स्वाक्तन्तुं है विक्रम नाम् के तंत्र सुक्त आयारे, बालुनिक वैकीवी बाली तंत्रका करवामी ब्यानी हो, संस्कृत माश्चम्यं पुंकितः, ब्रीस्टियः बपुंतनाकितमां नपरान्य स्तरान ण्यक्रतान्त सर्वयम्-यम क्षत्रे संस्थानाची स्वयो-नामोर्ग स्वी स्वी मानकोमी वर्तमान भन अने भविषकाळनां क्यो प्राप्तमायामां केवा फेरफारी तापे बराव के हैं देनों संबि तमास कारक क्रवस्त, दक्षिण प्रस्वका अनवदा नगरेजी स्वतःचा केश प्रकारनी होय हो है समजावना आर्मा निवेचपूर्वक १५ पाटोशी बहुँचामी करवार्ता आवी हे. प्राहरा-व्यापणि-भियमो सामै प्राइत-गुत्रारती समे गुत्राराधी-प्राहत सन्दर्शनेस देवा बारको प्राचीन-सर्वाचीक प्राप्तन साक्षितका पाटप यप-प्रचया बोबक रसिङ बदनामां एवं कार्या कारामाँ कारण छ माची मानुसारा-मूजारी देश शहर मार्च दिश्त मेठारा इच्छा मन्तारी दिवाली -विक्रविनीओने साथ-साध्यीयाने मन सन्य पाउच्येने पत्र मा शास्त्राचा मार्गहर्षिका दिया गार्वोपक्षीका अनी उपनेती यह हती मने नमें रेमक प्राप्तन सारिकार्य प्रवेशिका स्टाविका विशेषका बसे एम पाइ से

कानोंके बाराविकाय कारणा सारे वन आक्रमानाते कार करती के

वानेपरेश क्ये हुती केना परिपूर्ण वाली महापुरनीएं वर्ध-रेशनामां शाकन करीके पसंद करेकी-वानरेकी ए माना हुई एका करे एक ब्रामी क्षेत्र कामी कर्म तोकों पर पहल जनकर ए माना इस्प कर्मे हुतो देगरा कार्यव्यक्ताती हुत्य सेक्टोन समीर तरकाममान कर्म-मानते ब्रोमी हुन्दे देगरी स्तरीयी द्वित्य सेक्टोने समीर तरकाममान कर्म-मानते ब्रोमी हुन्दे देगरी स्तरीयी द्वित्य सेक्टोने समीर तरकाममान कर्मावास्त्रक एक्ट्रपेश्यम बात्रमास्त्रक से सूत्र-दिखोतनी-वाममानात्रकों द्वार एक्ट्रप क्ष्मी ते ते कर समय हुएए क्ष्मी के क्ष्मी क्षमाना कर्मावास्त्रका हुन्दे स्तरीय करायिकार क्ष्मी क्षमाना क्ष्मी क्ष्मी क्षमाना क्ष्मी क्षमाना क्षमाना क्षमाना क्षमाना हुएए क्ष्मी के मानावी विशेष मान्य क्ष्मी हुन्दा क्षमाना क्षमाना हुएए क्ष्मी के मानावी विशेषता-मान्य क्ष्मी क्षमाना क्षमान क्षमाना क्षमाना क्षमाना क्षमान

सहनुष्योच सुक्षोमात्री श्रीकरोजी समृत सार्ट्य सात सुष्यकाने स्वितान्त स्वार्य सात सुष्यकाने स्वितान्त स्वार्यक्ष सम्बद्ध होगात्री स्वतान्त स्वार्यक स्वर्यक स्वार्यक स्वार्यक स्वर्यक स्वर्यक

अञ्चल-चित्रल-चारमाकामी बहेची अरापितां आर्थयिकां प्रण्य वर्षे बजेल होनावी कवि पुल्ययिको कोला रोटी वर्षीः

बाध्य देखन-माग्रस्ता क्युद्धियो विद्युत्त्रोहे, किलाई परीरकार कामार संनोत्रे कारण छोता सथा माडे पोठाचा अमृत्य समय की शरिको बहुतकोर की विदित्र प्रधानी स्वता में भाषाओं की है रानारी चात्र केरी के महापुरशोजी वालीतुं, विराण हानवी मरेना मनूष्य करनारुप से पत्रजाते छत्त्व जीवना-आज्ये प्रदश्य करही बोह्यू, क्षेत्रां बाय अध्ये केश बोह्यू अने बीह्याओं के आहरा जोहयू. ए क्यारे वर्ध गांव है से मात्रे के भाषान्य विश्वनकी प्रथम सावत्त्रका है से साधानी रक्षावेच घठ अने पश्च प्रसिद्ध अने अप्रसिद्ध विभान बाहिल्ली पटम-चटन तथा प्रसादम-प्रचार है क्या है वही करी सकते. धीय माना-बाम बनावी करेंचा क्विंग तथर वर्ध सत्वींनी प्रवार शरकारी चक्रके. कार-केंद्र नर्म उक्रकालो कुकारच वसे जीव अजीव क्ष्म पता क्षेत्र क्रमें स्थान क्रापि तत्कोच्या सक्ता विकाशे प्रमानार्मा सरका को अहिए। संस्थ को हतेसक बर्वने आएई समग्री प्रथमें, सुरेर शुप्त को अपन्ते लक्ष्य समझके, सम्बद्धार्थन हान को चारित्रका सोक्य मार्क्त क्रम सेक्टी प्रकर्त, पर राज्य सिर्धिय को काको करेला इस इसको काछ करे छकाछ साम धीव, वस मास्त्र क्ष्म पर्मित तक्षमा को घरावा, बहु द्वारवी-धुप्तक्षको क्रम तुसारिका मोसी नीकि-रिन, तराइमी यन इतान्त्रेमध्ये क्यानस्य खेची कारी केरी रही । यन रोगी जोए । मिध्यून को सम्बद्धन हो हा बहरती औ मामने देश प्रकार होत है। व मोरे स्थानाय अनुसूच्या की रा-क्वाने संबंधि का म विका करने करने विका संविधान चित-स्तर कारि क्लेड प्रकारम् जान्यासम्ब वार्मिड शर्योयो मृबमादाना-सन्दारा तहव समग्री शक्तपे.

से शांदे दिनिव एदियाँ ग्रुम साराजनी स्रोवनोक काणरामाने प्रमानक पद्दिनी कामास काणरामाने का प्राटा शाहित्यांनी विविच प्रमानुं जावालां सीवान स्वात्रास्त्रां मध्ये शांदे देन के प्राव्यानामान करेशोमानी सने प्राचीन काम्ब करा-चरित्रामानी पत्र कर्ष शिक्ष मेळवी शक्त का के जूरा बुए वेशोना जुरा कुए कोप्रेस काण्या-विवास सम्प्रात्रा स्वात्रा विविच क्या-सीशको प्रावंशिक बुद्धि बाहुनी सनुपार सामानक बीजी सामग्रीत क्ष्यपुर-दिश्लानो अर्था कोशोज क्ष्यका

भारतर्यमा प्राचीन इतिहासनो छोनबोक मादे प्राइनमानाई नाहित व वा तर्वाचे ये गाँव रहे हैं एरें ये परेशा महाएसनं-देनेक्टो पर्कार्वीचे व रहता नाहुत्या में नीय समय राज-महारामी रामिंसी प्रत्यकृति तमा शीय प्रमानकारी एड़ा कार्य रेटे योहर-कर्णियोंनी गुड़े बुंड सम्मानुं मादे यहे रूप है कार्य रेटे रोहर के पश्च इदिहारी प्रामानीं यह सम्माने हैं। सन्या कर्ते विच वत्रम प्रकार इदिहारी प्रामानीं पर समया खेडु पहुं मादे करें राज के भेरी व रेटे विचार माराने उत्रयान करनी पत्नती प्रणीक धन्यति मात्री प्रतिकृति होने स्वत्य स्वत्यक्ति स्वत्यक्तियोंनी एव करें सम्माने प्रतिकृति प्रतिकृति होने स्वत्यक्तियों स्वत्य भी वा स्वत्यक्तियों स्वत्य भी स्वत्य से वाराने स्वत्यक्तियों स्वत्य से वाराने स्वत्यक्तियों स्वत्य से वाराने स्वत्यक्तियों स्वत्य से वाराने स्वत्यक्तियां स् देना प्रकारना होन के हैं से अंध्य स्वयंक्षणों एमयों रामान, सोक-राहित्व बोच-पूर्णन सोच-नार्व सोच-निवृति, सोच-नार्वाचे स्वरणीतिय सुमानित्ती वर्णकों समे सम्बान करता माहे बाहुण राहित्व से सुनित्त्व केत्र के

र्वस्तुन साहित्यत्रं रफ्टचं रक्ता बेदी साम्ब्र तुष्टा स्वाद एते जवार साहित्या बालरों, सरस वैंडीकी प्रतिपादन करेगी अमेक वेद्योग एका वार-कारीजीजो वर्षको गानक-वार्विकानो राज्य-महाराजानो को राजी-स्वाराजीकानो वर्तनो छात्य पहेरवेचो क्रांत्यर-माभूतयो भाषा तेवार स्टारिक स्थार्थ प्राचीन कवि-तप व. हैन्स-निवलोग्यं, निवित्र ऋतुयोगां सद्यानोगां सद्यसायपेशी सरिलाको लग्नेपरे पुरवस्त्री-नामबीको नदर जकायनोता कद-कोश-वद-निशारोगां वर्जनी, बरवर स्वरवा केवर आदिता स्वताचर श्रास्त्रता वर्तनी बहुरंगी रीनामा रक्तो सामस्यानामा सन् सामारा-पामना वर्षमो देवप्रासामा रामसमाजीनां वर्तनो जारण-देशकोचां वर्तनो पर्वतो बचायो करवीनो कारियां वर्कमी काएका विराज आकर्षण कर तेता एतिक क्रमे विश्वास क्रम क्रमे तेती है. एंडीराक्टर क्रमाब्दर सटपावत विज्ञास्त क्रिमा क्या साजवास बकाबास शामिक विभिन्नान स्वतीया ज्योतिक केवन वनरे विकास प्राथमिक जानग बोस्य उन्हें को एन सम्बेचन करमाने कार्यानी गडी कार्य होत हा सार्थी बाचे क्रमार्थीया बाउस्ती बावे हुनेनोग विष्या वाचे इस्तोग विस्ता समावनो असे सत्पर्दन्तो बावे हुप्योगी फर्मध्योगी परिचन एक ए सारित्यना परिस्थानकी बान से निवेदनी करना धरपने त्यान करना मात्रे बानवा बीरको बानना मात्रे महत्र फरवा कीम्बी महत्र कामा सात्रे त्राकृत सत्त्रामन से शादितन-क्षेत्र के सम्बद्ध कर होत्.

ए सरामा प्रवस प्रवेश करणार करणाधीमानै प्रमुख-विद्वान गृहमान्द्रायी का पुरित्वस स्तेनेत्र प्रकोष दशकोषी वक्षा संस्त हो आता हे के प्रया-पारत्यका का वर्षमान बुग्नी प्रधानी का प्रयोक सरावा प्रज-पारत्यादि माटे धर्वज सुवास्त्र प्रवंत का प्राप्त धादित्यों कान्द्रप्रस्त रितास सनुमवदा सन्त्रमंत्रों मानवास्त्री वाच एवी हामेखा सामें विर्ता हं.

बडोदरा प सामर्थेद्र सगवान गांधी है र ४ चार्ची विशेष्ण स्थलिकामित्रण पूर्वमा केर्योद्ध स्थल बुलिसीन सर्वमान्त्रीय गांद्रमेलुकेट सन्दारक]



। ⊅ व्हंबन । मार्शनिक

या जाहन विज्ञ शध्यक्ष " हरूयन वर्ष प्रदेशमा अवस्था सम्मानाजीकी पूर्व जिल्ला वर्षाचे के जाहन एउटे हुं ! को कार्यण्य हेन्स्य केटमे दिखों ! हमस्यमा कार्य केत्रे वर्ष ! को क्या देशमें विकि प्राच हम्बरिक या सम्मान विदेश हमें अमेर्याप्त से वेट सम्माने या ए.

लाने व केपाप.

माहत परछे ही ।
मानिय में को बच्च तोन ते हमें प्राप्त बहेता है मानिय करेता है।
प्रमुखे की ती लिएन वर्ष हमा हम, बच्चे मामाना के के आपनी
हमें की लिएन वर्ष हमा हम, बच्चे मामाना हमें ति हमील करेय
बहुँच्या हमने पाये, वर्गत महीतिस्य में माणा ते माहत
हमें पाये हम ते की हमें हो ये वनान्त्र कमी हो माहत
हमें पाये से मानि हो हो थे वनान्त्र कमी हो मानियां
स्मानिय स्वाप्त करें तीई हमी है।

प्रमुक्तिने महारा वर्ष पेके प्रताम थे.

हरिया प्रार्थमानो व्याप्तमारी संसद की परियो व्याप्त के स्वत्यात्मार है स्वर्थमा के स्वत्यात्मार है स्वर्थमा के स्वत्यात्मार है स्वर्थमा के स्वत्यात्मार है स्वर्थमा के स्वर्या के स्वर्या के स्वर्थमा के स्वर्थमा के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्थमा के स्वर्य के स्वर्य

मा अक्टरपे मुख्यीयो, मोद देवे विद्वारो वर्ष क्या है. क्यां

वर्ष्युंच कर्षने देशों स्ट्रस्य रहे छ. क्यारे कोइ कोइ एनड अङ्ग्रिकोः को बेह्यर करेन छ क्यां पन वर्ष्युंच कर्षने ए सपन नवी कारक है ए स्थ्रस्य संस्कृत परची प्रकृत धिणवनस्य होनावी एनो कर्ब केनानो छ सर्वान-चेहारुओं अनुक क्युच्च प्रकारों वेस्त्यर करायों सेटके के परकर केंची केनानी प्राहम प्रकार कोई क्यान छ

माहरतनी स्पुरपश्चिमो—चर्नि स्टटस्ट (वर्ष) कस्थानकर उपर वीनमिश्रपृष्टिचत स्टिपन (२९४–१९२) मो प्राहटती वे त्रशरे भुरपठि करेत्र के श्वथा क्यां त क्यों—

'सहस्रक्षाग्यकान्तुनां स्थाकरणाविभित्साह (हि)ल संस्कारः सहस्रो वस्त्रक्षणायारः महतिनः तम सन्त स्वित सा माहतत्। स्थान्त कोरीती संस्थान नहि गर्नेसे कालम नष्टः अन्द्रमता के स्थानिक वस्त्रक्षणार त यहि वहेशव सन काला प्रवासी क्रांटित होव त प्राप्त वहेशव स्थान हो त रोते क प्राप्त वहत्या स्था प्राप्त से के प्रचारी प्रवासी वह वीर्य स्थानान 'स्वारितस्यणा सिस्त देवाणं सद्धमागाहः सामी-स्थादिकक्षणाहः प्राप्त पृष्ठ स्वार वस्त्रमं स्थानका विद्य स्थानी स्थानानी साम होव ह वयर वस्त्रमं स्थान क्ष्मणा स्थानिक स्थाने हरू होव त प्राप्तन स्थान क्षम स्थान 'प्राप्त-स्थान स्थाने वहतं होव त प्राप्तन स्थान क्षम स्थान 'प्राप्त-स्थान स्थाने वहतं होव त प्राप्तन स्थान काला स्थान स्थान

प्राकुलनी सन्य क्षेत्री पत्र प्याप्य तिका सके के क---

'महत्या स्वमावेन सिद्धं माहत्वम् अथया महतीनां सामारणजनानामित्रं माहतम्" अथ न्यर्रिशो समास्यो हिद्धं थे होत्र त मान पहेला च अयग महति क्षेत्रे साथास्य जन न्यंदर्श ये मा (म्या) माहत्व प्रशास छ

प्राकृत साहित्यमी बहुलता

प्राष्ट्रतमां क्रिनागम-क्रियेना गण्यत्वित्र क्राम्योगः (क्रिशं क

मुभ्व दिश्विषं काष्टिय-उक्कास्त्रियंगसियेत । बी-वास्त्रवायक्त्यं, पाइयमुद्दं तिववर्षोई ॥१८ '

सारार्थ —कोशांचे धम शुरुष्ठक, छहेनाईवी बावनको तात सिक्ती छडे देवा देवची इधिकार छिपाकर-व्यक्तिक उत्तर्याकक सब-स्य छिद्देरनै विमेक्सेण प्रस्कानी कहेतो हे वद्दि —

सदमागद्दार मासाय भासति मरिद्वा " [मीवपतिकस्त्व-५६७३] सत्य मासद्द बरिद्दा सुसं धर्मति गणद्दरा निवय" [मादस्यकस्त्व ए ६८]

पोराजमञ्जापाई-मासाजिपपं दवह सुतं ? स्थिति जामनच्यो देशवी जिल्हेची अर्थकाती आपमा बाल्यक रहे हैं जामनच्या देना पूर्व हुँ छाने एक राई प्राप्तक कालित जा रहे हैं. च्या के सामग्रीमायों मार्च मान्यक प्रमान वार्त है अर्थे— क्रिक्टकार्यन यो देशवाही साहाजन दक्तो—

मत पत्सी पुसि मागव्याम् (८. ४ २८७)-

पद्भि पोरामण्ड मागड-आसा-विवर्ध इवर् सुर्च इत्यादिवार्षस्य सर्वेमागसमायाविष्ठत्वमानास्य वृद्धेक्तव्यि प्रायोऽस्यैव विधावान्त वहसमायक्रमायस्य ॥

उन्मूंच रफ्नोची एरण वाल के के-जनस्तानी ए व्यक्तिकात के स्वर देखें क्तीजासिद्धार्पम् एखें के-जभ्यत्वे बंदेवी-नावर कोरे मध्युको एकंडी के मा (बचनो) है कर्त ब्लेशन के

प्राष्ट्रतमां विवेचन साहित्य प्रयो—क्रियम उस्सी

निर्मृष्टि भाष्य अने चूर्नि बगेरे विवेचकन्य ग्रंबो एव मानुसमायामां रचावया के कर कियासम्बद्ध विक्रकार प्रकोशी भागस्थान के केटमें ज नर्दि किंद्र सायकांत्र बेटलं महत्त्व ठने सरायक 🕏 प्राकृतमां विधिय जैन वर्षो-४ रेस विशेष प्रवेषे प्राप्त-

संतर्भ सनोश्चं स्वात मेटम्बुं छ. जेश च-ग्रहरका चुरुका क्यानको ना परिप्रमेंको प्र**धीर्वको-तुरा तुरा नि**यबना संस्कृत्य धेवी. **बद्यक**

पण्योगनिभित्त - बान्दिय बगरे. जन वर्गातनी क्षुत्रपर्वरवसकी द्वारामाना बीजक्रवय ज बन वक्तो भीतीर्वक्रमस्ताने कविषयन यत्रपर समयन्तान समन्यः इता सने केनाकी गुजनत क्ष्मकराजे द्वादर्शांगीनी रचना करी हुती अनं से 'क्रियुद्धि' नामको जन्ममः अधेकदान छ छनी महारा पर्ग प्रतानन ज पर्शद करकाम नानी क कुमा मार्थात विपर्ध उपप्रक्रीह या विगमक

वपारं हु व्यक्तित्र, प्राष्ट्रयः मात्रामां क्या धने व्यक्तन अटहा वचा प्रेमी क प-क्रमी सूचि मारमा सब्जे तो तुने एक शार्टन विस्तृत पुरुष करी जान इस्तं प्रकारमा आहो कमात भाने है स्वस्ता स्टबॉड शासी भएकामां कारे छे जनां ४---

न्यानिस्थरिकः (भी शुक्तकेष्ठकिकः पर धंबयमात्र-१३ पदम्बरिकः (बी क्रिक्स्वित समराहरणकहा, (झा इरिमप्रमृरिक्त

सरसंदरीयरिय (धी प्रनेपरवापुरुष सुपातनाह्यभित् (अस्पानविष्ट्रान कुमारपाच्यतिकोय (भी स्रोमप्रमानार्केटत यस्य प्रमानः

मा जन्मन भी संवरासम्बद्धाः प्रयास विस्तानीय 'स्मुदेसहिंडी' क्रमारपावकरित विरिक्तिरिकालक्या शरकावि उपकरम् सानेक वेत प्राचन

वा प्रदेश वा"

मेरो प्रास्त्रमायानी सक्ता प्रदर्शित करी साम हे. तैतेतर काम्पर्ययोगी मास्त्<u>यं स्थान-स्थितस्थ</u> हक-स्थानकारणे प्राप्तिकार-तेतुर्वत (त्यानको) वानपरिशानक-वासको का स्वाद्यक्ति त्यानेकार-व्याप्तिप्रतिकार कार्यवर्वनका -वित्याकार्वता, स्वयानद्वाराज केर्याप्तिकार कार्ये केरा विवासित

मास्त्रमायामा स्याक्तस्य प्रयो-

बाजेन र्थ रहा छ । साम् छन् वस पाणिकिका-सार्वकालन शरकविकारी आईश्व-प्रकास विकित्यसम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः दर्गने धरून-यारक वास्थ्य धीदेगच्यम्मित-प्राप्तवस्यापरः स्वक्षेत्रकृत-प्राह्मकर्मान (मा स्थाररा गर्डरमा निद् क्याचेशस्त्रका-संख्यासस्य ⊈7°-राज अवस्थितको विश्वविक्री कविकासकात सीरमणनासारि स्वतः संघ निकास धस्यै वरक्त-गरुभारतपन्त्रिय क्रम्बुक्तमात्र ब्यापा स्थाप-रक्ता बाइमा शत्वाच तरोचे नाबन के जन्म प्राप्त मा द ए अपनुतिक शब्द के

नगरे अनेक देन रामक अञ्चेत कार्यमक ग्रेमा प्राट्टमायालू विकास नेकाला साथे भारता है

माहराकायो — नात महान वर्ण क्यानस्त्रीत वैत्रकी ह्यानस्त्रात्व समार्थक स्थानके करणांक्तिक पांत्रस्थककी माससाक्षा कर्ण स्त्रीतरणा अभित्र हेण्यानस्त्रीत हेशी माससाक्षा नगरे साहराज्योंने पुरस्त्रेव स्वरणा अभितानको एव सहित्त करने के

पणिनिक्त 'काराक्त्वन' वस ग्रुपी व्यापने राज्यक् वर्षु स्त्री कर्य पण भी सन्दर्शकी स्त्राहात व्यक्तित्वस्त्री स्वराज क्या नेपानक वर्णमा राज्येको द्वारा, ठेर्ड एक स्थवन्तुं व्यक्तित स्वास क्रे.

प्राप्ततार्वहोत्ता प्रेपो--पदास्त्रतत्र वेदिवादय वर्भगृहंद ग्राप्तमाक विरोक्तविष्ठ-(शत्रत्व) ग्राप्तिक्य-(अ वहस्यू वित्त ग्राप्तमुक्यव एवा नामची व्यवस्थाव छ ठवा भी हेमवरस्थार्वहत्त ग्रेपोनुस्थासन नवेदे

अपर क्यारेका दिगर्राल उपरबी समझी शक्ताबे के माहरा-सारित्वर्गी केटरी क्यारा से

माइतमाची अन्यमापाओना जन्म या इतरमापारुपे माइतन् परिवासन

केम एकन कार्यु कर स्वानमेशकी विश्विमीनार्धु को छ हम एकत प्रकृतनका स्वानमेनकी स्वतिक्रियानार्धु को छ हम एकत प्रकृतनका स्वानमेनकी सनक तंत्रका साथि विश्व सारामन्त्र पाने क. सुन्नी की सीमा सूनी क्यान-

मेधनिर्मुक्तप्रधानिवेशस्यक्य तदेय य देशस्यितात् संस्कारकरणा बससामामितिविधेतं सत् संस्नात्युक्तपिमहा माजीति। अत त्य शास्त्रता माश्त्रमादी निर्मित्स तद्यु संस्कृतादिनि। विभिन्नादित्याकरमादित्याकरस्यक्रतं संस्कर मात् संस्कृतपुर्वत । तथा माहतमात्रैय किञ्चिद्धिरायस्य गाम्याधिका मण्यते । तथा माहतमये किञ्चिद्धिरायस्य वीमाधिकम् । स्वामीत्रस्यिय माहतसायम् । तथा माहत्रस्यावश्चेत्र ॥"

(वर्षि इहरूर) कारणप्रधा पर समित्रपुरत निवास प्र १९१)

सार्थन एक तरणाड़ नर्पन्छ काली देव है एक प्रकृत रहत रहन पिने पने समार दिल्ली रिपेट नकी नद्दा को उत्तर होते यो ए कर्या है है ज महित गाहर राष्ट्र के सह ने के सहोत करणात्र होते के सहात एएड जुक्क सार्थ करते हैं होते करणात्र करणात्र होते के सहात है होते हैं सार्थिक होते हैं होते करणात्र है एक देश हैं होता सार्थन कराने हैं सार्थिक होते हैं बहुतान गुरुक के मुझा हैना हैसार सामार्थिक महानक होते हैं बीरहेनी क्रमे मार्पाच वाच है. क्या बारवर्ग, परिशास वाकारिशास नामको समाच प्राप्ताच्यानां

रूप्ट बच्च व व⊷ "सपकाओ इस बाया विसंति पत्तो य वैति वादाओ ।

कित समुद्दे किय करित सायराधा किवय ब्रह्माई ॥" कार्य-कार्य पत्री का सहस्रो देश स स्व स्ट्रकारी शैक्के

है केम बरझे राजी (चनन भागावा) आहमाने पेते है को आहम-कोरी बीड़ते हैं "यह पोतिन किछ संसहततस्य" स्व बच्चो उत्तवारी करियासोवर वन कराते हैं केम्यू कानोग्लंड वहुं हूं के आहम ए केंग्रवारा उत्तरित

स्तात क्ष. कामिककार्यंत्र भीनम् हेसकारम्पि महाराज जेवा एव स्त्रीया कामानुकारमध्ये देने शारीमी स्तृति काल्यं नवार्य से के —

" सर्वभावायरियतां केती बाबसुपासमहे " एउड क-तण्ड-नाराकोतां परिचम सम्मयों बली वार्च (के के सर्वे कर्म स्थाप केता के क्षेत्र कर्म कर्मकार्यः

वर्षे ब्राह्म क्षेत्रम हैं,) हमी ब्या शानका क्षेत्र होए. उपर्युक सम्बाधी विद्यु शत ह है—बाह्न ईस्सर विदेश समझती बीहन कोर्रे हम्म प्रतासे को प्रतिकों हे

माइतनिमानमां रहेकां अपूर्व श्रदेराती

भाक्रवानभानम्। रहस्रा सपूरः द्वारराताः स्वत्रीयसम्बद्धाः स्वर्णकाः स्टब्सः सीमानाः स्वरितसः कपूर ब्रदेशकोनो काजानौ कोई पत्र होन को प्राहर मापा है अक्टकिमता=क्वाकरंग वगरंगा संस्कृतवी निरपेश समावशिकाः. श्वादता सोनुबर्मना वर्जपुष्तमा मनुरस्तोतगर्दकाः

बङ्गानिसस्यातुना=प्रश्वतिस्तिः सनुरक्ष वा नैसर्निक सनुरस्त-वोबक्ता.

मा निपक्ते प्रवर करता भारतुमापिनी---"सङ्क्षिमस्याबुपर्यं, परमार्थाभिभाषिभीम् ।

सर्पमापापरिणवां सेनी वाचमुपास्मदे शर्म भागाम—क्रक्रिकाक संगद्ध औदिमध्यम्हि महाराज स्त्रीमक काण्यान शासनातं भी क्रियाणीनी स्तरि करतं नोस्ता के के सक्तिसन्बन्धीयसाने

बड़ि पामेच स्वामानिक पदे परै मपुष्टामे बारच करवारी वरम कर्वने प्रतिपादन करवारी करे सकत मानाओमां परिनाम पामेली केरी बैची वाचीनी क्रमे डरासना करीजे क्रीहे. बानावरीय कवि राज्योक्त भारतमार्थनमां प्राहरूने प्रकृतिमहुर तरोडे कोंडे के—"गिरः सम्या हिस्याः प्रकृतिसपुराः

प्राकृतकारा।" शंगतमा सावत रिल्य को मक्तिगढ़ाउ केशी मात्रस मारि शामी है महाराजा करिवरप्रत हात प्राष्ट्रतकरूका मार्चुर्व मात्रे दोसाबी

भाषात्मवादीयां समावे हे के---

"समर्थ धारपकम्थं पडिडं सोड च के ल आजस्ति । कामस्य वचवर्षि कुर्णात ते कह न कार्यति ॥"

(बाग सतग्री, ग-1) धनार्व-केमो समा बेरा महर प्राकृत कालने स्वता का सोमध्या न्यों क्ये काम्प्रस्थी विक्या कर्य करे है सेकी कामधी

देश पाला मध्ये हैं

सरक्षता-धारण्ये हो स्थोक्य-स्वयाध्यक्त-क्यारियोक्सरिक वा हरूक्त क्या प्रकटने स्वयंत्र स्वयो । प्रकटनो बावरिकोणसरिका मार्च सम्बे शिक्का विद्विपिकच सम्बोक्ति

बाक्षाबामिय सद्बोध-कारियी कर्बपेशमा । तथापि माकृता मापा व तैपामिप भासते ॥

(बर्गामिकियप्रशंपणना पीटकंस-धाक ५१). भारार्थ —बळ्जीयोने एक द्वंपर चयुरोब बरासवारी जने फलने क्ये केरी प्राप्तर माधा के करो एक दुनियमोने हे स्वयो करी.

हते बाहरूकी ह्यांक्टा साठे सीमहेक्सक्रि स्वाधकर्य वचनो कार्यः—

"सक्रमक्रमस्यं केन न याप्रति अनुविद्या ।

सम्बाद वि सुद्दवोद्दं तेजेमं पाइयं रहय ॥" (यनमा महरूना)

 कोमकारा गार्यक्रमका खेळ प्रकेमका-पुरा कम्मकरत्
 मान पुरावे होती, क्ष्म कृत्यावयेव क्षम राज्येया कर्यमंत्री राज्यानं कृत्याव्यावर्गं, अर्थान्यद्वा, व्यवस्था क्यावे क्षेत्रका

ि भ्याप्ति श्राचित्रवेषी भ्याप्त्रभवेषी वि होई सुवसारी । भ पुरिसाणं सहित्राणं केलिवसिद्देवरं वेलिवसिसार्थः॥

भाराध--संस्कृत रचना उनारे कटोर होत है स्वारे प्रश्नुत रचन शुप्रमार बाने कोमाठ होय है कटोएडा कर सुकूमारवामां घेटले करार बुध्य अने सी दर्बत स राज्य ज सम्तर का वे भाषाना सम्पन्धार्य च्च समहद्र.

बण्णान्यम बामना प्राप्तन सुमानित संपन्ता एक करि हो हो

ध्यौ अयाने छ के---"पाइयक्टव्यस्ताचे पश्चिषयणं सप्कापण को देह । सा इस्ममत्त्वरं पत्वरेण अवुद्दी विणासेद्र ॥१॥

माराच-प्राष्ट्रस्थानका सन्तव प्रसुवे जे केंद्र संस्क्रमी प्रावृत्तर मारे छ त मूर्च गरेयर दुसुमत्री श्रोमक राज्यमे सररदी यूरी भारत्या

की दूरन करे छ स्रसिम्हा रूपमा रहेर राशिय-औरस्य क्या मान्हते रक्षित

नवी कात है 'समिप महरपगरप श्वायणयस्त्रहं सर्मिगारे ।

सन्ते पारवकार्वे का सरग्रह सपक्ष्य पवित्र ! ॥ (श्याप्तय नामना प्रदेश पदशस्त्र) नागक-अनित, शरपोना माण्याक्ष युवनिवयमै यहन्तु हैमझ

मेंबारराष्ट्र ब्राइतकारंव वर्ता मानुद छ । स्वा प्रस्तुन सगराबी करेब स्था की / महिसामनायस्वस्ता भारत्यो भीद्रवनी समञ्जा रहेती हे कैने क्षण करिक्नोण "जुवाईयव्ययस्त्रह" विद्यपत्र बारग्री राष्ट्र करेल छे के-प्राप्त प्रफूलकम्ब क्रीरर्दन बहु जिन हान छ। क्रांत शक्तीगर एक

ant u t-"यद्वानि" किल संस्कृतस्य सुरुशी शिद्धाल यम्मोन्हे"

परके प्रकृते ए लेखनाई अधिनात्रात छ सने कीमाना विद्याना

समाप्त रामे हे जा जिसियां हु माहार्थ माया' ए रवत राम महिनामचेत्रस्था प्रातित करे हैं. पात्रिमदा। त्यांन्य विचारभौताका राजानोंसे रच माहार कार महिन हो होते. राजारी बचारिय-0म्बोकर क्ष्म्मामात्यमं

बाह्य करफाँ कुमान्यतमे तीव प्रमाण प्रतिक करे हे

"स्वयते वा स्ट्रिकेट्स कुविन्दो नाम राजा होन प्रवप संयोगानरक्षत्रमन्त्रापर प्रविति समाने प्रवेष 1

चयायासरकमन्तापुर पवात समान पूर्वम । (कश्वयीगांचा ए ५)

भूपते च कुन्तकेषु सातबाइनो नाम राजा । तेन माह्यमापासम्बद्धमनापुर पवैति समान पूर्वण ।

(बल्ब्यांमांता पू ५) स्थानं —संस्थान हे ने-मुग्तेन्द्रस्य दूर्विन नाम्नो एउ। इपी. तेने परवाहरों को संश्चलको विभावना बाहुयो हाउ ऐत्याप स्थवेत्रपर्य नामनिक्य संदर्भनी हरों.

वडी संबद्धन के के-पुरस्केतमां शहनकृत नामने राजा वची वर्षों, के पोताना कन्द्रेपणी प्रमुकतन्त्रासक निवस सक्तेत्रमें हुवो

दिश्य स्प्रस्पप्रय वर्षत्रास प्रशासी करितत्त्व हाक स्थाराजाह, हार तथा वेशीरण वर्षत्रा वर्षत्रास्टी चार व्यवस्थि वक क्रोक्सी क्षेत्र कण वार स्वताकी नव क्रोक्सी, स्वताकरकरीनी क्षेत्रीर क्षेत्र रहे.

विश्तलक हानां ब्यूगान्ये गामेवा भी शर्ताक छात्र स्थापने एतिक मनेब्रुए देशव विकासको 'तरहाबती' बाव्यों के क्या एवं इसे ते क्या देश राज्यस्य एतरहाव्याने तिहानेत्री हिस्सी ब्रह्मा (रोप्ये) संक्राणी हुई, मने बेरी कोड महास्थितिक शुक्तको प्रशंका पर कर्म हुई. प्रसर्धेव निमित्ते एवा सिक्सनी सद्याची 'वेद्युक्त' वास्तुं प्रस्तुत महाकरून वर्षित व्यक्तिसति एवं हुई. एका महाकानानिया एकपुत वर्षित एकप्रेक्ते 'प्रावस्त्यक'

ाता अहें(राजानिय छत्रपुर की छज्जेकरे 'शाक्सक्येक' सारिती एकता करी इसी अजे छत्रा छएकती सत्तर सम्मानने पाम्या इसा

स्पृत्रका भावदेशका स्टास्टर्जिक्टामरणाती एकु स्वत्र के वै-कि. अनुष्य भावस्थानस्य वास्त्रे आकृतसायिकाः' एत्वे बावव एक्सा राज्या क्षत्र क्षत्र कोक्सार न हर्तु । वस्त्र तना राज्यां सारुप्तरासा सेकसार को हर्त्

स्तारामा बहारामां पत्ने हराध्या बच्चितात माना वासन्त होने वे बच्चेराजमी स्वानि पास्त्रो हुनो के पोल्ला ज्यार्चकी कीर्तिस्य भीवतों समस्त्र प्राप्त हत्वसम्ब एकं हुने.

प्रपर्श्वण प्रमानो ज्याचा एउट एमपी एपाव देम हे है-प्राचीन भवता दाहा प्रदारतायोंने प्रमुख मात्रा करफ वेदों क्रेम क्रेसे.

त्रम ह्या. स्वतिः स्वागरता प्रकृतभाषा ए स्किमोनो ज्वांत सुमापिनोनो स्वायक्तर है अर शास्त्रमा प्राचीव व्यविभोद प्रकट रीत उरकात स्वीक

"महाराष्ट्राध्यये मार्ग महस्य प्राहतं विद्या । सागरः सुक्ति-राजानां सेतुकस्याद् यामयम् ॥ (क्षेत्रेरोकः कामरार्थः)

नामार्थ —सहरायण सामन्त्रे प्रमेशी मात्राने निहासो स्ट्राप्ट प्रमूख वर्षे हे के त्रीन्त्रम्य सुमान्तियोदय स्थानी साम्य ह सने के स्वाह्ममान्त्रमा देवरण्य वर्गरे फान्तो स्थापी ते

खारुप्रियता=नार्यवेतना बोक्सेनो शक्कानाचा उपर सपूर्व द्रेय

हणे क्षत्रं मा निश्ने प्रणातिक कर्णा बादारशेव करि सहस्येकत्यं सम्मानकात्र कर्याः— "यह योगित विद्धा संस्कृतस्य सुरक्षां क्षित्रासु पत्मारिते । यह म्रावित्यास्त्रासिण कर्यु-मोनासुरामां एसः ।। सम् बुविषक् पर्व रविषक्षे-स्त्रत्-मारुत् स्वयक्ष-

पर्याद्वाटिष्ठिक्तांक्वं । एक्य ध्रुवती क्वेसेनेमेपबळम् व" (क्वं क्राव्येत्रणा क्वार्याक्वमा (१) ११ ४ ४१) । बागर्व—३ (आरु) तेत्रण्य उदर्शितक छे थे क्वार

सकताओं शुन्दगीमानी जिन्ना हुई पामे है जे आपनोत्तर वर्ष अपन गत्तरन अस्तुरने एक धर्मगढ़ आने है एउट पर्य अने बुर्वजन ने मान्य ऐतिहर्ज्य स्थल हो हारा महत्त्रने भीत्रमध्य अपनेश्वासी नोधने हे तमिन धर्मनाओं सुन्दर्श है हु हहा अभीत्रन बाम निक्रतः

नमा गायकः स्य स्टान्स्ये हुन। स.ज. बाबात्येत वृति धत्रद्वेच्यः, बद्धस्यार्थन्ये

स्वपर्थ-अस्टापेशी सहदेशवाणी सोध्ये समितातस्यान करनाम्यं वीम्पर्वे निकार गामियो जीवतने सुन्तर ब्राह्म को स्व

कोरको निकार गामिन्द्र जीवाई सुकार आहात कोई छ। स्य जारको ए विद्य बाव छे के एक उपयो सहस्टेहानी विकिन्छ साथा प्राप्त अ इली.

सनोहरता-गड़तकान्त्री स्थोदरता गर्न हुन्हराले अंगे क्रांक्तिमा जान्त्रात्राव पर पदानी रकतर विद्वार जाती हे के---

 समार्थ — स्को ! शिकाम सुचास बारा बेलु सुक्त है प्राइट समोता के केरतं व सबि किंदु हमां सन्ता बेबी समस्पूर स्थितमी योगी रही के.

निराक्तरूपे दगर दस्तिक स्रवेगतो उपानी एउट समझान हे के माहत से सर्पा दिवा हरेएप्रोनी अभोती जान हे

माइउनी महत्तानो उपसदार

उर्युष्ठ प्रमाना उरावी सुद्र वावक महाधव समग्री सकता हुई कै-एकप्रवरम्बम आरुप्रिम शहरीमानक स्वादु समग्र कामक्येपाल क्रोकक्रमियी मान्य कोई एवं होत्र सी प्राप्तमाना व से

बयान कराया परमाणिय कार्या गंती प्राणीवर्ध प्राणीव वे मानाकों के एक माहत करे बीजी सहजूत. आ वे माहाको सम्हारका निर्मेक वेस्सुवात के बनेतो काहिक्सोत्रमां बहिने प्रकार के कर्त एक प्राणीव व्यापनकति समाता माहे केटमी कारियाल कंत्रकारी के किसीय करें केरी मेरीक सामाजाना प्राकृति के

मळक होन कं मार्किक होन ती होन के पुत्र होन राजा होन के रेंच होन मूर्ज होन के पंत्रित होन तम्मा नाजानी मानीडी विनासन्य होना तिहास समुदान उपर उपकर करवारी भाषा कोई

त्रम होन ता त प्राक्तमात्र छ प्रमुख (म व)मी निकित्समा त्रचा नरनोमित्र हा निरार्शन करी न्याना हो अपने प्रश्चन प्राक्रविक्रम गठनामां नी स्वयस्त्रकत्य वा नरनोतिक कोरे निवारीके —

भरतत प्रयती आवश्यकता

क्ष्मच परिक्तेनचीर द्वांताची वचका व्याप्त गाळाली, प्राव्यमाताली चाकडोडी क्रियमिन्द रवाने भेगे अर्थन् एवा प्रवस्ती सावन-बासकीया विकार कार्य बाधाञ्य बयान्यं हते.

परंतु इसको इसको छात्रहर्यमा हो हो किंदु इर्फरकुकोमां करें कोडेजोमां शेक्ट सेंटरेज (शीजी माना) ठरीके प्रकरता पटनगढन साए प्रसादमा शक्त वर्ष है. केवी सुद्दावर्गामां एक प्रशासनो सारी अधार वर्ष रहों के ए कीई बीका ब्यानेंदवी बारा नवीं हुने का प्रवासने अविकारिक बबारवाची प्राप्त, देवल विश्वाबीकांने स्टब्स्टाबी दोन की बाते देना मार्केपरैक्तिराज्य समित्रत प्रतिका प्रकार प्रमानती बारास्त्रका हो इसे न, हेमा परम्पान पानपान परमोपनाचै समन्त्र बीमक ग्रहराज (विजय विद्वानस्रीकारजी सदाराज) गैनी क्षेत्रस कारी में दे वर्ष स्व वर्ष क्रमे रायोभीची सबीस १पा-प्रशासन वा आहारा विकास-पाटमाखा" देशा भी है सारे देशोबीलो बता ऋती है है स "त्रापुत निकासगढमाळा" हता यक्त कालमान्त्रे जात्रत विकासना समिता-विक देशास पर्या जातात मात्राना सरक्याची धोम नावी हेनो प्योक्से प्रचार को कम गारी का अवाल बच्छ बाब धराई इन्हीं का प्राथिक वक्त क्यात पर हो मा प्रकेशियों वे बाइचेंद्र समानदात खेतीयी 'अञ्चलमानानी जनवोनिका' नामनी प्रस्तिकाचे क्य कपनीय करवामां धान्त्रों हे इत्त्रतं प्रवेशेन

11 द्वामे संस्तु ।

मनेता

'विषय स्फोट'

- भ पारमाजनी कन्तर अकुर-पातुओ प्राक्ष्य सब्यो प्रत्ययो सन्दे वेगी निस्तुत क्यो तमत्र पातुओ बने सप्योगी साथे संव्यवसर्थनो प्य मार्थक के
- एक मानिका के १ कार्य-प्राहरूको एक कम्ब्यस बाँदे कके होने माने प्रसीय प्रसीय मार्ब मानवारी माने कमी एक स्वीका के
- रे परहरूना कम्यारीमोने बेरहरक्कारा प्राइत्त्य हान वह एके देखाः मादे वर्षे निकारस सुक्त नियाने दिष्णयां क्रांत्रेता छे देखाः केरदे समित्र क्यारिना क्रम्लक्क स्टोलिकाने व्यारकार्या व्यारका क्रे
- इन्स्तोनो श्रद्ध अन्तर भरतामां साम्ब्री हे अने देशों व्यर्तहरको पण साथे श्रद्धकों हे.
- ५ प्रश्निक्य क्यो निकाश देखाकामां करूनां के.
- ६ जमल सर्वनाम स्था बंदबनायक सम्बोन्स अका सक्षय पाठी
- भरवामा आवेका है भ आरकावको एव विद्यार्थीओरी अनुबक्का ब्यालमा एकी क्यांका
- महरा बाहित्सांबी म क्षेत्रेकां हे 4 वाहक सम्बन्धेन सम्बन्धेन क्षेत्रे वाह्यकीय एक साथि स्थानमाने
- नाटळ शब्दकोप अञ्चलकोन कार्य महाक्रीय एक साथि ब्युक्तालो कार्यको छे
- माहत ध्यावसामामा सूत्रो क्ले माहतव्यविक्रमाची करण ध्यापक क्ष्मि शुक्रमामा आवेक के द्यार व्यक्ति सम्मोनो साथ संस्तृत वर्षका वर्षित मुख्यमा आवेको के

ai au रकीयान पार १ वर्डमानसङ क्यापुरस्य प्रत्यपो 11 वी ग्र 15 चीता .. ** ४ चरकोग्री ध्रकाम क्षत्रे संक्ष्यानाभवागे क्यो... 11 ५ सर्वत चलकोनां स्पो

21

ì

٤٦ 45

• 6

13

..

अनुक्रमधिका विवय

... ६ फा-आरार्थ क्या काचे छना वपदन 🕳 🤏 बरकरान्त पुद्धित दवा बरुक्तकिय मामी पक्रमा कीया विस्त च तरभा-बरत्यी ..

- ९ प्रवासी-क्सी .. १ सत्तमी को संबोध्य र्वमन संपूर्त स्पी .. , 11 इंपारी को उपरांत पुलिय क्या गर्नुसङ नमो पहमा-बीया को तहसा निकवि

٠ı ... १२ चडरपी पंचमी को छही दिवल्य .. १३ सलमी भी संचारण

_ १४ भनवार .. १५ महार्थ को विश्वे ...

., १६ ब्यायन्तर अने इस क्या सर्व ४-ईप्राप्त को च-द्वारतंत्र कोकिन गर्मे ... ١ (

_ १ मनिष्यप्रसा _ क्ले किन्नदिशस्त्रम् हैमा ना कार्यह

पुष्टिम स्था औषिय साम्रो

... १९ पर्याजिक्य समे आवेच्य

१३ समास .. ९४ छर्षेत्रमत्त्रो स्पो » १५ इंचयमानक सको पारमधरकोस्रो

धन्यदी मास्त शब्दकीय १ परिकार-निकाले n २ ...-बातुबोर्ग विविद्य स्पोर्त

∍ १ इस्त

- २३ देखाँच

153

100

116

243

111

168

111

\$40

300

सिरिपार्मगरमपद्यानी भनुकामिका

	विषय	1.
١	वचनतुरासमामेचे-चरासि मंगळं	jee
	वतारि बोगुत्ताम् वर्षारे कर्ष	**
	वीन्दरम्बन	 146
•	इंग्लिक् क्रमालका	 144
¥	मिमाये जिस्सू चरे	i
٩	<u>तुपवरिजीगण्यमं</u>	
ţ	विशःस्था अवा	147
•	1984	145
	रास्त्रसः रच्छानानो	3 9
٠,	रणागीरमेहनर्नियो	144
	महेश्यरत्त्वा	15
٩	यामेनकेरहरू	111
١٦	शिक्षपोष्ट्रह्य	150
ş	क्रमकायेच	 155
¥	हुई । स्वयः व संशितो	15
١	मिनमे रामपुष्टनं मूर्व	155
Ę	इमारराज्युराक्तत धीरदिवादशामी	Y
١	प्रमाणुमासि म गन्दानि	٧.
	आकृतस्यसमानार्थं भारेका करिन क्रमोदा कर्व	¥31

श्री प्राकृत विज्ञान पाठमाला

क्ट्रीरिक्त्य

·---

हार−म र प रुक्ते करा, है प्रदेश करा साराम

र्गेप्रम

क्ष बर्ग कर प्राप्त प्राप्त कर अरह को करने भूनमुख्या प्राप्त प्राप्त का करने अरह को करने भूनमुख्या प्राप्त करने का उसके प्राप्त के में

(तन) किया (तन), युद्रो (यप) निद्धी (चर्चर) भूते (तन) विसन पश्चित वन क. किटिंग्स (वपन्य) किटिंग्स (वनास)

, प्रांत को औं न किए करका 'प' को 'भी जात है, त्वा को लाने बार को 'भाउ कर कात है सेली ज्वालां (केला) नेतापुर (बेपोप्स) बीतपुर्व पारी (क्षेत्री-नेता) केलावां केलावां (केलाव कर्ष करेगा). हर्गा केलावां क्षारात केलावीं कारण कर करते.

प्रशिक्ष क्षेत्र को क्यों के प्रशिक्ष की स्था किया है। इस स्थाप क्षित्र की क्यों का प्रशिक्ष की स्था किया है। इस स्थाप क्षित्र की क्षा क्षा के

स न'(र राजान का बाव छ. सरदारों (गर्दर) बुदबों (इन) सम्में (बन्धे

करणको (गर्नेट) पुरको (प्रनः) कान्ते (क्नः). + १ क्रून्स मा वे अंत्रमा सम्बद्ध मारम्ब अत्रम बद्ध क्य

श्रद्ध वर्ग	र स्ट	म ने	त्वस्य	
₹ "	दे दें दे		मूर्वस्थ	
त ,	द पंद	घ न	रंत्य.	
Ψ υ	पुष्	(स म	माञ्च	
	`	q	and the	
वर्षन्तर	- t	₹.	मूर्यम्ब	
-	(म्	áta.	
	,	વે	बस्रोध्ह्य	
	펒		दरस्य	
	₹		केट्य	
स्वकांनी स	तमे शेषुण्य आवे	क सङ्खो	(104)	सम्हर्ण

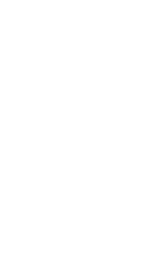
२ 'धा' वसे 'घ नो स बाब क. पिसेसो (विकेप) साहो (एन.). 3 स्तरप्रित कैपस क्लेक्सो प्रवास वर्गा नवी. रास (राज्य)

(सम्बन्धः).

 प्राप्तनां विकासि एंपुल क्षेत्रमें आपता नवी. एव निकास-मुद्दार केवाची एकती होत वह स्वतादीन एंपुलन क्षेत्रम बात क. एक (पा), अस्थान (प्रतेत) हुई (पा) अस्थात (क्ष्मी) साम्य (क्ष्म-वार्थ) करता (पा) करता (व्याप्त) होते.

सरिया (परिष्) समो (प्रम्प्)

मुच (द्व-मुग) स्त्य (को इस्ब (कान) बारे. बारत-प्रह-वह-दि-दि-दु वा छंतुरु स्थलनो अदेश बारुको बेगाव है: गिरही (कोन) पण्डी (मग), परहासी (युकार) शुम्हा (गुण) बंदी बंदी (कन) बारे.



अह

 श नमः स्रीसिद्धकम्य ॥
 ॥ परमगुन-भाषाय-महत्त्व-सीमद् पिक्रवनेतिस्रीध्यर-मण्यवस्था नमः
 सरिषक्षककर्ति-मण्दगुरु-आसनसभाट्-महारकाचार्य भीविभयमेतिस्रीयरवृहातक्कार-परम्बूश्य-परमो पर्शारे-प्रथपाद-भाजायेमहारासभीविजय विकानम्रीयर-पहचरावार्यभीविजयकस्तूर सरि-मणीता

॥ श्री प्राक्टत विज्ञान पाठमाला।

म्बिपदानो दौसद करियाने बस्स अमियप्रत्याको ।

भक्कणंभिनमंशः स बयउ " सरीसपासिनमे " ॥१॥ पयदिनसम्बन्धार्वे अविभन्नाणंभगारपगद्दे। सूरभ बग्म शार्यः, स पट् पीरा कृणः मर्रे ॥२॥ प्रकारस गणकरो, गोयमपमुरा बयन्ति मुपनिदिनः।

स वि इसम्बद्ध्यी कानो किन्वाज्यस्वरूप् ॥३॥ निमेबिकवनेपितृरी, जुनायदासो मन वशीवत्रज्ञा।

बरस मुद्दारिट्टीण भागमक्रम्याति भिन्नस्ति ॥२॥ विन्त्राणसूर्वि समुक्तं नग्या, सुभे च सम्बरगुरतीश्वतं । बाह्बदिश्यात्रमुर्वे समुद्रे राष्ट्रिके सीमगुर्देकरद्र ॥५॥ **∗स्वर** ⊷ज्ञार व

इस-आ इ व रोर्ग-सा, ई क ए, मा स्मनुषार

भवेषकः स्व कर्मकृष्यस्य कृष्यस्य

 १ प्रावस्थ्य को स्ताम विकार का बाल देवन नहीं स्वामें 'इ--त' अमे 'दि' एवं बाल कं बातक प्रायं (ब्राम्) मानो (१९००) किंग्सर (१९९०) एको (१९९०) विकार (१९६०)

(एक) किया (क्य), पुत्रो (एक) रिजी (क्येंट)-'स्व' सरथे मेनल 'पृक्षि बाव क फिलिम्स (क्यान्स्)

विश्वित (म्यन्त्र). पि अने सी में रिकर अनुका 'प' को 'मी' मान से तत्रत की नामें सई' को 'मड' पन नार के सेना नारान (नेन्य) तेत्रकृषं (केपेरक्य) कोसई पडरो

(भोन्दी-पीर). केया में स्वीतका (केलाय-माने कोरवा). एवा केमाएक कमामां ए-मी वो प्रयोग एवं माने छ. ४ विद्योग प्रकेष क्यों गये। वस 'मा' वो क्यों श्रेप क्या ग्रेप

ड निकर्दनों प्रचीय चनी नहीं दश कि जी क्षेत्री क्षेत्रयाँ हाच हो। स नहिन निम्मानी किरो क्षान क

सम्प्रमी (गर्नाः) पुरको (तुन्तः), सभी (क्ना), + ९ क्न्य्य् वा वे जोतना स्टब्स बाह्यता अस्तव सर्गा स्व

९ 'द्य' समे 'प' ने सामाव ड. विसेसो (निसेप) सदो (इचः). ३ स्वररहित केवन व्यंत्रकता प्रचाय बढी नवी. राज्य (राजन्), सरिया (सरित्) तमी (क्रम्). ४ प्रत्युतार्थ निकातीय संयुक्त कांक्रने काक्रम कर्म एव निकास-तुद्धार नेमांनी रुक्ता प्रोप का स्वजातीय संबक्त स्वेजन बाव है. पक्क (पर), सब्बन (भर्तन) इहु (इप्ट) खब्बाय (भनन) सुन्त (सूत्र-प्रप्त) सप्प (धर्प) कृत्य (काम्ब) वगरे. शास्त्रमा देपान है गिम्हो (श्रीय) पन्हो (श्रम) पस्हामो (महस्रतः) शुप्दा (प्रयः) चंदो चंद्रो (कनः) वरोरे

च ार्ग ठ _ा ठ _ा रा		र र प	राजम्म. पूर्वन्य. वेख क्रोस्ट्य
अर्थन्दर	}	े य र इ	য়ে গৰ ে, মূৰ্যনৰ বাবে ৰচীম্ফুৰ
	च र	•	पराप केट्य.
स्वयांनी (काञ्चलक्		३ सम्प	(484) RER

माइदमां संयुक्त व्यंतनना करफार मीचे ब्रमाणे दाय छे

स्याः स्य-सार्थे श्रमान न्त-इ-मुक्त-सुक व्यक्तम-विद्वा^क निरम नवच्य-नाम्या न्यन 并工程 一可能 中气管 स्वान्ध-विद्वाप निवास *वर* व्यापक व्यापक (**७०६ – २१६ ग**रा • उत्तर के इ-सर्वे भर्ते श्य-क~उदका=उदा ियनय-शिव विव व वय-व्याप-सम्बद्धाः एक-१४ - न्यक्यान-पर्राज स्व**ार-महाय-स**मय स्य=नव-उरिह्मणव्यनियत त्य=वर्ण=वरस्त्रात उद्दशन न्द्र≈क्**रा**-निष्क्राम जिल्लाम १**५.५४-४२५,न्द**न**ावर्श्व**य स्त_{ास्य}-मस्प्रक्रित परविशेष स्थाप-स्माधन मानमा हुमा सुम्ब रव-रक-ब्रोडस्ट अक्रोस य का अग्रज्ञामा

र्व≈य-**नर्**ग ग्रन

Carrie III allen

Rate of area

क्रमाय व्याधानमध्य **र्क्¤+-उत्**गारित-उरगारि*व* र्वे जान-कार्य करान रक्षण्य-अस्मृद≔करहेव (कनप-स्ट्रय स्वय ल न्यन-हारचा न्यन्या ध्यान्यस्य श्रीम्य न्यास्य र्वटक्क-अर्थाना-अवस्थाः THE THE TWO स्मन्त्र क्यूमी-क्यू कन्ध-रुख्य निच्छ ल च-तस-५० त्रांच्या अहंस्य<u>च्या</u> **्रकार विद्या**-विका माप्य क्रिया दिखा र्श्वन्य मुर्खान्त्रस्य 🖛 😘 – सम्राच् – स्टार लाञ्च निस्तीर्थ=भिकिन 95 75-8170 NOX इक्स्प्रस्था **₩**=78-422-473

新たりましたがまりまりまます

इ≈ात-नर्घइ=तन्त्रात स्म=**म्-५३**ण=िक् सम्ब-प्रसम्बद श्=र**ा-मरा**=भरत ध्य गा-उध्य≖क्ष 48-75-44E HIS स्त्र=र्-रनाीन्**धा**र ज=**ात-स्या**=हेऽक र्ष×रत्र-भार्या भग्ना इन⊭स्–प्रशिद्ध=पुन्नप र्ज-वर्जन वर्जन वर्जन इ=च-मम्बद्ध=मञ्जूष र्णकात्र-**पर्श्य**भागा च=त-मुक्त-भूत स≖त्त-यस कत ष श⊸गम=म ⊭ रम=न-असमा=भक्त म∞ऋ-दुर्घा दुश्च त्रं≖स-पात्र व्यक्त स्थाता सङ्घा व्यक्त स्वचत-तर्व न्यत त्त=पू-पत्तन=परूत र्त-६-न्त्रची न्द्रा फ=त-श्रपत=पन र्र=त-वार्ताञ्चला ए हु-एए-गृह इन्द्र-निस्दुर-निस्दुर क्वध्य-निक्ध=नित र्वक्ट्र-मर्चक्रम 育=(**以一**を育ま無何 क्षा रहन्यती न्यहरा र्व=स्य-१ व्हे = महत्र र×र्×-विच्छा=विच्छर् स्टब्स-इस्त=स्य इप≖रूर-मद्भय मर्ड स्य=च-प्रस्य=पर्व रव्या स्टिस् रिहेड स्थ-स्टब्स र्ष×कृड वर्षासम=वक्तमान इन्द प्रद्वेपन्त्ररेत इच्छ-याषु व्यव् **म्य-सम्**टम् व्यक्त-पुष्य-पुन रव्य-वर्त्यकास मञ्चा-रख्यान स्य=द्र-सम्बद्ध स्य जन्म - स्टब्स् स्थापन प=र-मध्यत्=भर् ध्य•इ-मस्चि•मञ् स्वद्भाः अन्त्र्वश्चमात्त्व र्थ=इ वर्धमान=बद्याय स्थल-प्रकृत्सन्तरहरू ष्ट्रा=प-रविमर्ग=स्थिती र्व=म-नवभाष

माश्रवमां संयुक्तः ध्यंत्रमना फरफार नीचे प्रमाणे वाय छे

नान्य-मुख्यान्यः स्था नवस्य-साम्यान्यः स्था नवस्य-साम्यान्यः स

नक्तव-विद्वार निवर नश्का-प्रमामान्य लाक्ष-उत्साच्या दनटा

ला-ब-उरसाया देवया र्व च-मार्च वर्ग राज्य-वरसाञ्ज्या इ.स.च्या-कर सम्ब

१ वस्त्रय-शिक्ष शुक्त व वस-स्थाप-सम्बद्धाः १ वस-स्थाप-सम्बद्धाः

१६७२व-स्थापाय-१२पाम १९७१व-११प-११व १९७१व-४/विश्वपाय-११पाम

स्यः मस्य-रखाणि श्रेष्ट्यान स्यः स्थानिकारानः विश्वसानः स्यः स्थानिकारान्यस्यः स्यः स्थानस्य स्थानिकारान्यस्य

मन्त्र-मन्त्रन्त्रस्य सन्द्रमः दुष्मः सुस्य इत्त-त्र-त्र'म्ब-जोत्स् प्रथ्य-अप्रकारम

इच-१०-च ज्याच्यास्य प्राच्या-स्मान्यस्य प्राच्या-सम्बद्धाः स्था प्राच्या-सम्बद्धाः स्थान-वृक्षाः स्थान शास-विद्यापनीय स्थान स्थापनीय

क्ष्मार स्वाप्तास्य इत्यान-प्रकृतिस्य इत्यान-प्रकृतिस्य स्थानिस्य इत्यान-प्रकृतिस्य स्थानिस्य स्यानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानितिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य स्थानिस्य

त्रभग-कृत्या-भग्याः प्रमण्ड-कृत्यान्त्रणः र्वत्यस-अर्थाय-भग्याः कृत्यस-कृत्याः सम्या-कृत्याः सम्या-कृत्याः

हन्य-एस्य् विश्व राज्य-पर्य-पर्य-राज्य-पर्य-प्रमान राज्य-प्रियानीचा पाज्य-हिन्स-शिक्ष रोज्य-पुर्य-शुक्र-

चान्यः मुख्यस्यकः कत्यः-प्रद्वाप्-प्रदा सानक-मिसीर्यन्तिकतः व्यवस्था-साम्यः सम्ब इन्सान्द्रस्य

क्षण्य-सञ्ज्ञान्त्रम् स्राज्य-सञ्जनम् श्रन्त्वनी अदर स्वरनी प्राधीः असंयुक्त व्यंत्रनीना सामान्य फेरफारी प्रायः नीचे प्रमाणे याय छे

संग

क=≉स्वृ-कोक्द≈कोस

क्ष्णा-सोक्रम्कोन कम्ब-काक्र-कान

राज्य-पुष्यञ्जू सम्बद्ध-नोगाःनोज

मध्य-स्टार्=क्यार् भव्य-वेद्यक्षेत्र

क्या - स्थानम् क्रम्यक् स्वीन्ध्ये

च च—रेखन वनम क=सक् राजीव रहीन

स द−रञ्जाकरणन टब्स-स्टब्स्ड

ठम्ब-गठःग्यः सम्म क्षोत्रतिन्यम्बद् सम्मद्ग-पतिःगद

द=४-पात पात मन्द-कद्यान्त्रद्रा ४=४६-विदेश-विद्या

र=र-स्शु=ाना भ इ-साच≥धाः सं मा

शच्या च्रम् चन स्त्रतियो ल मो क विकलो बाव

शर≖वर } बर ∫

१=उड्-तिपु=िर प=्ड-शप=गव प=्ड-स-शप;क्र-सम्ब

फल्-न्यूरउभस्य १ ४-न्यूरज्यस्य

मञ्द-सम्राज्यक्षाः च मुक्-दियोग विभागः स्थादेगां य नो क्षः पानः

कः अ-यमण्डम याविक्यार कोर् टेक्स र मो स्र वास. र स-वरित्र एक्सर

व-सङ्-वर्षि न्वर् व-व-गायभ्य-गायम व १ ए-ध्रेप-धेव

च (ध−क्षाण्यः च } द्वाच=छर्

रि**=पे~उत्पंड=उ**पाड सम्बद् पद्मान्भाम् **टा=य-धरम**्=अस माध्यक्-मीच्म विम्ब प्यक्रम् -श्राप्त**ा** ०ए ४ सम्बद्ध-विस्मव-विमुख प्र≖प-वद्म=वा सम्बद्ध-न**ञ्**यनअस्य ख=म विष्युव=विषव व य-५०५ -प-वर्षेव : स्टप्रव र्व===-पर्यस्तः क्ष्मस्य शास्त्रम-ध्याप अस्त िक विक्रीण विश्वस्य ल=ल−१तुम उपुन स्वच्य-पर्याम=कक्षाम age de declarated COMMUNICATION CO. and a few for a section of (वःस्य-म्बूड्डार-म्ब्यूस्य सम्बद्ध-प्रस्पान्**र≭प्र**पृत् स्वभव मस्योदितमस्यक्तिम इञ्च-उद्यक्ति-उच्चान र्ग**=च**-उर्वी=उनी प्राच्यावत्वद्व-उध्यद् fem Pas Pers क्ष्यं - क्षत्यं - क्षत्यं र्म्युर नमुत्र म=म्म-सम्बद्धाः स्थान र्व स्प-ईपा-इन्हा FER SHIP STATE स≖स-पश्मि≈स्टि रम्बरम्-वानसङ्र×पदस्र **र्**कन्या-ख्मार≡क्रमात् राभव-पद्यवि पस्ट स्वच्याः-सम्बद्धः-सम्बद्ध ... ,, केरपा केला 東本町一年資 4 単年 **म**×स विशाम×विसाम र्भव्यम*ा*र्भावर व सम्बद्धाः (ज्ञार=दृत्स<u>स</u> हर का विद्या किया मञ्स प्रथातिनासम् नाकान वस्तर्*काम व्यवस्थान-साम्याज्यसम् **जन्म-६प्जाव-५**स्साव र्शच्या का्रिक्टम **सन्त-प्र**स्प=काग्र का ब<u>म्म</u>-पुरस अपूर्म General Control of the Control of t Curia del relita स्य देवरियम् केवरिय

९ सद्भव-संस्कृत बगरबी माहत निकानुसार सिद् वयन

१ तस्सम-वंदान समानत होत त. वेहराभातु-दुमार्च्यमुं सावयास-मेटपुं, व्यक्तिन करमु पुरमुक्त-अगार्चुं पिप्पाइ-कम् दर्गमुं तरि गातुको

हेमत्र आवस्य पाटुमो. वैद्यदाप्य=प्रत्यत्यान्य=मन्तर्यो स्वयद्ध=वाका वतस्य.

वचना रहेन साउर-व्यक्तिः राष्ट्र-भागव स्वल माहित्या-नवतेः सारकानमर्वत्रः विक्ति-माध्यसः गोरे राज्या

तत्मक्यानुन्द्रम् (च्य) पद् (गर्) सम् (त्रम्) वाड् (वर्ष) इण् (हर्) अप्पू (मर्) सच्यू (अन्) वर्गरे

तत्मवराज्यन्मपण (मरन) सोसड (भीपण) सत्त (नव) विण्डु (विज) पृषु (म्मु) गोटे

(विच्न) पहुं (म्नु) कोटे तत्सममातु-मण्-चत् पेत्-वस्-इस् सम्बद्ध-रम् इत्सरि

तत्समपातु-मध्-चत् धत्-चत् -इस् सम्म्-दम् श्लारः तत्समग्रन्द-सिब-कमस्-युकि-माबा-धिमस-चीरः कारे

- ९ का प्राष्ट्रत विश्वान पाउमास्ता स्त्रं भाषेच पातुलोनां एवा क्रजोर्ना क्याक्यानी एवा एवा निकारी क्रक्रियात सर्वेड अस्तरह. क्षोडेसबन्द्राकार्य मित्रित प्रकृत (मित्रहेम स्वाकतनमा अवस भव्यापस्य) न्याकास्य स्ट्राप्तरे जाननी.
- र संस्थानमां कैम रक्ष वजी कमें देनां परस्तैपरी—काममेपरी अमे बसक्तकी पंज़िकों तथा ठेना छत्त स्तुता प्रत्यको आहे छे ठेन जानसम्बद्धाः नवी
 - ३ महरूमा १ वर्गमामकाछ २ मृतकाङ (क्लन~स)ल मध्यन भूतना स्वामे) हे आजारी-विध्यये की ४ मविष्यकाल (असल मनिष्य क्रम समाल्य भविष्यप स्थाने) देशम
 - ५ कियाविपस्पर्ध दस्त्रा करते वस्तुत्र के. ४ प्राइटमां दिशयको शरहे बहुक्यम १५एम छे ज्यारे रांची प्रयोग कारामा जाने हे स्वारे द्वित्व अर्थ जनावराने साटे बहुसकरी न्यानी धाने विजनतंतु-कि' सन्तर्ग प्रचीन बान हे केम दोन्जि पुरिसा यच्छन्तिन्ते पुरुषे राज हे.
 - ५ माइका करनी निमक्तिय स्वामें इन्हों निमक्ति व्यक्त छ। एव पार्क (केने सारे) मां संस्कृतनी क्षेत्र चतुर्वीनी एक्क्कन वपरान के केन-माहाराज नगर सदय (साहाराज महस्मारी)
 - ६ मास्य भाषामा पानुको क्यो क्यो जब नियामान वर्षेत्रावेता है.

रे औदय-साराध-विवर्ध-स्थल जावि वेताली कराती जाना क्किन्स क्षेत्र अन्तरम् भी देशकरमुखरिजीए वेसीनाम-

नकारों देल कराते क्षेत्र क्रोड़ों हे.

	"			
९ व्यवसम्बद्धाः अध्यक्षमां सर	माने पुरस्कोपक वे हो. बोस्स्कृत्य	ध्यक्योगी पूर्वे (+सि=	था प्रतस्य	
नोस्प्रामि, न	प्रेस्थ मि	िक्ष'नो 'क्षा '		
वाव ह		भ ौते भा ष	ना 'इ' निकल्पे	
ď	ोस्कामो दोसि	डमो बोस्डमो		
v 1505 12	ना मान्छ क्यो	सम्ब भीग्रा करे	श्रीया प्रदयना	
से-व′ я	लाव सिवास प	र्वे पुरुष कोपण ।	स्त्रवी क्याध्या	
	ए' बाब हे.			
बोस्डे मि	बोस्सेमो	बोम्सेम्,	बोम्खेम	
भवा	बोस्कामि	बोम्साम्	इत्यादि	
पहेंडा पुरूपमां क्यो				
प्रका				
मणामि		स्रक्रिको स	जिमु, मधिम	
भवभि.		मणामी म	णा <u>मु</u> भणाम	
मणेमि			णमु भवम	
41414			म्पेमु स पे म⊷	
	मास्त		and name	
	म ाक व ज्ञाममो	नारपा सुचेसु	बोस्छेमि	
कशामि	ज्ञासमा ज्ञेमामि		बास्काम बाह्यम	
इसाम् ग म्हे सि	चनाम दे वसा मो	भुजामो		
ग म्हा म वहामी	भवम् भवम्	मबा <u>मु</u> पडेमी	पुष्पामि पीरेमु	
वशामा वडेम	मध्यु नमामि	पडमा	यादशु कोस्क्रिम	
चेकाम चेकामि	ममाम मणामि	रोबेशु	विवासी विवासी	
पशाम पी डे मि	मणाम वसे म	बोदामि	प्रवासः स्विमी	
A16914)	चस्तम	नमेमि	- काममा	

3.5

पाठ १ छो पर्तमान काम पहेंचा पुरुषमा प्रकारकत सने बहुबबनता प्रत्यपी-'बाबबर. एक्सक्स मि मु, म, (मस् मंदे) मि (मि) चानुमो पीड } (गैर) पैम्स इ^{न्य} पीस ∫ देतु क्लामु कडू (१४) परेन शक्कि (फॉन्ग्यें) सम আৰ ব पुरुष्ट (स्व्यू-६व्यू) पुरुष्ट बीड (श्री भेतु सब पामतु बस् (वर्) पास् बोस्स् (४व) वम्यु बोह्र (गेप्) धेव को गन्त मेम् १ (सं≭) व्यव सक् 🕽 मण् (सब्) संबद्ध सम् (भ्रम्) भगद् देवल् (स्रः) देवत् अनु शस् । (सम्) सम्बु सम्बद्धार रव रे (म्ह) एक 44 } dy! पद्म (०९) पम्बुबरित वद् बस् (वस्) वतन विष् १ (य-शिष) पीच पित्रक 5 सस् (स्यू) एन्ड माहरूमां विकथन होतु सबी. ठेने स्वामे स्थूपणा बनरान हे म्प बनोप मती मच्चे हु (हि) समझे प्रमोप नान इं-केम-मान्द्रे वारिय दोस्प्रिमी सिंह को सूरपनार्थ यह प्रवास कोईस्टी माइन बाहित्यातं नपरावेका विकास के. केन-मनवद ! महापसामी, ता वहि सक्कन्द (शास्त्रस्य ८-मी वन) ैबुस्स् (बुस्-बुन्न) बीप बडी बान मेटबबु जातबुं, समजबु सुगस् (सब-सुच) समाबु मोट पामची केंद्रा बबु रक्त्यु (रह) रहन बरबु

रक्त् (रह्) रक्षण करबु रम् (रम्) रमबु डराब् (करब्) करबा पामदी सरसाबु ^Vक्षेद्ध (करक्) करव करबुं करकुं हुज् (हुन्) हुन्तु सरुतुं भेद्धस् (हुन्) रोप करन्। तृस् (हुन्य) तृष्टी बर्चु, संजोप पानेना सरुव (हुन्य) हास्त्रित करन्

वृद्ध (इन) दासित करतुं यूच्च (प्रृष्ट) पात्रण करतु सीम् (धिष) मेर पात्रण सीम् (क्य) करेषुं स्वा(धिष) तुकार मतुं शकानु

१ करनी अंतर स्वर्ता पर्छा क्याँ सने हाँ होत्र तो उन्हाँ वात्र ७ सने प्रतिस्था हात्र तो 'हाँ पात्र छ. कल्पर (क्यांत्र) कल्कारको (स्वाप्यत्र) सल्लार (स्वर्णि)

षुज्ञार (१वर्धत) सज्ज्ञाओ (लाचार) मुज्ञार (सर्प्धत) स्वाप्ता (लाचार) मुज्ञार (सर्प्धत) मज्ञार (क्यांत) मज्ञार (क्यांत) मज्ञार (क्यांत) मज्ञार (क्यांत) स्वाप्त (क्यांत) सज्ज्ञार (क्यांत)

निवेद-इस्तो 'यह' एवं विकासे बाव के. गुम्ब' (गुझ्मम्) सम्बं (सन्ध्राम्) नाप प्रमुख्या बावह्' बाहुतुं प हुः एक्सकमा बेवे एतुं

वप क्षप्रमा पेठे छित्र बाव छ. वेम-खसमाप्तिको च वेदे-खरमदेव वम अभिनानाको है वेदन वर्ष छ भाषीद खेदे सिरिस्स्यमाण-श्री वर्षमान सामिने मन्त्रिको वोह बुं

स्तामन भागत्त्रक शाह ब्रु १ तप् बनोर पञ्चमोता त्वर प्रकटमां शीर्ष बाव क्ष ठेमत्र सप्य-मुच्य सार्व छंग्य अंग्ल प्रायत्त्रविकाम्युक्त 'य' स्ते बाय बनावी कस्त्य-द्वास्त्य-वृत्त्व पुरस्य-विस्स्य-पुरस्य माने बन्दमो एव छित्र स्था क बेग्न-स्स्यत् गुस्स्य वनेट-

ग्रहराती वाक्यो rator (at) (ममे) समीप छीप (इ) पीइ प्र (16) बाद्धी क्षे (ममे) मब पामीप श्रीप (ममे) दश्व करीय छीय-(ई) पोद्ध हैं। (k) राष्ट्र k (ममे) बोध पामीय छीप (ममे) बासीय छीव (इर) पद्यं प्रदे (ममे) बहुए छीए. (1) वसं छे (ছ) মলুর (ममे) कदीप छीप. (ममे) नमीप छीप (भगेः चोसीप स्रीप (ई) मन् प्र (इ) देल्ये प्र (बमें) रहीए डीए. पाठ २ जो बीजा पुरुषना एकपचन सन बहुबचनना प्रत्यची-पद्भ • बहुप० चिसे (से कि) इ. स्थ्या (यसूच) पातुमो रम्भ (स्प्) (स्त्र] निंदु (मेन्द्र) मिना काबी. क्ष्य (कार्) अनु प्राप्त का (१) कप पास (स्पू) रेक्ट्र केंद्र बार (बार) बाबु, बाबु मप्] (मूनम्) होतुं, वर्तु बित् (विश्त्) वित्तन करक निवार करता.

निया	
1	करिश्या
- }	बससे
1	जिमेह

		717	~·	
इच्छित्वा करेखि चितसे पासेएया	कसे दुखे	त्या चि	कहिएया श्रम्भ जैमेह नमह	पुष्केरत्या बोल्डइ मजेइ रोमसे
मुनग्रह		सम्पा	पिम्असि	इसिन्धा
गच्छेसि	दृसे		पासद	मणित्या
मुचद		रत्या	करिया	मुम्बेह
देक्केश्त्या	र्धस्		पासित्या	करसे
परेष	रमि		नमेद्रधा	देपचड
सीससे	भुज	ग् से	येव्द	कृ खिन्धा
(त) की है (श) की है (श) भार है (तमे) मारे (तमे) मिरो ह (त) नमन की (त) प्रमाप ह (तमे) प्रमाप ह (तमे) प्रमाप हो	छो क्रि	(লমা) দ (লু) দি (লু) হব	हे हैं है है ने हैं भाष बच्चे छा 'दन कचे छो है हैं गिरो छो	(तमी) मणोछी (त) बंबे हैं (त) ममें छे (मी) रही ही, (त) इच्छे हैं (तमी) केपी हो (तमी) कोपी हो (तमी) हमा हो (त) पीडे छे (तमी) इसा हो (त) पीडे छे

पृथ्व
'से' प्रत्यक के पानुने का 'सा' होत क्षेत्रक स्वकारणां स्वयं प. अंत साजुश्या-प्रशासकारणांसि सामसे स्वरं पर एपी पूर्वेच सामसे प्रत्यक्त प्रत्यक्त प्रत्यक्त प्रत्यक्त प्रत्यक्त प्रत्यक्त स्वयं स्व

कीजा पुरुषती क्यों पक्रकः बहुक ग्रामा मणसे ग्रामा मणित्या ग्रामा

जिया र्वा जियिको

सम्पारणा स्रवेग्या एक्ट प्रता में सारे ताने को को तो वांच करी, केम इसार इंस्ट्राच्या देवाओं का क्षिमा कार कार्य प्रत्ये को कर्षांट्य एक प्रता एक कींच बाव के केम-पुरिस्कोशी दिसानिक्शीओं

प्राप्तम्य ज्यां निवि चात्र छ त्यां तंत्रकृत्या निवस प्रमाय कवि स्वतीः इतके क्याप्ति स्वतः वाले साने को क्षेत्रे त्यते समी स्व वीर्ष त्या याः सम्मान्तः स्व के व्या तमी सम्मान्त्रमः इ वे वृं पकी इन्हें स्वी क स्व

क्या व-क-क. विद्याशभावनी विकास का प्रियम का प्रतिकृति के का प्रतिकृति के विद्याशभावनी विकास का प्रतिकृति के विकास का प्रतिकृति के विद्याशभावनी के विकास के वार्षिक के वार्ष्य के वार्षिक के वार्षिक के वार्ष्य के वार्य के वार्

=तित्येशरी (धर्नेक्र) सूदश्यवर=सूदीवर (सूत्रेरध्य)

बाक्यो

इच्छित्या रमेड करेसि वेदेहत्या वितसे इसेसि पासेत्या

रसेंद्र . चीचित्या इसेसि

भुरसङ गण्डेसि भुषद इसेस्या वंदसे

देवजेशया पडेड

सीससे

(त) क्षेत्रे के (स) करे हे

(ते) चाडे है (तमे) चाको स्रो

(तमें) मिशो छो (त) भी के (तु) नमन करे के

(तं) मुद्राय से

(तमें) वीमो क्ले (त) रसे 🖢

रमित्या मुन्बसे

र्स क्षेप्र (हु)

नमेहत्या

(त) वोड़े 🗎

(श्रमी) बदन करी छो

(त) निवे है

(त) इसे है

(के) बीचे के

(तमे) पीडो छो

itt (त) वदि छे (त) सजे हे

क्रीरिया

बद्धसे

सेमेड

समह

विकासि

पासित्पा

पासह करित्या

(तमी) क्षेप करो स्रो

रसित्या

(तमो) मणोद्ये (f) (d) 3 (त) समी 🖢

पुष्केरत्या

बोस्सह मजेह

पेवसे

इसित्या

मितरा

मुन्देह

दरमें

देक्ता

(तमें) यहों 📸 (f) (e4 à (तमे) क्यो क्रे

(तमे) बोस्रो को (वि) पीडे के

(तमें) इसी क्रो

(त) पड़े के

बीबा प्रस्पना प्रत्ययो

चतुमो काबुद्ध (जाभद्र) श्वत्यर करती. सम् (स्य-मन्) सम्ब क्रिक (मी) करीएक ह्रक्क (मि+सिन्) मिदेन कारा ब्राम् (सर) उत्तम्न क्रु भूष (प) प्रमानुं स्वारनुं १ विषयु (वि) एवई करो निस्टाइ (कि) का गम्ल क्रियु (वि) क्रियु

फास (खड़-न्पर्ध) सर्ध बुष (खु) स्तृति करनी फरिस 🕽 केरो जन्म पुष् (यू) अगली ९ वर्ष 🚶 (म) क्टेब्स पुष्पु (पू) दनित्र करत. लुच् (न) करन् रुष (६) कर करते सुष (मु) संमञ्ज सराज करते हुए (ह) होम क्लो बद्द (१५-वर्ष) वक्तुं

मा प्रकारता प्रचीन प्रशीन क्यांमी मने चूर्जी मादियाँ प^{द्} स्वके कारावेका क्षे. पत्नी क्षेत्र रहेका क्-क्-क्-क्-क् को सू वो विकासे क्षेत्र कार कार सहस्रात सुकार छ क्यूनात व वाव त्योर, पर्याना क्षेत्रका वर्तनी क्यूनारिक वास छे केमरे-क्सीती -इसन्ति (स्तन्ति) पद्मी-पद्म्यो-(पद्नः) संझा-सम्मा (क्रम्प) सहो-सन्दो (क्रम्) बंदो बन्दो

(क्यः) केपर-कम्पर (क्यते). मार्थमा बुक्ता बेमि, बेद, बिठि बुम बगेरे स्यो नाव ह.

विकार प्रस्ति कहानीने प्रावस्था पुरुष वाक्र प्रस्त्योगी पूर्व कि उत्तराम के केम विकार (किपोर्ट) केर केलन का कि विकार काने के जेम सबह प्रिकार (कपटे)

प अस्पन के मातुने केने का दोन तेनेस कमारनामां काले के

वेम-सम्भन्भन्मप्र-स्वयः स्वरः स्वरः

बीबा पुरुवनी रूपो

बहुवः सर्वास्त स्थलो स्विटे

सवार, मजरित अपन्ते मिन्नर स्वेदर स्व

धम्पनी संदर पन र्शनुक्षत्र स्थानननी पूरतो इतर इस्त याड प्रे कैस—

सर्व (भाष्य) धुणियो (प्रमेत्रा) निसुष्यस्र (शेको-सन्दर्भ (भाष्यम्) सर्दियो (येक्र) स्थ्यः) तिराम (श्रक्षः) चुण्यो (च्यः) चुण्यो (प्रम्म्)

ŧ

4500

पास्त्र म

क्यो	

बार्ध	पुजे(देवचेररे	कामले	
बम्मति	फरिसिरे	पीडेर	इवय	
निज्ञारप	रवेद	बीइप	त्सेर	
विरे	सुगरेग्वि	मत्रप	इस्ता	
वविवरे	विवय	वसन्ते	धुवर	
रकत्ते	पुक्रा रे	रश्चरित	रोबिमो	
त्रिवेद	पुनेद	करिरे	क्रिजसे	
भुषक्ते	सुर्वति	वितर	पुष्तिस्था	
सरित्या	पुनेर	दवर	वदिम	
कृषिरे	कहे निव	बु न्हाय	पुजे मि	
¥चन्ति	वाषन्ते	रक्केन्ति	विवेमि	
शुक्ररादी काक्यो				

सुविदे सहेन्द्रि इनन्ति शासन्ते		चुकेसि विवेसि
į	पुत्रराती काफ्यो	
(ते.) वादि के (तें भी) इकावें के (ते) बाददे के (तेनी) प्राप्त करें के	(तेमों)सप पाये हैं- (ते) चोड़े हैं (ते) वधे हैं- (ते) विषेत्र करें हैं-	(ते) नमें के (ते भो) पूछे वें (ते भो) मध्ये वें (ते भा) स्वीत वें

(तेयो) जिते थे

(ते) इसावे छे

(音) 林 (音)

(ते) एमे के

(ते) जाय है

(है) चाय के

(ते) शाम क्रे के

(रीमो) इसे

(ते) चरे हें

(金) 精 路

(तेमो) गुंहाप 🖣

(ते) पोपच करे।

(तमो) क्षे 👺

(ते) स्मरध सरे

(तेनो) रहाई करे के

(ते) स्पृति करे 🛊

(ते) सामके है

(तिथी) पवित्र करे छे

(तेनो)मान्द करे के

(ते) बारका चाय है

पाठ ४ मो ऋर्बनाम

उपमोगी युष्पदादि सर्वनाममां तैयार अपी

एइवधन बहुधबन

प पु॰-ई सह (बहुम्) हुं । धान्द्र सम्हे सन्दो (बबस्) अने

तुवने तुवहे तुवहे (बूक्र्) धने बोन्यु न्तु त तुम (स्वम्) ह त्रीपुण्नसंसी (म) वे ते (ते। वे गे

द्विसंबदाबाबक शब्दनां उपयोगी तयार को

प्र> क्षिण क्षिमण । दुवे दोषिण दुष्यि । बहुद्रण } वेडिया विष्या दा वे-वे (क्रि-त्री) वे

ताण् धातुनां सपूर्वक्यो

पद्रययन बद्दयम

कालमो वाणीय बाजम्

do do काषामी काषामु जाणाम माणानि

जाचिनो नाचिम् द्राजिम

वाचिमी वानिम जानम वापेध

नाम् इतिरया ची पुरु बाजिस काजेड ≡ाचेसि वाजेत्या

कापसे मापारचा बाजेरखाः

बाचिन्त જી દુ राष्ये राषिट बापर

बार्थित बार्चेन्त जाबेरे हामंद्र हाविन्ति, बाजिन्त आवारे बाधर.

धातुमी यस् (वग्) होतुं, स्तुः रक् (रम्प) रेक्ट्रं आसम्ब भएप (वर्ष) अपन कर्तु भंद दर्श चेंच् (१४) अनु केलहे **सव्यू (श**स्) वेस्तु वच्च (स्त्) च्य च उस् (उपन्) त्वाव करवी, बदुद् (सर्-क्) वर्ष्ट्र होई-की वर्ष वछ (राज्य) श्वयस्य गोधा करवी-डप्प (इ.स.) चोस्, कोर करते. बोसिर् (म्युरहर) स्वाप करते चप् (स्वत्र) स्वाम करनी सवर्ष ो.(स्थ−किष्) कृमा सदाम् (बान्द) बादर करवी बोप्पड् (मड) क्षेपम् सम्बद्ध-सिकार् (श्वार्) स्वतः रिनाय कर्य **फरती प्रशंता करवी-**वैष् (राम) स्वत दर्श संबर् सर् (स्) सह स्य बाह् (बाब) पीक्ष्युं करवर्षु साद (बड्) ब्रोहें सम्ब । (भ्रम) भद्र 🔫 साइ (शर्) धान्तुं चुनके | मूलकरती कुछतु करतु सिम्ब् (विम्ब्) शीवनुं क्टमान बाह्ममा आस् बाहुई कम सबर्वेचन अने सर्व पुरस्तेनां रकृष" प्र**ं**दन के विवेद-शिः प्रस्तवनी साथै कि एई कर तिक बात के एक मि मो स अपनोर्स वादे सिंह स्होर स्हा देनी बात है

१९मस् चातृत्री द्वयो

प रुवध न	वहुबबन		
प० पुरु सिंद सरिय	महो मह भरिष		
¶० प्र० सि	भरिष		
त्री० पुण् सरिच	वरिय		

भाषमाञ्चमा सम् धातुना इपो

परुष्णव	य ह्यस न
पञ्यु•िम श्रीसि	मो
बी॰ पु० सि	इ
बी२ पु० मरिच	संवि

	माइत पास्पी	
वादं चर्चेमि ।	ते निपरे।	धम्द्रे भण्डामो ।
सुरुद्वे दोविष	सम्देविन्मो।	तुम्द्रे सुरुवेद्रः
वहिरवा।	हुग्हे बन्देरत्या।	भक्तो फामामी।
ते कुप्पेन्ति।	त वछसे।	तुम्धे चुनकेरस्या।
स्रोपक्ष्पः।	सो रफ्छर।	ते दो पासेररे।
से पिविटे।	अग्द्रे थी हेमु ।	इं चिट्ठैमि।
तम्हे कटेश्स्या।	ते परेग्वि ।	सम्द्रे दुवे चयामी।

१२ व्यास् बाहुर्य संस्ट स्वार स्वीने प्राप्टत निवसानुसार फेरचर करी रूपी बाव हे बेंबके-

संग्र प्राप्त स्थापित स्थित प्राप्त सम्बद्धाः स्थापित स्थापित

श्रसि-श्रसि सन्ति-मति श्यापे को या प्र

धमह बिद्देगु । ते को कियेश्ये। क्ष किक्स । ताहे बेडेर । हे दुविस रक्कंति। हरहे के करिया त सम्बेति।

14

तं राष्ट्रमे ।

तम्मे बीहेड ।

त मणेसि ।

स मध्या ।

संबद्धा

११ अगरो सरिया

थम्डे पश्चिमः।

इं बासिसमि।

गुजराती बाक्यो तमे बांका करे को बसे इसीय श्रीप क्यों कोश्य धीर

ते को कोपडें है हं क्यं प्र-तमे के चीको छो

तमे तसस्कार-दरो स्मे

ते सदत करे हैं तमें साधी छो बचे हे स्थाप-ते सीवे छै.

क्योव कीव तमे भाषो स्मे **भग्ने त्याय इ.रीय लीव** तमें वे विकार-

रेभो वे बड़े है तमें बेसी को तमें बनारही को

क्ये ध्ये

भारे के औप हेरपाय कर्व ही 8 14 G ri 🕏

तेमी बयाने है

१३ प बने को कड़ों नेहक स्वरकावे से संवित्तरी नवी आसंविकसी गरिंह (शासक्याम इदानीस्) नहस्मिहके आवेंग्रेतीर (नकोब्वेपने आवश्यस्याः)

तमे बोधो स्रो तं इतय यामि 🕏 तेको के की के

ते वृसंवि ।

तुम्हे पूसेद ।

है साहिति।

तमें महकी छैं

तेजो रोच बरे 🦫

तेनो निर्देश

तमी बोच पामोधी

तमे के कनहीं औ

नमें मोजन करीए-

तमं के को

ते जोवडे 🕏

नं पीडे 🕏

सीप

पाँउ ५ मो

धातुमो.

वर्ष } (बाद) वातुं, कातुं. वाद्य) (बाद) वातुं, कातुं. गा (व) गातु गिका (के) रणाने गानुं, विक्र वर्षुं, कात्र वर्षुं वा (य) व्युं, व्यान कार्युं गा (य) व्युं, व्यान कार्युं शा (वा) व्यान कर्युं शा (वा) व्यान कर्युं गातु	१४ ब्रा. (श) यहन आपर्यु चेर्यु- घा (श) यहर्ष करमु- या (श) छेरबु अस्पूर्ण या (श) पीतुं, पन करनुं हिस्सा (स्ते) आति धारपुं- ह्या (स्ते) केरबु- ह्या (स्ते) केरबु- ह्या (स्ते) केरबु- केर्यु (से) धारपुं- केर्यु (कर्मु-सी) अस्तुं- केर्यु (कर्मु-सी) अस्तुं-
	प्रवर बगारती समय सा में। केह

ाप चान अ केमकें....ं वैद वैक्ति दिति वैसि वैसि वैस इस्मविक्यो पन मान के

देश दैनित दिति देखि देशि देशु इत्यादि क्यो पन यान है १५ क्षेत्रकार्य ने बातुजीने अन्त इ.ज. के ब्रह स्तर दोन की

भ शिक्षामाँ वे बाह्यमाने बन्त इंड के सह स्तर होन या ये बाहुना कारव हवे। यूनरे के के दिख्ये बय्यू तथा डे मेर बाबू नमें सही। बर्युण के जेलके—

श्रम् करे इसमें अपर्	राथ के जेसके—	
इसे ए.	डमामप् भद्द (दु)	मानाबर् कर्(ह)
Pr (=0)	न्धर (द)	कर् (ह)

 प्रे (ग)
 व्यक् (द्व)
 कर (ष्ठ)

 कं (ग)
 वर्ष (ख्व)
 चर (व्व)

 कं (ग)
 प्रव (च्व)
 चर (व्व)

 कर (ग)
 प्रव (ग)
 चर (व्व)

१ रसरान्य बाद्यभोने पुस्तरोक्त अस्त्रां क्यारखं अपनीनी वृर्ते

सर् (त) तला वर्ष वि स्र (r) शल कार्य की-

हो बातुनां हवी

बहुबबन

तर (त) कर्ख

बर् (४) बाव कर्त

बर् (४-४) वरह, क्वंद बर्स

द्योगो दोस दोम होह होइल्या-

^{१९}ोवित होन्ते होस्रे

'श' प्रत्य तथावरानी "होडा" संस्ता को स्ती-बहुरकर

पद्भवन प्रवद्भव द्वोधिम

पक्षवन होमि

द्दोलमा द्दोलम् द्दोलम

होमामो होजाम होजाम

होत्रमी होतम होतम द्रोपमी द्रोपम द्रोपम

होमामि होपमि

१६ निक्म १९मा बमाने तेषुक स्वंत्रतनी द्वादो स्वर इस्त थान स्वारे हो भीनत बहुन्ति ज्ञाभीनत व्यक्ति

बीञ्च शिख सीर पुरु कोट

do de

बा प्रकार विकार सकतामां वाने के.

सर् (व) बीव पन बरश न्तुं.

द्व (g) शेष क्यो.

कहत् (ह) र्वतान्तुः सम् (पृ) क्य वापतोः

बाद (खु। कार्चु, पानु

	111	
ची पु० होमसि होतसि होमसे जी पु० होमर होपर होयर	होसद होस्त्या होयद होयस्या होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य होयस्य	ा होरटे होस्स्टे
साहे दोविज बाएगो। साहो बैपग्ना। दे ठामि। साहे दोपगो। साहे दुवे हालु। दे देहोस। साहार्थम। साहार्थम।	पुरुदे पुरिष्य बापस्त्याः ते बारिः। ते पालिः। ग्रं सास्ति। इ. प्रदानति। गुरुदे विश्व वेदरयाः। गुरुदे विश्व वेदरयाः। ते पामसेः। ते प्रवेदे।	इ तरेति। सह पानि। सन्दे वे ग्हाम। सो ग्हेबेर। सन्द इवेगा। गुन्दे इरेद। स ग्हाग्द। ई तानि। सन्दे बरामो। सन्दे वे तापमे।
तेथो थे बसा छै तुं जाप छे- तेथो के माय छे तेथो छेद पामे छे ते बसी रहे छे-	गुज्ञपति धानवेतः ते नाय छे ते गाय छे द्वं करमार्ज छुँ ते बह ज्ञाय छेः तेमो ये बाय छे	ससे वे पीप श्रीव. तेसा से इरे छे- तुंस्तान करे छे तमे ये पोषो छो

समी स्झाति∽

पामीप सीप

तेमा स्थान मरे छे

समे वं प्रकाशीय

र्श भाष छे-

हेमो जापे 🕏

बमें वे भारव

चरीय धीमे

तमें वें भाषों को

विके संवादो की

बमें तरीप धीप

ते प्रकारे 🕏

तमे उत्पद्ध थाम

तमो कोप करो छो

अमे बहीप छीप. हमें वें साका छो हैं यांप छैं	तमें पाओं छी तमे के क्लानि- पासां छो	हों इं स्त्यच चार्ड हुं
_	पाठ ६ हो	,
ী প্ৰসাৰ মাৰু ব	पना क्षां क्षांच्याले विकास≆ अने विकास अपनोते स्थाने प्रश्न	-भाक्षाचेता चातुओसा
बाव के सर्वेष बन बन्ने सर्वे पुरस्का सरका इसक्	ा प्रवर्धनी पूर्वे स } इस्त्+प्रश्नकाल्यका } इति-वाल्यक्रिय हो इस्केलिस स्वादि होद विकासक्रम, निवर्ण स	सेग्ज इसेज्या श्रमा इतिक समाह
मद्याभीने पुरुष यक्षा निकरण व पुरीन निका	भोषक अपनी अधावत हाने के करा क्षेत्र-पुरूव त 15 जनाने हस्य दहर	चित्रं एक श्रमा होत्रहर होत्रमार
हरका क्षतिक क	ि । ३ जनाय ६५४ - १५५ विकास का साम से	. Me cac grac

	होज-हो	क्या सँगनों पर्ताक्रयो	
	प्रस्य	सहस ः	
,		• •	

पञ्युकं इरोक्समि द्वीक्रमी द्वासम् होरहमि, होग्बेमि दोस्य

होरकामी होस्रामु हास्राम द्वीतिक्रमी दाविक्रमु दाविकम हारक्रमी होउजेमु हारजेम द्योग्य.

शास्त्र EITHE

दोउना **बी**२ पुश्रद्धात्रक्षस होत्र प्राप्ति

द्वाउजेसि शेक्स

दोग्र दोग्या बी० पु० दाउहर

दोप्रचार दों।जेर.

द्योगवय **E178** द्वार्गमा

रवरान्त्रवाद्यभागी

भावे स्पर्देवन को

हार्ग्डन्ति, दार्ग्डन्त, दार्ग्डेक्रे E173

होध+उत्रन्दायक दाध+उत्रान्दायका

हारिजन्ति हारिजन्त हारिजरे. क्षेत्रज्ञा

दावित्रस्याः

द्राग्जरत्या दाउत्राहस्या

tiin,

tirut. श्रीमतन्त्र श्रीमतन्त्र साम्बद्धः

बारतास्ति बारमास्ते बारताहरू

क्षोण्डाद दारजेरया

द्योग्डेट दान्तरस्था

पुरव विक प्रवस्थानी पूर्व 'का' प्रवस्

यक्तव०	allao
य० पुरु होपरहमि	होपउन्नमा होपउन्नम् होपउन्नम 🗝
शोपन्त्रामि	होपञ्चामी होपरहास होपरहाम
शोपरकेसि	हापरिवर्गाः होपरिवर्गः होपरिवर्गः
4,	होपन्त्रेमो होपन्त्रेम होपन्त्रेम
होपरव	होएक
होपरजा	होपण्डा
बी० पु० होपात्रसि	होपञ्चह होपश्चित्रया
हापरशसि	श्रीपण्डाह होयग्रहेत्था
शोपाञ्जीस	होयज्ञेह होयज्ञास्या
शोपात्रसे	होपजीहत्या
	होपरजा हत्या
दोप 🗷	<u>होपन्त</u>
gluzzi	होप्रज्ञा
क्षी॰ पुण्डापाद्वर	होपानित होपानने होपानरे
RIMINIX	Blugnifen einenniet einennige
कारणाह कारणाहरू	
	होपात्रेसि हापात्रेस्त हापात्रेस्ट

वाप्यक्षः, वाप्यकासम् वाप्यक्षमः वीप्यक्रितः, वाप्यक्षः, वाप्यक्षितः वोप्यिकस्य वोप्यिकते, वोप्यक्षः वोप्यक्षः वोप्यक्षः, वोप्यक्षाः

देवसाय आहे हे

१० मा रुपेनी क्षापेन अञ्चलहरूको नहुत्र काल देखने

सीक् धातुनां इतो

सर्ववयन सने | धर्वप्रकार बीबेरज सीधेरहा / पत्र-उत्ता नमाने लारे होसि होशसि होशासि होपसि

देमव श्रीविम श्रीवामि जीविम स्टारि पूर्वमी पाएक स्पी वान हे घातुमो

शब्द (बर्च्) पून्तुं गरिष्ठ (पष्ठ) निष्य

कीष् (भीष्) नीरम् शुक्तः (पुत्र हुन्यः) कन्द्र

बह (रह) ध्यतं राज्यं राज्यं तप् । (७२) प्रवर्ष 211 विस्तार करनी

सो सच्छेत्रज्ञा। 🕱 सिकापत्रज्ञामि । सम्द्रे जीवेन्जा स पिवेशकः। इत्था । द्वारते वे मिस्राय-स चप्रदेखा।

त विष्ठेक्ताः

चयाः (त्यवि)

१८ धन्तनी भारिमां त्य नो वा नने जंदर होत को हा नाव के एक बेतरस सभ्यमां स्थानो कवा नदी नवी चामो (खाक) मस्बद्ध (बायवि)

तं गरिद्वेसि ।

(तक्) देवन्तुं चैत्तुं शहस्य } (वस्न्-भश्त्र) गाय--

new (un-urale) whee

सिंख (सिन्द) छारते हिन्ती सोरन्। (रेन) रान्तु पय सित्रम् (विष्-विष्) सिर् क् सद्ध (पद्) यस नगतुः सत्तरे

प्राष्ट्रत शक्यो तुरहे दो मिकारत- तु नापरवसे।

ं क्षारस्था।

पण्डमो (क्थरा) वासं (रेल्प)

10

तमे हार्हा

चम्हे दो होज्जामो !

श्रामे दक्षिण साप

विश्वमो ।

स दुरशेरता ।

तं गाओं चि।

तुरहे सम्बेरमा ।

सर्द्र प्रकोषता। ते सस्सेरमः।

तुरक्के पाएउदाह । से प्रवे नेपानदरे। धार्वे संदेशका। सुरहे पेपन्ताइ। तुम्हे बुवे बहेद । बाहे सोस्डेग्या। मो पास्त्रहाइ। शाहराती पाच्यो-तमें प्रकाशो छो-ते वे सिद्ध याय छै तमे में पुद्ध करो छो तेमो सा बार्वे हैं-स विस्तार करे के स बाय पाने के क्यमे प्रधा∙रुपैय र्गे बमो पढ़े 🕏 तमे इस को छीप समे पीय क्रीफ तमे प्यान भरो छो तमे ने छोटा छो हे बरपच यार्ड है. तेमो गाप 🦫 तमे अत्यन्त यामो से धारब करे 🏝 ते जापे छ तमे विचार करो 🕏 र चन्ने से तेमो आय है स्तरे हे स्टानि तुं धाद पाने छ ते ग्दानि पासे छे तंत्री वे छे त्रमो प्रमा रही 🕏 पामीय छीपः प्रभो प्राज्ञभारको अने अंजनो केल्य क्रमा हो। इस. १६ चे भी का रुलीका विकास वेश प्राप्तानी विकास से बाद से हैं 'रू' जने 'संमि प्रदोष क्यांबाद **छे** । 'सि' वने 'सो' अपनयी पुतना नका बाहतो एउ। वे उक्का न्य अनीम पूरक करवा

- भी क्षेत्र 'प'त्मक्षक क्षेत्रे न याचे तेचा क्षेत्रमञ्ज माइक्षेत्रं रणे मापो.
- भा रगे झोळ्याचे जाबित्या अच्छेरित गव्छिति
 इसिटे इति इक्ज इति गव्छित्व गच्छेरता
- भ्रम् बाह्य स्वो क्यांची
 भ्येत्रास्य अने स्वरास्य बाह्यभेनां स्केबी विशेषका बहायो
- े भावनास्त्राच्या कर्म स्वरास्त्रा बाहुकामा स्थाना स्वराह्य क्याची १ प्रवास स्वराही क्रोप क्यारी साथ ते स्थान्त स्वरित क्याची
- 'तक क्ये 'क्क्स' नी दूबना का मुं मुं बाव !
- १९ स्वरण्य क्षेत्र व्यंत्रमान्त वाह्यकोमां 'क्षण' क्ष्में 'क्षणा' को उपबीप केवो शिते बाव के ती द्रव्यान्त क्षत्रित बनावो.
- १६ भी अने पृथ्य बातुनां संपूर्व का बचावो

उपसर्गो

(1) परवर्गी बाहुओंनी पूर्व सुकरामा आवे के अने दोनों बाहुओंना पूछ अभीना केरकार करी कोइ ठवाने निकेष अर्थ तथा कोइ ठेकाने विचरीत अर्थ अने कोइ ठेकाने स्त्रों को अर्थ बतावे के

सह } (वति) इह नहार वटिशन सहशक्तम्≔महक्तमह मति } ते हर बहार य,न के ते उत्तर्यका करे छ

महि । (बनि) उपर जनि मेटवर्षः यपि । सदिशविद्दः-महिमिद्दः ते उपर मिते हे सहिषस्य-महिमस्यादः ते नेसने हे

सतु (मत्) मात्रक शरह शरीय। अणु+पदाहरू सतुमारकार्-ते पारक बाव ने अणु+हरू-विज्ञहरू-ते -वतुसाय करे हे (श्रमि) सम्मुख पासे आमि+स**्कृ**च्यामिग**स्कृर**-है रुखन बान के ते गसे बान क

(भर) भीने किरस्माट् सव+ध्र्य=सवयस } ते ग्रेने भो+धा=कोपरह वव+मव्×अवगवेद टे तिस्प्रा at à. च्या (भा) एच्या दिल्लैन सर्वाता बा÷रान्ध्≔तागच्छेर् वे वारे के (अप) विपदेश पत्तु, सव+क्षम्⇒कवद्यसह कर्म्सः श्री+क्रम्≔सोकसह }चर≉ ृ से पाकी चप सर्≔गपसरा को÷सर्≃गोसरा 49 4. ^{१६}ड (२६) वर्षे, वम, व+सव्यक्ट्र-डगाव्यक्ट्र-स वस व्यव के व+का⇒बहाद~ते वर्षे के. १९ व (अनव व्यवस्ति कोए वर्षक होबाबी) क्षप्रस्ति स्त्री में क्षेत्रम माने ते प्रामः देवतान के से व्यंत्रम देवतान के ये व्यंक्त को बक्तो दीवों के बोबो कहार होत हो (Best)

इस नो क्या हुनो हु हुनो इद्ध बच मो त्या दय मो व्य बन्दार-बहार-बहार निम्बरेह-निश्चरेह-जिल्लादेइ व+वरा=कावरेर-क्यरेर

फफ नौ प्यक्त क्ष्म नो क्ष्म खन अर्थ हता

प्रकम वाक्रको से वर्तनी (विश्वानो) पहेको **लगे** (वोजानो) त्रीनी अनुक्रमें शुक्तन हैं. (अस नी क्या यह नी का कुछ नो अह

पान (उप) पासे	उत्त+गरम्-उत्तपस्यम् ।
मो	सो+गरम्-उगरम् । ते पाप्ते
प	द+गरम्-उगरम्
for 1 (fe) store	किश्चान=कियान) ते को स

। तार्म क्यू=। तास्य इ. । ता इत्र क सु+मक्यू=जुमस्य इ.) ति। बद्ध=तिवृद्ध इ.) ते तीचे पहे के ਜ਼ ਸੀਵੇ

(सा) उन्हें परा+सय-पराजयह-ते हारे के प्रह्म परा+सय-परामवह-ते सामन रमांत क प्रका+अय-प्रकायह-ते माणी बान ते

परि) (वरि) विश्लेव, परि तृष्य-पितृमा - ह विश्लप् वार्ध वा प्रक्रि । परि-वार्य-परिवार्य- वरिवर्ण करे ४ । वारे वाहा परि-वार्य-परिवार्य- वर्ष वारे वाहा मटके वे पदि-पति । (प्रते) सहः, पदि+सास्-पदिभासद्-तं सर्वं शैके छः. परि-पदः । कहः: पद्+साय्-पद्सावद्-तं प्रतिष्यः करे के

ष (प्र) आयक्क, प्रकृषे प+या=ययाद्व-से आयक्क काल के

प्रशासन्प्रवासेश-स विश्व प्रधारे हे.

वि (वि) विशेष, विवेष, वि+याणू-वियाजेइ-ते विशेष वार्थ हे

विरोक्त विस्मर्=विस्सरः र ते मुक्ते हे बीसरः

वि+सिक्षिस विसिक्षिस:-रे जियोग पामे प

सं (तम्) वार्षे रीते सी/गच्छ्न्संयच्छ्य-ते बार्षे रीते सके है.

* निर् पि (बिर) निषय निर्मित्रिकारितिक्रियाने निषय निर्मे के भावनय विर्मेशितिक्रियाने विषय करें के विरेश निरम्युक्तानिरिक्क्षीय से स्थाप करें के ते निरीक्षण करे हैं (5१) पुर्+अंय-पुरस्केष्ट्-त इ.च करी वर्तने के

इ क्या तुर्+सब्-पुस्सदेर े ते इन्हे तहर करे के प्रशान

दुर्+श्रामार=दुरामार-इन्य वाचरव तुर्श्वाकोगव्यसकोम हुने देवार.

धपसर्व सहित धपवीगी घाट

बार्+थर् (अफ्रि+पर्) दीव

बद्ध+सर् (बर्-स) बर्*पस्* धाद्यि+प्रकृ (वक्षि-१) नन्त्र ग्रहि+कस (बसि-कर्) धनि-

कवान्त्री स्रतिपार क्यावती बबुशकाष्ट्र (बद्धशक्त) आहा

कामा करनी एक्टा वरवी ९ निर्−ह्यू का क्वरार्थना रेक्नो विकासे स्पेत वार ^{हे} पन रेपनी पत्नों त्वर नाने हो होए बान नहिः पनारे रेपनी कोप चाप भीड़ त्यारे प्रक्रीमा क्षेत्रमाने रेफ माक्री व्या हे स्मेवन वैदराय के क्या ---

विद्+सहोत्री सम्बो नीयही नियही-तिर्+**नेद**=निन्नेर् विर +वंतर्द-विराज्ये.

२१ झू+कडोन्युस्वडी कुत्रहो, इसहो, हूर्+कछ व्हडस्त& इर+किनो=देक्षिको प्रक्रिको (प्रक्रिक) वि २ प्रामी ⁽ भाहर (भा-ह) बाहार करें। च+दे (बद-बी) उद्यु विभव्य (निन्द्त) संस्थात प+माब्=पाब(प्र~माप्) प्रस्कुं, प+विस् (ब-विष्ट) प्रदेश करको-प्रभार (प्र-इ) प्रदार करने

माभारक्(मा-गर्-धक्त) भारतु

मार्ख पराभवद्य (परा-क्) केरबार बधे बाइति करती. परि+द्वर (परि-द्व) स्वाग करको. बाहरु (वि-श्रा-ह) शीमनु भोलावर्त

यस्त्रे विभिन्न व्यक्तियसेका। स्रो निगावेशः। ते को बाहरेजा।

वं पविसेखा। थरहे परावक्तिमो । तुम्बे वेषिय व्यक्ति। तु चणुडानेरि

विकर्णें वि+यस् वि–कम्) विकास गम्लुः विशक्तव्य (कि-क्यू) विकास दश्यो रोज

बि+उदय् (दि-इ) वनास्तु

विश्वसम् (विसम्) विकास बरवी भीत करवी-सिमहर (वि इ) विहार करने आवेद करने. क्षेभव**रक्** [सं-पम्-एक्] क्**न्तुं**.

ध्यान्तर (सं-४) पंदार करते तुरहे दुग्जि विगयकेश्त्वा तुम्मे दोविय विससेह ।

हे परावदि । ते विजयवैस्ति । इंपावेका।

ते के विषक्षेत्रता

जम आलीव करीए क्रोप

तंसके के

तमंत्रे भी कालों को तमं प्रवेच करो की

तं सम्बाध करे हे

भ्ये वनसीर और वे बार्यात करे हे

तेजो वे अपन करे थे तमे प्राप्त करों के।

तेओं वे अतिवार क्या है है-ठमे विकास करो हो।

तेनो बाद हे gi fleght d बन वे बाह्य करीए छोए.

त भनवरे छ वने सऔर श्रीप

तमो संताको स्रो



पाउ ७ मी

सद्वारास्त नाम

^{२२}पडमा सने बीया विमक्ति प्रापन-

पक्षकमः बहुदवन क्षातन | प-सो[प]¹³ सा प्रक्रिन | सी-म् सा प क्षातन | पञ्ची-म् र हैं जि.ह]

 जदारान्त पुक्तिमां पत्रमी विमित्र मित्रकत स्वरादि प्रत्यको क्यावसी प्रको स्वर बोपाव इं सेमके--जिल+मो सिप्पो

१ परान्तानं स्पान को तर्व नेकाचे पूर्वना व्यवस्थानं स्वास्थानं स्वास्यास्थानं स्वास्थानं स्वास्थान

 नतुषक किंग्मी हुँ हैं जि अपनी क्याउता पूर्वनी स्तर धैप नाव के दश फळ-मईन्फळाई, फळाई फळाचि

२२ शक्न भागमां वात निर्मोचको माने प्यमा (असमा) चौना (क्रियोना), तर्मा (त्रुकेना) चठान्ये (प्याचे पंचमां (पञ्चमी) छट्टी (पड़ी), वत्तमी (वर्षमी) वा चन्चो अस्तव छ

२१ का ए प्रत्यन तेमन शीक एवं आवा क्षत्रिक्ती जारेका अन्यवी जावमान वरसम् के बदा धमके मनके सहावीरे.

16 क्यो.

शिया-

जिला जिले

पायव (प्रदर) सार

पाव (पार) गरी

कियो किये

40

ची० Prot

जोरमाय

बार (चीर) चीर

इव (क्र) का मास्ट

नाजार नाचार गायाचि щ वार्ष ची ० श्रम् (अभिय) विक्य (किन) सत्त्रोक्त हित किन बाइरिय } (श्राचार्व) भाषार्व भाषरिय } सरवर्ग-बायब (मारा) हरही. तव (स्पन्) ज मास (मध्) भोगे. वित्यवर (वीनक्र) चेर्नक्र देव (देव) देव डवरसाय-क्षीच (सेप) सैनो

पुत्त प्रत्र) प्रत्र केली ब्रावय (कन्द)^{१४}ाप पिरा २४ क्रमणी अवर सरावी **को क**र्त<u>न</u>य ^अ ब-य-य-व-ति र−क-त व स्पत्रमोनो अञ्चलनो कोए यात्र के एक अपने की न वाच क्रं सेमज अवस्त्री पक्षी अवर्थ होत्र सं भ नो प्रत्य व कान के कीड़ देखाने का मेर व पर

414 W 311 ~

क-मोशो (क्षांका) | क-त-रस्ते (रज्ञायः) | प-रिक्र (रित्रः) क-वशो (क्षाः) | त-र्या (वर्तेः) | क-स-रिक्रोमो (विशेष क-सर् (क्षां) | क-रशा (स्ता) | व स्राप्तमं (स्तामम

थ मो ब-पाना (शतः)। च को य-लाइबो (ब्राइक)। ब्रोको (ब्रोकः)

प्ररिस (५२०) ५२३ मोर (मपर) मोर रक्ष (स्व) स्व बास (बाल) बाह्य छोच्छ बुद्ध (बुच) वंक्तिः राज (राज) विशेष नाम श्रयण (मरत) बामदेव द्धक्रेड (बस्त) बाहरको बाटकः श्रम (मन) अमिमान भर erecs (TH) Bit. धास्य । विक्रोस (विक्रेन) विक्रीय (AISTA) MISTA बमस्य 🖟 सभाग (धमष) साबु, धमपः सुरुष्य (भूग) मृत अहारी. मीस (किय) किय (मधुनद्धिम्य) राष मधर (गवर) मंगर बारम (अन्न) शेष पारश्च क्रमध (क्राम) क्रमह. माज (कान) स्थत. कतिया (क्रम्याय) क्रम्याय धार (राष्ट्र) वर बार्ख^{२ ६} (दोन) दान शंस (४५) न्य पन् कच्च (चर्रम) गरन क्रिजबिंब (क्रिनविज्य) विनेधरवी ≖ तमा बह (शस्त्र) माच १५ व्यंक्त सहित स्वरमोदी व्यवस्त्री धोव बदावी श्रव स्वरमी पूर्वना स्वर धावै संवि वदी बद्द वेदा वैसके-विधानसे (निधावर) रक्षितरी (रवनिचर) प्यावई (प्रशासीत)

जन्मार-कोर ठकाने विकास संवि कात कं कुंबजारी **क्रं**याधे (क्रमध्यरः) कविदेशी-कश्चिते (क्रवीयरः), स्वतिशो-क्रिको (स्टब्क्-), कोइआरो कीवारी (कोइकाए-),

२६ घनना अंदर ब्रह्मुच को मी च क्रम के रीमान काविमां को होन तो विकल्प की ब्रह्म के ब्रह्म क्रमां क्ष्म (क्षम्म) सम्म (क्षम्म)

वच्या (रच) प्रदेश प्रवयक्ष (प्रवचन) मानम स्त्र ्रे (वालंड) बेखह क्रम्बर (सम) क्रम्बर

श्रुसाम (शूरन) बाग्यन वरेतं

त्तरं (ठद) ठे-**育^{えを}(卯() 礼**

क्ट (विद्यू) क्षेत्र

भेत्त^{१,3} (नेत्र) कांस नेत्र

शक्तास

इम (इस्स्) वा सदब (६४) तर व्य

मुद्द (सन) थेराई-

बस्य (बन्न) कर्याः सिख (विव) करनाव, बंबड, मोब-

सुद् (इवः इव

रक्य (रब्द) स्ट्री चीरी.

सुच (दत दत पान

दम−पत्त (एकर्) वा 'श को 'पर्म' सं दुर्जिस्सा प्रकारतं एक्पणस्तुं अनुक्रमे स क्षों अने एस पसो का यन अ

क्ष्मक नर्पश्रामीतुं प्रकाति बहुचकतः यः प्रत्येष कपाववाची वान छ क्षेत्र सच्चे के पए, प्रशादि

२ ०. येश धाम करे रोना वर्णशब्द कम्पो पुर्तिनामा का विकर्त बाराम के व नीता-वेताई नवचा-वनवाई ३४ प्राक्रमणे समस्य ध्यासानी है। बार है । उपा॰---

ताव (ग्रावन् जाव (बानन्) वय । बनो (नवन्) ताने (ग्रावन्) तत्र । (वयन्) क्रमा कर्मव् २५. प्रस्ती आवित्रों य होन ती 🕱 बान 🛢 तना अस्तर्क वड़ी बा जाने हो बोद डेमाने बा बान है

क्ली बढात) कही (बल-), बाद (बादि), संबयो-संबोधी (संबय संबोच), अववती (अववर)-

राष्ट्र (बन्ब) धीर्तुः

क एमर्ट्र न्तुंनर्रान्तमा प्राठ ए जने क्षिण एक मां किं 'एं मा बात ए शरीन वर्ड सामराज्य वर्डनावर्स पुल्लिय जने न्तुंबर्सकार्य को सम्मान्य पुल्लिय जने न्युंबर्ट्सन केवांव बाव व केटकीय

धस्ययं

मका (वप) काह. यि पि (वरि) पण च रे प भ (व) अने स (व) कही. अभ्य क्—पत्र जिंग सर्वे बचन को तत्र विश्वविद्यां तमान रहे के

यातुमी वरिस (१९) ^{३१}वरतन । उर

स्तीर्ध विदेवता क त आगत बहेवामां आवदे

वरिस् (इप) ³¹वरण्ड जर्म वस्ति (उप-रिम) उपरेक करिस् (इप) नेग्रु जर्म वारो वाराज वस्तु परिस् (स) देवतुं

विरिष् (रा) देवर्षे व्यक्ति व्यक्

क्किंदि वाह्यजीना ऋषी अरि वास के वरिष्टर (वज्रति)

प्राच्छ बाक्यो

पुचाऊ हाचि विविति व देखा कि तंत्रमं स्ति। मुक्ता वरयार्च बन्धेर । मुहद्रको दुइ मिन्ह । देवा वित्ययरं बामिन्दि। पण्याह वहेहरे । पसा सुद्धं पमञ्जेश । सममे नपर विवरेत । प्यासेर 32 बाइरियो । आधरिको ^{३२} सीक्षे उवहिसा ^३ धर्ण कोरेद कारा [।] सो तं धरिनेतः। व्यापको अञ्चे पीक्रेड । थयम वरिलेड । वेबा मध्ये विज्ञीवरे बर्ट मोर्गमहकुचेदा च सिचेतिः प्ररिष्ठा किये वंदेहरे। रामो पच्चार उद्देश। दान तवो प मुसमें। स पोरक्य विण्डेर भारे प तुम्दे प्रवच्य कि जानेत्र है श्वस्त्रं गिक्ट्रेमि । परं पर्भ रक्कीर : शक्षं पाच निकेमि । रहा चक्के । सम्बो अयो क्षात्रावसिक्काः। अपने नार्थास्थ्यामी । रामो सिषं सकेर। सम्बे वर्त्याचि पमञ्जेमी पाना सर्वन पानेन्ति। ब्राह जिल्लिंबाई तार मयणो वर्ण बाह्य । सम्बाद्ध वंदासि । १९- 'स वर्षनी पूर्वे अनुसा पक्षी 'अर के का' क्षिताको कीर प्ता लार काम्भा होत को भाँ वर्णना स्वास्था प्राप्ता भाँ काल है

कैनके--(भाषान) बाबरिन+ओ-जानरिओ (सर्) मन-मनो (सनक्) क्यन-वचनो (मार्ची) सारिवा-सारिका

११ ह भारी दुरमशोक्त अस्तव प्रश्नो क्या बाहे हो हीने शाय-विदे दी इद्य (सवि इद्य).

गबराही धाइयो

पूर्वाची मूंबाव छं इस्त प्रस्ति है करते प्रति छ है में प्रता हुए छ क्यों इस्त कर हे में प्रता हुए छ में प्रता कर के में प्रता कर के में प्रता कर है में प्रता कर है में मान कर है प्रस्ति यात है
परित यात है
परित योका मंग्रेसे छ
म्हांको स्टब्स पायदा नहीं.
हिस्सा सम्हांकोई हुआ है छ
साह स्वक्त चे छ
साह स्वक्त के एक्त स्वक्त छोट,
सामी सुक्त के
साहक पानी पीए छे
पास पानी मारे छे
परितो एकन कर छ
साहकी मन नारे छ
साहमा सोसाह सोह छ



पाठ ८ मो

भरागुन्त गाम. तहवा अने वाउल्पी—विमक्तिः

चह्नाझन चुठत्या—ावसाचः प्रदर्ग

पक्रमणन बहुवजर्ग प्रक्रिय है कि कि कि कि कि कि जुला के सुभित्र कि

्वार्यः । सार्यः । सार्यः स्वार्यः रचे गरेतां वे विस्तिः । स्वराज्यः युक्तिः । स्वर्यः । स्वर्यः युक्तिः । स्वर्यः । स्वर्यः

ं नामान्य कस्त व न्यून के १ पुरोजाना एक्स्प्यर जन्मे बहुक्यकना राज्य स्टाप्टकी निक्रिक्या व्यक्तकना प्रच्यो कसावार्ट्य एवंना का में। य नाम के

बहुक्कला प्रथ्ये। बनावर्ष पूर्वना का में। प नाम के क्रिय+स=क्रियेस क्रियेर्स-क्रिय+क्रि-क्रियेडि क्रियेडिं

ाजनशहुन्तात्रजाहु ।जनाहु ।तनाहु २ चतुर्वति य प्रस्य क्यास्त्रं पूर्वते स्व दीपै बाव ॐ -जिक्कश्य∋क्रिपाप -जिक्कश्य⇒क्रिपाप

क्रिय (जिल) त॰ क्रियेष जिलेक क्रियेदि जिलेहिँ च॰ क्रियाय (क्रियाय-)

१४ व भनन च्युपेता एक्पन्यता छहार्थ (ते मारे, वार्णे नार) तेश भर्षमा क्रिक्टी हाधन के ते तिवाब एक्पन्यमा व्यव बहुएचमा वही निर्माणना अवनी हाधन के (अक्टमां च्युपे विश्वीक्षी कार्य की निर्माण अवना के।

बहुरक्तमां बहुँ निर्माणना जनको सुद्धात के (आक्ष्मां क्यूनी निर्माणने रवारी बहुँ निर्माण सुद्धात के) यह (वर) बच्ची रच्चीमा एकरकार्या लाह आए असर्व निर्माण करें के बहुर-स्कार स्वार्ट सहल नाम (द्वान)

तः वाजेर्ण वाजेष वः वाणाय, विश्वापः ।

माणेडि नाणेडि नाणेडि

द्यान्ते (पुर्विष)

भवमाण (जपमान) श्रपमान विरस्थार

त्र व्याम (३एम) उपम महेनत. उपम्यस (३५६४) उपमेश पृक्षार (इन्प्रर) स्थाने.

विरत्धर सम्रोत (क्लीड) सत्तोदः सायार (भाषा) सामारः

् कोह³ (क्यर) क्रहाहो.

१५ प्रकारणी अन्दर स्वरणी उठी वर्णमुख्य काच-च-च अल्य म शेंद्र बाव का उपस्य ट नी व ठ नी व द नी व द नी च ड नी म उच्चा इ अप्रीय सी द प्राय बाव का अप्रीय-च मी च प्राय के

'व'~सुदं(सुन्दम्) 'व'–मेद्दो (संव⊤)

'ढ'-धडो (पदः)
'ढ'-गदबो (पदः)
'प'-जदबा (पपमा)
'प'-जदबा (पपमा)

'व'-नाहो (नावः) 'व'-साह् (सत्ताः) 'म'–सहा (समा)

'व'—सरको (स्वयकः) 'स' } ऐसो (सेकः) 'व } किलेलो (विकोष)

भ'–सदा(समा) 'ट'वशे(वटः)

| 'व) निरुषा (विशेष बाह्यमा-कष् (क्व) वोद् (बोन्) चोद् (बोन्)

बहुमां-क्यू (क्यू) शेष्ट् (वोष्) धोष्ट् (बोम्) धील् (बीष्) वद् (बर्), व्या् (क्यू) विव् (बिल्).

```
बहिर (विंद) वहेरी-
व्यंद (चन्र) चन
                               र्वधन (अधन) अधन
क्रियेसर } (विषेषा) विनेपर
क्रियोसर
                               याप (भन) भन-
क्रम भ (कन्दर) वस
                               मजोरह (सनोरन) मगैरन
केंद्र तंत्र (सम्) करीट
                               महिवास (महिप्रक) एक
भागा (वर्ष) क्य प्रत्य
                               मिय
मज (५४) इत्य
श्राय (स्वार) म्बार थीडि-
मरिंद<sup>20</sup> । (भरेन्द्र) राज्य
                               मुद्दर ( दुवर ) वानान-
निरम }(नरक) नास्मे नरक.
                                मुक्त | (क्षेत्र ) गोब-
      ३६ करुपी अंदर न्य दोन शो स्म बान असे न्य को स्म
 विक्रमें बाव क
 काको (कम्बन्) | कुर्म | (कुम्बन्) (तुम्बन्) (तुम्बन्) (तुम्बन्) (तुम्बन्)
```

३० धम्पनी मेपर रहेव अनुसार पत्नी वर्णीय व्यंत्रन आवे ही अवस्थारनी से नर्गनी अनुस्राहिक विकासे बाब है.

'क् भेनारी-वहारो (बहारः) 'न'-रंडो-रंग्डो (इन्स्ः) 'व'-तंदी-बक्दो (सक्द) 'र - परो पारो (पार) **क् -नेको-नक्गी (बर्**ग्र) भ -वंश-क्या (कारते)

'ब्'-देनुबो-कन्तुबो-(कानुक) 'ब् -बंधवी-बस्तवो (आप्रता)

रोम (रोप) क्रोब माग (बोड) श्रीद ₹£ (44) 44. चम्मद (मन्मव) वामीव बाह (क्यांब) शिकारी पिजय (दिनव दिनव विवेद. बीयराग (बीडराब) राग रहित. चीर (सम) शेट पराश्मी. सीय (यून सन समुदान धमकारि क्लावित संब

मेड (मेम) बादक

मयुशक्तक्षिम भोसड (औपन) औनप, रवा

करत (काव) बाम बाब-TE THE THEE गयश (गम्म) बाह्यप्र रास (क्रांत) रहस्य परमार्प त्तमाय (हराव) ठकाव जनाधव तित्थ | सङ् धलनी संबर कर समें व्य नो 'पह' पान के अने शाविकां होत हो 'क' बात छ

योच (स्टीन) स्तोत च-उन (प्रवस्)

'स'-किलाबी (विकास)

'स्र'-विकास (वृहस्ताँत)

द्रदेश (इ.स) इ.स बरिय (ब्ररित) वर पेक्टम (पद्दन) कमन-पाच (पार) पाय. पुरुष (१९०व) शुक्त वर्ग परित्र व्यक्त ३६ (प्रम) इ.स.

सरज्ञान (सरजन) सारो मामतः

स्त्याचार (एशाचार) यत्तन-

भाषार पवित्र भाषाय

सदाय-(स्पनाव) स्वनाव अवस्रि-सर (घर) वार्व

साम (स्वा), देवलीय-

साचन (भारद) भारद. सिद्ध (सम) हिन्द मंग्लान

क्षिक प्रका

हरच (इस्त) हाप

सद (घठ) स्थ्ये

यक्ष (वास्त्र) शल्य

'स'-खतो (सर्थ)

'का' पेडचे (काम्यमध) 'स-च्या (सर्वी)



88

विधा^{४१} (विना) विवाद रहित. सह (धम) साथ सरदारा^{४१} सन्बहि (सवज्ञाववदेशामें सर्दि (मार्चम्) स

सर्दि (गर्दम्) तथे

यात भो

मह् } (भट्र) अस्त्र करते मह पीज् (प्रीच) तुश्र करहे पेकार् | (प्रश्तंक्) कोतुः पिकार् | भग्म् (अर्थ) सिमत करवी धाव् | धाव् } (गर्) रोग्डे बादर दरवी विष् (विष्) देवतुं बय् (कर्) वस्त करवी सद् (सभ) मेळच्यं किंदे (किन्द्) ग्रस्तं स्रोड (सोम् । दोम्ब्

४९ किया अध्यक्त बोलमां रोडी भीडी अने प्राथमी निमाधि वैधार के तमन यह अम्बन अभे ते वर्षनामा बीजा अध्यक्षी की नामनी साथे कोडाय 😻 स माम जीको निजकिमाँ सदाय छे

 अस्में विका प्रदेश कड़ेज्य. वालेव सह करवा कोईते. ४२. वे अमरने करते 'त्र होन तेने वरके 'हि-इ-त्व, कार्व के

যহি, বহু অব (বস) | বহি মং কৰ (হুল) বহি বহু তৰ (বস) | সলহি বসহু সন্তৰ্গদৰ্গ ¥

को याँ वाजेर सो सम्बं बाग्द । को सम्बं बायप सो याँ बागेद ! पुदा पुदे पिक्वारित कि सुदक्का !। पार्व करित रोसं । यार्व करित सहस्र होर । समाया मोक्साय बायने ।

समणा नारोज तकेण सीकेल य इक्काले । सावपा मळ पकर्याई जिले सच्चेळ । ज्ञाने कुद्रारेण कहारे किंद्र। याची बहार तकं धायदा । ज्ञानिका सीकेशिंद सङ्घ विद्रोदेरे । कक्षमेय सिज्यंति कुळावि न सम्माद्धि ।

बहिरो किमवि व सुवेद।

रोया श्रोसकेय नस्स्ति । सीचा श्राहरिय विवयम वृद्धि । सञ्जाप क्यार श्रामकेर

सक्षण कपार गणकर सहाव न कहिरे । नावो मिगे सर्पेह पहरेर । सीकेज सोहर हैदो, न नि मूसकेहिं । मुनेन रहिमो समास्य महमानं पादेका ।

बुद्दो फरसेदि बर्झाई केपि

न पीछेर । मावेज सभी सिक्के निममो । वीसरामा नाजेब कोममस्में व मुकेररे । संघो तिल्यं सहर । बाबारो परमो सम्मो सावारो परमो सन्। सावारो परमे ताज सावारेब

न द्वाद कि १ म

गुजरावी वाक्यो

चारहे जाश्रम सीने हे **अ**श्मनके प्राप्तन करो। नहीं पन काबार वडे बाद के चीम मानदने पीड़े हे रायानो स्थाद वहे राज्य करे छे भाजने मनुष्य नरकमां काम के भने पनवडे स्वयात जान हे मीर पाछ्छ वढे चल बाद हे रामे के कारवर्गी साचे गावन करों को (वे) शामनके समे पुग्नो प्रदूज करों के ^{म्हा}ब कानविना सब सेळाटा 200 अमे स्वोन्ने बढ़े जिन्नेयरणी स्तुति करीय श्रीप. सके सरकांचे विदे चे

काम मानवने इन्त आपे हे

मन बीबा बढ़े बड़ी शके है अभे प्रको वृष्टे किन्दिवनी पद्म करीए और. शामस बर्भवदे तब ठेशारी सन पाने 📦

चपाण्यान सत्रोतो उपरेश दरे हे.

पैक्टि पर मुर्खाभीने द्वारा करी यक्य नवी बावको काम जोप जले लोगने भीतं 🕏 बीर सकी फेके से

बारे के संबर्ध गावे मोर्ब गरक च्चप डोप बाक्सक मानव कांश्य करी

धाःतो नवी =े ×र• बार्चले तं∜कित के

पाउ ९ मी

सदारास्त नाम

पंचमी मने छड़ी विमन्ति

अस्यव

प्रक्षित सहस्वत सहस्वत स्वतानत | पाँच को से द अ(तो-सू) को, से द (तो-सू) दुर्देश | दि दिक्तो प्रस्तुत के स्वतान स्

द्ध≎स्स वः वं

सामाराज्य नपुंचक-सुर्वित प्रभावे

 सो क्ले प्रशापि प्रकार किया पंत्रती विश्वचित्रा स्टॉ एक्स्प्रे क्लाव्यं पूर्वता का वी सा बाव के जैसके-देव+मोळ देवाको देव+दिल्लो-देवादिल्लो देव+सोळदेवसी-

 पद्मतानै प्रवरीची पूर्वे साथो कोप बाव छ कैमके देशान पदि-देविदि

परि-देवेदि को विक्रमा सरकार प्रस्ते करान् ग्राह्म स

 वहीं विश्वविद्या सहुत्वन्त्रता प्रस्तो क्यावर्टी पृत्ता स्थ हरू य वीव वात के वैक्के-देव-वेक्केन्द्रेवार्थ

नाप (द्वास)

🐶 क्रियची क्रियामी क्रिजाड विषयो किषामी विजादि शिजादिस्ती शिचा রিজার রিজারি क्रियादिस्तो कियासस्तो. का जिल्लाम

जिनेहि जिलेहिन्तो त्रिधसन्तो

चित्राण जिलाको नाणको नामामी नापाड

💠 नागची नागामी नावाड वागाहि नागाहिन्तो नागा 🖜 नायस्स

अप्रीय (सर्वार) सर्वार कर

नाणेडिन्ता नाजेसन्तो नापाथ नावाणं धन्त्रो (पुस्सिम)

आर्थेक (भारतन) विशेष नाम स्राप्तम^{४३} (करान) समरी जीव (ग्रीव) धीव इच्य (इर्प) अधिमान.

नापादि नापादिस्यो नाषासुन्तो नाजेडि

काहु सरम्य } (अर्थ) मन बस्य कारन फार्च जन. ४३ संबच्च ब्लेबनको प्रवस अकर को कृप्यू-कृत् सू-पू-मू-श-प-म समे पद-xप होन हो सोर बाव अ कोप समा पत्नी धेर संक्रा क्षेत्रक संबंधन स्थान क्लेको कारेसमत

स्थेत्व को शक्ती आदिमांन होने ही किल ध्य है । किल

बरेब उत्तर वर्तीय बीजों के बीबो नकार होय हो हिस्सना प्रदेखा कांक्रको स्वाधे बनको बर्गना पहेलो ने त्रीके मुताद छ (ति १६

अपन्य-वीर्यसर दशा सहसार पत्नी धेपमंत्रन तथा सनेक.

मो सन्ते.)

48

चरिमझ (वर्षिक) क्यों क्व. मैक्क (स्पेट) स्पेट ग्रेम ग्रीचै.

'त्रे बध्व (शतमा)

'व्' मोल्क्सो (शुक्तसः)

मंदर (मन्दर) मेद र्स्तर

मनुम (मनुम्ब) मानस्य

शंभरवर-प्रको रखें')

बनुस्तार-धेता (सम्बा)

मुख्यिद (सुरीमा) आचार पद्मय (१वत) पर्नेतः मित पंच्छायाब (प्रशस्ताः) अस्ताः स्थारो बरध (म्बाप्र) दाद बारत ४४ (वर्ष) सन्तर, वर्ष-मन्म (भाग) रहती भागी भेट्टा स्थापन विद्रम बाद गाँड विस्तान र इ.च.)६ मन रूपने विद्रम भगता नवी. #41 ·--न' निह्नहरी (निम्हरा) के नेव सेकरी) 'प्र-इव (इस्स) स -पेश्रो (स्पेष्ट) भ्य **-पूक्तं** (पु.कर्) 'र'-ष्ठपाते (सूत्रका) कं-काथे (का) 'xप'=कलगाओ (कट पक)

पूर्व क्षेत्र (प्रकार) प्रतिकार प्रतिकार (प्रकार) प्रतिकार (प्रतिकार) प्रतिकार (प्रतिकार) प्रतिकार (प्रतिकार) प्रतिकार (प्रतिकार) कार्याप्य कार्या प्रतिकार (प्रतिकार) प्रतिकार (प्रतिकार

भग श्लुष्य वर्षभावे करो स्-स्-स-स-प्-स्- होत द्वार त्यां रोजुष स्मानतो पोत्री स्टब्स स-य्-स्-त्रीत है। होत बात के (बार्ड केरे स्वामीको तीव करो होत हो। स्मोन्ये बाबुशहरे हेसाँके क्यां बोग वरोते। वेतर्ष-स्वारं (राष्ट्र) वर्ष (रावरा) बार्य-कार (स्थान) शर्त-सार (हारह्र) 44

सप्य (सर्प) सार-

संदोस (स्वीय) संदोस

'र्व -नस्प्रमो (वर्षका)

'न'-निस्थितो (विभिन्धः) 'स्व'-सस्य ग्रह्मय्)

'स्व'-विकस्सरी (विकस्तर')

'en freet (Reur')

विजास (विश्वच) शवा

संपास ४५ (सरस) सम

" -नरसद् (सम्बद्धि) 'ध'-रिक्त स्टे (विभाष)

'द्रप्र' मनस्तिका (मनदिक्ता)

'य'-बस्सी (अभा) ,, -विस्ततस्य (विश्वदिति)

merd सर (क्य) सम् सिंघ-सीड (विंड सिंह 'म् -सरी (स्तरः) 'वृ'—ऋ (पवदम्) व्-नवने (नम्) **भ् –वरो** (सकर∗) 'न'-नाही (स्वाचः) T'-4E (4EF) 'ल'-सग्हं (अनुवास्) १ मदो (अर्फ) 'ल्'-वस्कं (सन्द्रसार्) 'र्-कस्तो (कपः) ४% 'ब्-र्-ब्-य्-य्-य्-प् ए व्यक्ते 'स-य-स शी साचे पूर्वे के पत्री बोडाबेसा होत्र दो संस्थाननी पूर्वोच्छ वि ४३-४४ निवसानुमार कोप अन्ये कट पूनने। हस्करनर कीच वान के छदा०---'स्व' जादासवं (आवस्त्रकृत्) 'म्य'-सीसो (चिम्पः) » नायः (नामतिः) 'र्व-कालनो (कर्पकः) 'भ'-गीकामो (विभाम) 'प्य'-वीस (विष्यक्र) 'च'-नीरित्तो निविकः) 'वी'-सध्यसे (संस्कां) 'स्व'-बार्ध (बस्त्रम्) 'भ'−मतो (अन्य) ध -बीसमी (विकास) » वीसपद (विद्यसिति) 'क्ल'-'देकाशीः (विकस्तरः) 'स्व'-शिवडी (विस्तृत) **भव** – मकासिका (सन्तरिक्तरा) शिवम काक्टो नवी स्वादै पूर्वीख सपनाच-चोच देवाले सा (४३ ४४) नियमानुसार क्षेत्र रहेन श-य-च प्रदोधने अनुसारे हिला wit. 'पर'- परसार्व (आवारकम्) 'च-सिल्मे (क्रिकः)

न्दुसद्धस्य

साइहारण (कमन्त्र) सप्पत्त सावास्त्रय । (कारस्त्रक) सावस्त्रय । (कारस्त्रक) सावास्त्रय व्यवाने वित्रवर्षे वर्गातुक्रमः सप्पद्ध (वर्गक) कमसः स्माम (वर्षत्र) कमसः

रापक (वरक) काल काम (वपर) काम कुछ सामारणीय साथ कर्म काल (बाल) कार बरण (धन वर्षरक

करिशः (वरित्र वरित्र इश्रंतः वैस्तयः (वर्गतः) वष्टः, कोतुं सम्पर्दाने, सन कौसातः, ब्राह्म (वन) व साम कार्यः

वस्त्र (रन) न साम अस्ट दुद्ध (दुरन) दृष. वि अप्यादाष्ट्र (समाधान)सेमा रहित.

गुरुम | (पुरु) ग्रेड क्टुं. शरुम | भारे भीज (र्जन) वर्णन

क्षाप (क्षम) वधव कामा (क्षप्त) नम वक्ष रहित. विषयक (भिषय) रेतर, वनळ, रह. विद्युद्धर (विद्या) वाल्यो विर्वेत. पक्ष (क्षम) वाहेको

धन्त्र (नास्त्र), अनाव फस (तम) फल

पास (दम) प्रकारक व्यक्ति सूख (दम) मूतदारक व्यक्ति कारक मूक्त समय (क्या) क्या

वयण (क्यन) वयन सुक्त (सूत्र) चेत्र सम्मात्त (सम्बन्ध्य) स्वयत्र्य स्वयः अत्रा स्वयत्रिः सम्बन्धानः

स्रोपक (वीपन) तुन-विसम्म } (इरन) इरन कर-विस्म) इरन करवे व्य कर्ण

विद्योगज इ. | चयासम् (प्रकाशक)क्रमण करनार. प्रकारक

> महर (यद्भर शहर श्रेवर श्रुव (तप) मीर पानेक बन कहानी बराय (वराव) वरीव वीन विविद्य (वरीव) बरेव प्रकरे वृद्धीय सुदो सर्वा वार्ट्

गापिक सरी सरी बार्टा विरुद्ध (स्प) दिशील प्रतिकृत सरा (स्प) स्तेत्र

पुण पुणा। (पुनरु) दक्षी **र (**३) पिस्सम जिंचा क्रिस्कार. बाला क्रमंदित) क्रांक्त पुषार विद्रम (एव) ल्ह्री निश्चनार्वे मिक्डा (निष्या) प्रोक्ट, असल्ब. थ-बा(ग) या अवना के. ^{४६}डाइ (क्या) के मगणे संपद् (सम्प्रति) इमना हाड अवदा थिस धेनी रीत सब्दया (संवेश देवचा सहा-तह तहा (ठना) ते प्रमान पंग सार्-सया (सरा) छरा रंगेका-**घट्ड** (गुन्द्र) सारी **घेते.** सन्द मिथी विक) निक्,विकारत्वन चात वक्काण् स्थास्थानम्) स्यास्थान महद्यम् (अनि⊹कम् उपेपर कर्त्तुं स्टब्स्स समज्जनल क्षेत्र इत होर क्षे **सवेक्ल**् (अप्रेक्) अप्रेजा दीमम् ((भिन्दम्) िग्रह सविकन्त् किरनी चरत्र राखनी विस्सस् करें मरेली करती-च्यम् (धम्) श्रमा करवी मान्त्री विकिए १ (वि+नी) वेदल मार्थी सात दरव बर् (वय्) अस्य पास्त्रं वर्षः विदर् (अन् मध्यनु राज्यन निम्सर् | नीदर भारत किन्तु, पेरा कर्न (निस्सर्) मीकल्यु परिकल् । (क्रीम) क्रीमा करनी सदक्ष (धड्+चा) प्रदा करवी परिष्क्र । समायर् (तमान्) कर्तु नाव ^{प्रदेशको (दन) सम्बद्ध प्रसः} रक बडावे रोष ६ सम्बद्धाः अत्र नो अत्रिकाणे वाय छ ब~सा(धा) मद्द-भद्दर्भ (अपः) बह बहा (बया) इ-इस (इस) रूप्र∽स्था (समा) क्षारे अध्यास्ता योजनां छत्ते विमन्ति सुकार छे क्षरा — अमी जिलावं बसी विकेश्यः). का भारता नोपमां की पर्वत पड़नुं होन स सन्तरी बडी er - 4004 34 4447 विश्वविद्या आहे के

प्यांच (बतीय) चतुं, प्यारे,

कटियान

चित्री (पिन्पिन्) बिन् विन्-

४७ ममो (शमस) नमस्बार अमन

प्रारम बाक्यो | सावनी इंसबची

समभा नरवय विवाद धाया वर्ष ६०० सम्बद्धानि बहारताचा प्रामाण स्थ विधिर न र चनपासीत तकसमजासति। हा क्या मा धमा संग्र माराहर । बदा वरिवरम संवासाय STREET PUR I भारत मेडी बुदब्स सुसप्तरिया बागरन फ्रहमिड्डांत बागं वच्छात मधुमा । समबा सावगात्र विमेशराचे बारत बक्तानेता बाळा सप्परस इंसचेन इरह किंपुच सफासेवा। मुचिता सीसार्च सत्ताबम्ह अपविश्वद ।

नाच तत्ताज पदासदै शहर

बस्साकः सान शेयर १।

विश्वतुरा पावेदियो ध्रम्म ब्रह्म

बसो सिव च

समा दशकायाणे

परमार्क थर्गे किष्यकी
प्रतियः।

मानागा मुख्युत्ते पहरेदः

महाप प्रामाना गाममहित

स्वयाः।

स्वयाः।

स्वयाः

स्वयाः।

स्वयाः

स्वयाः।

स्वयाः

सा बगारे समह समेहितो वि

न सत्त्वपा

न क्या वसर ।

धामी मुशके मुख करती
मुद्धे पिकामस्य
धिवी मुद्धा कीचा रूप्यकि
मुद्धा कीचा रूप्यकि
मुद्धा कीचा रूप्यकि
मुद्धा कीचा साम्य
मुद्धा किमानि साम्य
स्वादि किमानि साम्य
स्वादि करावि साम्य
साम्य
साम्यादि करावे वा।
साम्यादि साम्यो गोक्को

सोक्स श्रेयागार्थ 🗗

गुजराची बापयो

सन्त्रम पुरस्ते पानीकोनो विधास राक्ष्य नवी विद्यास सन्द्र वहे सञ्च्योती स्टब की छे. पिद्योगों समसाय क्रिनेस्टबी

धाने मोजधा नाव छे मूर्वोंनो चारित्रनी भदा राख्या नवी चौरो कर्ने सम्प्रोदोंने प्रकाध

करनाव हा के हैं जे चारित्रणी लड़ा करे के दे मामको सामक के. दे मेरकों भीकड़े के बान साद

ार है. पंचाचापनी पापी नाग्र पान है विभी बंगामावनी पापी काननन

विष्णो क्याध्यावनी पारे व्यव सर्वके

वै स्वानमार्गम् क्रोपन करे हे

ते कुला पामे कं रामा भावनो वन्ने पॅक्सिनेनी

परीक्षा करे के बामनी प्राप्त प्राप्त प्रमुख मन पाने हें स्थापन करते करते करते करते

र्थन मंत्रीति विक्य सहय करायीं
स्वीः
स्वारी करा पाणीची करे के
भोड़ों कर इरज़ें से पाप के
सामी मिनेपराई बच्च सामेक् करे के सेनी सुख पास्ता कर्मों
र्थ विनास्त करायां कर्मों
र्थ विनास्त सामे से से विनास सामेक्

ागर्य ते चारम मेचे के भने चर्न प्रस्त कसार के ते तेने चोगांद्र निर्दे के

क्षिम्मी इंपेस्टी स्क्रीमा अध्यक्तीकी भारति करे छ साक्ष्मी क्षा स्क्रीस यह के पाउ १० मी

सकारान्त नाम सत्तमी विमक्ति तथा संदोदन

प्र'क्य

बहुबबन इ. हे

यद्वयन जकतलः सञ्यासम्बद्धिः। इक्ष्मिं संबोसाः वृद्धिः

स्विध्यक्ष स्वयक्ष्णं पूर्वम् स्वयुः एपः सनुस्वार सुन्धव हे-

केमके-समयंखि (समये) सर्वि (श्रहे) नपुरवर्गियमा संबोधनम्य एकमध्यस्य मूलकम् व बाम के तेमस्

सञ्जयन एक प्रदेशका स्थापना स्थापना स्थापना व वार्य है स्थापना एक प्रदेशका से से वर्ष केंद्र व वार्य है

विष (क्रिय) स० जिमे विश्वसिम तिर्पेस जिमेसु जिमेसी

स द्वेत्रिय जिम्मे जिम्म जिम्मे जिम्मे साम (द्वार)

स्त बाने बानिया बानिस् वानेस्, नापेसुं सं दे तथा नापाद् नापार्थि

३ वर्षनामध्ये कर्ता दिल्लाएको लाग्य बहेराओ बावचे एव के कर्तामां विकल फैरलार नको है कर्ता कर्ता भारतामां आहे के धरेनार्ग ध्यम्तेत कर्ता कर्ता कर्ताल शुक्तिन कर्ते न्यूयध्यित्वय के के एक अस्तान महत्ववयां य त्रत्व कर्ते कर्ताना एक्तववर्त्तर विद्यु तिम त्या दि त्रत्वतो क्ष्यामत के तथा प्रतिन पहुरक्तर्त्तर्

ास्त तमा रेप दि जनवी बतागत के तमा कीना क्यून्यन्तन। याना प्रमन विकास बतागत के संस्ता-दम (इंदम्) ने एस यतक्) तर्वनासने सत्परीय एक्यपन-) हि प्रसन बाली नदी करा — प द॰ मध्ये छ० द०-सध्येसि, सध्याण सध्याणे... स प सम्बद्धि, सध्यक्ति सध्यक्ति सध्यक्ति सकारान्तं पुर्तिगं देव⁷⁷ शन्त्रनां कपो 4640 षदुवः देवी देवे देवा ŧβο ì देवे देवा

वेबेण दक्षेप देवेदि देवेदि देवेदि 40 देवस्य देवाय देवाय देवाच देवाण

देवतो देवामो वेबाड देश्लो देवामी देवाउन देवादि देवादिंग्दो बेपाडि देशाडिन्तो देशा

देवा धन्तो देवेदि, देवेदिन्ठी विश्वसन्ती रे बरम वैद्याज देवाण

W0 €F⊃ वेबे वैकरिम दैवेसि वेबेस वेबेस éis. है देव देवो देवा देवे देवा

मकारान्त पुरिका सम्ब″ शम्दनीक्यो 40 लको सक्ते सरो

ৰীও सरबं सर्वे सम्ब đ: सरवेष सरवेष सम्बद्धि सम्बद्धिः सम्बद्धिः... *****2

सरवरश्च सरवाय सम्बाय सन्देमि सरवाय सरवाणं ďα सम्बद्धा सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धी सम्बामी

सम्बाद सम्बादि सम्बद्धिः सम्बद्धिन्तोः सम्बाहिन्द्रो सम्बा सम्बासन्त्रो सम्बेडि चलेबिन्दा समोसन्तो ₩.

धन्देसि सम्बाद सम्बार्गः प्रधास सम्बद्धि सम्बद्धि सम्बेस सम्बेस क्रवाता. प्रस्कृति

۔

Ħ3

tio .

-सं० हे सम्ब साथी सम्ब स्थ्ये सम्बे वर्षस्तातिस वर्षा (वन) ए० | वर्ण वनार वनार विभागि वी० | वर्ण वमार वर्णाय वर्णाय

वाफीओ पुष्टिंग प्रमाणे पण) सहय (सर्वे) बीठ / सहये सहयाद सहयाई सम्बद्धि तृष्टीवाची दुल्लिया प्रमाणे

युक्तेशकी दुव्यिम प्रभावे पुक्तिस्त्र स (तद्) ग्रम्बनी क्रेपी प स सो से ते

प संसों से तें ची॰ त ते ता तरु तेल तेची तक्षितक्षि तेक्षि चरु तस्य ताप देखि ताण तार्थ पेश्व तक्षेत्र ताले ताथे ताड़ ताक्षि

ताहि ताहिस्तो सा काहिस्ता सासुन्तो वेहि सेहिस्तो तेसुस्ता ए० वस्तः तेसि काय तार्ग स० अतस्ति नीम ताय तेसु वेसुं सर्वि केसि

चार्यसम्बद्धाः महुश्चर्यक्रमः सीवार्वे सर्वे सर्वे सर्वे

प० बीठ तं वार्ष तार्ष तार्थः हिन्दं कुल्लिक प्रतानः चय (तह्न) वर्गरे कहरायीचं बंधीवार्य क्यो यह नवीतः

यय प्रभा

ग०पम पर्नापसे बीव्यर्थ

```
uufe-fa -fa
    त पपन पपन
    स प्रचलित वर्गास
                               वयम ययसं
       +परच वर्मास
              होप त सन्य प्रमाने
                     नवंत्रक किंग.
                          पश्चार प्रमार्ग प्रभावि
पञ्चीञ्चन
                वाकीमां प्रस्थित प्रमाने
                                 नोसक्रतिग
                                स्त (पत्र)
                            प० (श. जाइ वाई
                   च
                               बाकीनां पुर्तिसय प्रमाणे
नामीय क्ष चण्ड प्रमाण
                                  क्र (किस्)
      ६ (कटमः)
                                 l for
                            670
                 के का
                               वाकीश प्रशिक्षण प्रधाने.
 মাজীলা ল' সাজী
                                    इम (इइम्)
        इस (इदम् ।
 च० इसो इसे इसे
 की इम
              इमे इमा
                             प० । धर्म
                                        रमारे रमारे
 स० इमस्मि
               रमेस
     रमस्मि
     इमाध इमसि इमेस
 बान्धिर्थ ल' बाब्द प्रमाचे
                              गधीयं प्रस्तित प्रमाते (
       क्रमननी।पूर्वे एक या के वी होएं बान के एल।श्वाचारक
```

शम्ब-(पुस्किय)

धणाः द्राप्ति धार्च (मादिन) सर्र **पृष्टिकोर** (शॅक्स**चौर**) शैक्रव क्या चीर क्षणकात्र (असाह बलाह वार्षेत्र कारकसम्य (धरोस्तर्य) समाग्रे FUTAL.

क्षणस्य (अभर्य हरमान

^{प्रदे}र्घन स्टब्स्) करो ^५ बजानमध्य (बमान्सम् सद्द क्रमध्यमान श्रुपः.

गुष्प (तम) प्रच तरप्रयः संपद्ध (रह रह पश्चिम गॅरिक) गेरिक-

.. विकासी विकास का बाव के तारे बाहियां होंग यो 'क-क-क' बाव के

बन्धे (दरः) (ऐको (का) चरें। (शास्त्र)

परोद्यपार (श्योत्र्याः) क्रोपशर-पञ्चूस ((अनुष) अल वर्णः पवचार है । स्वारको पहीर. प्रकास (पर्याप) पर्शय क्यान्तर. 田田本刊

पाचाइबाय (प्रवासितः) वीर्यहर्वाः पाडक (शहरू) क्वीब्द्र, क्रेम्पर्डे सम् (हम) संव डेबार मार (स्म) मार, वागी मद्य सक्तु) मन.

मचार दला भारी हैंद र र्वक्रमाणक सक्त्री वर का अने 'एव' में क्ल बाव क्यों आदियां होंब हो। क्षांबाद हे

'क -पीनवार (इक्ट्रम्) 'एक'-वाशनवंदी (बारस्करनः) , संदेश (ल⊳न) भ अन्यानी संबद 'खाँ जो 'शर्या' जने बीड देखके 'खा-यहाँ

विवाद (विवाद) विवाद. fie a परकेक (क्य) केव विसय (विषय) श्रीत्रवीना सर (धर) बर, फाम्मी weite freit

कम्-(नपुंसक्रकिंग)

अध्यक्ष (अर्थन) पूजा पूज्युं. अप्टेर (भावर्व) विस्पव

TRIBIT. डेक्सप्प (डधान) वर्ताची संबाध

घर (ध्रह) पर

अस्य । (बेटन) जिल्लाकर.

din (किम्मति.

५१ सम्बद्धी आदियाँ (व्यंत्रत पत्नी) व्य द्वीन सी

'व' भो 'ब' बली बरत कादि बच्चोमां 'वांनो 'ब पान के द्या रव ना 'र' नो 'रि' नाव अने कल-कल कावल कात-कवि ना घररीओ

\$ 8810-मर्थ (भटन) दिवर्ग (इंदनम्) क्ष्में (क्षम्प) BE (BE) रिच्यों (म्ह्रेस्) उद्यो (स्वर्षः)

रिद्धी (ऋदिए) सरियों (बरबा) क्सि (इस) रिम-काने (ब्रामा)

क्षेत्र सो 'स' सार्व

'ब'-धार्ग (मध्य) | 'ध्व -सेरमा (धरन) - Aratic (Car) 'च'-कावए (चीठते) ('वं -बन्ध (भावी)

बर्यक्रव (परपक्र) पारित्रकरी

द्याच्य (थान) म्यान नवसारा (नवत) नवत.

मेंस } (श्रांश) मांद. सक्का (सब) सघ दाद, संदिश्त,

के रोजन बादिमां केवल 'ऋ दोन रो रि नाम क्रमादि शरूरमाँ "वंभो "रे विकार बाद करे स्वयंता 'वंबी 'वं विकार पाव

रिष्-भग्य (सन्तः) रिवारी असरो (अपन) विक-दम (क्या) रिना-प्रमी (ऋषिः) कत्तरी-नवदी (श्रामः) भर, बन्दरी भग्दर था प्य में होन ही पत्र गण भने जातियां

^{भृष्}वच्छात् (शासन) स्तेहः केर वास्त्रता

बक्बाचा (माक्नान) नवान

तुर्वेश्वल (इद्धल) इदाईः वयान सम्बद्ध (संद्र) शाईः वयान्त्रकर

सहिब (श्रीनेक) च्छं, श्रावन्त्र बद्धय (ज्ञान) सर्वर

कीक श्रीम श्रीम

हीय) बारिस्स(नाम)मेर्नु वेना प्रधारत् सारिस्स(सम्म) सेनु तेय प्रनास्य चित्रस (सेन्स) रोड्ड स्थित व्यक्ति विकारस्य (सिन्सरण) प्रमासन

रहितः विस्मस्यर (निम्म्यु) वरिश्व

विद्यास्त्रपर (निमकार) विद्या निमस्त

निक्य (भिन्) अभिन्यतः वापतः यवास्तवरः (प्रश्नवकरः) प्रवास साहका (ताराष्ट्र) भरत् साहिका (ताराष्ट्र) सामाहम (ताराषिक)नामानिक (ताराष्ट्र) स्वापकर सामकरी

(पापनी स्वापार त्वाम करी है बड़ी समझाचे रहेते) स्वाच्या (प्रवर्ग) सेहा-

संबच्य (प्रवर) सहः सिद्दर (विकर) फियर

विशेषस्य १ १५५ ४ प्रवासः (१५५) दिस्तारी स्टा-पस्तः (१५५७) प्रवासः ज्ञानक सदरमञ्जूषान्तिस्य

सरितना सर्वा बस्मणः । चक्कक (कराक राज्यमा संबं पर्वाक्रमा (विद्वाक):विद्वा विद्वास (विद्वाक):विद्वा सर्विक (क्रिकेट) बीनवी क्रीका

वृति क्षेप वृत्तिक स्तिक्य } (स्तव) वर्षः

स्वित्य (स्था) श्रेती. इस्ते (स्था) श्रेती. सोदल (बीक्त) ग्रेसर साहस्मित्र (बार्बीक) समान

भी वहर्ष स्वरंगी पत्नी प्रम सान-पाँ बावें ही अनेत हितारे पर्य वस के बहा वस्त्रा (क्या) वस्त्रा (क्यार) कियार (क्यारी) क्रिया (क्षिप्य) वस्त्रारों (क्यार) हुउच्चर (बहुवारी) क्यारे (बावर्षर) वस्त्रारों (क्यार) भा कामरी करहर हिंद हो गाँव विकास वार्ष के क्यारी (क्यारा)

भी वाज्यना सन्दर हिन यो 'दम' विश्वतम् वात कः विस्ताः । स्रोतः

भवर्स (बदर्व) अबर, नवी-इम चिठि इद (इति) ना प्रमाचे एव श्रमो (बत्) एकारमनी एनी शांच शक्ति कद्म (मद) ज्वा मिन पिन थिय (१(६०) कम - ब्य व विश्व इच । मेरे आवे तरथ तक तह (क्र) स्पं पार क्या किया। (१५) मधी काथ कडि कड (इव) वर्ध च्या विश च्याम एव पुरुष्टा (क्यान्) क्यी विका १

चातुमो

(दिवा) दिवस

2-ज्यानम् (बर्शनक) अपन वर्ष अवर्धातः (३३+सम्) भोगम्ब. याने (शा+ती) धर क्यु धार्ष (माघ) मद करना क्रमा (क्रम क्रथ्न) क्रोच क्रवी. बिज्ञे (विष) होतु. न्तु नम् (स्वत्) राष्ट्रं बरकार्तुः इबसम् (इपन्तम्) चीव 🖷 पर्धमः (अर्थवः जनसः करना परिचयं । (बीलक) संद (उप) बलं परिच्छय (माइत पाप्पो विसया न उपसमन्ते । दे समासमय! इं भरवयः

चेत्राधिः । परवृक्षे भा उज्जानं हाइ सर्वेशं बस्मेल बस्य पाष्पार सरव विमार पुष्कार तिकि-वामी व विश्वा की बाजमध्यमाय वर्षे आजेर । पानो सोहणा होर । समजा चेहपस निकर्ण

बनको लगवाणे साहर्ग्न कुणेर विनारे देवे च वंदीन । अक्रिके कि मुद्रार्थ गराब देवा विने नगरीत प्रनम्

दद (छम) वाईमा

ध्यमे समामणे। भिष्का स पुचार्थ ^{भा}क्रकासि को प्रथम्स मुख्य मुख्यः सी भवमदा ।

'पावाचे कम्मार्ग कपार हामि कारस्य ।

अभागित मंस्रीस च प्रसन्त मणुसा निर्देषण्यन्ति। नव्यक्तानं मिनेको क्षेत्रकः। परोबपारो पुज्बाय पाबाय अवस्थ पीढणे इम नार्च

करस किए सो बस्सियो ११कि

शहो दें तत्ती करच यच्छामि कर्षि विद्वामि करस

मिस्रो वि सारियो विका को पक्छान सुबह दर्द वैश्वो किंद्रकारी

^{५८} सम्बेश्य पुरुवार्थ पादा् कामाच कर्य उपमेत्रिमी

कड़ेमि करस करोमि

बीवा पावेदि कावेदि वि संस्थि बनविश्वरे।

बेदेस्^{५७}तिस्मक्रमस्य बार्

अ अधिय पदासपरा वि

ब्यासयका सरवदा मार्च तर्वास सामे य उक्रमा सं

बारिसी जजे हो द वर्र

परा इति ।

५५ बेबोनी बार क्रोब-डीड क्शांकि करामां आहे है

५६ वास्त्रको साविकां "विदे⁷में स्वकं "इस स्वास के है इस नार्व करत दिनर | कीर कैमाने इह रच बारे के प्रशा स्वरती पत्नी प्रति वे वहके शि प्रत्यात के का प्रदान्ते सार केल हो हि स्टब्स के बका -

वहरित (वदेशि) शिकोरित (प्रिय प्रति)

क्रमी निरुक्ति सुकान के

सर्वात (बन्दमिति) Feft (Feffit)

५ प्रथमी विश्वकियों स्थाने कोई केकाने संपन्नी विमा क्ल बाबे के क्या -- बेरोडरे एमिट बालको सना (बन्दसर रमगाऽऽनाः रागः)

शर्ववाम के कम्बनको पत्री सर्वताम के कम्बन आहे के सम्बन्धा आहे. स्वाचेत प्रका और तथा के अम्बे+पाक-वान्द्रेज (क्साप्र) मह। सर्वच्याई (स्पर्म) कारशास्त्रकारमान (क्याप्र) क्षेत्रस्मीन्द्रोनी (शोडम्स्)

वेषद् गावद् पद्सह वनमङ् परिवयद्व बन्धे पि । द्वर इसर निकारनं पि मारामहरमको ३१४

। स विषयसरो सो वेष पंडिमो तं पर्वसिमो विषये। इंडियबारेडिस्या मसंदित्र करून कालपूर्व क्री

ग्रहराती पापपो

छन्ति पर्यात सामृहत्व छे विराता किवार क्यर मोर माने के नानेरमारक सरकानमा FACT SH मानत प्रसंपक कर के तो न्य क्यें करी बकती नदी प्यी बीचा छ। आसम रेकड प्रमालमा जिलाने गमे हे वये पत्री पोतानं वापन्त

अनोमां है। अनमेंने जादे बाव हे

विद्यस मानतमे कार्यमा काराज होतो सदी. क्य राजमी बाडो इनर देनर 4

प्रसारकार्य सरीर क्षेत्रे बाव के

के कामने रोकत करें 🕏 से मोदी क्कारे बची काकारों सीर्वकरना करान है चार्कीन्द्रेतं शहरूय आयोजमा क्यें को वाक्षेत्रमं योग

काये के मेच वर्षेत बपर करहे 🛡 बाह्य म्याचनायमां क्रिकेपरीयां नरित्र कड़े हे

बे मार्चेश रीक कीर्ड क. के सर्वे ! तं वरी दोने घा सत्ते 41 41

नं प्रांतिको समाने क्या विकास राचे छ एवी इत्य समे हे

व्यादः ११ मो*न*ा

इकारांन्त समे उकारान्त पुलिस क्रथा नर्पसर्वास्त्र नामो-पदमा बीमा समे तहमा विमित्ति-

च वक्षांचा नामीना शबकी ६च इक्षांगुल्य नामीना नेता व के ६च अन्या नव विद्यवाण बहुवचनमा है ज्ञवदर्भ वर्षे क जन्म रागे के तथा जन्माना बहुवचनमा क्षावो प्रदेव एवं क्ष्मवाव केंद्र

र प्रश्नाक्ष एक्पन्य गृहीताल्लं सहस्रक स्थेत पंचारिता को यो दिवात एक्पन्य स्थे बहुत्त्वताला अपनेते हेत्रतः वर्ते अने सरकारित बहुत्त्वतन्ता अपनेतियो दुरेता इ.स. (ई.स.) केल भाव के---पण पण आधी त्रकः.

र प्रकार-दिश्रेया करे से दिल्ला बहुवकार्य को विदालय केली स्थानको सुर्वते स्वट कोनुस्त के विदाल-

प्रव व -िगिरिश्व क्षिति क्षेत्र माणुश्या माण्या प्रव व -िगिरिश्व क्षिति क्षेत्र माणुश्या माण्या प्रव व -िगिरिश्व क्षिति माणुश्य माण्य माणुश्य माणुश्य

४ इरायान्य वाचे बद्धायान्य वर्षुनव्यक्तिक्य प्रथमा क्ये दिखेशान्य प्रथमे स्थायान्य गर्पुक्कर्तिन नेता के क्ये यूपीय निवाधिकी इत्ययान्य क्ये दश्यायन प्रतिव वेता के

प्रवस्त प० मुर्जा मेण्ड मध्यमे मुनिनो मुणी-बी॰ मुख मणियो मणी त० मुलिया मजीहि मजीहि मजीहि साद्र (साप्र) ते अधि दो**र** न्साहबो साहउ साहभी साहुबोत्साह री साई

साहणो साह

साइदि साहदि साहदि

बदीर बदीर बदीण

बबीहि बहीहि वहीहि महर मही महिष

महदि महदि, महदि

υŧ मर्जि(मनि)

वेण साद्रणा वदि-नपुनिकेटिंग (दिष) Ħο

रदिणा

मदणा

मद्द-नपुसक्तविष् (मञ्जू)-

॰ मार्चप्राष्ट्रणमा प्र अन दि बहुतकनवी सबै प्रवयनी प्रयोग

पर देगाव छे जैस ग्रह+अवे=गुरवे क्षेत्र बहुने-साहवे बगेरे वदा -ताब व व्यक्तरूवे किसी बुट्टून शहवे सहगा व इति वह मचरिए (वेंग्रम्पर्य हे वंदाम्य सिंद गंधीर हाप्रभीने बीहे

बार्गः..)

म्लंकानी बिद् प्रवोत करावी क्षेत्र-यह (दवि-वयु) कोरे पन बाद छे कीह देखाँगे हाँहे मुद्दे ह्यादि प्रदेश दम बादे के

्पाठ`११ मो∽् r t इकारास्य मने दकारास्य पुष्टिम सूचा सपुरावस्थि नामी-

पत्रमा, बोमा मने तहमा विमक्ति-

बहुदस्य हर पश्चवन भर भनी, जो है सो है

 उक्तरान्त श्रमीया म्याची एक कृष्यरान्त नामोग क्षेत्र व व प्य प्रकार कर द्वितीयां बहुबस्तारी हैं प्रयुक्ते बस्ते के सम्प रागे क तथा प्रस्ताना बहुबबबमां अही अरूप पत्र क्यांता केंन

२ प्रध्मानु एकावन तुर्गमानु बहुबकन बन्नै वंबाईना की की रिशा एकस्थम करे बहुत्थारत क्रमणी हेरज. गरी अने नारमील अनुसम्बन्ध अन्यसेनी पुरेना इ-ड (है का) की

सार इ.~पा पत्र मुखी, शहर १ अस्मा-क्षेत्रीया कर मनोवस्ता बहुववस्त्री यो विवास्त्र असी

ब्यामक्ष पूर्वते स्वर शेनाव व विशालन प० व०-पिरिश्वज्ञ-मिरंड माणुश्ववा-भाषवी प० वर-निरि+समो=पिरओ साणु+बर-माधर प॰ बः-गिरि+िक्तिस मानु+४ मानू

षीः षः-विस्ति। निर्त माणु+इ-माण् ४ - इंडाएन्ड समे जन्मगुन्त स्ट्रेनचर्मान्य प्रदशः स्थः हिप्पेदाना श[्]रे। अधारान्त बर्नुनवृत्तिन-वेश के अने गुडेश रिवर्डिशी इंग्राप्टल करे इन्द्रापट सुर्देश केंग्रा ह

सुचि (सुनि) पदवस्त पद्मप्रम प० मुची मुणा मुलमो मुणियो मुणी, यो मुजि मिना मणी त० मणिका मुजीदि मुजीदि मुजीदि साद (शाप्र) पे साह श्साहपो साहर साहमो साहजोत्साह ये साद् सादुषा साह तेण साहुआ साहिंद साहिंदें साहिंद दक्षि-त्रपुंसिक्तिम (दक्षि)

ίeι

पुण के क्षिया प्रदीप प्रदीप प्रदीपिय प्रिक्त करें कि प्रदीप प्रदीपिय प्रदीपिय प्रदीपिय प्रदीपिय प्रदीपिय प्रदीपिय प्रदीपिय प्रदीप्त प्त प्रदीप्त प्त प्रदीप्त प्त प्रदीप्त प्

भाषामुख्यां ह अने हि बहुत्यतां असे प्रवस्ते हतेगा गर रेगात के कैम प्रत्यवेदानि देगत बहुद-नाहरे बरेरे हरा नाम व स्थलाने किम हरूल मार्टे हरूल म हो पर हरी नाम व स्थलाने किम्पा किम कर्मा प्रमुजीने कोर्टे समी । मोनक्रमी किम सोन बस्ती स्टू-बहु (सीट-बहु) सार्ट गम सार्व के कोर देशने हरे हरू स्वत्यां केम्पा वस सार्टे के ख (स्थ) कर कर्म -सि

शुक्ष (सम्) हुए, प्रशेषा **बाई** (विति) बहित, साथ,

विशेषि (केन्द्र) केनी. विका (क्यी) रामः वेद (क्यु) वंद्र श्रेप

सङ्ख्या (सङ्घ) नव

चारि (छन) 🖦

ঘাৰৈ (ছবিৰ) মৰী বীৰ

महिन्द्र (सन्ति) इत्यस

रिसि (करि) वरी-सरि (सरिद्) जानन साह (शह) बाह्र श्रीक्वार्व

सवरसु (दर्वकृ) सर्व बान्नारः

बाहि (मार्थि) राज गीवा-

र्थस् (अषु) व्यंष्ठः बहि (रवि) रही-

सिवद्य (मिद्य) वाड-

मंति (बीभर वेशी मचि (धीन) स्वी

विदेशक

वपुसद्धाधिम

व्यवस्य (इतक्ष) उत्तक्षर व्यवसार े देश अन्य समाराज्य राज्योजा संदर कांग्रन न भी कीर पराणी

कैयं करे इच्छान्त सामनो बाइक बान है.

५ बन्दरी बेरद को बने को भो भने के मनो बन है भी भारत के कि की नाम के

चन्न्रहरूचे (प्रपुष्टः) (विल्याने (विकास्य) पाने (कारम्) चन्नरूचे जारार-४ (कृ.) वा 'भ' नो विकले क्येर पर पान के

भरता | (माझा) ~ भरमा काम १ (महा)

मञ्चा व (१५४) वक्ती

पदादग वि (अमावक) प्रमानना

करमार सम्मति करवार

भागती, भार प्रमास प्र (प्रमार) अमार,

मूडी बर्च-

भाईत) (४१९) एउव भरिहंत) शीर्वेडर.

¹ मम्दारिस वि (अस्मारध)

विकिया दि. (क्योर्ग) समीर्ग

जनास केवा

नपनो

चलकि (

सोमंग्र न सक्त नक्त समय मार्ग है सारक दुंश्यारेश ह्वम मार्ग हैवर दुंश्यारे हेवर दुंश्यारे हेवर केवर दूंश्यारे हेवर केव केवर हैंदि (१०) केव स्वायम दि (१०) केवर स्वायम दि (१०) केवर केवर देंश्यार दुंश्यारेश केवर केवर दुंश्यार दुंश्यारेश केवर हिंदि हैंदि (१९८१) कावर प्रदेश केवर दि (१९८१) कावर प्रदेश	पाख्य वि (याक्क) शुक्रम करणार परिक्रमण न. (मित्रक्रम) शावरत्व इत्य क्रियाविके- वाहकीर वाहकीर वेसकेर मेपकेर मेपकेर मेपकेर मेपकेर मेपकेर मेर्का (शाक्स) मेक विवार, गुज वाल- मजीका है है. (मनोड) केर्र
करवा सरकः । माजीरवा है ¹⁸⁷ (प्राप्ता) करें। भिष्ठ कार्य राज्योग्रं क तो गण बस के त्यारे अस्य स सो गें पंत्र के अवीत्र्ण (सिक्त) वरण्य (क्राय) क्यारे प्राप्त के त्यारे वर्षा के अवीत्र क्यारे (सिक्त) प्राप्ता (वर्षक) त्यारि वाव के स्तित सारि एक्य होरातो अब तिरोर प्राप्तीम स्वस्त मंत्री क वाद नहीं कहा -क्या राज्ये (क्या) (शक्तों कर्षर 'स्त्र प्राप्त क्या के देशके 'प्राप्त के देशक 'प्रमुख प्राप्त क्या के देशक 'प्रमुख प्राप्त के देशके 'प्रमुख प्राप्त के तिराह 'प्राप्त क्या के देशके 'प्राप्त क्या के देशके 'प्राप्त क्या के देशके 'प्राप्त क्या के विष्त क्या क्या के विष्त क्या क्या के विष्त क्या क्या के विष्त क्या के विष्त क्या के विष्त क्या के विष्त क्या क्या के विष्त क्या क्या के विष्त क्या क्या क्या क्या क्या के विष्त क्या क्या क्या क्या क्या क्	

#र शब्द (प्रक्तिन)

सिक्स (मिस्र) घाउ-

वंस् (अपु) अधि

क्षकि (राष) रही

अपुस्तकारिंग सङ्ग (रहा) तत | कं बारि (कर) वकः | क्

इंद्र (स्ट्र) पनः

विद्योपणः

पर्वस्यद्विच्यु (वर्षक) इसक सम्बद्धाः (दर्पक) धर्व सम्बद्धाः
पर्वतः सम्बद्धाः

पहिला, स्वापन्य (कारत) द्वारा प्रतिता, स्वापन्य (कारत) वास्ता प्रतिता, स्वापन्य (कारत) वास्ता स्वापन्य (कारत) वास्ता स्वापन्य स्

रोपों करो इसरान्य गामनो साइक बाव छे. १ वन्यपी मेदर 'हां समें हिं जो 'व्या है 'न्य बाव हैं समें शाहियों जो के 'व्या बाव छे

पन्डल्मी (ज्युकः) | दिल्लालं | (विद्यानस्) | यालं | (द्रायस्) पन्डल्मी | पित्रालं | यालं | यालं | भारतापं⊤कं (ज् ्) वा 'जू' वो दिश्यर्थ स्रोत वन बात कें-

मलार-४ (च्ु) वा 'वूं' भी निश्नमें बोल रण पान है इन्सा | (प्रश्ना) | अन्सा | (साझ्टों ~ | सबीर्य | (स्वो

मरिक्ता सम्बज्यको सर्वति इयण्या सह संसम्मो सह द्यायच्यो । छन्त्रमा संह वक्केसा। प्रमोक्रिविदस्य सासगस्स पदायमा संवि । पुरुषो सीसाम पुरायमङ्ग यहिसंति । महिश्यू सत्याणमध्येषु न पुरुष्टि ।

महमा मधोउजेस उद्याणेस सार्च समायरम्ति । खाइको नचेसुं विस्कृषं न पावेहरे । ख्री साइहिं नद मापासवारं न

कामार्थ कुष्ट । सार्थी प्रमामा संचालि रीसरेज । सुषो धम्बद्स तत्ताई सुरि । प्रचिति ।

साह गुरुद्दि सद न्यामाणी

बरको मस्दिस्स गुजे बक्बोर्ट ।

गाम विद्वारते ।

नियरको मकोक्कद्विक्रम्बद्धि वसंवि । घषानं चेव गुरुषो भाषसं -- दिवि ।

घन्मो देख भ मित्रास धम्मी प परमी गुरू। नराजै पासको सम्यो सम्यो रमधर पाणिको ॥१॥

दुष्केस साहेरतं के अलंकि

ते बच्चो सरिय

त भेस्पी कि मुक्ति !।

मोयनहस मञ्ज्ञक्ति वर्षाः

घरम्स मगोप परेत

निवर्ड मंतीडि सर्वि रसस्स

मजिण्ले मोसद नारिः।

समय ।

मिक्स ।

परतुष्यो जले दहर ।

मंत्र मंतेर :

दार्थय वियान साहन होति साइदि पिरद्रिम किरव। दार्ज दिलेण रामो तित्वकारो Em gig ata

ब्रिगेड्स ५ (दिसाव) ब्रीवर्व-

पानुबन्ध ५. (त्रपुरन) कापरेव वित्तिक वि (वित्तिक) देव क्रकाबी पत्र-क्ष विस्तरम् मिस इ. इ. (मित्र) सम्बद्ध सेसम्ब र (सम्ब) हेर होत् सिक्ष कोला सासच र । शक्त) काण शास दिया, मात्रा वासी-वहप्य बहुबर (बङ्गा) इन्यं देलं (क्क्स्) केस केवी धैते पात्रमो ब्रह् (मन) विदार करते 🚉 भद-राज् (भर+गः) सरधनर[करका, बाज्यान व्यक्त वि-मेत् (जिश्मम्) विसम्बन बदमे (बसना)न्य कर्तु,वर्तेक्ट्र

चड्ड (जाशोड्) त्याई-चा-बोड्} नारोड्डन बर्खु बीमर् विश्वरूर (विस्थ) मूर्ग वर्ष या-सर् बद्धर् (उद्भ्यर्) उद्धार वर्गी-बच्च (४५) न्यापर् खन्नस् (मा-सार्) स्वार् हैनी. पाल (दल) चलर कार्न

फार्ट } (करत्) कार्यु-वेर्त्यु सेन् (स्ट) देश बरवे हा रहत्_{री} (स्टाब्स्ट) न प्रमाप (क्लीप) भाकियों (पंचा)

-- बरी (समद)

सम सम्ब (मर)

'स्व' विस्त्रको (विस्त्रक)

बोर देवाचे म्ह बच्चे वर्षी. **'**स' पन्ना (मस)

रस्टी (रहिना)

मुजि (गुनि) पः मुणिको गुचिरम मुलीच गुचीमां रंग मुजिको मुजिको गुचीमो मुजिका मुजीमा मुजीम-गुजीब गुजीहिरमो मुजीहिरमा मुजीपुरमो ए॰ गुजिको गुजिस्स मुजीप, मुजीप' साह (साप)

साह (सायु) वर साहुवा साहुव्य साहुव्य साहुव्य पंत्र साहुवा साहुव्य साहुव्य

गाइव गाइदिको गाइदिको गाइपुरवी ए॰ गाइचा, गाइच गाइच बढि (बढि) च० दक्षिणे बढिमा बढीच वरीच

भ० रहिमो रहिना स्टीम इटीमो प० रहिमो इटिमा स्टीमो इटीम, प्रीमा इटीम इटीहिंग्से स्टीमुग्ना प्रीप्ता होटिग्स प्रीप्ता स्टीम स्टीम स्टीम प्रप्ता स्टीम स्टीम

मह् (मधु)
क् वहूको महूका महूक महूको
क्षेत्र महूका महूको महूको महूको महूको
महूका महूको महूको महूको महूको
प्रश्न सहस्र महूको महूको महूको
प्रश्न सहस्र महूको महूको महूको
प्रश्न सहस्र महूको स्वर्धको
कर्षत् (प्रश्न स्थान स्थान मुक्त (मुक्त) साहको
(प्राथको) स्थान स्थान सुक्त (स्वर्धको स्थान स्थान सुक्त (सुक्त) स्थान सुक्त (सुक्त) स्थान सुक्त (सुक्त)

गुकराती वाक्यो भने सम्बन्धें युवन की ह

-सुनिको शासनो रेक्टि होन **हे** यव समाराजीने यमें हे तमे बाह्यमोनी साथै (नेबां वे हमेचा प्रमावे स्थानमा सम के को बारावें उस गाउ

जीतकाम करते हो. ई मक्ती त्याप कर है नोन्द्रीको रूपमा छो छ व्यप कारते की है है

समियो क्लान्ट प्रधानन राजे है पॅरिटो व्यापिती नुवासा नवी वेश व्याधिनोने पर परे छे

है स्टोनेनडे सर्वह वयनलगी धावि ६३ स -- करफोनी सन्तर्भ पन बोसे हे

रामाओ अप्यामीने वंग करे हे

पाउ १२ मो

TREET.

चाण्डी एक

(बासु) इक्षायन्त बकारान्त पुर्द्विग तथा नपुसक्रकिंग बामो

चरती पंचती की भरी विमक्ति

प्रश्वय

कोचे बंदन करे है

क्रांचि करण नहीं-

सेव पानी करि के विवर्षे जन्म बोमधे पर्नी-

राज्य रही कम है शह असारा सरका वापीकीनी

धारको को रक्त २४ पाममे

ऋषि प्रश्यक्षेत्र आस्त्रकर्मा वर्षे हे.

त्त बदार करे ह

चो को व दिन्दो सुन्दी

निमेस ह. (निमेद) पणकारी 'पर वि (सम) कम्ब क्रेप्ट बीमो परामधः प्र (धम) परामक पयास त. (प्रचाक) प्रकास पसाय पु (प्रमाद) महरवानी

पष्ट ५ (अनु) प्रमु, स्थामी अध्यक्ष प्र (पूर्वहचा दिवसनी पहेंची माम-पण्ड ३. (मन) प्रश्न संशास

पुष्ट वि (पूरुव) पूत्रमा बीम्ब दि (बहु) एड्रं, वबारे. अगर्वत है (गयार) क्षेत्र

मयपंत विश्वास भयवान सह (मत) प्र धवनेशी मस्य वि (भन्न) मध्य श्रीव बीस्ब मुक्ट मानुदु (बाबु) सर्वे

मण्यु स. (पृथ्) मर्प मोत.

मन्द्रपद्ध द्व (मध्याव) रिवरानी संबंध माथ.

'सा' होत हो 'ब' यान हे इस्बी (इस)

६१ प्राप्तको अंबर का द्वीर का पर पाय के अने आहियां ale (aifte)

महर वि (महर) मीप्र, वार्ट. मन्त्र (सन्त्र) क्षेत्र

मंद दि (क्षम्) पीत्रो, माळग्र-

मान 'सर्स

करत नाम

नास करती

मोहसम हि (उन) मोहतपान रचा कि (रच) रीक्ष छई.

रिकास (रिस) यत कडू (वि (वड्) सुष्क मार्च, महेंच (অভিন্ন বু (ৰাষ্ট্ৰ) অধিন

विष्टु ५ (विष्टु) वाधुवैनई नीमें संति ५ (चर्मित) बीढमा धीक स्तरीच नि (हमीप) यहे नवीक

सभुपु (धर्म) सङ्ग सिस इ' (ब्रिप्ट) शहर घेटाट । ५ (बंदार) शहर time !

^{६२}द्वरिया ३ (इस्टिन्) क्षानी.

वर्ति (श्लीत्रवी) े ब्रह (स्वकि) काराय — धारते क्षेत्रे स्टब्स कार्यमा पूरा को पूर्व के पूर्व बत्ती क्ष्मी, कार्यो (पूजरा) हस्त्री (क्ष्मा)

1 कारको गणि इ.-(बंकिन्) सक्वेट वर्षे सतार धोषम ५ (बैठम) जो नहत्त्रीर (भन्नार) क्यारी क्यांनीया प्रकार समयट बोहरा व (कारत) बीहर, 👕 बारवाधि नि (बहारिन)महार्थे बरागहिम में (बरायहोत)का वी महत्र करावेळ, जाडो-काबरण्ड¹¹ड. (अपराह दिव-सनी नाक्सी अपर ब्रोत प्र. (बन्द्र) ब्राची चीत् शीवरत प्र व (बोबाय) बोबन सबराह पु (स्वताव) ग्रेगी बॉक् सरिक्ष ५ भ (अक्रि) व्यंत्र লতাৰ (বৰ) উক্ ब्रालंड म. (सम्) उत्ता वशाहे. भूमि ५ (भनि) राग सद्ध (६२३) साह , कवि दु (क्षि) संदरीः कामसम वि (सम्)कानस्त्रावः

क्रीबसम वि (बोरमम) स्रोपनी केवसि ५ (केवच्य)वेग्यकार्थ । सम्बोमां 'स्य व्य-स्य-इत-इत्य क्षीव से तेनी, व्य

नमोद्धार । ३ (दगरघर) के सि 5 (बर्ग) वादीसमा विर्वे

इं-रक्ते (शक्र) 'ল'-বিহু (মিশু) 'm'-Megr -(34mm) *#'-*E15 (FFI'E) 4 -AT (ATT:)

बार छ तक्त्र सन्त्र सन्त्रमा स्वामी पने पर बात है का देव पूर्व'-पुक्रम्ति (दुर्वाहकः)

'va'-evi (men)'

'श्रम न्याचे (सामग्र) (अंदोन्दाक्षी (अर्थनादः) सान्द्रामी (जारा ए)

र्मंद दि (तम) चीतं, आकरा.

भारत वि (मक्त) मीय, साई.

मन्तु ५ (मन्बु) क्रोब.

चोड.

निमेस प्र. (निमेन) प्रवस्ति

परामद पु (सम) परामद पपास दु. (प्रदाय) प्रदर्भ

परिव (सम्) अस्य केंद्र बीबो

पसाय पु (प्रशःह) सहरवानी माइसम वि (छम) नोइमर्गान द्या दश ब्रह्मन सरस्र पद् प्र. (क्रम) प्रम स्थानी रच दि (रफ) पीत छत्ते. अध्यक्त । (पूर्वहूच) दिवसती बहेची मच रिक्र इ. (रिप्र) प्रश पंचक्ष प्र. (प्राप्त) प्रश्न समाज-सङ्ग्री (सङ्ग्री त्राच्या नार्थी, प्रम मि (प्रात) बुक्का बीवन सद्धं (Peter ₹. ব্যবহার (বাই) লাফি वि (बहु) वर्ष वक्तरे विष्ट ५ (विष्यु) शामीको नार्ने भगषेत है जि (मत्त्वर) केव वंति ए (शांक) शीयना साम मपवत बेबाब भववान फरते काम मह (मर) पु सबदेश). समीय दि (नमीर) रहे। नतीय-मन्त्र वि (मम्प) मार कीर सक्त ५ (धर्म) सङ् शीख लगा. सिह्न पु (विद्व) सम्बद भागु ५ (मान्) दन सम्बु ह- (सूत्र) मान मोन-भंदार । ह (बाह्र) नहार संघार नास करका. मग्रहण्ड प्र (मध्यक) दिवयनी ^{६१}द्वरिय १ (६रिटर) हार्च TOT MIN. ६१ रामणी अंदर 'स्त्र हीव हो 'रव बाब हो असे आसीकां स्ते होत का 'ये दाव है रूपी (साः) वार्गे (श्रीप्रद्) 🖺 . Ca (arfter) at (cafe) भाषार-गमरत अमे स्तान शब्दको पत को पत्र' है पत

क्तो नदी नन्ती (प्रस्ता) सम्भ (स्थाः)

भस्पप (अम्बद्ध) विपर्शतः, হিনু (কিনু) দৰ स्रविष (धनाक) 🖛 वेर्ड-करिय (गरित) क्वी पादुको बद-सस्त् (वर+दम्ब) अफाल गम् (सर्) क्युं. कर्ता, किस्स्बर करके बिये (बेर) केल प्राकृत बाक्यो. सदब्बुणं मरिश्वंतायं भग बहार न कहेर[ा] वतार्व इस्तो विनमोसाधै अतुज अधिष्ठं वारिमतिय। भव किंदेर । रक्षे सियाणं 13 हत्यीणं व सर्व दोर। करागद्विमा बंतुमो तं नत्यि केवसी महुरेज सुविजा राजीय क्षे परासर्वव पावति । चम्म<u>स</u>ुवयसङ् । कार्यको संतिरस बेहप मध्ये बरेज्या । सरिको सबराहेक प्राह्म पच्चुसे माञ्चनी पवासी रही क्रमंति । इक्ष । संवाधियों केवकियों वर्ष अवसर्वति 🗠 जमो पुजान केवडीने गुक्रने छ। -पंडिमा मण्युणी बेद बीहंति । विवादिको क्यमे वर् पर्य तुरहे तुक्रमी विचा सुक्तरस धरेररे । ६३ अनुस्तरमी सड़ी 'ड' बाबे हो 'ड' वो 'च' विकासे करन के सिको-सीही (किंद्र) वंचरी-ब्हारी (बंदार) कीर देवाने अहलाय ल होन ही पन 'इ नी 'प बान के दाबो (दाहा)

۷.

पुष्पण्डे अवरण्डे य मंदी दोर । ममे पहली पद्मावन जीवामी ! महबो मध्यं पि कासर मन्त्रं गोधमाओ गवियो पण्डाण × कविका । मुचरं इस्विमी । गुबस्स बिव्यप्य मुख्यको नि मंगाराणं करतेल बंबणस्य पश्चिमी होर । सर्व को बहेर ! । नरिय कामसमो नाक्षी मरिय मण्डुस्म सो पमाओं 🛊 जीको क्रिया विमेश्विप मोद्रसमी रि मिमहस्स माध्रवहे आणुस्य नत्य कोबसमो चन्द्री नत्थि ठावो मार्च तिक्सी होर नाव्या पर सद ॥१॥ गुज्रधाती बाक्यो

a

क्वनैय राज्यनी पासे स्वासी विष्या ग्रहने प्रसा पुष्ट छ म्प्रसा राजे 🛊 अभे सर्वेड सराब्द्रण पासंबी वर्स विद्या सन्त्री हरकोश क्ष्य शंभारीय क्राय म्यानीओची विक्रिते संद्रपासे हे बरमनो प्रकार विकास समित i स्पेका प्रयोधी शाम्ति (विल) वै TH W बांचराओं झाइनां शास्त्र स्था ते दौरम प्रकार राजने उने छ धारित (क्रिनेशर) मा व्यानकी

असे यह नारी बस सामग्रीय THE SE S मनद प्राचीत्रांचा परम शत्र है शासरी श्वरतिक्षांनी सह व पन कीर प्रकार होने और छ देशकीलां बचनो अञ्चला होतां **श्राम्यक्ष प्रमुद्ध प्रमुख समे हे** À. सिंही द्वाचीवाने पढ़ी है इच्य केसि (फ्रिम्पर) प्रकेशी धार करूने अनुसन करक सम्बद्धाः वामे हे.

ममनं मध्ये सारे मने ध

नवी.

निको करम नदी

(बाबु) रकारम्त उद्धारम्त पुस्किम तथा नर्मसकसिम नामो सत्तमी विमत्ती तथा संबोहण.

प्रत्यय

QE SO स॰-मिम, सि

सर्वत्रका एकद्वानां अस्त स्तर दिक्की दीर्व वात छः

मुणि (मुणि) स॰ मुणिम्मि, मुणिसि मुणीसु, मुणीसु स० हे मुणी मुणि मुणठ मुणेसो मुणिणो मुणी

सह (सह)

स॰ माइमिम साइमि साइम् साइम्डं सं॰ दे शाह साइ साइमो नाइड साइमो चाइयो साइ

नपुनवर्षिकम् संबाधनम्य पृथ्यपन्तरातं सूच रूप अ रहे छ. तम अ बद्धावन प्रवस्तान ते त वप वैश्वों न छ.

वृद्धि (वृद्धि). स दक्षिम दक्षि दक्षीस दक्षीस

लं- हे बहि entr. entit enter मद (मद्र)-

स महामिन, महेसिः महस्त महस्त संदेश महरे, महरें सहित.

महस् धन्त्ये प्रक्रमां 'अम्' व्यवेष क्षत्र के क्षत्रे तर्ग

क्रम प्रकारण राज्ये के बार हे

ष भम

ष सक

बी॰ गुरू

त• गुरुमा

ममबो समुद्र धममी समुद्रो समू

गुरको गुरक गुरको गुहलो

वी मर्मु समुद्री सम् बादोनो स्था 'साह्र' प्रमाय नपुंसकस्मिग प० देवमुं ममुद्दं भमुद्दं भमुषि देन ज्यो दुविज जर्दानाव 🕏 सपूर्व इसो मेमि (पुर्विक्यःग) प निर्मा केंग्रह केंग्रभी केंग्रियों केंग्री वी मेमि ने निको ने मी त० नेसिका मेमीडि नेमीडि नेमीडि च० नैमियी नैसिस्स த்திய த்திய प नेमिजो नेमिस्रो नेमीमा मेमिली मेमीओ बेमीड नेमी नेमीड मेमीडिस्तो हिन्दो, नैमीसन्त्रो **ए० वै**सिको वैसिस्स मेमीज मेमीज स॰ वेमिमिम वेमिसि नेमीस नेमीसं स० हे नेसी मेसि नेमड नेमसी सेविकी मेवी गुरु.

IJΨ.

गुरको गुरू. गुरुकि गुरुद्धि गुरुद्धि

व• शुक्ष्मा गुक्स्स्रः ग्रहम ग्रहण प॰ गुबनो, गुबलो, गुबलो, गुबलो गुबलो गुबलो गुरुक्षिको गुरुद्धको गुरूव गुरूदिन्ती क गुरमो गुरस्स गुरूज गुरूपं स गुद्धिम, गुद्धिस ग्रद्ध ग्रद्ध गुरको गुरु गुरको,गुरुजो सं• गुरु शुरु H. बारि (वर्षसङ्ख्या) बारीतं बारीतें बारीचि प॰ थी॰ बार्रि बल्लेजो रूप विसि स्मार्च. दे वारीई वारीई वारीकि मं• हे बारि थस (थम्) प ो संख सी र् केस्त्र केस्त्र संस्पि बानीनों रूप शुरु प्रमाने वस्तु वस्तु संस्थि मं असु चम्बे

बद्दसय द्र (अलब्ब) अविक्य समित्र (बड़ि) स्टी

क्रमार दि (पम तत दिवलं भाग्नर ५ (मम) ब्लूर राज्न असर्विष प. (मपुरेन्द्र) गयनोशे

धारबंद नि (सन्दर्ग) देवारे

दि (नम) तबीव

बक्तम } मि (बनम) सप बक्तिम } बहुत र. (अन्य)आवर्त्तपाथ धाराने केट प्र (कप्र) सन्दर पश्च किया नि (१ए४) वर्ष वंता

इ.स. ३ (१०५) १०४

पासन् नवीत

गस्य ५. (पर्देश) पक्षिस्तर. महाबीर प (सम) बार्यभमा गुणि वि (गुणिन्) गुल्लास्य बुक्स प्रम (बहुः) श्रीक नेत्र मेक प (छम) मेर परन. विषयोग-गं∃ (बीवओ%) रक्ताज न (रहन) रहन, रकस्स वि (धर्म) पुन्त पुन्न,

घीषिकान (बीमित) बौदन जीवतर. **बीवियत** ५ (बोविदान्त) भागाओं नाम

बोद्द पु (काप) धक्रीयो नोबो वृष्य त. (प्रम्य) पन इस्य सपनि विरम्भ वीद्य नि (वीर्ष) कीर्य सञ्ज **दियस्त हे पु**.न (दिवस) विदन

दिवद (वोस ५ (राप) प्रमृत्य राप नायस्य वि. (इतिम्न)शक्ता परित्र. पविच प्र. (पविन्र) पही. पमाच रे प्रन (प्रमात) परोड पदाय 🕻 परमप्रय व (क्लार) उत्तम

पायु पु. (पाठ) पत्र्यु पहन. पाचित्र (छम) हान प्रमा हे है. पॅरिम 🕽 सक्दर्जुं. में बस्तु (मन्द्र) मल्द्र मत्यम पु म, (मराक) मार्च महस्सव े

महोसब

(प्र-(महोत्स्व)मारो

एकम्ब. रेषु रु. (वज्र) वज्र रीरी समान ग्रन वरजपाणी प. यज्ञपत्रि) स्ट्र बार वि (मन) भन्ड उत्तम बाक प्र (कान) प्रका

चौपक्रम नाम

विज्ञतियप (विद्यक्ति) विद्या-नो सर्वी विद्यार्थी विद्याप्त (विल्ला) विल्लालक TER. बिन्साच व (विज्ञान) सद्योप 481 SF

विस्तविस्त प्र न (विकासित) क्षिपण क्यी केस सक् ५ (६६) इन सबस्य न (सम्य) सन्दर सञ्जय ३ (रुड्रेज्य) रिहायन

बेरमान (देसमा) वैधयः

सिवागिरि ५ (स्म) शिवायत gin farit इरि ३ (सा) रन विका

ď च॰ गुरुषो शुरुस सुरुष सुरूपी प॰ गुरुषो, गुरुषो गुरुसो गुक्ती शुक्रमी गुक्रम गुक्किको गुक्सम्बर्धः गुकर गुक्किको ड॰ गुडचो, गुडस्स-गुक्रण गुक्रण स गुरुमि गुरुसि गुरुस, गुरुसे गुरवो गुरव गुरवो,गुरुवो, सं• ग्रह ग्रह गुरू वारि (नर्पुसक्राह्म) प बी• बार्टि वारीतं बारीते बारीणि वाचीमां इस है। सि समार्थः दे वारीहं कारी वारीकि स• दे बारि बंद्ध (सञ्जू) बेस्तर, जेस्ट्रॉ संस्कि **शामी**नोत्तम सुद्ध प्रमान्देः यस्इ अस्र अस्मि सं अस् হাৰৱা भाइसय ५ (२०७४) बरिशक पारीनुं तमीन व्यक्ति पु. (अभि) अकि इ.स. ३ (इन्स) इन प्रतिम (

कसार दि. (धम) नार निवाल प्रमुख है वि (उत्तम) **ध**र्थ, क्ष्म न (कान)मारधीकाव व्यक्ति समुद्द (६म) **नपूर, एक**र. केंद्र हैं (क्क्ट) गर्वर पह भन्नरिष् ५. (मपुरेष) रा**क**ोनो कियम नि (इस्त) ऋर्व केंद्रन रामा सक्षेत्र मि (मरकत) दशहे होगी. काम पु (देन) दशन

सम्बेस

बंदसरे कायणंतं शरह क्षिक कायां । ममूसं तकस कवी बसति । दे सिस तं दक्षिस बद् मासत्ता कि । साइवो परोदयाराय नयरामो नपरीम विद्वरेहरे। वसदो वसदं पासेर विकार व । बचेस साह उत्तमा मरिय । इतियजो विद्यम्मि बर्मात । दे सिस्तानं सम्म बन्धपणे न महिज्ञेंसि । सम्माणीम् सुचार्गं रहस्य न चिक्का । गिम्द विग्धा विश्वसा इचिरे। सिस् । तं गणप वष्टस्यो सि ।

मूरा पाजियो स्मस्स मसार

वाजिशत ।

स्स छसारस्स सम्र्यं न

तक तथं वि बेरस्रो । पण्या गवेष सम्य विसयि सण कांण पि ॥१॥ मद कद दोमो विरमद कद कद्र विसपिद्धि द्वार वेरागी। तद तद विनायम्यं भासमी किया पराज्यां ॥२॥ घन्नो सो जिमखोप, ग्रस्थो निपसंति बम्स दिवयंति । घरनाज विसो घरनो गुरूप दिभप पसद हो उ ॥॥ गत्रराती शास्त्रो

तरह ।

नागुणीस ।

पाणीमं तित्यपरा

उत्तिमा संति।

संबंधा विकर्ण ।

ग्रणीसं चेम गणिणो रज्जंति

में पहुंचे रापद संचेच ऋजंति

सच्चे सर्भ वि सीतं. विस्तार्ण

को दोसे थयर ना सम्बन्ध

ब्डमे बंदाई इसी बारव करे हे. **रित्र रहोने तैयकाला स्रतिस**र्वा दे मक्सी क्यो भारत्य है

मार्थ शक्त्रोमा छडो के राज्यों निवरित सुवान छ.

× पंचपीन रक्षाने दृद्धीया दिमकि एम बाच प्र. खोरीय बीहर (बोधइ निवेति).

```
सम्बंध
                               पर्णिषु पत्तादे ।
रदाणि (नि)
                               राष्ट्र राणि हिन्दस्य
ण्डसि एडसिन )
                               सम्म (सम्बर्) मारी पैन-
ण्डरमा काया
                               नडण नठणार (स.५००)
नडणा ∫ परेची न्य
                         यानुमो
                               परिन्धा } (पर्स्सि) काक
परिन्धा } कर्च परेर्ड-
           घद) मव्हिमान
                               पूर्व (यूत्) प्रमाध्ये
                               तुक्क ( गई) क्ला करी
जम्म }
           (মন্) রাক
 मागर ।
 आरप् (णव) सम्बद्ध
                                सर् (क्) मध्
 डिक्स (धर्म) काल बाल
                                विराप् (विनग्रः) ग्राम्य
                       माकृत बाक्यो
                                         न सन्तादेवी।
 भारा सत्तस्य सत्वाजि
          मेहिन्ति ।
                                सिक्तिरिया समाव अर्थन
 विक्वत्थियो प्रमाप पुर्व विभ
                                                  तिस्य ।
                                मेरम्म बसुरा बहुरिया देवा
                                देखिंदा व पहुची महाबीरस्स
 सीसा ग्रहरिम वय्क्रका इवंति।
 पविचनो तक्ष्मं वसंति ।
                                बस्मस्स सदोसद कुवन्ति ।
  मुजिसि चरमं नाजमत्यि ।
                                 पक्कीसुके क्लमा संति।
  समो इसि पाविस्मि पाक्री
                                र्धागिति पानो वर्गन रूप
   थरेड तमी कोमातंत्रकः-
                                सौकेय विरक्षिकार्ग शीविम ।
      पानि चि वर्षति।
                                 सरकां सच्चं सीर्श्वं तमे व
  शक्तकपुत्रा विकिरेज समो
                                                भूक्तपमत्यि ।
```

ব

पाठ १४ मो

भृतकाळ

ी व्यंक्रपण पातुबोन सर्व रचन को सर्व पुरसमी ईस क्ष्य को हे अने सरफर पातुबोने 'सी 'दी 'दीक' प्रचर्म को ह

र्मा अपन र्मा प्रस्त } — इंब

उग्र⊶्डस्-१ईश=इसीम कर्करीम प्रदू-पडीम स्व-शंडीम बोह-नोडीम-

नव-श्रद्धाः वाह्-वाहासः तर्मत्वन (— सी दी दीम

लंदुस्त र सा का का का कोन्सीनकोसी मेन्सीन्येसी कोन्सी कोसी मेन्सीन्येसी

दोश्वी दोदी नेश्वी-नेदी दोश्वीमन्द्रोतील नेश्वीम-नेदीम

न्यतन्त प्रमुक्तने प्रस्कोशी पूर्वे क्षा सावे त्यारे नेमान्सी नेमासी

नेम+दी=नेमहो मेच+होस=नेमहोस

संबन्धरन बहुआने 'प्' प्रस्त कवाधने 'सी ही' वारेश प्रसंत्र प्राप्ता वार्युक्तर्य देशाव के. क्रेय-सुद्दरगरनी-सुकेरी कि वर्षाव रोस्कि अम करा व सुकेरी (बहुदे हु १९-११).

अक्टमर्थ किंदानुने स्वानं कार्य को छ.

+ का प्रत्यदाना स्तर स्तरे इस्त पा वान श्र

क्तिमां वे दुनो इस्य करे र्च्नोदी वेद प्रमय थ. पुण्ये कीमान्यांमां शुरुष्ट वर्षाः वंतियो अञ्चलकोकोचे विद्यान वे परिचयं उच्च प्रदासी है करण नवी. का इंग्लुइ ब्राचन रक्षाच्यां ब्रह्म मेरे हो. है सक्त्यों तमें स्था क्यों से हैं प्रस्थानो वित्रव कावाची विका-भने सिहायक काए सीए वींओमां अपन वसे के. समेनामा शाचीकां बळको स कैस पञ्चलामा सिंह, पश्चिमामा वाष्ट्रमा एत्रमी सर सम्बद्ध नही. भाग सम्बद्धीमां समा समी भिन्न क्रम पायेशी हुन्य गान हा. वैशामां इन्द्र अन्तम छ तम धर्म प्रकार कंप्रस्य कर्तन्ती सहस्रो चमम्बे जीनोनुं रहण उत्तम 🕸 प्रकारिकी है. पश्चिमानी उत्तम पक्षी कोच 🛊 🕻 गाउँकाने स्टब्स अन् होती मा राजीमां क्या मतकां के -1 इसमो हू समुभागी साथे कई हूं सनिकान चीतम काक उत्तर मार्थामध्ये जीवास्थल सम के CONTRACT

~

बॉहिस र्शेस

हविस

ष प्रसाचि ---

हो-होरपा इय-इतित्या

मिछा+य-मिछारत्या सिमारहरू

वर्षे+म-(उप+इ) उधित्या वर्षेद्रत्या वर्षेष्ठ, वर्षेत्रेष्ठ-भग-सायगिष्ठे संघरे सेविको माम राज्या **हो**ल्या (ए व)

धमधस्म मगबमो महाबीरम्ख व्यादह गबहरा होत्या ४ 'स्ट प्रध्यक संबोधनी बातुनी पहेंकों का क्यापम एक कोई

देवाल मुद्राव छ. मध+सु=भगविस **कर+स सर्वाहरू**

कर+सु-सक्तरिस अप+स अजरंस अग-- शक्षांहस जिनो जुर्यतीय (एक्न)

कि अरिक्षेता गगहरवेता वा श्वनस्यसिक्तकरण

मसमन्या समर्दिस् 1। पार्वमाधाप सिन्नतं सकरित (खुर)

जम्बो शक्दर दु (एडक्र) गलार g (झपमे) **अव**र्ग

धर १ (नर) वर्ग **अभयक्तार** ए (स्म) ध्रीतकः ब्राययस्य ५ (केन्स्स) विने-रामानो प्रव कालो पर्य-

असार प्र (सम) असार, देव ब्राय पु. (नग) वन भीता. बस्ता (पु. (क्यम~स्पम) उसमा (प्रथम विनेक्षा गम हे. विक्रींगर रे ५ (विक्रेला) विसे क्रियंत्र मा देवन फरकाश्चर नि (क्टनाला)

कास्त्र व. (एस) बाह्य वार्च बंसक्सेस्ट (८. (वर्षमाप) দ্বাস্ত টু (বন) ভাৰে বজাও के कार्रिक (के कार्रिज) जिल्ह

र्व्यक्त । कासी काही काहीस भस्र भातृनां इत्यो र्जन्यत रे मासि महेसि तर्वप्रदर्भ मासि महेसि संस्कृत सिद्ध प्रयोग उपरथी यता आर्थ इसी कृ— अध्यवी (सप्तवीत्) नी प•

र- अकासी ((मकापीत्) बच्--भवोच (सबोचत्) म-मम् (इ) (धमृत्)

नप- मासी (भासीत्) -भारिमा } (भारा)

दश्—मदक्तु (शशाहाः) मात्र प्राकृतम् तर्विषयम् अने वर्वपुरसम्पं वालुना अत्मे त्रवादनं रुतुगारे तथा-तथ को सूर्व प्रभव काने के वा जलाव क्रमान्त पूर्वे झानै। पूजार छ.

) सु अल्प सम्बद्ध पूर्वमा सङ्ग्र उत्तर अनुसार नवार है कद्दभत्या-कदित्या कद्दभन्न कर्दिम्

बेश्च्या मेल्या. नै+मुनेंमु मैमन्त्या मेहत्या - मैमनसुन्मेहसु इस त्या इसित्या इस+मू इसिस् क्रिजनस्या त्रिधित्या विक्रम्स त्रिधिस शरू प्रत्य साक्ष्यपं बृत्य का मी या पत्र कोई लामे बान के

वरिवरेंत्र (तर व्य. १४), वर्गरेत्र मिन्टेत्र (सर एउ. १ क्षेत्रीक्ष्म १)

चीयास ६ (र्धातराउ) धीयाय

रायगिडे नपरे सेनिया नाम

भर्ष्या हास पुत्ताः

संक्रम ५ (संब्रा) सक्तम वानित्र

धामस्य अधामस्य च पत्र

पुष्पीध ।

র্ঘন প্র पापची विश्वि सुद्धि में (पुरिक्) सुनी. मक्किम वि (मरित) तम्ब सैक्सिस ५. (भविष) संवर्ष बस्ता समारवाहः त (अंनास्वह) राजानु नाम र्मनारस्थीवक सीचन (भात्र) कम कस सक् ५ (भार) भारक भराउ-हासिक पु (गर्मिक) शर्रत. साउदि (स्वाद्र) मधुर स्वतः होह । श्री न.(भ्रम्म) गीमें विक्र गर्न. शस्यय मर्जवसुन्तो (अन्त्रमग्) संद (मंदि) सा पुरा (पुग्नु) पहेमा. महत्ता } भद्रम ∫ (भवता) वा भवता त्र. सहस्मा (तम) १५वम धानुमा यचर्ने (ध्वर+५)) प्रकल काबो इ.प. (१) वस्त पद (पर) भन्ने व्यवसम्बद्धाः रस् (ग्यः) स्वयं बाटनंतु र्षा-सम् ? (विभव्य) विभाग विम्सम् 🕽 या-गर् (मा+र्) स्ट्रेनं बोलपुं, सद् (गत्) सम्ब प्रतिपादन क्रम्बं प्राप्टत बारबो गायमा गजहरा पर्दु महाचीरै बेद्ध समावधिभ पष्छा व मत्याणि पद्दीव ।

परकाम 1 उन (सम्बन) प्रनिद

पराक्रम त्रांसर्व छ। बुर्स है हि. (दन) आरेहा पदिस उँ (पविष) स्वाक वादिक्षिपम है मि (ग्राध्यगम्म) परिवाम रे ५ (पराका-पारंबी वंकिनविद्धाः दक्ति विकास पारावम 🕽 तुप्रवाण पु. (हुवेग) हुवेन हुम्यः पासास 🕻 🛊 (प्रवर्तिन्)सूमान्य हुद्दिम (१ व (५ किन्) क्रेकर्ल पवासु दुनियाम } पीडिंग, दुःक्टिः पदासि 🕽 देवदेदच न (१२१५न) गान रायगिद्द न (सम्बद्ध) सम्बद्धः रच क्रिकेशक गामक्रिया राज्यम् ५. (सम्) विदेशनाम् विस्तम् वि (विषय)सम्बद्धाः उद्य देस प्रादेश) यम } ५ (ध्रत्र) भात वसः ग्रम } प्रश्री बुीखाम । ३ (विश्राम)मिभ्रा^{हिन्}, धक्रिम्ह वि (वर्तिष्ठ) वर्तिव विस्नाम 🕽 वेदायक्तः (न.(मनारून) ^{संत्रा} राजन नगराको नरबद्धः (नरपति) राध वेबावडिय 🕽 हरूग शय ६ (कम) तव नौति. वरिस) इ.स. (स्र्व) वस्त्रार नाम (गमन्) नाम चैका-HIP THE पडम वि (अथम) प्रथम काव वसद ३ (इपन) व्यन सरम ५ (घरष्) घरनका पड्डम न (५८म) सम्बं ससंब ३ (क्तर्द्ध) वन्त्र. पंचय पु. (परत) परत वासु ६४ करानी कंतर 'स्ट' तो 'हु' बाव के मने बाविमां का वे 'न' बाव के. क्ष्रो (संदर) व्य (करम्) वस्त्र (संकरम्) वयू-एरा-संद्र का सबस्य है ने हैं को नवी. करा —क्के (उन्हे) सा (स्व्यः) संदर्शे (संदर्भः)

६५, करक (करब्), पात्रक (ब्राह्म) तरकि (सम) ए करन

पुर्विकार्त परस्पर के

गुत्रराती बाक्यो

क्युत पीर्धु एवं क्यार व धना ९एममसर्वे सञ्ज्ञाने जीत्या सुप्पाप्तार बाद नीचे विधानित सीची राम गुरुष अधिसने अनुगर्ना ठंगी सती नवी छे सुनाकरे केंद्रपत्रे रहतो पुउवा दक्षिण विद्याली एवन दरमार सारका यजन इजनमा प्रक्रमा प्रस्पो. तेन प्राचना नाही यम अवसने महत्र करी हरि. क्षण पत्रमा अने सरवाने हान नोबं तेव बीमार्थ न बोबं पुष्त में दुग्न जा संस्तरपद्मा कांतार बीवं नाक्यां छ ठेमी माचर्व हो । ते प्रश्मीची वक्षाच्यो तची तारा

केरो डीओ जलम बाद होय.

रास्थ भौतिनं उत्तरका कई देवी

पिको संसुषी मन पानना महि बिक्वाए पुर परिना ज्ञान मन्द्र कर्नु क्या भाग मीदाए तीमकानी पुरा वह मिन्द्र सुप्त मेळ्यु कम ने मनामा वहां था! को मनु सहासीरानी पाम पर्म पानना महिला पाम का नन नने पाइना पाम का नन नने

त सन्द्र पाम्बा

हाधिकार वयो ठ नाम क्या गया न रेकियु बुद्ध जोर्बु सन्दिशी भाषा उपर में मोर जाना

वभागां इस्त इतुं क्या तजाने

प्रभावती वैद्यानचना एकरम

qyq.

ममपकुमाचे नाम भारित मो य विम्नाणे सर्वेष पंडिसा इपीम । विन्दे काह विसमेण मायवेण दानिमा दुषियमो दौसी।

भारत एक कुमारी बहु घटे क्षामी । सरप समझे जनमा दिप भाषेत्रं काहीस ।

जीवार प्रवहस्य प्रवासी सीपस्रो भद्देसि । शस्रो बणयस्य विधोपव दक्षिया सम् ।

नेद्रेण सो अध्यंत प्रपत पाक्रीसः ।

तिल्पपराध उलडो एडमो होत्या । नापैज इसयेच सब्रमेण तवेन य साहनो सोहिस । ते जिणिहं सदस्य इंसण-मैचेज पश्चम्मतं श्ररित ब सदीय ।

जो बारिस वयसेज्य फर्क पि सो ठारिस सहस्त्रा।

सोर्स सुपन बढि कुरबद्धेय, शामेय पानी व व शुससेय ।

मदेर देहो करणाहुमार्च, यरोजधारेच न कर्येच ॥

विदर्देशे हवी सुत्त वि अपै नारोग प्रसीध । धम्मो धम्मिद्र पुरिमं सर्ग

वेसी ! नरिंदो देसस्य शएव त्सीथ। पत्रकी उरकापे तकसे महर्र सहं कुषीय।

स मदाब है मध्यमं दाही तज बुद्दे सदीय । पुरा सम्हे हुवे बंधुको मा the state of

क्षमतो भागे साऊचि पत्नार जेर्जाच । सः व्यवस्थय मुक्तो होत्या । सतद नरितं संदित्या प्रदा बद्ध बर्ध्य तस्स दोदी।

पारेचको सहित्र धन्न क्या विन प्राथम्बा। केलरी सरज उरजाजे वसीम रम सो भवती। ययदरा सुचाजि संस् ।

विबीसरो बह बागरिस्पा । वेशवेरेन वमण हार्गस्

बी॰ पु॰ बेमा, बेपा वैधानु विवान केमच नरात् पुरस्तवक क्रमक करेगा उझ उझा बुक्तक गरी

क्षेत्रक-क्षेत्रस्य संस्थ 7770

मेरमम् मेरराम् dien bran kre krer di go birefe birefe 275/6 hish hish hitad

वैशिजांजा वेशकामा kfrervie kriervie hfreye heberh Are brest عايدودم بالددارا afrereife brbreife Planete Pieceche braile 1

ale d. peach grack

... her here

kills kim

Piller Sicher يبيودي إيموداط bree bree-

बर्षण

hair

मेरक्या भेरकाया

विशिष्टमा, विश्वामा how hore

> kry kryt PERMIT

אַישרבּינוּ

Arer Arrie

```
भ (पी)
                                       मो
go g dig
                                        ÀΕ
बी॰ पु॰ मेडि नेस
        विश्वमासि वेश्वमासि
                                        विज्ञाह
        केर उसाहि ।
                                       मेन्द्र निन्द्र
बी॰ पु॰ मेड
                         दा-वे
                                       हेमो
प॰ पु॰ हेम्
बी प्र वेदि वेस
विरम्मसि वेस्प्रमासि
                                        tt
                                        दिग्रहाह
        Streife 1
                                        देना दिना
 allo To ga
      म प्रमुख बामें त्यारे में मणोग अंच्यां स्पो
                                       नेशमी नेशमी.
 प॰ पु॰ वेशमु, नेशासु
वेशमु वेपसु
                                       नेपमी नेपमी.
 बी॰ पु॰ केमडि केपडि
केमझ, केपस,
                                       नेजड नेपड
           Britte Burnt,
           क्रामाहि नेपमाहि
           क्षान केवाने
           na ku.
           [क्रामिस केपमसि
                                     वेदस्ताद, वेपस्ताद
            क्रिकासि, क्रेयआसि
             traff tomit.
              tank )
```

fettage tetraige Little Simule Sestant £44.5 र्या पुरुषा रक्षा CHA CUS

र पर है होताब होताबा र पर है होताब होताबा

fuith burte (mary

र्शाल्य राग्य की पुर समादि समादि ETTE Catal Colu CITT thund found र्रावाणीर राविणी र्शनात्र रागात्रे Ett Est

रपूर-प्रश्र द्रमान् द्रमान इनमा इन्समा द्दगिया द्दापी

PERC IS THE CTI

साम्य बन्तराने का निवारी क्षा क्षांबव सामार्थ हवा क्षा राज्या अनोश्च उच्च प्रजास जिल्हा व्यागत राजी शिवार- पाठ १५ मो

भाजार्थ क्षत्रे विभ्यर्थ स्ताप इस विकास एक व प्रत्या छ-

क्रो

गुरुवम प्रवस्थ

बी॰प॰ दि.स. राजस रज्जींद्र रज्जे (अपुरू)

খা• বু ড (র), খি

श्राप्रक्षीतवाला पहला 'सांहित से लाने पे विकरो धार छ. शाण्+ध+मुन्त्राचिम्र-बाजम्

शरप्राप्त राजवि राज्य (अनुक्त) का लक्को क्याराना कंताका बातुबोन व करा छ. शुक्रपुर्धान्यक्रमुध्याचिक्रण्यस् गरिकामाहि गरिकाले गर्म

ः कर्न महन्त्रां की पुरु प्रभा दश्यक्ति दश्यापि दश्यादि क्रवर्ग एक क्रम्युक्तामी बाहे छ. बंगके गुक्क + सनद्दरवसिन गरिकामसि, गर्केजासि १ माने गरिकामसि गच्छेन्द्रासि गन्धिन्द्राहि, गच्छेन्द्राहि सर्वार स्मे ---

५ डि. प्रत्यन समान्य दर्शनो कर दौर्य एव बाव छ-

केले-गच्छ+दि=गच्छादि, यह+दि-धहादि ॰ 'ह अन्य त्यस्य उद्या श्रामा प्रेक्ते मुद्राय ह

बरा गण्डेरबाइ चना ग्रह्मेह बार्राज 'रक्तु' अन्तर पर बार्ड के परिवास



म (सी) प∾ पु मेम्

विरुक्ति देश्यासि

Remile 1

वेदम् नेपम्

नेशस् नेपस नेदरबस्, मेपरबस्,

बी॰ पु॰ नेहि नेस निरुद्रसि मेरकासि नेदरजाहि

भी॰ पु॰ गैड

प॰ प॰ देस बी॰प देकि देस

ची॰ पु॰ पेठ

स उत्पन अने त्यारे में सम्मन्तेस भवता हवो

प॰ पु॰ नैश्रमु नैजामु

बी पु॰ मैसडि, नेपडि

मेपन्त्राहि नेपन्त्राहि.

मैक्ज़ि मैपक्के

नेमादि]

नेपण्डाहि, मेपण्डाहि नेस नेप. विश्वज्ञसि वेपक्रसि

नेप्रकासि, मेपरकासि,

दा-दे

नेदरशह, नेपरबाह

20

Àπ

विमो

ł۲.

विरमाद

देन्तु दिन्तु

विकास]

नेम्त निग्त

मेरमी नेपमी नेसर नेपद

नेक्यमे से जामी.



प० पु॰ नेपाञ्चमु नेपाञ्चामु नेपाञ्चमो, मेपाञ्चामो नेपाञ्चमु, नेपाञ्चमु नेपाञ्चमो नेपाञ्चमो Aura, Aurai,

थे प्रमान गीवा भने जीवा पुरस्को रूपो करी **वै**मी.

UEG .

स्तरान्त बागुन क्या-क्या की पहेंगी 'सा' बार व्यव क स्वारे मेचन्त्र--रेपन्या भंजां स्थे.

नदुन नेपज्ञमो, वेपज्ञमो

नेपन्त, वेपका

विष्यर्केस 💥 भेगरा	au बलुने सर्वतका मने तर्ग
पुररोमां इ. जनव पन सम्बन्ध	
पर्वत्र) द्वारमभ्द्र द्वीरमञ् वर्वतु) द्वीरमाभ्द्र द्वीरमञ् द्वसरमभ्द्र द्वसरमञ्	होपक्त+इ होपक्तर
वर्षेत्र (हरिजान्य हरिजार	शायम् १-सायमार
) Barant Barant	Secretary Secure
	को निपर्कत हुन धपरवी प्राप्त
निकालुमार काद्या को बयो पक	वरतम् छ. असर्व
समायरे (नमायोत्) त्री 🛊	। सळ्य (वर्जवेद) त्री थे
बरे (बरन	डमे (बमेत)
पक्के (क्षेत्र)	निवारय (मनारबर)
सिद्या (स्थत)	वृपा (नृपत्) ,,
क्रमा (इन्हेंर्)	मृति (मृति) नी क
-	Z.4 (24)
बासु (ब्यदु) "	सनु(लनु) त्री व-

efffere a. Di a a

(९ पषडद् , (श्यून्यूनर्ष्)

पपटर रे अर्थ

तुष्म साहर्ण समीपं दिवार

यपनारं सुविकाद अरेपि

(४ शरिष् (मई) कानक

पत् प्यापर्श नोम्न नव्

रम्बम् (उद्+कः) उद्यन पमञ्ज (प्रशाद) मनाप करते करते प्रयस करते. **वप्पापन (उत्+मर)** उत्मन बहे भा×विस (ना+रिक) भावेश सञ्ज (भन्द) क्षेत्रज्ञ, गर्ज्य करवा परमानक सा (२) सर्द मिरका (मिर्+कृ=मर्) संय वि-स्म (विभय) विस्तुं, कावो कर्मनो सन्। करही मारा फरक सिक्क (शिव्) श्रीकर्, भन्तु मास्त्र बाक्यो ग्रम्दे परच चित्रदेश बीर्र मुसावाय न वयज्ज्ञसि । किल मध्दे सब्बेमी। त्री नर्भ म विधिओं । सच्चे बोक्सिका । बार तुम्हे विज्ञारियणा धम्मं समावरे । भरिष तथा सर्व चपद वक्रमीच विका अर्थ श प्रवर्षेष व बरवस्य । स्रदेसु । मद्र उद्ध पासी तुम्हे वि सरस्य मनोज धरेण्य विकेश ।

सगस्य । ६८ कारती अन्यर हैं संपुनत न्वेजन होन तो करान हैं औ पूर्व ६ मुख्यब के बदा-मिर्मुतो (म्ब्र्न्स) गरिका (तही). ६९ करूपी अन्यर 'स' नो 'ह' बाब क. उदा--पनाई (प्रसरी) संबंधित (संबंधितम्) नहमें (गर्मक) केन्द्रों (फेनर्स)

मिक्त्रु।

मो गुरकुसे निचन बसेरत

सा सिकवर्ष वरिकेर ।

अपवाद- पूर्व आदि बच्चीयां 'से वो ह' बठो वबी. ब्राफी (१९५) मिली (और्ड)

पायक्ष है ५- (शब्द) सकत पथक है सम्बद्ध

परकोयहिम नि (स्रबंदित)

विमान ५ व. (विमान) विमान

विदायर को देखें गहर-विदोह पु (विदोन) निरहण-

```
विद्य पु. (मिया) समुद्रि भेः
     परको सम्ब किया करणाई.
विष वि (प्रिन) क्षेत्र सकते.
                                 बिश्ववि मि (विमयिन्) स्पन्धि
     प परि. वसी स्वामी.
                                                       sui.
मसाबाप । ५ (स्तनत) व-
                                  बिस पुबः विष) विष केट
में खावाय । प्रश्न भागव स्त
मोसादाय
                                 विक्ताहर ५ (विवास) निवा-
                                                 र विश्वमध्ये
भप्प रि. ५. (अस्तर) राज
मस्त 🖇
                                  <sup>10</sup>बेसबब १ ५ (केन्नव)
समा ५ (मग) समाद
                                  वेसम्ब
                                  समाधरण र (स्थानल) नाव-
वाबार ५ (नगर) नगर.
                                                    14 4 Cd
                                  सिस्रोपञ्ज ५०. (श्रोकार्व) न्हो.
बागरण , न. (म्हणून) मान्स्य
बायरण हे बाल उपरेव निवन
                                             को स्थे पर
                                  क्रिय मि (क्षित) क्षेत्रकर
                           सस्पर
 विकर्त (क्या) स्वीतनक सनी
                                  माइ (मा) विवेदार्वमा वक्स.
मा
 भाग (छम.) बाजनानेतार, पाव
  वृति संभावकार्यमा सर्वकारमार्थे
                                  भुद्वा (भुषा) फोक्ट
 नवरि
                                  सिविकार हे ह (विकिद्रम्)
                                                      क्रमाने.
          बन्दरी अंदर हैं जो 'ह' गान के देशन देखाने
 सम्बोद्ध है' मो 'मद्र' मान के.
 सेवा (रेक्न)
                    एरामची (ऐराननः)
                                           वहएसी (वैदेशः)
 हेम्ब (देश्यम् )
                   क्यको (देख.)
                                           खरं (सीरम् )
                                           नार्थ (केल्बर )
  क्षेत्र (नेबोपन्यः) । नदश्रीनं (ऐवर्षयः)
```

गुजराती बाफ्यो-

अमारुको एकेका वर्ष प्रभुवी स्तुनि न्यपुर्मीए निक्सेज विदार करती पर्श बोदर को गड़ी अध्यक्त

मगद बोइए म्बरपारकी केम मात्रस इसको बसमी

पत्र उद्धम क्याची जोडए. रियाक्ते निमानी बढे गान्न करा

म्भ इकेन <u>इ</u>स्म क्वों (के) इस त्रजने के क्यांनी करिंग करो

को को का का भीती अने सरकार तथा करो पुरुष भारत उप्तयम न करनी

देशस्त्रक है प्राप्तर राज्यात की

ठमार उपाच्यावनी पास स्वाप्तरम ঘীয়ৰ স্বাস্থ্য द्यसमीमां पर्ध करता बोद्ध

करना सामग्र कालमाँ प्रमात स

करो बाइए.

সময়ে, न का नहि.

जल परस्कार पूर्व परवाने समय

नाई पादनु सन्तर का कोइए

ररसन किन्द्रपन रहीन सम गुरुशे उपस्य राज्यको अर्थेक ब एंनास्थाया नारमा छ त प्रिसी

तं मियवा कोएने व कर दिलने संभक्त.

तमे पेकिन का माट सल्बोमी

धर्वनीयांमां चत्रंक्य चीव उत्तम ध

मन्त्रापमा अनुभूता हे तर्प सुन्त

बीजामां नवीं साटे मन्त्रप पारण

शादेखी है जा कल्दान कर

सम् पायोजी सम कर.

स्मेमने सम्बोप वह होत.

जिल्हा व कर.

नोहरू.

विकार करो.

क्या बाइए.

होता समी

	₹ e ¥
भवामा विरत्ताच पुरिसार्च	सच्य पित सः परोझोपहिएँ
गिद्दे वासा कि राजक ?	स स्पाना नरा !
बह्म सामय बिरं बयड ।	का व दुश्कार धापरिया, को
बाहरिया हीड बार्ट जिमिनु ।	यया जापिश्च शल्पला
बाह्यपुना निग्ये एएईउ ।	सार ।
र्तुं नकात्रेत दुवेश्वसु सच्य	द्दारका जसे वि जसपो, दोक्रा
च परश्वदि ।	सीरे वि वादिसामामी ।
गुरुषं विषया वेपायक्रिया	समयरसा वि विस्तामा वव
य नार्थं पर ।	पादिवहा इयह सम्मा हर्द
सन्या किया परिवर्षेत्र जैस गुमा पायश हुनि ।	पर्नितु बना मा बा, मंखु रिक्ना बाई निवा द्वारता । सा विकार परो सरका वर्ष
कर सिर्थ एकाइ तथा कामें दिन्दा विरसाह । साहम तुम्द मा तिल्दा ।	विजयमकासाय ४४। पुषिया गुर्जेहि विह्नेहि कि
पार्थाकं बाग्रेटरं नासं इस्तेय	इविया होतु गरियमा नात।
वरित्तं व धन्ति न अस्ते	शासेहि नवरि गामा खदाव
कियि तमा तर्दि चिय	सन्या किन्नम सहस्रा देश
संद्रीय पारं क्यकेटा	मह वि दिवसेय पथ पदा
सर्वेसु मार्र्वाशसम्बद्धः ।	पत्त्वाच वा सिसोगर्दा।
सम्बद्धेद्वि विश्वद्वसम्बद्धाः ।	बण्डार्गमा मुक्ता वा इक्टर
वि न कृत्वाः।	विक्लित वार्च व्यव
हे इंसर [।] धम्हारिस पाने जन रक्त रक्तिकी	द्वापा तब पास्ता संबर्ध
पाणिवद्दो पामाप न निवा।	मात्र न शादर जीवो, ताक्त न
बासर न वीससे।	सुक्को क्रियो संबद्द प्रश्ला

४ ग्रैं ईक्स्टाक्त श्रीकिंग समोमां प्रथमा विश्ववित्ता एक्यव्यमां तथा प्रथमा समे दिलीवाना व्यूवव्यमां स्था प्रश्वव पण मनाव्यामां माने थ. वैसके----

प॰ प० मई नईआ प॰ व०ी नईओ नईउ नई नईसा वी व०{

५ वे बामा मुख्यों आह्यागत है त्या तंत्रीका एक्यववार्ग अन्य आ था 'प' विकये वाल हे केल्वे—हे माछे हो माछा तंत्रव इस हम्पण्य कने डक्पण्य नामाना तंत्रीवनना एक वक्पण विकये त्यर तीर्व बाल है. क्षे—हे माई मह हो पेणु चेणु कने हैंच्याण-द्वाच्याचन मानीना तंत्रीका एक्यवव्या कारण 'हैं-द्वा' हत वाल के केल-टे लार है यह

रमा (रमा)

पद्मवसन

प॰ स्मा पी. रामे प॰ स्माम स्माप स्माप प॰छ॰ स्माम स्माप स्माप

च प्राप्त स्मार्य समाय प स्माम स्मार समाय स्माचा स्मामो समाउ स्माविको

स॰ रसाम स्माद, रमाप संहेरी स्मा रमामी प्साइ प्सा प्रमामी प्साइ प्रमा प्रमाहि प्साहि प्साहि प्रमाण प्रमाण प्रमुखे प्रमामी प्रमाइ प्रमाहिको प्रमासुको

बहर्यम

रमा्रू -

माकारास्त, हुम्ब तथा दीर्घ दर्नकारास्त समे

प्रवर्धन

₹ •

उ-ककारान्त सीकिंग नामो

बहुबचन

उसो •

बी॰ म् उसी॰ तुरुव बाइ.प. कि.हिंकि वाइ.प. माइ.प. गर्ण पः}बाबाइ.प. गर्ण पः}बाबाइ.प. सो बोडक्लो सुरूते सुरुव बाइ.प. सुद्धी

 सू रने को प्रत्यकों क्षेत्र होन हो दूस गर्म है नैको-माबा-स्साध माई-स्तु-स्तु-स्तु-स्वयु-र तृत्या व्यूपी त्यां करों को त्यां स्थापन से सा प्रत्य है है साइस्का एडिकेंग करने कराने की नैको-

आपन के ते भाजरात्त एनिर्मित कार्यने कार्यन को जैसते— सामास सामाद सामाय १ में को दिशान को निर्माणना प्रत्यकेनो हो हुस्य सर होन तो को प्रस्त के जैसते— एक कुरु मां को अर्थनी मांच मां

प॰ व॰ भर्धो अर्थो स्वासी स्वासी पे॰ प सीच सीचा सीट सीप सालो सीसी सीच सीकिसी भैने हैक्सम्म क्रीकिंग व्यक्तेमां प्रथम निमाण्डिया एक्सच्यमां तथा
 म्बस्य कर्ने हितीक्य बहुष्यमां क्या प्रश्यन एव ल्याव्यामां व्यक्ते है. क्रेस्ट्रेंच्या

प॰ प॰ नई नईसा. प॰ व ी नईसो, नईड सई नईसा वी० व० र

े वे नामे मुटनी साकाएन के तमा एंडापन एक्सपानी अपन सा' भे 'ए' निकले नात क जेनले—हे माछ है माछा रोगत हम इस्पापन को उपपानन नामाना हेरीकाना एक बरुमा निकले पर परि नात के के—हे मई। मार हे पेणू पेणु मने हैसाएन-क्रमाएन नामां नहेरेला एकसम्मा कान्य 'ई-क्र' हस नात के केम—हे नाह है नाह

च्मा (च्मा)

पक्षकम प॰ छा। वै। दमं वे॰ छा।स, दमाद दमाद वे॰ छा।स दमाद धमाद पै॰ छा।स दमाद छाती दमात्री छम।उ दमादिको

स॰ रमाम, रमाद, रमाय. से हेरमें रमाः बहुष्यतं रमामो स्माउ रमा रमामो रमाउ रमा रमाहि रमाहि रमाहि रमाब रमाये रमहो रमामो रमाउ रमाहिको रमामुको

रमासु रमार्स् रमामा रमाउ रमा

200 दुवि (दुवि) बुद्धीमी, बुद्धीय बुद्धी, प• दुन्री बुद्धीमो बुद्धीर पुदी वी दुर्जि

पुर्वादि पुर्वादि पुर्वादि त॰ दुवीम दुवीमा पुनीर पुनीप बुद्धीय, बुद्धीर्व चन्छ दुवीम बुबीमा

दुवीर, दुवीय, पै॰ पुत्रीम पुत्रीमा। पुत्रीय पुत्रिको पुत्रीमा, पुत्रीम,

युवीप, बुविको बुवीमा, बुवीहिन्तो दुवीसन्तो-दुवीर दुवीदिन्ती **७० दुर्दीभ दुर्दीमा** वयीस दयीन

पुर्वीर पुर्वीप

मं देवुदि बजी बुद्धीमो पुत्रीट पुत्री-वेषु (वेतु) बहुदचन पद्भवस्त

येग येशूमी, येगूड थेण् थी धेर्यु वेचुनो वेचुन वेच्

तः पेजूम पेजूमा, वेन्दि वेन्दि वेन्दि पेग्र पेण्ये चण्डः पेग्स पेग्सा धेव्य, धेश्वं

मेन्ह[े] मेनूप बेणुको, बेजूमी बेजूर मेक्ट येजुकी नेतृशी वैकृष्टिन्तो वैकृतुन्तो

प॰ पेन्स पेन्स पेन्स

बैक्ड चेजुडिन्ती

स**० पैतृम पेतृ**मा येलूर वेक्स, वेक्स

बेपूप

थेयूमी, थेयूड थेयू

हे, पेव पेल

100

प॰ उन्ही रासीधा

की प्रतिस न रत्यीम रत्यीमा

इरपीइ इरसीप

प•ए राजीस स्थापन स्थापन स्थापन राचीर, राचीप,

पे राषीम राषीमा राषीइ इत्यितो राषीमो राषीम

रुपीण इत्यिचा शर्मामो रुमीदिन्तो शयीसन्ता रणीड रखीहिको

म प्रयोज प्रयोज रर्गार रतीय. न प्रतिय

पद्भवयम

पुरु साम्

वी मार्ग त॰ साम्ब साम्ब

साम्द्र साम्प प्रकार सामग्र नाग्रमा

मागर सासूप

माम (भए)

वे॰ साम्ब साम्बा साम्ब सामुका सामुबा सामुत्र

स्मीम

मागुष मागुष

रत्यीस रत्यीम्

बह्यवन

इत्यीमो इत्यीव इत्यी रत्यीया-

इत्वीहि, इत्वीहि इत्वीहि

रखीमा

साम्मा साग्रद मान

वद्वयम मामुडो मामुउ मास्

लगहि सामि मलहि

श्रमीमा श्रमीउ श्रमी

₹₹•

सर्वनामना स्वीक्षिप शम्बोः

ता (ज.) | इसा (इस्स्) वा (ज.) | समा (ज्यं) वा (मिय) | सम्बा (ज्यं) प्रमान्यता (च्यं) | सम्बा (जना)

भा सर्वकामां बीचित्र स्पो आकरात्ता क्रीकिंग राज्या केर्य पात के.

निषेत — ता क्ले पता हु ए० व रा कानी सा को वर्धा नाम के तम ता नो ती हा वो ही का वो की, पता वे वें, इसा वो इसी —या साने क्लो नाते हैं कानत की स्मान की ती का निराम पता के ला ती ही को की ना करना को दिर्गेण एक कार्य को कीम बहुत्तकार्य को बती नहीं. (या रावे स्वयं वर्षसाला परामां दिएस्सी स्वयानां सहस्ये,) क्लोनी का स्वयंन-स्वया (स्वयं)

पद्मका पह्मका पद्मका

प॰ समा. समाग्रे समार समार वी॰ सम् समाग्रे समार समा र समाग्रे समार समार समाहि समाहि समाहि

धानीनां क्यो 'राज्ञा' जमान

वा−सी (वय्)

पद्मवजन

बहुबयन साम्रो साउनाः

प• सा

वीमो तीड ती तौमा

बी॰ से

तामी ताड ता वीमी तीउ वी वीमा ताडि वाडिँ नार्डि

त॰ ताम तार ताप. तादि तादिँ तादिं तीम तीमा तीर तीप तीदि तीदिं तीदिं

वीम तीमा तीह तीप सीहि सीहिं प• छ• ताम ताह, तापः ताण ताणः

तीम दीमा तीर दीए

धार्रेन क्यो रसा भने 'इर्ग्या प्रमाने क्या-जी(यन्)

ব॰ সা

जोमो आउ जा जीमो जीड की नीमा जामा नाउ जा

थी॰ 🛊

त्रीमा श्रीज श्री श्रीमा त॰ जाम जार वाण नादि जादि नादि सीम श्रीमा जीत श्रीण जीदि व्यक्ति श्रीटि

त्रीम प्रीमा जीह जाए जाद जाह पा॰ १९० जाम जाह जाए जाण जाये बीस जीमा तीह जीए

> बर्चानं श्री 'तान्ती' श्रानं. शान्धी (किस्)

ব• হা

भाषा काउ का कामा काउ का कीमो कोच की कीमा

कामी काउ का-कीमो कीड की कीमा wife, wife wife,

त॰ काम काइ, काय कीम कीमा कीर, कीए कीहि, कीहिं कीहिं খ ড০ কাম ভাচ, কাব কাব

A ..

कीम कीमा कीड कीए.

दाकीनां वधो 'ता—ती' अमा^{के}. प्रधा-धर्म (पत्रक)

प्रवचन TO THE

बी पद्म परं त प्रधास प्रसाह प्रसाप

ष्टंबर्णाबार्णीय पॉप **प॰ छ**॰ प्रशास प्रधार प्रभाप र्चाय प्रीया पीर पर्रेप.

प॰ इमा इमी

श्मीमा क्षी॰ इमें इमि

बलीयं रूपो ता-सी अवस्

रमा-रमी (इदम्)

इमानो इसाउ इसा इमीमा इमीव इमी इमीवा-बसाभी बसार रसा इमीधी स्थीत स्मी इमीधा

बहुबचन प्रधानो, प्रज्ञाड प्रभा

र्षां ने पांड पां पांस प्रमामी प्रभाव प्रमा-

र्षांको पांत पां पांचा पमाहि प्रमाहि प्रमाहि

पांकि पांकि पांकि

पमाण प्रभार्ष

योज र्यापं

 त० समझ समाइ, समाय. समावि समावि समावि समाव समीय समीद समाय. समीवि समीवि समीवि व०स समाय समाद समाय. समाय, समाय समीय समीवा, समीद, समीव समीय समेय.

राधीनां स्वा 'ता-ती' प्रभाणे

भवरा (कारा) पव्चिम रिशा

ममावा (मरातः) द्वाय वीरा

गारी } (बाब)मारामी मनात गाया } इन्स्य इन्यः

ध्या (स्वीसिंग)

कर्डमा (बसुध) भ्रतित्रं अध

क्रियमा १ (प्रिट्य) अोम

प्रकार (बहा) क्री

जीहर 5 मापा (मारा) आरेस इच्य क्रोपद्वा (ज्यान्ता) चग्रप्रप्रस मापया (अपद्-राज्ञारा पीत-र्ह्य (ब्रिट्र) देशर क्षेत्रव रिक्टि नगदिः तिकहर (तृष्या) श्रदा बध्य पुर् (गुर्भ) स्तर पुरस्केत शर्यी (,भा) को नारी क्या (का) रश अनुकरा करणा उत्तरम् (तम्) उत्तरदियाः दाहा (रंध्य) राष. क्रमर (लम) क्या शादिया (शास्त्रा) शिक्तर्रशा दिमा (रिम-देण) रार्थित रिटा-कटा (बच) क्या कर्न शायकें (बे उसे) बाइबोनी मार्च बामचलु (रामवेत्) बामवेत् सथ. किया (रण) बक fur (1') cher bi काम्बा (क्षेत्रा) बेहवानु जाम मारी (नप्र.) भी शेमा (स्त्र) तद स्ट श्रीह (वीरि)स्थाय द्वाबित स्वतंत्रस पुदा (ए।) सब्द-नुतः बिमा (प्रा) गन पर्या (र्राप्रा) र मा पुरा (१४) अप

=	
पविद्या (परिमा) प्रतिमा मृर्डि,	श्रवणी (कर्ता) कर्ता स्रमा (क्या) क्या देव
ਸ਼ਰਿਜਿਕ	and (will)
विषयी (प्रयो) प्रयो भूमि	बजस्सर } (कार्रात) कराति.
	ENOXY 1
पुरुषी (१एवी) प्रव्यी	बचा (शर्म) वर्ला वना
पुंडची 🦠	बरिसार्ग } (स्वी) बेम्पर्ड
पुरुषा (पूर्व) पूरे विका	बासा
विद्यि (स्पिनी) 🖛	बसकि र (बस्टि) स्थान
महर्ची	AGIR ((40%)
बाकिया (बादिना)कोरमे बुजरी	पसर
	बह्र (स्पू.) बती उत्रमी की.
वसहा (बद्ध) सब भुगा	वियवा । (देख) इन वीम-
ब्रुचिर (सम) दुदि	विराया (
भक्त (सर्थ) मान की	बिरहा (विया) दिवा बाल्डाम
अस्त्राचा (सर्वतः) गीमा हर	पुरित (पर्य) प्रति वानी
महिमा (प्रतिरा मारी.	बेसा (३१६४) केर ^{बा}
	# et (4/44) 44
मदासई (म्बलक) गमधीन-	स्त्रमा । (स्था) स्वर्ग
वर्ताः स्तीः	, erm)
रु च्चित्वी (इस्टिमी) इध्यमी बी.	ं सन्ता (स्ता) केथा वर्ग
च्या चर्चका का मा प	बांग के अल-कुमान (कुश्मरम्)
विकार (१८५०मा)	
	के में संपूर्ण जीवन रोग हैं
साम के समय उत्तर–पत्र वरू	स्मापन सम्बद्धा सम्बद्धा कालान र
भू भा तन मिक्स वार्थ थे. उद्य	·
आदरिको } (बारकं)	मरिता दाला (द ^{क्})
	1
श्रीनले } (रर्जन्यः)	তৰি≋ লে (চত∓()
`````	1
वारक } (वर्षप्) वार्त	वहरं, गर्ज (गम्बर्)
4m /	1



चेक्क प (बीक्स) प्रीप्ता प्रदेशा

बिसेस ५ म (विका) विकेट

पुरा (नम) पुरें गहनी. बारें छ हेने स्वान

प्रकार नेर

**सत्त है. (तन) वात्रमः** प्रहास पू. (मन्द्रम्) प्रमान सन्दि समाध मि. (नगम) सार Server. मिरियान नि (वर्षित) मीरक शर्नेड. ममीविश्व दि (मधिक) ह्या बाह्य इ. (बन) श्रव मुक्रा etC-1 र्मासचीत्र है (संदर्भकित) संव सम्बद्ध थः (ग्राम) प्रोत्रक्ष् साथ र. (शत-वर्ग) इंड. आर्षि वे (मानित्) मॉनमानी. HTC R. (50) AT THAT रक्यस ६ (ध्रज्ञा) स्थल स्था भ (सन) सहर सन्दर वर्सीक्रम वि दशीश्री) दश वरक ering di विकस्य ५ (१४४४) विकासका सिमि(बि)चार् ५ (मन) लब्द पिकास ए (मैशार) वक समिविभिम } वासक्ट-े द्वेमचेष (देशका) अन्देशका विवास रि (रिशार) मार्ट भव्यव अर्था (मा) न्यर् क्रपा∫ उपरि-मि र उपनि उपन mult-fr पायसा क च्या (पान) तुता इ. अर्थमी [발 (बक्त) क्षणण सार्द्र **(**41)

ल्पिन **मार्थ छ स्ते⊸रा व बाद स्वारे वन्द्र**न्थी रह निर्मा

मारुप् (मा+ता) पुन्धु मा-राह् (मा+राष्) नाराधना	राप् (जनम् ) जलम कर्तु नेवा कर्ण् (जनम् ) जलम कर्तु नेवा कर्म
करमी उपाछमा करनी	हार (कर) बाजु रतकत्
उद्व } (उम:समा) डक्नु	पक्टोद्द् (प्र+स्ट) बोट्यु म्बर-
अद्वा }	कोर्यु
उदे (उद्भाः उदय गामपु	पद्मध्य (३+म्) समर्व <b>यन</b>
बद्दास् (भा+किद्) ब्रोमरी केंद्र	धारे-शब्द्ध (शरक्षण्ड) पार पासम्
उस्क्रेस् (गम) उत्तक्तका कर्त्त्	धार्च (धार) गांख धार समु

उक्तिया (उद्ग+दिम्) उद्गेय ब्रामुक्तिक १ (वर्ता । क्र) मध~ पश्चीक्रथ 🕽 प्रमाध्य केरकुं, केटाककुं किया क्यू विद्या (दिन्) दिना करने। 막 (#) **#性.** सुद् (सूत्र) बाज्यु साथ पर्यु क्रुप्प (इम+इप्म) क्षेप करहो. गिक्स (गुन्न+ग्रन्थ) धानक बज् माकत बाबयो

मस्य बमो नाइको ददेश सा तस्त्र होर पुष्पा दिला असी भ मत्यमेर साथ सवरा

आरक (शास्त्र) धह बाह

मिय बाहिया दिमा असरा व धार्मण । विद्या भाषाच्या वाहिजयास 🕕 पैत्रवामे सेवाद बुळोडळस्स भाने हो निसर्वना पूर्वना स्पर भने व्यापन मुद्रीन 'सा बाब

B 3278---वतो क्या बक्ते (क्या) कता करा कता (क्रा)

क्कां क्यां कमी (क्यः)-सञ्ज्ञा, बण्या बन्तमा, (वर्षेतः).

गर्द (प्रम्य) प्रवद्ध रवष्ट

किशाय विचा का धम्मी ।

अभागो अन्तरो अवजो (अञ्चल,),

मात्रव

सेपाप सद्द तुन्छं होत्या वस्मि हाई प्रदश्चाण बयो थासि । कांसा बेसा सम्पासु कटासु न्वित्रपा नच्चिम प्रशिक्षे संजकुससा। सम्बाद्धाः ध्रमध्या वर्षः। सन्धा कहा बागकहा विवर । मस्य मीहा बसीहमा स्रो परमा पुरिक्षो । नारीमो क्रोज्याप समितः। श्रदाय समाचा पेवचा गरिव। र्परकार्ण धारता दोवई सम्बाहर इत्यीमुं उतिमा महासई मक्ष्मि । बनस्र्धार्ण पि धम्मा वस्य नभो वर्ग मस्टिक्साए रक्ष च मार्थका । सरक्ष्मा पश्चमाहिता कर्रापि

तिक पेका रिमा (दिक्क),

म्बन सिन्चा (मिला), बक्क रहतू (बदमा). धारेन-पुरिता निर्देश (नर्**च**ी)

सामूप ग्रह्माय दबरि म य सासूम सर्वार, वर्ष र ufter t दिवदो निसंतिसाय पि मपुसरह । क्या विसीय विवास पा rafa i रोज्यूचं समारे, सच्छो वि साग संसाचे बसाचे ह परमधिस सर्द वर्ष द्वन्ता । थी काए बाहाप मार्र बेही कामे सत्तामो इत्यीमा १ भीक्षं चन एक्खन्ति । कम बीर्ज सक्ते सेवारी उन्दिशस् । जो संघर**स आज मा**नकरे नो सिन्ध कविद्राः। विदेशको सामित्र प्राचने सन्त 'क्ष्य' न भी हमाउपी पोप के बस अक्सामा है। ह्या बालेल स्वीव्य प्राप्त 'क्षा अव्यवस् बाब थे. कई रक्त है का आने थे. केलके---महीत-नामिना मार्गिनी (सार्थ

(\$6-(\$3 F\$) (pare))

भ वद्धन्ति ।

कुषम्ति ।

इन्बीमी संस्कादिन्ती वहति

थायामयार व विश्वा

वारीय !

पाछगो जासि ।

विक्रमो नियो पिच्छीप सुदुर्द्ध

गर्दे इक्ष्में तुरीक्षेत्र सूल अन

हुलीबान हुन्त होन छ हुँ न्थिपरानी प्रक्रिकोनी स्तृतिको

को बीम बहे दूर वीए छ

की में पालचे धिरो स सने

वदे स्तृति वर्ध क्ष

प्रची मंचे छ

बर्डेपाए उदगं किएई शंगास

देमकंदा सरस्तरं देवि सारा

य वर्ग सक्कमतिश्र ।

भीरक एक जारा पांचे हा

त्यान पर्या गयी. सरस्रती असे नवसी जिल्होंना

विकास कोच और है

धर्मीका पनरी प्रतिसी धनना

शासन वेदनामी बहुत मंत्राच ए

साबीने नुस्ते (सक) इच्छ स

The I कमारो सम्पास कसास पर सास् यहच वेदालय गमजाय प्यात्र । कतेत्र । पहणा महाधीरस्य भहस्ताप मो हिर्दि भीड़ थिड़ व्याचित धेकाप तोयमा तपहरो संसार सा सिर्दि श्रीर । नरीय। यदिजो वाढाय विश्तं शरेर । विण्डा द्यागासेच समा वि क्रमध्ये हास्ये वासिधार साम्रा । शाहिं समिण विभ पश्चिमी वस्य कारीय शीओ ताल भया परिस्तो। गुइराती बास्या वसे होनी सर्वाता उनंधवी बदि. भने हु नर्न (थया र) इस्टया नरी भोरे अध्ययक्षी तथ्यी संज्ञानी संची ब्रह्म पुरुष मैं स्मन्ती आरम परे 5जनी यह समाना नई नामा छ हंचे अपर पार पाने छ रिमयनी को स वनकार्य की पराध्य कारोगी म्बारे सक्त्रमध्ये ऋदि तस्य पाने स्वकर्मा विभव्यतिक है। त U स्तारे तनी मापे **इ**दि सने रुचित विकास करते उत्तर

सेवाप सद्द तुरसं दोल्या तिमा हुद पंदरानं कपो भामि । कोशा वेसा पण्याम कलासु श्लेडवा तर्थ्याम व विसे सेण कुससा । सम्पाकता पम्मकता कपा। सम्पाकता पम्मकता क्रिये। कम्म बोदा चर्चाहमा सी

बन्स बीहा बर्साहमा सो परमा पुरिसो। बारीमो तोष्ट्राप रमेन्ति। धुद्दाप समाचा पेमचा नरिय। पंड्रवार्ज मनना वीर्मा स्ववाद्ध स्त्यीस् बन्निमा महास्त्री

महेसि ! बनस्सर्गनं पि सन्ता सत्ति तभो दर्गं मढ्डिटमाय रसे ब मादरेज्या । सम्बन्धा परन्नाहितो कर्वपि

शाव के कई त्वन है एवं सरा छ केसके— दिव दिवा दिस्स (दिका), विदय-दिव-किया (किया), इत्यसक

सम्बद्-सम्बद्धाः (दलभारे-श्रमन—समिताः सरितीः (तदबी) श्रमीमा सरबादिको दहित स्रायासमाद च किन्द्रारं कुणित । सास्य बहुसाय उबदि, बहुद

स अस्तरितः।

सास्य करताय य सास्य सर्वार, अर्ड पीर शत्य । विपद्ये निसं निसा य दिश

अधुसरेद । क्या रिजीप गम्बिट्टा पाण्य इवेटि । होक्यणं असारे, क्या दि क् सारा संचारी कसारो तक धम्मस्मिम्सं वहं कुता ।

यी प्रमाप बाहाप भार मेहीज। कामे सर्वामो इत्योग इत्ये सीम क न रक्कारित ! कम पीर्ज सक्त्य संसार के उन्निवेस ! को संवस्त्य साथ सहक्कोर,

बाहरेन्द्रशा । उन्ह्रमा परण्यादितो कहीं । सो सिक्स वाटिहर । विकेशन बीस्ता कमने क्या प्र" के हैं नवासारी नाम ट. एक कमाराल मिक्रेयन मार्गेश बीस्त्रा प्रथा 'मां नवासारी

हेमके — व्यक्ति — स्वत्यां सामिती (संदर्वी इत्यास इत्यास्त्र हे (स्वयस्त्र)

हनस<del>्य ह</del>नसम्ब } (स्तासना). हनसन्त्री } हक्षत्र-हक्षत्र हनेत्री )

HIE

भी॰ प॰ स्ससि स्ससे **भी० पु॰ स्सार स्स**यः म्य प्रत्येतो सम्बन्धे पूर्वत्य स्त्रेता द्वी सन्त्रा पर्यं वाय ए.

पक्रवचन

इसिस्सामि इसेस्सामि

इसिहामि इसेहामि

बा॰ पु॰ दमिद्विसि इमिद्रिसे

इसेदिमि इसटिसे

इसेस्सइ इसेस्मय

इसिदिमि इसेहिमि.

**प॰ पु॰ इ**सिस्सं **इ**सेस्म

इस् घाठनां क्यो

स्मिन्त स्सन्ते

बहुवस्त

इमिस्सामो-मुम,

द्रसिद्धामी-मु-म इसिडिमो-मु म,

इसिडिस्सा इसिडिल्पा इसेस्वामी-मुन्म, इसेहामो-मु-म

दसेदिमा-मुम इसेटिस्मा इमेटित्या

द्रसिदिका द्रसिदिद

इसेदित्या इसेदिइ

इसिम्सर इसेस्सर दसिटिग्विन्त इसिद्रिरे.

इसस्यक्ति-स्ते

इसिस्ममि इसिस्मसे इसेस्सभि इसेम्ससे त्री० ए० इसिहिइ इसिहिए. इसेदिर इसेदिय, इसेदिन्त-न्तं इसेदिरः इमिस्पर इधिम्सए इमिम्सन्ति न्ते

र सर्वेक्टोनी वार्ताका वह क्षेत्र ध्यको पर्वे प्रथमे उपर वना शतका

par. पूर्वेगरी सीममां समृत् हो एव

हरका दिव है. में बहेलोने बतुं का मान्

कुष्पयी भी स्तिसमीय उन

स्यूष्ट हे सम्ब बहुम्मे उपर काप करे क

ही कराक्ष्में पीको अध्य विश्व चौकर्त नवी

ŧ 2.

चामस्यामां पुलियो एक व्यव

एके बीओ कन्द्रम प्रशासनी

प्रमुखी सेवा सने इत्यावी क्रम्बान

शाबुध्ये प्राचानत क्य जनान

काल गरकार होटे हे.

(बमति) स्त्री है.

m + 4.

वाद हे.

बोक्स सबी

पाठ १७ मो

मविष्यकारः. NATIO OF

43.4

पद्भव • प•प•स्थंस्सामि रसामों हामी हिमा हामि, हिमि

थी पुरु दिसि, दिसे बी॰ पु॰ दिर, दिप

म्सामुदामुदिस स्लाम, हाम हिम. दिस्सा दिखा विस्था विश

दिन्ति दिन्ते दिने मान प्राप्तानों चीजा क्षत्रे भीवा बुदनाई नीचे आहेश प्रान्ताना

पन मचीन करी क्षापत के.

E of	प॰ नेपऋस्तं	नेपक्कस्सामि	नेपश्तकामि
	नेपज्ञादामि	मेप र जिस्स	नेपरजाहिमि-
	+ नेप⊋न	सेपञ्चा	बगरे क्यो बाव छ

न **नेपन्न नेपन्ना** श्राहे स्मोबान <del>ठ</del> **धर्-मा पातुनो मधिरपद्मद्भा का आदेश विक्रये वान छ.** का मारेस बाव त्यारे प्रवस प्रदेशका एकत्रकरारी काहि एकुं रूप निकरों बाव के तब प्रमाण का मातातु पन कार्क एकुरप विकासे बाब छ.

१२३

**€**7 (€)

पकव बहुष• प॰ पुकाई, कास्सं कास्सामो-म-म कास्सामि काहामि, काहामी-मु-म काहिसि. काडिमो मुन्म काहिस्सा काहित्या

वी॰ पु॰ काहिसि से काहित्या काहिह कर (र)

त्री पुरु काहिह ए, काही काहिन्ति न्त काहिरे करेस्सं करेस्सामि करेडामि, करेडिमि

प॰ पु करिस्सं करिस्सामि, करिहामि करिहिमि

वा प•प्र**दाद** वास्सं बाम्सामो-म-म

बगेरे ज्यां इस्तु प्रसान कालना शस्मामि शहामि शाहामो-म म वाहिमि

बाहिस्सा बाहित्या पादिग्या दादिष

भी प्र• **पादि**सि-से रास्सकि से THE

पडवारा प्रवास केएदिएक केएदिएका याच छ. (परिविद्य, १ ति. ४)

स्त्र, जाभागत्यरे र्थ्य । इसेन्स इसेन्स र्हेप 🔰 इसिन्ड इसिन्डा ने भातनां रूपो

US.TO

नैक्सामा नेदामी नेदियोः मेक्सम् नेदास वेदिस

प• पु० वेस्सं नेस्मामि.

मेहासि मेहिसि

बा॰ पु नेविसि, नेविसे नेविस्या नेविध

मैस्ससि देस्सस जन्सद

भी॰ पु॰ मेहिर, नेहिए नेहिन्ते नेहिन्ते नेस्सर नेस्सप, मेस्सन्ते

इल्क्बेंब पूर्व 'क्व' कार्व ल्यारे वेश संतमां करो

य पु प॰ मैदरसं नेपुस्सामि, नेपुद्रामि, बेदब्रिमि नेपस्सं नेपस्सामि, नेपद्यामि नपदिसि

मा मनान गर्भुवर रूप सहयक्तमा स्पत्नवरो वरी केरी-प्रदर्भ की सर्भ लाग उस उस को तक नेजाने जार्भकार्थ

प॰ पु प॰ वैज्ञस्स वेज्ञस्सामि नज्जदामि वेज्ञादामि नेकादिमि नेरवाहिमि, मैरब, नेरवा कोरे स्ती FF 10

नेपान नेपाना सगर्वा बरो.

पहचारामां द्वि अलग राज्यम उन्न उत्ता श व्या वर्ग पर्य ए. मेम--इन्द्रिक का **इन्हें** क रहा

(office + ALL)

बहुव॰

क्षेत्रसाम मेहाम मेहिस्सा मेहिस्या- प पु॰ प॰ नेपन्नस्से मेपन्नस्मामि मेपन्नशामि नेपन्नाइति नेपन्नहिमि नेपन्नहिम-∗सेपत्रच नेपत्रचा बनदेख्यो वात छ कर्-भा पतुनो समिधकाता का मादेश दिक्यो वात छ-का मारेस बाब त्यारे प्रथम पुरुष्ता एकाबलमा काई एपुं स्म निक्रमें बाव क तब प्रमाण हा प्रश्नुत पण दाई एक रूप विकरों बाब छ

## **41** (8)

पक्तव प॰ पु॰ काई कास्त कास्सामो-मुन्म कास्सामि, काहामि काहामी-शु-म काहिसि काबिमो मु-म कादिस्सा कादित्या वी॰ पु॰ काहिसि से काहित्या काहिङ

भी० पु० काबिह य, काबी काहिरित स्ते काहिरे कर (ह) प॰ पु॰ करिस्स, करिस्सामि, करिकामि करिक्रिम, करेस्स करेस्सामि करेशामि करेशिम

क्लोरेक्सा इस्यूप्रमाणिकाक्सा-दा

पञ्चार बार्स बास्स दास्सामो-सु-म, इस्सामि बाहामि बाहामी-सुम दाहिमि

दाहिस्सा दाहित्या बी० पु॰ शाहिति-से वादिन्या दाविद दास्यसि-मे दास्सइ

# 140

बाह्रिक्ट-के-बांदिटे थी० पु**॰ शाहिर प**. वाही बास्सन्ति न्ते द्वासमाइ-प. पत् गयमा प्रथम पुरूप पुरुष्यमां 'हिस्से' प्रकर अवसी स्वी क्या ह इमिदिस्स वैदिस्स करिदिस्स होहिस्स. (वर् १८४-१८३३)

मक दचन

सविष्यकाध-भारती कक एटडे के क्रिया बवायी 🗷 🌣 🗀 रेमारे से केले -

रामो गाम गरिमादिरचान पत्रमा स्थ **मज्ञ नवर्ग गरिक**स्मेन्नावे हुं नन्तमा अस्य

शुक्रम

(क्रीप्रिय) शब्दा

बीबहिसा (नम) जीव ^{द्य} अञ्चल (मर्देना) पूज जीक्यों बाच करना न श्रदवा (वर्ष) एक गरस्त. दिक्का (रीक्ष) रील कान्य মার্কলা (ধ্বরা) সম্মন

**CENT** मध्यमा तिलाह. देसविरद (देसविरहे) देवनी कमा (६-व) कम বা**ৰ কন্**যান বাকৰ কৰ্মী

कालीको स्थाप श्रमा (धार) अधना अक्षर घेषा (केत्र) सन बारित सन्देर

नई (र्ना) ना र्श्वति (स्थित) क्षेत्रने अन्तर बाया (वे) बीच वरण-≇रि? धमा

बिदा (नम) निता गरिद्धा (नई) पतनी भिना पचर (मज) जजा ने प्री-

बरती ते पारक्षामा (सहया घ) राज्या य

योह (ग्रीन) डेन्ट

बवैश-सा | (बोग्र) बना बमेश-सा छन्ने वृत्तिकामा (पृत्तिमा) भूगम

बिता (निन्ध) क्लिइ, दिवह

١	2	ľ	١

वाओ

मोला (तम) मध्य माया (सम) मान्य क्याट स्टब्स रिचि (गित्रि) रात्रि राष 🕽 रिउ ( १५१) य्सेन्हर क्यु मणिया ) (पनिष्य) सी. विल्या { मञ्जूपन्त मि (अनुप्राप्त) प्राप्त कोव मागमत्त्व पु. न. (कानमार्व) सत्रार्व भागमने वर्व साम्बद्ध (६ (स्टबर) सुत्रनो म्बन्ध सं भारत्य त. चलन) देलरावी बस्त वामा थि (उम) गील अवस उरबर्षत ५ (उरबरून) जिन्ह क्षांति पु (नव) क्षत्रिय क्या mest.

बोहि (बीबि) सुद बर्मनी प्राप्ति

मित्र (मिक्र) मिक्र सेवा

मा( (मर्दि) दुदिः मिकक्षाः १ (मक्षिका) मार्दि

मध्यिमा 🦠

समिविद १ (एसप्रि) अध्वर्ध सामिति 🕽 सम्बंधिरह (र्छ्नविहारी) पनि मदामरोज प्रश्न सर्व पाप न्यासमये अतस साहा (दाया) ज्ञाजनी दाला करी (कृष्य) ह्याँ साहे माननो काले कुर्दुवि वि (कुरुक्तिम्) प्रसम राजी प्रान शादान (बान) खर्चु चौत् सोपास त (गोपार) योगस्य कीयरथ हे जु (गीनार्व) धावुर्वा

शीयह े नामानाचे अलगा

बाबार २ (बचर) चौद्र रजा

ब्हाइ वि (त्वातिन्) दानी स्वति,... श्रीहरू ए. (अदिन) राज्य

वापस इ. (धान) धान धावा...

er i

स्थारी

बीचा (सम) श्रीम देनामर

ससाहा (भ्यापा) वद्यान प्रशेषाः

र्मकमा (ग्रहण) शोष्ट्र वंशे.

TIG.

१२६

विद्वयम (विश्वयः) जन ताड.
यिर गैर. (विशा) विषयः हैवर.
व्या ) न (राम) हर्ष्यः विश्वयः
विश्वमः ज्या देशीः.
युद्धि गैर. (दृष्धिन्द्र) वृत्यो.
याणि गैर (प्राथिन्द्र) वन्याव्ये
पार्विद्ध गृर (प्राप्ते) प्रत्यो।
पार्विद्ध गृर (प्राप्ते) पार्योवः
पित्वद्ध गृर (प्राप्ते) पार्योवः
पित्वता

रिकारी सम्ब म (सब) भव मोदि, बान सिख पु (स्टर) बोस्ट, बर्मक सम्ब पु (स्टेट) खेलपुं सामार⁹⁸ पु (पुरान) मोतन बाधिस्त्र म. (सामिन्स) बेरास,

वावारि वे ( वातरित्) व्यक्तरी विचाररद्विभ ति (विवस्तित्) विदारर्दिश ति (विदस्तित्) साज्ञभ ति (गृज्यभ) क्रांसी स्रोह पु (स्रोब) सोज तृज्याः सत्या पु (नार्व) नार्व पुणी-प्रश्ना नपुत्तरः समय पु. (नम) बस्त, वक्त

क्षेपर पु. विकासी.

समासरम् । व. (ज्ञान्तरः) समाससरम् । व. (ज्ञान्तरः) सर पु व. (ताम्) करेवः सरोम व. (लोग्) वस्क वाम पु (कर्षः) वस्क वाम पु (कर्षः) वस्क सामि पु (वर्षः) वस्क सामि पु (वर्षाकर्) वस्कै

वोर्डाका विकेश कीवार्गतः निकासम् ५ व. (ग्या) निर्मतः स्रोतः विद्यान्यः सुद्धिः वि. (स्रोतनः) सुगारोः सुद्धित्वार्गतः वि. (स्यापः) सुद्धित्वार्गतः वि. (स्यापः)

संपुष्ट स्थाननी पूर्व 'ज' वा 'बा' माथ अब ६ वा 'ह विकास बाव के

वातपर (पुन्यम्) वेष्ट्र (सिन्हः) वोत्तवा (पुन्यः) वालेक विकर्तः (विध्यन्तम्) सम्ब (पुन्यः) वेश्वं निष्यं (विश्वः) वोहं त्यत्रे वं व्यो वय वर्षः निष्यः (विश्वः)

₹%3		
भष्यय		
सानुवा   वा प्रश्नवशा   सानुवा   वा प्रश्नवशा   सानुवा   वा प्रश्नवशा   सानुवा   सा	तो (तरा) त्यारं त स्थात पद्म (क्री) प्रमानको पुरस्को (क्रुतम्भ) साम्ब्र खु है (मु) निगर्क प्रक्ष हुनु खु है	
कीड् } (झीड्) शीध करती कीड् } लेल्बु गय् सम) सम्बु	दुर् } (हरू ) रात्यु रोह् } नाख (नाधन् ) नाश स्टब्	
गेल्ड् (गम्) मळी ब्लु, शब्बु नास पम्मबु नमाप्त । यदं मतु, शस्तु इस } (र्यग्र) व्यवु करस्तु,	सम्बद् (सन्द सन्य) सन्तर्भ विश्वसर्भ सरम् (सार्गम् धारम् सामन् सुकर् ) (सप् ) रालन् सृत्यु	
बेस् } ष्मारज् श्रमस्त्र	मस् ) मन्त्रुं चित्र् ( (निष्) पाटमुः धन् )	
মান্তব		
माम सार्वो नगरामो विद्रितिस्तिति । गोवाना पच चेण्यो गोदि   दिनिस्तान । गोवाना पच चेण्यो गोदि   दिनित । मादे सामायानुष्यसं करिक्स । मादे सामायानुष्यसं करिक्स । पार्तियो सार्व्ये पविद्रित्त । पार्तियो सार्व्ये पविद्रित्त । गोर्वे योजाय सुनिज्या होरि योजाय सामायान् । गार्वे योजाय सुनिज्या होरि योजाय सामायान् । गोर्वे योजाय सामायान् । गोर्वे योजाय सामायान् । गोर्वे योजाय सामायान् । गोर्वे योज्ञायान् ।	स्रोडको भोगारेज हुने दुनीय। हुनेय गुरू मणीए सेवेड लावे डिकाप कामणे मिसस्तर क्रामें भारत पहुंची पुरत क्रायेस्सिल गाम के क्रा डिक्ला भारत खारस्थामे तथ प सरीक्षे आया स्पेटासीय किंद्रसार क्राय वाप मिथिडीहरसा। सन्म कह राष्ट्रांचे करत	

वर्णि वेस्स । त करणं काहिसि तो दर्ज वार्ड । क्रक्रिया परिवा घरमैन पर्य

व पासिक्षिरे। का सो प्रकर्णी श्हादी तथा परसम विवाप तसेविर।

पुत्ताने सम्राह्म न कार्य। तीप शकाप सच्यो मन्दिर का मार्च फासिक्ति तया

स्रो इसिस्सर। क्रक्के पुण्यिमाय मर्वको वर्षन विराधिकः।

विश्वतिश्रमी अस्मयज्ञाय पा बसाध साम्बाहिए। श्राच्या सम्हे प्रयमस्य सा-

मावे गविद्वित्या । श्रमहे वाचित्रकेच धनियो क्षोदक्षिमी शुस्ते नाजेज पंक्रिमा होस्मह । क्रमेब बरा सर्ग क्रियं क

अधिस्मन्ति । भाग ममोमाओं मिरिपद माजो किचित्रो देमधं द्वादी

शाहिर-मञ्जी

सुविज्ञासकामि जियस्रोप को ज मनोह । क्रिजयस्माओं कलाइ सर्स बीववर्ध न पासेस्सव । कक्रिसिस पविष्ठे सुबीर्स कार्म

मत्या गक्रिडिन्ति। भावरिका विसीसान स^{मी} सुशंन वादिति ड१॥ नरवरको ऋदेविका सर इस्तिम्सन्ति ।

तत्य य बहुओं अभ्या बोर्डि

बहुव देसविरा भद्रवा

छव्यविरा च मिन्देविर।

बर तुम्दे सत्ताचि म<del>के</del>ल्ला

तया गीयहा होज्याहित्या।

कस्स्रीम असं दाहामि वि

के जिल्लाक्ष्य वर्ग पूरस्तनित ताज घरे विरे en i न विश्वतिय व विद्रोदी पारण तिद्वपन्मि सो बीबो

का मुख्यमगुपर्शः

राज्य-स्तरे

विचाररहिमो समा श्राह #⁹# एक करना कोई अपन श्रीव बाब झ. (में ६ श्रामे ) केनके--इम्मिन्द्रोवी

# ग्रहराती बाक्यो

तुपागोर्ना सिंदा करीच ठा बनमां द्वारन उप तम कर इ नकी पर्दश अभी तपना प्रमीमची दलावी मन गरमा देखीहा वस नरा रिकि महत्त्वस वस्त्रं कीच क्रीब्रं त दर्शकोनी सेक करीस ना अभा अनामीचे माद सस्य बची गाँस rfra. क्या सर्भागी माच विद्यार करणा त क्षत्रि इस्मान्ज्ञाद्यमान मन लाओपच्यो समाच्या वर्ती व्यापचे नहि. म्बन्सा क्षेत्रं सुन्नसा प्रवेत कर्या

तमी त राज्य पानीक पोषिन स्टर्ड अने जिनेपाना ≰र्जा दइत परित्र सामग्रीध विरुद्धरमां चनौ बनस्पतिना छ ज्यारे इतमा स्वयंत्यारे मा"स व स्त्राची 😻 माद व्यर्शनीन

यस भारती. त गरून 🛊 स्थार प्रद्राज्ञेना साधा करे. नुध्यमा बारच वर्णचा छो द्वाल ਪੰਦਰ

कर्मत अलगा कम्हला रणासमी प्रशासको त दन्य ते कन्द्र सकीओ सावे जरूर

मा चे.

द्वे एंनाग्ना दुवीची बीट्वे सु मार्थ दीला ध्यान वर्गीश बीवर्शिया न कर महिन्छ काथ प्रीतिने इस स्था स्थाना मित्राने हम के समें साम विरक्ता राष्ट्र को छ जो

लोभ दर्व ग्रहांको क्ला करे ड मार रेडाने त्यान सरीधा भारों दक्षिण विसामां ध्या है पक क्षेत्र वस काल पर्वता हे इरायरमा अर्डेच सा अस्त क्योच त कमारे मनके क्या करका अस्

बी। इस ठमार समें बसी 🖦 थीरदिंग नमान शर्मा वर्गाः

#### पाठ 🚧 सा

# (बातु) प्रवित्यकाळ अने कियानियस्पय सोक्ट' गारे शतुकाल स्थालका

स॰ मा॰	स॰ मा॰
<b>शु</b> −मार्थ भा <b>व</b> स्तु	मुक्-तरा नुग्तु धर्
गम्-ग•७ वर्	वर्ष्-प्राच्यः धारकु
स्त्⊣ाख तद्	छिष्-बन्त दर्भ
विव्−रेक जरु	सिव्-भेच्छ मान्

रम्-रच्य आप्

'साबक्ष' स्थार का पाठुला भाष्यान्त्रका रागाव न सने रुपा स्थाबक्षण कालै काला अभिनक्षकाम इस्पत्रकाल हिंदा होने विकास वाव के स्थात अस्मा पुरुष क्षत्रकाले का मा बाउनीने काल काल्यार सम्बाधी विकासे तथा बाद से

# ____

भुक् मोत्त वातु

गच्छनां चपा		
एकव्यन.	बहुबबन	
त. वे. धन्त	गरिकस्सामी गरिकडामी गरिकमी नरिकडिमी	
गरिक्रमंत गच्छेर्स	गरिकस्साम् गरिकशस् यरिकस्साम् गरिकशस् यरिकस्, गरिकहिस्	
गरिकस्सामि, गर्थकेस्सामि,	याच्छम्, गाच्छास्यः यच्छित्साम गच्छिताम, गच्छिम, गच्छितिस	
अ <b>धिक्र</b> ामि, य <b>ण्डे</b> शामि-	गरिकहिस्सा, गरिकहिस्या	

गव्छिमि गव्छिमि ए वात्र त्यारे गव्छिस्सामी गव्छिहिमि गव्छेहिमिः वगरे स्था वात्र छः

थी पु॰ गर्थ्यास गर्थ्येस्य गर्थ्यस्या गर्थ्यस्या, गर्थ्याद्वीत गर्थ्येद्वीत गर्थ्यद्वस्या गर्थ्येद्वस्या गर्थ्यस्य गर्थ्यस्य गर्थ्यस्य गर्थ्यस्य गर्थ्यस्य गर्थ्यद्वस्य गर्थ्यद्वस्य गर्थ्यस्य

त्री पु॰ गर्बिग्रह सम्बद्धेहर मन्दिग्रहित गर्बेग्रहित गर्विग्रिहर गर्वेग्रहिह मन्दिग्रहित गर्वेग्रहिति गर्विग्रहित गर्वेग्रहिति गर्विग्रहित स्वयुद्धिय गर्विग्रहित्से सम्बद्धित गर्विग्रहिते, गर्वेग्रहेरे गरिव्यक्षिरे सम्बद्धिति

उत्त उत्ता अन्यदा आहे तथरे बर्ता तथी-

गन्तु } गब्दिकाम गब्दिकामा

# क्रियातियश्यक्ष

१ क्रियातिग्रस्यर-विकामी मर्त्यागि (निक्स्या) स्वरं छ. भ्याच बता कर्नु होग या समुक्त कर्मा वेच प्रका क्रमा ब सम्बुं एरसे केता उत्तर स्थावत राजनह बीतुं वन बसी प्र रार्यु क्रमा में बिकामी विकासन क्रमी तका है।

#### पार १८ मा

# (बाज) मविष्यकाळ मने किमातिपस्पर्ध स्रोक्क वेरे यज्ञान स्थानको.

सं• मा•	र्म• मा
सु-माग्ड <del>मामा</del> र्	सुन्ध्-जन्त तुरन्, धन्तु-
शस्⊸रुक प्रदु	<b>सम्ब</b> ्यान्छ धारम्
<b>कब्</b> नाच्य रोन्	ਪ੍ਰਿਕ੍−ਨਾਰ ਝਾਤੂਂ-
विव्-स्था प्रमा	सित्-मेच्ड मेग्ड-
द्रम्-देश्व अनु	मुज् जान्ध कातु

'सोक्**ड**' बंगर दस बातुआ स^{िस्तर}करो सपस्य " स्ट रमा भराग्यामा कानी बच्चा समिक्यासमा अस्यवस्था द्विया होत निकाले बाव क्ष राजव प्रवास पुरुष एकावन्त्री तथ का बाहाबारी करण करान्यार मुख्याची विकारी गिद्ध पांच वै

गम्छनां ऋषो			
म्क्रम्थनः	बदुवचन		
य पुरुगस्काः	यश्किस्सामी गश्चिदामां गश्चिमो गश्चिदिमी		
गविक्रम्सं गच्छेस्यं	गष्किम्साम् यस्पिदाम् गष्किम् गष्किस्		
गरिएस्मामि, गर्फेस्सामि	गष्टिकसाम यस्त्रिम, गष्टिम गष्टिक्स		
गच्छिहासि, सच्छेहासिः	गक्छिहरता, गब्छिहरमा		

इसन्तीओ इसमाजीओ

विमा-इसन्ती इसमाणी

```
रचन्ता रसमामा
 इसन्दामी इसमाजामी
 दोन्सी इसी
 होत्सीमो दुन्तामो
 द्योग्ता दुन्ता
 होन्तामी दुन्तामी
 होसापीओ होसाणाची
 श्रीमाणी श्रीमाचा
प्रंसक-इसर्श्त
 श्वमार्ज
 इसन्तार इसमायारं
 दोन्तं
 शोलाई इन्तार
 डर्न्स
 रामार्थ
 श्रमाणारे
 मानमा स्तो–आयो न न्नान स्ते–आया प्रत्यम पत्र काग छ
 अम्ब-इसम्ते इसमाजे होन्ते हुन्ते होमाजे
 द पुत्र अस्त्र अस्तोरन पास्तिहा त्वातस्य व विसंतर।
 (इस मा १४१)
 } बद्द सम्म गुना द्वृता स्त्र तृत्व जनानि (त) सम्बद्धीतो ।
} (सदग सा ४ ३० स्त्र ९)
) बद्द अप्रत्य पद्व तए इ. विकासिभा हुँतो सः क्रिसिमीणा
} पुला सप्रक्ष अल्बसन <u>ईति</u>हा(पूप्र २९ सा)
 } जद (तुम्ह) तत्त्वं इंव इट्सर्चेतो सामे हवा मर्दती।
} (पृष्ट १८ च. ४)
 एक्सि सर्व क्ष्यक्षेत्रे (ता) रूप प्रविमा अन्य अस्मुर्ग्यहेज
 सप्पमना द्वैद्वाः (धीर्वभनः ४ ३४)
) ऋ वर्श जीराङ्ग्ता संध्य व रिझ्ने हुनो तां धुर्श हुनै ।
} (विश्वीयः मा १ ४ ५)
```

कर परमंत्र सो तुम्हेदि विचलिको होती, हा कुछ हुछै ।

(सहस्तिष्ट ९८ व्य ९९)

#### प्रस्पय

२. निक्रमध्य किंग प्राप्तन अस्तास्य एक्सकः सने खुं कक्त्रम्य ए ए किंग्र्य क्रमस्य क्रिक्ट-स्थानं व अपन्नत्रे लग्ग्य सन्त्रम्य अन्यभो त्या एक्सिंग्य क्रमः एकं पुरस्यां 'क्रम्-रेजां' प्रश्चे सन्त्रम क्रयासारी विचानित्त्वांत्री स्था नत्त्व हे.

#### श्रीबार मत्यपो-

यक्रव	वर		agar	<b>ग</b> र-
पुर्विक्षणना स्त्रीक्ष्रिंगना	स्री		न्सीभी	माणा माणीभो माणामोः
नर्गुसकता 	ल्लं	सार्थ		माणाई
क्ष्मं वयम }	32	<b>रमा</b>		

पदम बहुन-पुर्किग इस्-इम्मला इसमाचा इसमाचा इ:-कोम्पो दुम्पो कोम्पा हुम्पा इ!माणा कोमाणा-

सार्वका प्रवचनराज्य प्रयोगी प्राप्तन सर्वश्रवसी स्पृत्र इस्टर नाजाज्ञय हर

तार चा पाना ता-क्यां प्रस्ता पूर्वे 'श्र' सा ६-व' वरतार वाचेत्र के ता ६वना प्रता इंग्रान्य क्षेत्र करो वाका नारिक्या के ता ६वना प्रता इंग्रान्य करो ५ व ता तुम नेत्र से व सुद्देशा वा ई तंत्रविद्विद्याया वर्ष द्वेती।(द्वारक इ. व. ४६). नपुंसक-इसम्तं इसमाजं इसम्तार इसमाणारे

इसन्तीमो इसमाजीमा इसन्दामो इसमाचामो

होन्तीमो इन्तीमो

होन्तामो इन्तामा

होमाणीमो होमाणामो

**क्रीकिंग-इससी इसमाजी** 

इस्त्रता इसमाणा डोम्ती इस्ती

होस्ता हरता

होमाणी होमाला

	होमार्थ होमावाई
भ्याप्	िन्ता~माजो न स्वर्णन्ते —माचे प्रत्यव पत्र सग्र च अमडे इसन्ते इसमाणे दोन्ते दुन्ते दोमाणे
4 .	य प्रकासकोलं पासंता तनातवात विसंता। (दासा १४९७)
\$ q	} अक्तम्स ग्रजा द्वंता वान्च बत्रावि (त) सस्सदेखो । } (संबंग या १ ३० ग्रा ९ )
4 d	) का काल गृह । उद इं क्लियिका बुतो ता फेलिक्सणा } प्रणा सन्दर्भ करवस्य ब्रुता (पूप १९ मा १९)-
ई ए की ए	} अद्द (दुम्द) तल्लं इंग्इट्सर्वता सामे तुका मर्रती। } (६,५ ३ मध्य १)
	एक्ष्मि असे <b>सम्बद्धेतं</b> (ग्र.) एना परिमा <b>स्थल संब्धुरनहेळ</b> क्यमला <b>द्वेता।</b> (चैकेक्स्य प्र २४)
ઇ. <b>પ</b> અ• પ્	े बद्ध्यां नीवाक्तमें क्षेयान दिक्को हुंता तानुसंहुंते । } (निवीष, मा ९६५)

बद बदममेंग सो दुम्देहि विद्यालको होती, या सुर्त हुती।

(सदानिष्ट ९४ वा. ९९)

# शिक्ष उंप } ज्यानुके विरोतुपालनं करेंसा, ता तुप्परं इंगें। वंप } (मदा इ.९.).

अत्र इंशायण्डासा स्वाप्तमि पार्वन में हुंनी (प्राप्त १९१० ११). ए अद्यासनामा प्रकृता स्थलता विकास समाहीता!

तः किमला स्थितः इत्यासलयः हुन्तः ॥ (क्षण्यतः १८३३) ) अस्त तंपूर्ण्यते साधो स्थानि स्थापसार्गोः

सी द } जा इतं पुष्पंजी तासी लस्सानि सह प्रपासीती है इंप } (प्राइताशास ४४). सी र } जा करमार्थित स्वाती प्

त्ती ए } जा करमान्त्रिक तथा जह तथा वि वार्वति त्य त र } पण करमात त्रीत्राधानिहरूते त हुँत । (दारु पृ १) चा ९४) त प } जा पुल इर्जाकास्य क्रमेसु प्रचल जनमान्त्रि हुँति। 3 व जा क्या बरपस्याज्या डार्यस्य प्रमित्ते हुन्तियो ॥

त कं सर्पराद्धा डापेता यसके हमिर्च ॥
 (संग ६ १६३ व्य. ६१).
 कर जन्मवर्ष शिक्कमरिवीदि कर्य प्रकारित विंड ब्रंते

मह सम्बन्धि तिक्रम्तरिवादि कथ द्वारं रिद्धं बूंति तो न स्ववस्थित मशुरिता गृहं फरेंता। (निक्षीय मा १ द ५)-

> ) द्वांत्रज्ञ त तीवा द्वांत्रज्ञा व निश्चा विक्रित्ते वि वह व } द्वांसार्व्य । व्याद्वीता च्या सम्बेद्धान्त तीत्र ति वह व (क्षांत्रत्यक्रमति त ५ व्य. ५ ).

### होस अंगनां आयो

पुं॰ सी० नपुं॰ बोमन्ता होमन्ता होमन्ता होमन्ता होमन्ता होमन्ताह बोमनाजो होमनाजा,होमनाजा,होमनाजाह

# उस-उचानां क्यो

भव र ) इसेन्द्र इसेन्द्रा पर्व 3 ) दोनत दोनता दोपनत होपनता

किमातिरस्तव ज्वारे संबंध के सरत पूर्व म बबन हाय तवा पंक्तिक बलबोगी बप्सून क्रं अग-क्रम स्तो विक्रो सप्तरती का सबी बोक्तो-जा त विद्या रूप्यो बन ता सुनी पहर.

# लकारास्त साम

म्बरिटमां इस्तम्परण प्रदोग दशा नदी श्रेनी इस्तरास्त के करते हैं दना समुद्ध फाफर को बीचे प्रसाद क्या बान है

- पंरक्रमा व सर्वे अन्यत्मन के तम व सर्वा संबंध-रायक के तथा अल्पन 'अर्थना अर्थ' याग के बाने के समयो निरोपर क तथा सम्बद को ना बहारों बाल के, पढ़ी अस्त सम्बद्धान्त होवाडी त्या रयो प्रक्रिय सन न्तुंनकर्डिगर्मा माध्यस्य पुरिश्रम अनं माध्यस्य अपुनक्तिंग जेवी पाय
  - . . स्वेक्नावक नाम-पिसर (पित) कामासर (जासात)
  - मिक्षेत्रत नम-कचार (कर्त) बायार (बात)
- प्रथम। जने द्वितीयाम एकावन निवास सर्व विस्तितानी इसकरान्त कराव सन्तर इसी गाँउ पर बात के विक (पितृ) कतु (कर्तृ) दाउ (दात्), धारत औप उद्यासन

क्षेत्राची देनो स्पो अकरान्त पुनिक्रत अस अपुनक्रमिंग उनी बाव # तरी पिकर, पित्र (पितृ) कत्वार, कतु (कर्ने) बायाच, बाब (बातू) स्त्याद सन्द गर्नी स्त्रो करना

पुनितमां प्रयासन् बुक्तवन क्षा ना 'ना' करवानी पत्र विकारे बार के बेमक-पिशा (पिता) कता (कता) बापा(दाता)-

र्वर्वपरायक क्षात्राराज्य कारतु इत्योक्त एक्क्करतु स्थ भन्त भी में की मर्र प्रशासी का निवासायक ब्रायम्य क्यांना वर्षे में 'का' करवानी निकरे कान के

बनके-हे विश्व ! हे विमर् ! (पिक) डेक्स ।

> हे राप ! (TIN)

पुष्टिसम तथा विदेशय शब्दो क्क्सार है वि (क्ष्मृ) क्यार बाभावर ) पु. (बामान्) बामदे, बामार कामान

क्रियार रे नि (शत्) वेनार, पिसर } प्र (तिन्) तिल पिक्र मापर } ५ (आग्) मही. माड

#### अकारान्त पुरिसग प्रविकास

बदुवकान प विकास विकास विमरा

विमयो विमय विमयो विक्रणा, पिक

भी. पिसर विमरे, विमरा लिक्को किस

**T B** पिमरमा पिउची पिउस्स 4

विवरेच र्च चित्रका

t Tru

पिमरेडि-दि"-दि

पिमरत्तो, पिमरामो

पिक्यो पिक्रमो-क-

पिस्ता पिस्र-सा विकालो किस

पिभवा हि-हिन्दो-सन्ता विवरेडि-दिग्तो-सन्तो

पिकहि हिं-हिं

विकासका-च

विक्रम ध.

दिन्तो-सन्तो

पिमरेसु-सं

चिक्रस-सं

पिभरा

पिमरत्तो पिमरामी पिमधाउ-कि किस्तो

पिशरा पितको पितनो पिक्रभो-उ-क्रिलो

पिसरे, पिसरमिम पियरंसि विक्रिम विक्रीस

स

÷

÷

द्वे पिम पिमर्र पिषद पिषरो

कत्तार कतु (कतृ) श्रष्ट

कता कतारो

कसार

दत्तारण-श

कचारा कत्तवो कत्तव कत्तवो

कल्याकन् क्वारे क्वाय कत्ताओं कत्त

कतारेहि-हिं-हि कलाई-दि-दि

क्तुया शर्वत्रो हरी विश्वविद्या श्वत्रवस्था ए प्रत्यव प्रमाने स

1140			
₹	} क्वारस्स क्रुणो क्र्नुस्स.	कत्ताराण् गं	
₫	क्रवारको क्रवारामो	कतारतो कतारामो	
	कतायर-वि-विन्ताः	कत्ताराज-हि-हिन्तो-सुन्तो	
	<b>फ</b> लारा	कत्तारेहि-हिस्ता-सुन्तो	
	कतुषो कतुत्तो,	कत्तुनी कत्तृमी-उ−	
	कच्यो-उ-दिन्ता		
स	ककारे ककारमिंग	कत्तारेस-सं,	
	दश्यसि		
	<b>बन्</b> स्मि, <b>बन्नुं</b> सि	<b>कर्</b> ध−छं	
सं	इंक्स क्लाद	<b>%</b> चारा	
	क्ताचे	कत्तवो कत्तरमो	
		कतुषो कन्न	
	कतार-कर कर	ारास्त नवृंसक्तिंग चप्प	
	_	•	
4	}क्तार	कतारार, कतारार कताराणि कर्मा, कर्मर कमृति	
	दे कत कतार	कताराह कताराह कताराणि	
٠,	4 mm male	कत्तरं कत्तरं कत्तव	
बाकीनां कप पुरिस्ता प्रमाणे.			
		(१३ (११व) राष्ट्र	
	प <b>क्षणम</b>	वरुवयन	
7	} दापारं	रापारार रापारार शावाराणि राकां राकाँ राक्रीन	
		राज्य राज्य राज्यम	
в	द्वे दाय दावार-	यापाराई दावाराई दावाराणि	
		राज्य राज्ये राज्ये	

वाकीनां कप कचार कन्न प्रभाजे क्रारास्त श्रीकिंगमां एवंबरायक सन्दोनां स्पी मीचै प्रमान

क्रकार बजी बाद हर (बुविया) क्षेत्रदी अजी

मर्पदा (नगम्द) नर्नर

पिरसिमा } (वितृचस) फोर राज्यी स्ट्रेन पिरस्का माउसिमा (सन्देशक) मार्डी मानो बेन मा**उपका** 

oमास्तरा मामा } (तान्) ताना मा

ससा } (तम्) म्हेन

भा समानं भ्या आकारम्य द्वावाची आकारान्त भीतिय

गमोनो प्रेश व बाब छ, अने 'माठ' बळ्लो वया उत्परम्य नीफिन नाम क्यों बाब छ पत्र प्रथमा क्ने द्वितीयाचा एक्सकारों 'साज' चालना प्रकार करते वर्ता

१ मा तीक्रिय शब्दो मुख्यी भारतस्थल नदिशायां स्थीयन ण्याकार्य है मामा सामरा है ससा ए प्रसान वाक हे.

 'मल सम्पन्ने नोई स्वक माद' ज्या अप्त विद्व वर्ष इन्द्र इच्छारास्त ब्रीजिन जैसे इयो यह बाद से जैसके-

प व } मर्त्वच नर्त्व मर्त्र-वी व } स व म<del>र्द्रवे</del> मर्द्रव दत्यति

बहुबबन माबाओ माबाड, माबा

माधराचा माधराज माधरा-

# मामा-मामरा-भाउ राम्दर्ग वरो

**एक वर्ष** न

च भागा

मापरा

		मारूमो माऊउ माउ			
वी	मार्थ मामरे	ν			
₹					
	माधराम मामराह	मामराद्दि–द्वि"–द्वि			
	मामराष्ट				
	माक्रम माक्रमा माक्रद	साम्ब्रीड-क्रिंक्			
	माजप				
₹ 0	मधाम साधार	मामाप-र्व			
	मामाप.				
	मामदाम मामदा	माभराष-मे			
	माभराष				
	माऊम माऊमा	मारूष च			
	माज्य माज्य				
4	माभाग मामार मामीप्	सामनो सामाधो र			
	मामतो मामामो-ड	हिस्ता सम्बा			
	हिन्दो	•			
	माभराम मानरार माधराण				
मामरला मात्ररामा उ-मामरका मात्ररामी उ-डिन्ते					
हिस्तो सन्तो.					
	माजन माजभा, माजर माउनो भाजमो उ हिन्हों-				
	माऊप, माइक्षी माऊभा	<u>भ</u> ुग्तो			
	उ−दिग्तरे.	•			

स माधान माधार मानाय, माधासु-सु
 माधराम माधराद मानरासु-सु
 माधराय,
 माळच माळच माळच माळस्या माळ

माक्रम् माक्रम्

मं के सा

दे मान्या मान्यामो, मानाङ, मान्या दे मान्या मान्यामो मान्याङ मानायाः

# समा (म्यस्) इध्यनां रूपो

प मसाः सन्तामा ससार, ससा र्षा सर्वः स्थानो समार ससा

र्षा सम्र सम्राज्ञ स

च ए. भसाम समाइ समाय-चं भसाय. पं भमाम ससाइ सुसाय समता ससामी ससाद

मनाम संसार संसाप समचा संसाम संसाद मनचा समामो मनाउ समाहिन्तो, संसाद्यका संसाहिन्तो

स मसाम ससार ससाप नमास-पु

स देसमा सतामो ससाद सता ग्रमा

#### . ..

सक्त पु (तक) नुर्व. सत्ता न (भग) भारक पिरार सन्तापकत् पु (अधानस्त्र) भवित्रमा पुत्रतुं तत्त केतं सहिमानु १ (स्थिमानु)गम सहिमानु ४ स्थिति सहिमानु १ स्थापन सहिमानु १ (स्थापन) भाषा-र्गात्व स्थ् स्थापन थासम ५ (काश्म) बायस रामसर्ग स्वान परिश्व कि. (माद) एवं, एवी गैरान फररण ५ (कील) दुरस्याना र्वपत्र चौत्रो. चीवंदण २." (बैल्स्स्ट्रन) बैध्य-CEA बक्तानी (स्पना) नामा कर्न व्यक्तिम न (वाद्य) म्यन्त्र प्रश्रद बादाकी (इस स्की द्यामायर } शामाव (ज्ञासन्) जमार्थः

क्रीपाइ ९ (बीनारि) बीन-कारीय आदि सम्हत्त्वो. नेय नि. (हेन) सन्तर सन्तर रास्त्रका की (गल्बनाई) गुरुको की बला.

निसम्बद्धां वी (निवस्त) प्रम मधापीती सहा. -रास्त्रमाण रः (तरप्रधन) जीवादि क्लोनं बार

रि. (मन्त्रेष) भव्य कोई-रि (इस्ट्र) दुद्दिया

Ու(<u>գ ֆ</u>եթայի ֆիանի चीमा देवार्यदा की (स्म) स्कूलीर प्रभुकी महाप्र বি (ধার) খনৰ

सर्वेदा वी. (कान्द्) नर्दर बिक्क है (**मिल्का मिर्च**र एक स्थित मेमिकिस वि (मेमिकिस मिनित

धाको जनगर परिमाण क. (सम) स्ट्रन स्था ) भी (प्रतिका) एक्स पश्चिम्या निया प्रमा-पाडियमा 🕻 परप्पर | बि. (क्सर) एक, परोप्पर परुपर परकार न पु. (छन) पन्त्री

पश्चिम व (प्रान्य-पश्चिम जन्म पाखन में (पाजक)सक्रम कामर

पिडिम्बिमा रे

CC8.

मोपनु-

द्रक्तप २ (असन्) १सह

सरारह व (वव) बसर

संपन्तपंपुः (सक्तन) रामनां सहः

मध्यत

पियान्त औ. (विरामा) मृपा

वंबण न. (बंदन वेटी अटका

समाह रे न. (नगर) अन

स्टू पु (केन) हेस समाव मामि (ब्रप्ट) ब्रप्ट पनित ममत ि (भ्रमन्) ममना मचार रेपु (भई) स्वामी पति मत्त्र है विधियय कानान बासुदव ९ (यम) शामुक्त. भास ग. (गम) असट. विषक्ति का (क्षित्रीत) दुवा विरूप वि (विरूप) कारण कृत्य भाषर १ ३- (अन्) माः एउ भाउ बिसमीतिथ व (विप्रमिक्षित) भृयद्विम न. (भूनहिन) आजन विश्वम उपक्रम. वीयराम (४ (^{*}रूपन राग-गाँहरा मायण न (माजन) माजन য় ব (নান) ন্যানা-मामा मामच र्चा (मानु) मन्य सक्तम ५ व (सक्त) रामन् माउ मार • माहरप दुव (सम्राप्त्य) महिमा सगास व (तकर) समीत क्रम मार्ड्ड, प्रजन भाग्य व (शाय) शाय साध्य भाइमिमा 🕽 बी. (मानूप्ययू) मयमहरूम पुत्र (राष्ट्राय) माउच्छा 🖁 नाम-नो का इक्ट र्मालिम नि (मिथिन) मिथा सच्चवय ३ (कवरर) कव करेल मध्य मेखकेत **देशमा सम्मार्** रम है. (छ) समक

#### क्षियाच्याच्य (शिवार्ष) शिवार्ष साक्षा की (धोना) योगा वैनि राजा जनवान स्वालीस्य सीस इ.न. (बीब) मलक नाह रियानु मान्यः हेर्स्का र की. (प्रमुख्या) इट्स } ५ (इन) सर्वे सक्त इद्द सर्वे नरोक्ट वराने वाम है. यच्यप.

144

श्रेत-श्रेता (ऋपः) भग (मस्मि) कार्य स्ट. धान्या (वे भावर्षः महो एम सिम्पन गर्ना प्राप्त तक्षि (तव) ल्द.

Rest Bear सङ्ख्यी (तन्त्राचि) तोपन नभावता नेत्रक मधिव (क्येन) बीम बीमे:

भातुमा

क्सर्वा (मान्द्र) माध्य क्रयो मानिका प्रमु प्रदेश प्रमा

क्ष्मेंच्या १ (काब्धा) बाह्य बाह्य

घोट्ट (प) पीच

त्रिगिण्ड् ) (निध्यू) १४४ जु. सट. जिग्मह् े साम्बु, किया १९९८

पहल े कुछ } (रह / तेवत्र रेख

निषद्ध (मिल्) शब्द पस्त्रीष्ट्र (पर्वम्) केंद्रतुं क्या पंत्रसम् १ (त्र+द्वितः) द्वेष कामा

विकास (स्ता) से पर्ध

# शकृत वाक्यो ≀

र्षं वच्छाणं पञ्जाचि छेच्छं। सम्दे साहुजा सगासे तत्तार्षे सोक्डिस्सामो ।

जया मामा जलाय गव्छिद तो बच्छो तुद्दिचा य रो-विविक्तितः।

मनदेकिर सच्चं योच्छि-म्सामो।

सम्बन्ध् शक्ति सिवं गविक्रहिरे। **१** सम्बन्ध गविक्रम्य क्राह

र अनुंतर्य जिल्लाम्यं तर्षि गिरिस्स मोहं दच्छ, तह सेनुंत्रीय गर्येय व्हासिम्यं पट्डाय तिरुपरार्था यदि सामो बान्येया पुप्पेर्धि क मल्बिहिसि,गिरिको यमाह जं सोस्थिमि पावार क बस्मारे हिस्सिमि शिपिमं स्व सहक्षे करिम्मं।

तर मसोगर्वहो नरियो दि सासु परिप्राज कुणतो वा निरंप नेव निवक्तो । सो सापारंग मजेक्का हर गीमत्यो होन्हो ।

नद दं सर्चु निशिष्द्रकी तथा परिसंदुदं सङ्गार्थि स्ट्रमाणी ।

ज्ञाः धरमस्य एउटं इधिन्ज तथा परकोगे सुद्दे सद्देनजाः। साइन्मिममाणं घरकसं स्ट

साह्यानमाण परवस्त सह कुउन चित्रीयरागस्य भाषा। तिससा देपी देवालेश य माहणी पहुणो महाबीरक्ष्म माऊमो भासि । स्तिरित्रदमाणस्सरिया स्थि स्वा नरिदा होत्या ।

पुष्पनदे शवसस्य ठावो योजो शरहाण्डे य गर्रव ठिक्को श-वरन्ते य योक्को शर ग्रेमा वा १

सक्तमेषि १६ संसारे मर्म-सार्य सन्त्यं सरजं माना विमा माउनो सुन्या पूमा म नदयन्ति पङ्की पद सम्मो सर्वः। बो बाहिर पासेर सो मुद्रा माधा पृथाणे पुत्तामे 🗷 भवो पासेर सो पंक्रिमो बद धर्म मन्परी किस्ते । **के** नरा मनुष्यापसे न **वर्**ग्ले

IVE

पिक्यो ससा पिडसिम सि तद माऊर य ससा माड सिमा १६ कटेर । नर्मंता भावस्य कायाप सि

चित्रसर । प्रभा मामरे विधरे च सिक्सार । रामस्म बाह्यदेवस्म य पिश्र

रिम्म मार्क्स म परा भर्ती चरित्र । पाइड दाहिन्ति ।

सासदन पावेदः क्रम्बाधियामं मचको चेव

वेदा ।

सास् बामाऊर्ग पश्चिषयाप ना नारी भत्तार्यक्त प्रक्रिक

दायाराजं माधे करवी निदो पडमो डोल्पा । रामस्स मावा

निपद्य चनकेज रावयस्य शीसे किन्दीम ।

ते वृद्धियो ददस्ति ।

अर्थ नेही मरिय ।

च्च भाउयो।

हबस्ति ।

#19**3**#7 )

भाषयासु के सहेरता प्रति ते

ग्रभाय मामाय य पदयर

सासूर्ण आमाउगा भइव विमा

सद साझराय य पिडणा म

सायरेषि च समाप्ति च

सङ सिङ्गगिरिस्स इचाप

सतेस बायते सूरो सहस्सेस य पंडियो ।

वत्ता सयसदस्सेस, दाया बायति वा न दा । इतियाणं जय सरो धर्मा धरति पंडिमो । वक्त सञ्ज्यमा हो। बाबा मुवहिए रमी ! को तथे हेल्बाई मोकन बाद बहुने तथर उपर वर्षा खेद छ होत छात स्पृत्र प्रमान को तथा के किया है। जिल्हा के किया के किया के किया किया के किया किया किया क

अभिमानु श्रीन्यो इन ता कोर बी दे करी समाने श्रीष्ठे हैदा. भा तन तकार्तु श्राम हाउ दे ते । सम्पानमाः सा तमा त समान कंपनार्वी

हा त्या व समय बंकतवारी बंजन तो हुनस्य कहेत. -राज्य व रहोणा व्याप करों होत तो त एकु पास्त की व्याप करों होत सामार पार्थों के लाकों हो होती है। स्टाप्ट पार्थ कर सामार्थी सामार पार्थों के लाकों हैं सामार पार्थों के लाकों हैं साम नेक्स्यु

बालनार पानेची 6ने तरबोर्ड बात सेक्या बात सेक्या हु ठसरमानी कमको नर्बेड क्ये सहार कमें केम्से वाचीप सारा कमें देख्ये वाची विकारकार क्रिंड कमें देख्या वाची विकारकार क्रिंड कमें देख्या वाची विकारकार क्रिंड कमें देख्या वाची

क्षींच करी पेरवरण गरीय कर्मका मार्च एने रीका सीबी अप्रै मोस मंत्रमंगो.

| विकासना| | वार्त का प्रमाण वार्त का वार्त का प्रमाण वार्त का वार्त का प्रमाण वार्त का वार का वार्त का वार्त का वार का वार्त का वार का वार्त का वार का वार

#### पार १९ मा

### कर्मिक इयं अने भावे इयं

१ करान क्यांति के मार्थ रूप परता बहान हैंबा (हैंस) के इन्छा प्रस्तर सहारात के बाने ए तियार बदेश बीधने पालगा पुत्रा बीचक प्रत्यको ब्यावानाः

सरिम्बद्धात जिलातिपतन्त्रे गगरेना चमत्रि सन नावे वर्गे कर्तर जैवां न बाल छ.

### कर्मिक-माचे-संय

इस इंगन्डसीय होर्शन हाईब इत्तन्त्रज्ञ इसिज्ञ हा+इउस-होप्रज मे-ईभन्मेईस पहर्शम=पश्चीध पद्भाग्य परिश्च A-138-9138 बोस्सर्भ भावतीयातीय हार्शिय हाईथ बास्त-१३व बोस्थित 21452M \$152M कंप-रिभ-क्पीध सार्शस-धार्रस 49+178 4Q28 ह्या +१३व ×ह्या दरन देवन श्रीमन्देशकीय. गार्श्वम-बाउस temetenet feman **4814€78≈48**1373

 जो नगु उपर्यंक होत को तैना कांत्रि ज्योन वाप कर्ने सर्वाह (मोर्ली्स) होन को मोर्लियोंच वाप के (काण प्राप्ते, राम (वेसू, होनूं, वाप्तुं नवतुं, तीर्थ स्तुं, सर्व प्राप्तुं जेपतुं, पर्युं, तुर्वं, स्थापनुं करें (स्तुं, १ कर्मक्का प्राप्तां के अर्थोंक प्रत्येत ए विश्वय गीता सर्वेत्रका कर्त्वाचे उपर्यंक प्रत्याना मा प्रमाणे क्षेप तैवल करी पुरुष्कोषण प्रस्कवो कव्यवसायी वर्मीच में मार्च क्या बाद छे.

> पडीम पहिल्ड (पड्) मां रूपो वर्तमानकालः

मतमानकाळः पद्यक सहस्र

प पुपदीभिन, पदीभानिः

पदीभागिः पदिश्वमि पदिश्वमि पदिश्वमि

पाइरबाह्य ची पु पद्दोमसि पद्दीमसे

पदिक्रसि पहिक्रसे वी पुपडीमह पडीमप, पद्दीसमी-मु म पद्दीभामी-मु-म पद्दीहमी-सु-म पद्दिकामी-मु-म

पहिरक्षामां-मुन्म, पहिरक्षमां-मुन्म पहीरक्षा पदीशह. पहिरक्षा पहिरकह

पडीभन्ति-न्ते पडीहरे, पडिज्जन्ति-न्ते पडिज्जिरे

पविज्ञह पविज्ञपः पविज्ञिनिन-से पविज्ञिने
क्रांतिस्त्रीया वृद्धव छ सन वस प्रका विप्रविद्यो साव छ तत्रव कांने स्वाप्ते अवत्रव सूचव छ त्रेगो-क्रांति-कुंपारो वर्षे हुण्या, क्रांत्रियां कुंपारेण वहाँ कुणीवह (कृत्य वर्षे वर्षो काल छ) नामे जिल सक्कोट रात्रील विच्या स्वित्रज्ञति (धा वर्षे क्रिस्पो सूच्य छ) सने कांन्यतीयां कर्म त्रोगी निर्माचना साव छ सने क्या होतुं वर्षो ठर्गो अवत्रव त्रीग पुरुष एक्कामां सूच्य छ अन्ते-

बास्ते जमाद-बाक्षेण जम्मिरजद (बद्धकार प्रतान है) यच्या र्याति-बच्छेडिँ र्यमिरजद (बद्धवेनदे स्मान ह) पुरस्थक अन्तरोधी पहेरों का या या बाव स्कटे. पहीच्य प्रविक्रमें पहीच्याँन पूर्वीच्याने पहीच्यारी प्रविक्रमें स्वि प्रविक्रमान्त्र प्रविक्रमें स्ट्रीट स्थापि स्थाप का बाव स्ट. इस इसा अन्या स्वतं स्वतं स्वतं

र्माण्य रे पुरीपरण पुरीपरणा मधुरकां रे पदिरक्षरण पहिरक्षरण

द्यमात्र भूत

सहायन ? ×पहीमहिम पहीजहिम संस्पृत्त } पढिल्लाम पहिल्लाम सर्वेमा

संस्थान े प्रशिक्तमा प्रविक्रिक्तमा नर्वपुरुष ∫ प्रशिक्षमु प्रतिक्रिक्समु

परोक्कत्"- । कीरि प्रसाय - पश्चीम बाब छ.

विधि-भाडाय

पक्रवचन बहुददन

प पु पडीममु-मामु-स्मु-पमु पडीभमो-मामो-स्मो-प्यो पडिज्ञमु-ज्ञामु-ज्ञिमु पडिज्ञमो-ज्ञामो ज्ञिमो-

रक्रेमु रक्केमो बीःपुपदीमदि∹पदि पदीमद्वपदीपद

पडीमस्-पड पडीमस्-पम् पडीरम्मस्-पम्स

परीरक्तीर-पक्तीर परीरको पक्त परीस

पदान

[×] वरिक्षिण-१. ति १ वहस्राधानिकामां 'पद्मक' एवो कर्तिवर् हवोन करेंट स्वी-

विकास परिज्ञेस

पहिरमहि-स्पेहि पहिरम्भ-प्रक्षेस् पहिरम्भम्भ-प्रक्षेत्रमस् पहिरम्भ-प्रक्षेत्रम्भ पहिरम्भ-

पहिराजां पह

पहिरकाहि मी पु पर्यासन पढीपक पढीमान्तु पढीवन्तु पहिलाक पहिरक्तिक पहिरकान्तु पहिरकान्तु वर्षे पहोपान-जन्ना पढीपानक पहिरकान्त्र पहिरकान्त्रार स्वे ऽ पहिरकान्त्र-ना पहिरकान्त्रार पहिरकान्त्रार

भविष्यकासः भी• पु• रे पडिडिश पडिडेश पडिस्मार प (पडिडिश पडिडेश, पडिस्सप

का प्रमापं नर्व वयो करीर प्रभाव जाकरा

श्रू १ सुन्तमा स्र च्हानार चनित्रका तथा काईना ईम-इन्ज" मो प्रमाय धनित्रकाल स्रो किस्तिन्ति क्षांच क तथी पर्यम्भिन्त् वर्षाय्येन्त् परिविद्येन्त् परिविद्योग् ए पर्यम्भिन्ता पर्यम्भिन्तान्त्र परिविद्योग्नेत्र परिविद्योग्नि स्था स्थापि स्था तथा प्रा वर्षानी-वर्षार्थिकामि नि जायन्त्र (स्थित) च्याकृते सुत्ते न्

क्रियातिपरि बहुब• 4440 पुं पहल्हो. स्ती पहली, प्रकृताः पदल्तं वरोरे कर्तरि प्रमाने सर्वेद } पडेरक पडेरता सर्वेत हो-होईस द्वारस वर्तमा स्वास भी पुष कोईका बोईप्य कोरनकर बारन्केर

148

ए प्रमान वर्ष क्यों का नेवा. वर्ष व १ क्रोर्यच्यक्त, क्रोर्यच्या वर्ष प्र १ क्रोर्यक्रम क्रोर्यक्रम

तर्व । दोईश्वसी, दोईशदी दोईशदीम तर्व १ ) दोइकासी दोइकादी, दोइकादीम **=**rial--

क्षोतंत्रस्था क्षोतंत्रस दोइकित्या दोइक्सिस

परोक्ष्म्ल सर्वेष } होसी होती हाहीम

वनेरे प्रयोगी देखान का प्रतिकार, १ मि. ४ परि २ मि ६

कार्यमा-होल्या, इविस् पर्तर प्रमान × बहुमादाम्यं पश्चिक्तं, परिकारते प्रदेश्य-का विवेशकेका-का

# विधि-भावार्य

भी प्र दोईसठ दोईसठ दोरम्बर दोरस्वेत कोर्ट वर्ष प्र वर्ष प्र दोईस्का दोईस्टमा वर्ष प्र दोईस्टमा दोरमेटमा, दोईस्टमाद दोरसेटमाद, दोरस्टमाद

#### मविष्यकाळ.

मी पुष्यः श्रोबिश होहिषः, इत्यवि वर्तरि प्रमानं

# क्रियाविपस्ति

यक्षवान पं +दोन्सो हुन्सो को दोन्सी हुन्सी नपं दोन्सं हुन्स

शोन्या हुण्ता शोन्यीमो हुन्सीमो

योग्तार इंग्तार

बगरे क्यीर प्रशासे

सर्वत } द्वात्रज्ञ−ज्ञा सर्वेषु } द्वजज्ञ−ज्ञा

कर्मीके न भाषामां ज करराना कातुमा---

कर्तरि कर्मेचि

पास् रीत (हस्) देशन वय पुरव (वन) सम्बर्

प् पुरस् (गम) मान्तु

हार्यस्य होर्गप्रेयः हार्यन्त्रायः होराजेदेर होर्गप्रेयः मा होर्गप्रियः—मा हार्याजिदियः—प्या हार्याप्रेयः—प्या ह्यार्थिः प्रशेशे एव पहस्रायानिकस्या दशक हे + सहस्रायां—देशियां हेर्ग्यस्थं हेर्ग्यस्थं

बरेरे प्रचीनो रेकान स

बिष्	विच्या विस्मा	(वि) एवई कर्नु	
त्रिष्	किन्य विकास	(ঞি) মতিবু	
सुष्	मुख	(¥) सम <del>्ब</del>	
17	Lat	(ह) होम अस्तो	
धुप	हुन	(म्प्र) स्तुति करकीः	
लुष	सुरुव	(न) व्यरण्डु	
34	2mi	(र) पनित्र करने	
पुष	Fed	(म्) इचारचु, वेगलच्	
इंच्	<b>€</b> FH	(हर्) हर्म्नु, माप्त पर्युः.	
क्रम्	चम	(८२) कार्	
34	रुष्म	(इप्) शेख	
क्रिक्	मिक्स स	(बिह्) बाउहाँ	
वर्	<b>नुष्</b> म	(बहु) सहस्र अस्त्र	
रप	कन्म	(६२) रोक्ष्य	
सर्	£3H	(रङ् ) रक्तपुं सम्ब	
έų	₹ इस्त	(सम्प्र) दाशक.	
4-40	रस्य	(च+रम् ) शेरम्	
धगु-देष्	मदुस्त्रव	(मद्र ६५) स्टब्स सत्या	अनुकानुं स्टारं वर्षु
रव-रंघ	उपस्थ	(वपनदन् ) सरकातन्	4
गम्	तस्य	(क्यू) अनु	
दम्	<b>€</b> FH	(FT) (FT)	
मण्	मध्य	(सक्) बावनु जसनु	
छुव	कुल		
र्वे	सम	(FT) this	

भेग मुख्य (মুখু) কাল -र्धार (६) इरम करते, क्यें अर्थ कर् धीर (**s**) **9**(**q** तर तार (स) व्यव बर् नोर (क) नीर्घ वयु विद्यम् ( विरूप (भर्त्र) देश रख कमानु माज् ∫ बापु **₹**₹ } (#া) সামৰু मजब 🐧

(स्तिष्ठ) स्तेष्ठ करवो

(গ্ৰহ) হেৰ ক'বু

(विभव्या+दु) बास्यु, बोटावनु

(সিকু-বিদৰ) প্ৰায়ৰ দিবৰ

(जा+रम) सद कर्चु, बारेम करा

141

(धम ) मेळवा

(क्य) करेब

सद्

55

नादर

भारम्

सिव

सिविसम् भिष

गद्द-सिन्द्र केन्स् र

RUI

प्रव

दाहिप्प

भन्य

**पि**प्प

किया (स्वयू) रुखें नसा
विकास की नांकी किया सुप्रीमा बहुआ वर्धीक में साथ
प्रवेशका में सिक्य कार द्वारा महाआ वर्धीक में साथ
प्रवेशका महिकार बराय के द्वारा दार्भामा मनाव वाय द्वाराय
पर्वेशि मानेना मानवा स्वयूक्त सिकार कारणा न द द व्यूक्त पुर-वाय के उन्दर्भ विकास प्रवेशका कारणा न द व्यूक्त पुर-वाय के उन्दर्भ विकास प्रिक्त वार्म पाहकोंने स्वयूक्त मानेना दिस्स दान स्वयूक्तिय कार्म प्रवास प्रवेशका स्वयूक्त माने प्रवास स्वयुक्त किया-तिम्म वार्म प्रवृक्तिय स्वयूक्त स्वयुक्त स्वयुक्

क्यंति	RP-	भूगमञ
वर्गयान	भाषार्थ	

मणिका, मणित्रहर मणित्रहरूं स

इसिन्द्र इसिन्द्र इसिन्द्रांभ

144

श्री ए. श्री ए. सर्वेद सर्वेष श्री ए. सदद सर्वेषु -वीस-बीसर वीसर वीसीय वीसिविष्ट वीसेती-सी-स्ट शीसेका क्वा

1st

यशिष्य-**व्या**रि

मज मण्यह मण्यत भण्योभ मण्यिहित, मण्यान्तो नती-

भार्यमां बीनानी बगरे प्रयोगो एव देखान हो.

मण्डे रच सा मणीबर, मणीबर सणीबर्गम मणिहिर मणान-उत्तर-मकलो-सी-[ef

इए-इस्ता इस्तड, इस्तीध इस्तिहर इस्तन्ता-नी-क्ष्मेल हा

इसीमर, इसीमर इसीमांच इसिडिए इसली-ग्री-इसेरब-स्था

सरके उस-प्रमान

पुण-पुष्पर पुष्पर पुष्पीम धुव्यिद्विर पुष्पक्तो-श्री∼

Sec.

जिल्ला ) च्या । च्या हु मार | च्य हु मार | च्या हु मार |

भारति (इटान) वेरावस्थ प्राप्त है। भारति साम्बर्ग, निरावस्था प्राप्त है। विकास वि (विमस्) केसर्ट-

चंद ऽ

चुत्त वि (वृर्त) ३म, छठरगर.

निस्सक मि (विज्ञेष) एक्टर-

महाराष्ट्र व. (तमान्त्र) वाचाध राज.

कीमेव ५ (म्टब्स्स) राजे

#र्ख, श्रद्ध ग**र**ख-

प्रो ( et: ),

रतो

रहरू } वि (तित) समय स्वर क्रोक

वसंबंद (अन्त्र) वय हुव

स्त्रहर्ग गानो (ब्युवा)-

बिडस ५ (व्यक्) विद्रात्

दक्त पु. म. (इस) साउ

रत्युष (भन) सनुमर

बिक्रि ५ (दिवि) प्रचार ननीम नायमधा पु. (स्थायमध्ये) बीतिwhi use बीसत्य नि (मिलल) रिच्छ-यमारा ५ (प्रकोग) प्रकाय सायन सम्भाय ५ (साम्यः) धान ्यान् बार्गां कर्णाः पश्चमस्य नि (प्रन्यः) शास्त्रः म्पना } (ध्या) पर्नेध्य ग्या. भारतः गिमान रबाँतु इत्तुं, मात अध्यतु मक्दा 🖔 परिमाती (पर्वड्) सभा समजीवासगय ३ (क्रांतिन मको भारत साञ्चलको स्वयंत्रक परिसर ५ (हम) बनीय सम्बद्धा की (समा) नगः सह्^{रा} } नि (त्रत्र) कन्या कर सञ्ज्ञ | नि तुकी समाह, सीयम वि (चीन्न) और र् र्गमहर्भ स्तूम्त् व. चल्यात्र सुख सुरहि 🗎 (प्रकी) प्रकार भुवग ५. (मुत्रन) 🖦 बाह्र म 5कर स्टब्स् } व. (ग्रॅंव) ग्रेन. सोप्प सुभ ई (हुव) इत्र मलाण रून (फ्रब्राम) स्वास सुसाच } सामान्दिर *मारक ६ गा*वन) पत्रन शत्रु सम्बद्ध ड ल्युच्च अध्यन हात्र तो 'स' सा 'स' यो गोप िक्यों का ब. मेमहे-वरो बडी, (बडा)-कला क्या (क्या)...

# मामसिक ग्रम्बो

भेन्तुच**रूव (क्ष्मा**ग्यस्य) पर म्पर स्वयवनान् रंबिययमा (धीत्रस्व) धीः जोपजपरिमद्दसः (बाज्यध्यः

कर्मा नगुराव न) मोद्याधाः वाद्यं प्रधान

नयस्यक्षाम् (अवगम्य) हजार।

भिद्यगुष्प (न्रयपुत्र) नारशमः गुरा महिररामण (म?तम्मन्न ) म्त्रा-भागम् स्ल

भाष्यप

केलह (केमविष्) वर्धाते. प्रदासीन (नवाग ३९) वारित

सप्पर्धा (तः ) नर्व नार समना (नमञ्जा) बारे बन् पानुभा धत् मन्त्रं (धा+मर्) बाहा

कार्ष अस्त्र का व धव संद (भाग्या ) ज्ञावा

▶1. उद-वर् (उत्तर राक्त कारे बर्क (दन) दुस्ते

मरस्यद्वाद्वाद्व (मन्यस्पन्धिः) मारीमार गारे विविद्वरितः (निविधवनित्र) तरेद तरेदनां चरिया. मसिर्सि (र्घ'राधि) बग्र ब

नुन सिद्दग्रम्परा (भिगमाना) विकाश की क्यार सुयणदुरज्ञचिसम (गुज्ञ-द्भागीयाः) स्थान द् कते 4

सक्ते (नभार्) प्रका (स ) विभाग हिन्द सन्दर्भ विभाग विभाग सर्द्रा भव्या ए

पादम (१४म्। इत्थ । मान्

रम् (स्त्) मेक करा १८१ यं-प्रशाह (० प्रमा) हन्ह

and light and fer (tre) of men

बे भाषा पुष्पण्ये हीसीम ते **नवरन्द्रेन दीसन्ति ।** 

सद पदणस्य रठदेवि गुन्नि पश्चिमकरा न कपित्रका

तह च्यानं मसम्मेहिं वय गेहिं सक्रमार्ग विकार न क्यीररे ।

धमोच सुद्दाचि सम्मन्ति पावाइं व नस्स्रति । समजाबासपदि चेत्रपसु जि

र्णवाणे पश्चिमाची मध्यित्रज्ञी-विश्वसाण परिसाप मुक्क्येहि

मउणं मेवीमङ भन्नइ मु क्कारित गरिवदिस्ति ।

वैनेहि सीयसेच सुहफासेय सरविका सारुपण बायक परिमंद्रका भूमी सम्बन्धी

सम्बद्धाः स्वयम्बिकातः । होह गुरुवाणं गवर्ष कराणं भोषस्मि न दश हवरार्थ ।

महिमामणा न वेप्पर बहुपहि नयसहस्सेहि ॥२॥ पुरुकंति दयाल् शरूयो में ह मच्छवहगाई !

व्यमिषा भवरं इस्त्रीम । गुद्धनं भत्तीय सन्यानं तत्तारं जिम्बिडिरे ।

सब्ब विसबस्याप परिखरे उच्चेस दक्केस डिपॉई क वेडि" निस्मके नहयसे धवसा सिहरपरंपच तस्य गिरिको

वीसर । गुद्धवमुद्धयेच सेसारोद्धीयः। सहे ! का तुमं देवि स्व रीसिस । सदा केरिसी बुक्बप। क्रम्य देश अस्पिसा सदा।

किसिम सहाक मेही वरि सेर कासे न वरिसेन्द्र, थमाइ पूरक्रित साहबो न प्रतिरे । बेसाजो धर्फ बिय गिण्डन्टि

न हू चमेज तामो चिप्यन्ति। ai समिर्गवणा पैर्णति राष्ट्रणा च उल नारामी ⊪शा अध्यमानि येप्पर सर्वप्रवर्षो भूषताय कैयार नवजा

निषम ११ तथी.

का करम परच तपमा का माया केपचा च को करमा। कीरंति सकसोदि जीपा अन्युस्तहवेदि ॥१॥ गन्यस्य दवपरिकारः व पक्रिकारः परस्य दवपारा । विद्मा भवमिकाक उपयमी यम विद्याच हरू रिक्रमो न धामसिञ्जद क्रया वि विशिव्यक्त म बोसमधो । म क्रवामेटि इचित्रमह वस्ते माथस्य मीसेत्रो ॥ .व बन्तिरहा भिच्यगुला न य बन्तिरहा सुमस्य पच्यक्त ।

महिलामा मानवा वि ६ न नस्तव ज्ञाब साहर्ज ॥६॥ जीयन्यार रमित्रहर देविययमा दमित्रहर स्पादि । मर्च चेप चवित्रका चामान्य रहण्यमिणमेव 130 बीसद् विविद्रशिक्त आणिम्बद् शुवजदुम्बविसेसा । प्रमेटि न वेथित्रका टिक्टिका तथ पूर्वाप था। गचगती वास्यो

तुं राषुको जीत्रको. तम बर्वेनके रक्षाणा जो हुमेन पर्म अंत्रक्षाण क्षाण अराज पर्म कारण क्षाण तुक्का बन्ताक, तिथिको जिले सर्वा प्रतिमाणा पृक्षण सर्वे सर्वा प्रतिमाणा पृक्षण सर्वे सर्वाण बद्दा काम यो सा क्तार ठराव बोगो पव उपकार केंग्रव के परभेकमा तुली बाको पठावर रिपारी कांग्रा मनमें उपमा पुरशाके के वर्ष वर्ष भाव के कांग्र ता अस्ट वर्ष पाने के कांग्र ता अस्ट वर्ष पाने के

पाठ २०मा **इ.र्**न

अनुस्ता अपने 'मां' कं 'मां' महत्वत समाध्यात वर्मीनियाँ' इत्ता बात ए स्था मनव व अध्या बहेगां 'मां' या 'मूं' यान देवत स्वा कृता विकास बात उ तथी त्रुनुं नारिय करनु होने

ता सा' प्याप्ताची वाच छ पुँ सीं नपुँ स्थलस्थिमा } (अल) सुविका } (अल्ब ) सुविक } (अल

सुवः धः सुविष्यो } (४२) सुविष्या } (४०) सुविष्यं }

हा।+श्र हाश्चे-हाले (स्वास्) पाल कावेन् इस अव्हरिक-हमिलं (इलिज्य) रलापुं-हाल-श्ववहादक-हार्डि-(चाल्य) चाल कावेतुं-

113 रमत्र सर्वात कुरन्त उपरची प्राप्तन निकास्तार परफार वस्ति

उक्किट्ट (उक्क्ष्यम् क्रेप्ट कार्य (क्षणम् ) करेई. कर्म ( गय (मन्द्र) गवस

भन करनतो तैयार कान थ. ब्रमक---

चर्च (श्रक्तम्) श्राम करावर्ष्ट विष्ट (१९७म्) बायमुः

पन्यं ( उस्त) बास पाने हे प्रोत. निर्म (न=म्) नमंत्र नम

सुष+४ सुणित सुत्रेड

सण+त सणित सजत

शाम-जेन्द्राहर्वे शाप्त साम•नुन्हारतुं, सापतुं द्याम+चप-सारत्तप, शायत्तप

कामभ्तुं बाह्तुं शापमुं शा । वेन्सार्व का ते शत

सुण+तप=मुणित्तप, सुनेत्तप. सुण+सुंब्द्धवितं सुनेनुं

(ध्यत्रेम् ) श्रीमस्थानेः

निष्युको (विश्वेतः) साम्य पदनो.

सिद्धः (स्वयःवः) स्थागः वरायसे सूर्य (भन्म) नामबन्द

इये (दाप) दगावत क्रिम (१९५५) हरन करावहे. यह राज्य ) प्यंत्र राजां. श्रवर्षे शहन

भेलुभोना संगम अं-सु प्रस्वका सम्प्रकार्वा इन्दव दुवरून भाव हे. मा प्रत्यव समाज्याची पूर्वे 'ख' होन हो 'ख'ना 'ह क 'घ नान हें तमज भाषामा 'ताय ने 'त्ते' शब्दन पण नाग छ. उदा — इस+३ इसिड इसेड

इस-नुन्द्रसितं इसेत् इस+चप इसिचप, इसेचर इमन्तुं इसिन्नं इसेन्

(सम्बद्धाः) सम्बद्धाः

(मानुष्) व्यान क्राया

संयुभ (४२%म्) शक्तेतं, संवादेतं-

मिर्क (सप्टम्) सक्त साफ नाक

परण सं (अञ्चल) प्रतिपारन-

करेस परेक

get, ye.

वय बहर्व वयर्व बहत्त्वय, वयत्त्वय, बहत्तुं वयत्तुं (वयद्व्यः) स्ताल व्यवस्थ कर-करित्वं करेत्रं करित्तय, करेत्त्वय, करित्तुं करेत्तुं (वर्ष्यः) वस्त्रे

# **उपयोगी_मनियमित देख्य ह**र्कतो

वेतुं (व्यक्ति) स्वन ज्याने वोर्तुं (स्वक्ति) शास्त्रते. चेर्तुं (स्वक्ति) रामम वोर्तुं (सेक्ति) राममं वोर्तुं (सेक्ति) राममं वोर्तुं (सेक्ति) राममं

#### संकल्पक भूतकृत्वत करण संस्थे के वे स्वयंत्र जाता है।

१ बहुन संस्कृति वे धा त्र्य, इ.स. तुमाल उमाल क्याना क्रमा क्रमान क्रमानी संस्कृत स्थान क्रमान क्

हमन्द्रकर वरित्रक हमन्तुमाण-दिश्चित्राण हमन्तुमाण-दिश्चित्राण हम उमाण द्वित्रमाण हरित्रमाण हरित्रमाण हमनन्त्र दिश्चिण हमनन्त्र दिश्चिण हमनन्त्र दिश्चिण

धापनार्ण

शाम+रुमाज-साइरुमाज

भार्ष इमाच शाम+तु शास्तु शायतु साम+ता-हाइना शापना माम+रय=मारप माम+तार्ष=शाहता**णं** (प्यता) भान करीने श्चा शार्तुं मार माम शात्व शाऊव शातुमाच सारमाच. झाड्रम ( शरा ) भ्यान वरीम मतियमित सवधक भूतक्रवन्ता **वेर्ष देखनाव (**स्थित) सन्त्रथ संतुभाज (का) व्यव

प्राच करीने उद्दाय उद्दाय (अरनाव) कठीने. योत्त्य, बोत्तुभाच (उरला) रहीने श**ब्दा³¹ (क्या जा**ने रोच्ण रोच्चाण (दिस्ता)गेड्न मोच्य मोचमाय (ग्रन्ता) परका (ज्ञाया) जन्मने 47.4 वाज्या (बव्दश) भाग पामीन मोच्या मोचुमाय संस्या ) मोच्चा (सस्ता) प्रवने सर्भिने मोरचा (नुस्ता) मुटीने. पेंद्र्य दहरू शाज(रथरा)बोस्न संच्या (सरा) निकारीन

कार्रण } कार्रमाण (इत्स) कर्द्र } कार्रमाण (इत्स) र्वविचा (वित्तवा) वर्णने. सुरुवा-सोरुवा (धुना) समझीनं. सुचा (सुज्या) द्श्य साइटडु (शहर) गर्मीन संराजीन

मा शरंपक मृतहरुक्ता प्रदेश संदेश व पा सन् अनु स्तम त्रीहेत क्या प्रकोष काव हा. केंग्र---

स्टार्गिमेरत्वाने स्थाप्ता स्थाप्ता हो। उत्त सने

च्यानो एका प्रतादन अनुनारे नाय छ विकास (इस्सा) विकास (क्या) विकास (क्या) काला (क्या)

त्यं कवं तुवावं बवाव-इद्धित्वं इसिक्रवं इसित्र वार्ष इसिरवाच गीरे

#### वर्तमान इवन्त

बातुत्रोतु वर्तमान क्रास्त कार्यु होव तो वैवार बक्स माद्रामीना कर्तिर केलने फ्ल-साव्यं प्रत्यको पुर्विका क्ले क्लुनक्किल्या रागे के का द्वीरिया ई-क्टी-स्टा-प्राची-प्राचा प्रस्की नमाञ्चल का मा अल्बना कमान्त्री पूर्व को हो वादी की नी 'प' विकर्ष वाव 🐧 बैस —

इस+न्त इमन्तो इसेन्तो इस+माज-इसमाचा इसेमाचो (**(न**न्-**(**नमनः) **(स**नो

इस्तर्व इसेन्तं } इसमाज इसेमार्चः } (हन्त्-हममनम्) हम्द्

₽Ε

इसमंदर्भ इसे इस स्ती इसस्ती इसन्तो इस्र+का-इसन्ता इसेन्टा इस माणी-इसमाणी इसेमाणी इस+प्राचा-इस्त्रमचा इसेमाचा

स्त्री

नपु० हाभ होमनारे होर्मा होर्ग डोजर्स बोधरकं

,, द्रोफ्ला होमनी होण्ली होत्रस्ता, होपस्ता .. दोनमाचो होसमाची होपमाची

.. होप्प्राची

होबमार्थ होपमार्थ होअशाचा होएमानः

	होमाणं होः स्त-मन्त्रमध्यः) पर्वः हर्मणि पर्तमान	भ्यी इत्त्वी होन्सा इत्या भाषी होमाणा (मक्न्य-भव्याला) बद्धी
ें बातुई बर्धिन वर्तमान करना बरन होन तो बातुना कमि अंबने बर्ज मस्बन सम्पद्धांची क्येंनि वर्तमान करना बाद क		
ण्य अस्त्रका सम्बद्ध	वाका कक्ष्मीक वर्त	मान क्रम्ल बाय के
4.	<b>#</b> ●	स्री∘
इसिग्ज-इसिग्जन्ठो	इसिस्मन्त	इसिन्द्रां इसिन्द्री
दसिज्जेन्तो	इसिग्डेन्सं	इसिम्बली इसिमोली
इसिज्डमाणी	इसिक्तमार्थ	इसिम्बन्ता इसिम्बेन्ता
इसिन्द्रेमाणो	इसिक्केमाणं	इसिज्यमाणी
		इसिम्बेमाणी
		इसिन्द्रमाणा
_		इसिरक्रमाणा
इसीम-मसीमन्तो	इसीमस्त	
द्वीफरो		इसीमन्त्री इसीपन्ती
इसीममाण्		इसीमन्ता इसीएका
इसीपमाणो	इसीक्प्राण	इसीममाणी इसीपमाणी
		इसायमाणा इसीवमाणा
		इसीयमाणा इसीयमाणा
<b>.</b>	·	
(इन्बरान) हनाय	(हरसमानम्) हर	गर्न (इस्बमाना) इस्तरके

ਰੀਚਾਰ

रीसेन्त

बीखाँ बीसेई

बीसन्ती बीसेम्बी

पु• बीस-बीसन्दो

र्वासेन्वो

		्रवीसन्ता दीसन्ता	
र्शसमाप्यो	<b>दीसमार्ण</b>	बीसमाणी बीसेमा	जी
		बीधमाचा बीसेम	
(हरक्यान्ट) केवान्त्रे	(दशमानम् ) हेव	वार्टुः (हरक्माना) देखार्थ	
	मधिष्य 🕏	वस्त	
र बहुने 'इस्स' अ		सम्बद्धाः प्रमुखानस्य	त्याची
मनिम्न प्रचल्य क			
विष्य-भूस्सानविष्यः विश्विस्सानं विष्यस्मानं विष्यसम्मानं विष्यसम्मानं	नपुंष (वैन्य्-प्रकास मित्रु हवे स्रीप		ब्द्राच्य <i>ं</i> इ <b>ब्रे</b> .
	विष्यर्थं 🛊	दस्त	
क्रमचा शास्त्रकार्य	ो विश्वतं कर्मति का समान्या पूर्वे	ीम (श्रणीय) क्लो म इरस्य दल छ अन्तर क्षाँदाचना भाँना	'तम्ब

प्राप्तन स्थामारमा तथर इरलानुं कोचक अलेउ छ गई विद्याद्वर त्योगी कॉली मृतदास्त आदि कालो ओई केर्रा. वोड-बोडिसक्त, बोडेसक्तं दोड्जीश, (शस्त्रवर्-बावनीयम्) बोडितस्य बोडेतस्य दोड्जिश्त (अस्पन कार्यक्र

साम-सारमध्यं, सायमध्यं सामधीयं, ) साम-सारतस्यं साधतस्य सामधितर्यः ( सान्धामचे सामीध शांश्यातकं क्राकिक्तं

भतिपमित विभयर्थ रुईतो

भोराजे (भोषञ्जू) भोगवन कायणी (कंत्रसा) कवा सावक लावक बाग शतक. बैसक्यं (ध्वीत्कान् ) छात्र करना

मोस्तर्क (मोसन्दर्भ ) मुक्ता सम्बद्ध रोस्टब्रं (रोदिन्न्यम् ) राग सम्बद् नहुर्ग्य (इस्नम्) रचना कानक

इंतर्थ (रमस्यः) रचनावाचक. जोवा जारफ मुख बाहुकाल इस्' प्रत्येत कारकाली पर्दुस्यक इन्स्स्य

रोबिस (शतकीम) स्रत शिविरी शतकीम) स्रत **रम**न्द्रसिदो (रक्ष्यान) रोबिरं बन्नर्याच्या ) दरन कानाई.

इसिरा } (रामग्रीना शम्मरी इसिर्गर मम ममिरा (जनवर्षाः ) मकरारो. इसिरं (इगनडीड्यू) इछनाई-ममिरा (भगवर्धाका) भग-भगिरी नारी

रोष रोधिरो (सन्दर्भः) स्तर ममिरं (प्रमन्द्रीका ) नम्द्रक र प्रतर्भ क्रप्रितराज्यात्रका प्रस्पियोज्याकार वैधिरोज

कामा समिते अप गरिवरो अर्थियः वर्गः वर्गः वर्गः वर्गः

९ कर्नस्वक कुरम्तो थिए संस्था उपत्थी एव बाव हे.

तेती. होतियां (शिरान्) वाचे :
-- एसरी अन्य गुरू शक्ते अन्यामा 'क्र होव मो तती हों हैं मुक्त हे तेता-क्रिका (शिराः क्षितिक्र (क्षित्र)) शिक्त हैं (स्वती) क्षित्रों (क्षेता) शिक्त हैं (स्वती)

tot **दर्**डा (स्था) जनका अनि मिसार्च (महन्म् ) तुम्बर्ध विस्टावपुं स्त्रानि बासर्थ-माधी सम्बं १ मुफ्को है (मुच्च ) छोबाव र तर दिश्य (शम्म्) श्रम शकेन्द्र श्याय क्यादाद रदर्ध (दश्यू ) क्यायर्ड-दिश्ते (राज् ) सरायतः खुक्हों } (६०—) तर्गा रुक्तो ) रहा । रह) रग र्जन्म विद्यक्त (रूप ) मार्चा क्या मार्च उर्द (पूर्वम् ) रीहरी कुर शम र रहेडा है (राय-) शहर **पिटल (श्रारं**ष्य्) वेश करेन निराष्ट्रो (ध्याप्रनः सार्वत वासीचा (बिक्स्स्तः) उप्तंपन पार्थ कार्या 47157 निमिधे (बारिन्ड्) स्वादन योसदा (रिचांता) (रहत वर्षेत € rrt सप्तका } (एए) नमर सर्का निष्कुद्धं (पर्यक्ष्यः) क्या वद्धः प्रथे कोर **भुक्ता (पुष्य) नुप्रया** परदूर (र नियु क्या प्यार सिल्पि (१०३०१३) म १ শুষা গণৰ सचिद्रं | सिविद्रं | (ध्यम्म) सम्ह पादको १ (बनामा) वर्षः प्रमाई । दूर वरेन पुर्व (स्थाप) गर्स बराग्य dif (will) he as for मुद्ध (गरान्) म १ हना TITLE sected 3 (sees) frac धर्मा थे (ला) देते. mm feelig miers mifen ft (mrer ) समित्र (अंध) अध

विज्ञान्त

मावि

चाराम पु(दम) सक

निशा वी. (मैदा) निवा.

बायह वी (मध्यति) भविष्यक्त

विकास पु (निकार) निकार की-

पश्चिमार प्र (ब्रिक्सर) कन्द्री

बत्धानः (स्लु) एवार्वकीयः

केनी प्रतिका

बस्तुने राज्यं, रोक्नी

माहोयचाकी (बाबोधन) पर<del>वादवा</del>ज त. (प्रता<del>दका</del>) बल्बकित माने दोवा व्यक्तेया देखाला स्टापन परिकास थ. (परीक्षण) वर्धक ब्याहि पु औ (माबि) सम्बन्धि पीक परिकास कि. (परिकास) परकार बस्मन नि (उत्भत्त) मत बोश परिच्यातः ) ६६ (परिचरः) षयाय प्र. (उपाव) उपाद. परिवास 🕹 स्वाद कराइ द कायाकी (सम) देह पस्त ५ (क्यू) पत्र किन्नरी हो. (सन) व्यक्तरवर्ग पाण पुन ६. (धन) इन्द्रिकरि THE REL **%मारसंघ**न (क्यातस्य) क्यात पाइक न (प्राप्त) सेर प्रवास-VΨ गम्म पु (गर्म) गर्म, पीकाी न्त्री (बीज) पीम चरम ) मि (छम) अन्तर पीक्स ( चरिम 🖁 पिससदी हो (प्रकार) मा वंश्वयनगर १ (सम) नाम छ. नः (शोरन) पुरस्तु काम प्र (काम) प्रकृत पोरिस र बीवस्रोग ए. (बीवलेक) वनिका सहावेची (सम ) परराची ATT. मुक्तरिय वि (संकार्वित्) बस्वस्थित व (स्थ्यस्थि) सुनिवा क्ष साम्बंध एम**भी हो (**ठम) तुंदर ही भववंत रि (मनद्) क्लाओ समा हि. (कान) सर्वत पायेले शाणि नि (शानिन्) हान्त्राओ BRIS.

तांचर

मापिगा । यं. (धारिम) सापिमा । धारिः

बावम ५ (सम) चमरा	साविमा । जा रा	
विपत्नाची (विकास) हारि	सिद्धि 👫 (गम) माव	
बार कुण्ड	सुद्द व (सुन्। स्पञ्च वस्ता	
र्मेदेग पुलम) नक्षी सम्ब	स्रोग ९ (शोक) शोक	
ঘষা	मुचित्रम ५ (नरेच-गुपेस) नन	
गनिष् (च्चे) शक्ति समस्य	नैद नारी निद्यालन	
सामासिक ग्रन्ता		
<b>महस्यासमा</b> (अवस्थाना)	मुबर्विया (दुर ⁽⁴⁶ रण) क्रम	
शंक्षाता वे कावात	হিশ	
कालयाम्य (काशला) का । सर्वे	निषयकुर्म जनहान) राज्य	
कीरत्यामय (संब) आस्तान	day wasted at wi	
(	•	
भाग	त्य	
त्र्व-त्र्चं (युव्य) विश्व विश्व करण		
धानुषी		
समित्रम् त्य) प्रान्त वार्ट	ru eg	
MILIA ( + + ) gad	att (aut) und abit att.	
لمت	सा(ग) सर्वक्रम क्रम्	
उदाह (१० १६) एक दर्	gert in in) 3,2	
साबह (१४ थ्) शर कार्र	बार्ड (११-१३) सम कर	

प्राह्नत वाक्यो

नामेणं वियमक्रका करणिक्यं पाणायमञ्चय वि डीवेर्डि अस रजिन्द्रं व कायमं, करजीभ ল্পে ভালঃ কাঠ কালন च करतंत्र मोत्तर्यः। धम्म कुषमाणस्स सङ्ख्या बंदि राईमा । बेज इसा पृद्ववी दिक्किय विकासो नरा नुष् पत्पूर्य परिकाल विश्वकाली होत्। पंगा जाया कीको पंगो मरि उत्त तह बबस्तेहा। क्यो समाधनारे, एवा विवय पावद सिक्ति ॥१॥ रामसप्पेय चारम्बनी दाया केम घरिका मरियातस्य का वि उवामी। सम्बे बीचा हीपित इच्छन्ति न मरिक्तप. तमो बीबान रिक्टर । 'परस्स पीडा न कायस्वा' रा क्षेत्र व काशियं तेल धिकाप विज्ञाप कि ?। मक्कन्वीदि श्रीपरपामधी

भारत के जिला है।

कार्य क पार्वेड ॥थ वं केण पासियम्बं सुदमसुदं का जीवकोपस्मि । तं पावित्रका नियमा परियासे नत्वि पयस्य ॥३।

तह य दश्जिपिको व

क्रमंतीय सोगोः वर्डस्टीय य बद्दए विता ≀ परिचीमाए दको सुबद्धिमा दुक्तियो निष्य स्था 🛊 विष क्षमा समन्यो धव

वंदो संभ गविषयादार। अंव्यस्वित्त्रो विस्तं × रिस तेस अ∸किमा पुर्वा 🖼 का संचीतीय तस्स प्राप्ती राहतं । धन्त्रायका सीक्ष्य वंदित्र

**अजसमोसमा दि**ग्णा । अस्य कप विश्वसदि ! सो चेत्र

बजो धत्रजो जामो ।९४

प्रमो करेशको । प्रतिचा विमक्तिने स्वाने क्याँ त्वाले क्रुटमी विमक्ति वन

विक्रिकानती य पूर्वी गुले

परिकार कोरूने अवस्थितक

निषयकुर्क, मगजिज्ञच धय सहेग्छ । षार्भ मणासोइऊज सायई सा महादेवी सराण रमणाहि परिवर्त्त सेण स्टब्सिकं। सहिद्रजेती किन्तरीहि गाइ वं त्रिजेटि पमात्तं तमव सुरुधं उन्नंती पुदेहिं युष्पंती रम पुढ़ी हम्स मणे निषयतं पंचया मिलेण य ममिनंदि रास्य स्टब्स् । उनेती गप्ममृष्यहर्। चोरो घणियो चय हरिनय बाध रमणीण रुव रमणिज्ञ परे परिनीय । चरितकण धार्मामा । सउद्र पण्यसे क्रिण मधिय गुरू तीमा म्य चिंता कर वि प विविद्या प्रवासकार्यस सिक्षेत्र पार्यकि 🕬 करित्त पच्छा य मायथ कुल्ला गार्वेटा सञ्जाय नावंता गुरचा धर्म्स कुषमाणार्थ साध्यानामामान्यं । मावगाज, भमायरंतीण व बाबना मधियस्य मणिया माविभाजं उत्तपसो विष्या ! बाह्यसमय समार ॥दा पिडणा सिक्तीममाणो प्रा

पुरसम आउ हैं पुरसम आउ हैं पर प्रसार कपा (पसाई) भारते साराम आप का का का का का प्रसार क्या (पसाई) भारते साराम और (पद)

1 t.

ध्यान प्राप निवास सीधा कोइ उपाय वर्गी अभिनादे सम्बं (श्राप्ता) वर्षि त्व तक्षम वर्नु (एक्सू) रामको न्यूनानी (बाबु) अर्थ

पहली

र्त अल्ब

प्तु (रह)-

क्य (बोधीय)

चाडुमार्था संदा बढे एका दिवसा

सामग्रेनी भाषि इत्यानो (इ.स्.)

शांसक्रीय (सुखू) देशस्य ৰাম্য অৰম (হাৰা) মনীন

योग गायमे शतकां वय अजिना मन्दु (कि.सू) मने तक्ये

-0 करण क्र

व स्थानितंत्र पत्त प्रमीन (पास्) स्वर्गमा वर क्लो. रोता (बस्) शक्तम है पीड লব্য ব্যৱস

बीमानो क्य करहो कर मान्स्

त पापाली अवस्थेलना केस

(गिवड्) ग्रदमी पाने वर्ण

नवर करचे (सक्**य**) महत्त्र-ध्यम प्रदेशन है.

(ब्रुच्यू) तरता पाने ड

म्द्रभ प्रशास्त्र सम्बद्धाः (गद्द~

गिवह्) प्रदेश कर, त्यन क्रमा बासका (बाय्) त्यम गर-

### św

### पाठ २१ मी

#### व्यवसान्त नाम

श्री प्राक्तमा अन्य अंत्ररोतो और बाव हे एवं बेटबाएक बाबोगों विकेश क्षेत्रमा अन्य अंत्रकातों कोए बाव के देवा स्था पूर्व बारोब अन्यपन-पुन्तपाल-पुन्तपाल पुर्वित्त अने गुरुवर्षित समिती गाएक जाती केता हाली ¹²(पाण्य) तमी (तमस्थ), बावल (बाह्यपुर) कम्मी (जमस्य) पणी (पणित्र), बावल (बाह्यपुर) कम्मी (बावस्य) पणी (पणित्र), बावस्य (बाह्यपुर) क्ष्मी (बावस्य)

५. ए' अन्यत्वक्कां नामों क्यों 'न्' अन्यत्वक्कां नामों प्रिक्तिमां कं पेपास कं पन दाम (दामत्) शिर (विद्युः) नद् (नमन्) करपोलों मनोग न्यंक्रक्रीनमां न वान के.

प० प•

करों (जर्म) वहस्वक अच्चों (अन्तर,) अस्म. ज्या (बक्म) वह सम्में (कर्म) हुएंगी सीम क्यां (क्येन) क्रेपणर सम्में (स्वेन) हुए वोमें (श्वन) हुए कर्मों (स्वाप) हुए क्य. हिर्र (शिट्य) आप्ते

रेपो (रुग्ण) त्या. | ब्र्सू (बगम) आवस्य विदेश--वर्धी इंडाल बर्गुससर्विममा यच प्रयोग देखाय है. रियो--

रेवे (भेक्त ) क्रम्बार. वर्ष (वर्म्) उमर

वर्ष (वर्म्) उमर सुमर्ग (पुमन्त्र) सार्व मन बदार विश रामं (सर्मन्) कन्यात्र नामं (नर्मन्) नामद्व

To To

वे बन्दोर्मा सरस्य व्यंत्रतयो स्रोप बतो वर्षी हमां बीचे प्रस्ये क्राक्टर बाय के— २ विद्यात सिरायस अवसान्त ब्रीकिंग सन्दोनो अन्तम कांक्रमी

'का के 'या' नाव के.

सरिमा-पा हो (स्थित्) नर्ध पाडिकमा-पा रे 🚅 (प्रतिवह् ) इच्छा पत्रको.

पश्चिमा-पा

<del>श्</del>रपमा∹पा विस्त

३ व्हेजनस्य क्रोसियस सम्बर्धाः तो पद्मा बाव स सम्बर्धाः

बान के मन बच्छारस कराय 'सु वो 'सा' विक्रो का के

सिराकी (बिर) वाची. विस्ताको (बिरा) विस्त पुरा (पुर) मन्ती

प्राप , (द्वा) क्या अस भ्रदा , (हर) सुब

करके पूजा भा चा बात के देशव ब्रायपुरूपका करन

'शरद' नने 'प्राप्तप' राष्ट्रमं क्या प्रस्कानने करान हे 4 4

र प् सरमो ५ (कर्ष्) करकड़ | माउसो-सं } उ व (वजुई) साझ-ई } कल्पा वजु मिसमी इ. (निवन) वैव पाउसो ५ (म्लुड्) वर्शक्त.

वावमा−या "(शल्रः)द्वच मलस्। ु (सम्बद्ध) अन्यी

, (विदुत्) नोबद्धः

'भू' से 'हा' दिल्ला 'श्रंत 'सा' ककुम्ल 'मृ'से 'हा'

क्षत्रज्ञा (क्कुन) दिवा

मच्छरसा } सी (मनस्प्) सम्बद्ध, । सच्छरा } स्वयोत निवेद-४ इस्त्र् अनि सन्तेमां सन्त व्यक्तिये 'स' वाव सः प्राप्त्य ^स

पूर्व कि समे बतुपूर्यस्य युवो क्विकिये बाव है-

मणुद्दे हैं द. (गतुष) कार्य-भवा है

९ पुर्विष्मणी क्षम् कन्तवाद्या जै नामो छ तम 'कान्' नो 'कार्या' विक्रमे बाव के अवारे 'कार्या' न बाव त्यारे 'स्' नो सोप बाव छ. तैवीं का प्रमान सेवार छन्दो बाय छ.

सद-मदाण ५ (क्षात्) पूस-पूताण ५ (प्रश्र) पूर्व सर्ग, सर्गा सप्र-मप्पाण ५ (स्थ्यत्) मह्म-सहस्राण ५ (स्थत्) सह्

मण-मणाज पु (भग्नत्) महय-महबाज पु (मरन्त्) भन्तः । १७४८ इस्ट-दस्याज पु. (इस्त्) सद-सदाज पु (म्पत्)

सम्बद्ध सार्थ

नुषम बद्धर

गाय-गायाचा ( (तार ) तार रेस्त होता ( तार ) तार रेस होता ( तार रेस

राधी 'आह्य-आराब आ को स्थासा करतीयक विशेषण छ. वे रीचे प्रमाण के प्रवास कर कराब आ प्रश्न कराम की शिवेष्ट्य करकार्य शाह बहुवीं कर्यों की कारीया एक्टकार्य हो प्रश्न को शूर्वकार एक्टकार्य हो प्रश्न हम्म श्रीवंचना

कारकामा श्रम अनुषी वचनों स्थे नहीं प्रश्नित एकावरणों को प्रश्न को तुर्वेकाग एकावरकों का अवस्, तेस्त्र हिन्दैस्स एकाव्या अर्थ स्वानी से वर्षामा बुद्धिकामा देखी हात्व काला अवस् वचारे स्वावस्थानं स्वान प्रश्नित वचुनों का वस्त्री हिक्कि निवास विवास समझ सामान्त्र पृथ्व हात्र स्वान

भारतका बन्दरस्या क्यांना रकाकामां वस का प्रावस्ती कृति के तर कोम से देवी कारणी आवणी राज्या कार्य स्व कुत्र है.

उपर्वा	निकादी का	प्रमाने प्रश्नको	तेकर वाम छ.
पद्भव	यदुव	वस	(व्यक्

च मा.	षो	वस्दा	वस्दानी
थी. इमे	चो	वस्थि	71
त या		वस्था	•
च छ. यो	इप्पे	श्रम्हणो	वस्टिपं
पे जो	•	वस्त्राची	•
ਚ •	•	•	•
सं•	•	•	•
धन् ।	रणसम्बद्धाः व्यसीम	। अञ्चलक्षेत्रमो	व्यक्तिक नाम
वर्शन देव	प्रमान		
	वस्य-वस्थायः	ग्रम्तं सपूर्व	कपो.
ų	राज्य		दुव
प वसदो ।	सम्दाची दग्दा	वस्तु व	महाजा बमहाजे
वी वर्मा व	म्बर्		महा वस्काले
वरिद्वय		वम्हापा	वस्द्राप्तो
त कम्हेब	<b>थं बस्हाले</b> चः-	ज वस्हेदि	fit'-fit
वस्तुजा		बम्हाये-	-fit* –fit

वस्तुल वस्तुली

दिन्तो-सुन्तो बम्देदि दिन्तो सुन्तो

वस्ताजाच, वस्ताजाचं, वस्तिचं

वम्बलो बम्बाबो-व-बि.

बम्बाजची बम्बाजाबी-ब-दि-दिन्ती-सुन्ती, बम्बाचेदि-दिन्ती-सुन्ती-

व बम्हाय बम्हस्स

वस्तुजो पं वस्तुको वस्तुको-उ-द्वि-

बम्हाभाग बम्हाबस्स

दिन्ती बन्दा. बन्दाची

बम्हायस्त्रे, बम्हाबाधी-य-द्वि-विस्त्रो बम्हाचा

बस्हाण बस्हाण बस्हिलं

बस्हायाण बस्हायाय

बम्हाणेस बम्हानस

वस्हेम बस्हेमं

छ. शम्हस्स, वम्ह्रको धमहाणस्स स काहे काहरिय

चम्बाचा

मायक जानको,

पी. अक अकार्य

अस्तिकं

account.

म अल्यस-सं

पम्हाणं यम्हालस्मि.

से देपन्द्र सन्द्रो सन्द्रा हे बन्द्रा सन्द्राणा

दे यम्हाण बम्हाणी वम्हाजा

क्या प्रमाण गर्दे अन् एत्रशास बजानी स्था बागरी पत्र केन्छ कारण म राख धरानां न्योगां विस्थान छ.

झप्प प्रश्ते नृतीयना एकावनमा लिखा-वाइसा' ए के

धन्तायाच-के धन्तवा

प्रत्यका वर्षारे समाहरामा भाषे छ तथी शु प वयनमा भणाविद्या भागवाचा ए हे स्थे वर्णा जलहा, शहीन माप्य ने माध्याच्य शायानी नया धाट कर बाहाया शायती

भाग-भागाय (भागमा) राजनां संगो. क्ष्मण क्ष्मणाला क्ष्मणाली प भाषा भाषाची, भाषा

> क्षणे क्रमा, सन्याज क्षणाचा सम्माणा भाषदि दि*-दि

मणामहि हि"-हि

भाषाय सलाचे अपापाय मध्यायाचे.

सप्यक्तिका सप्यक्तमा धानाचाय भ्राचास्य

प धन्याय धन्यस्य

द-दि-दिग्<del>दो सुग्दो</del> श्रप्याचेत्रि-क्रिको-सन्तो ध- भणस्य अध्याच अध्याचे श्रणाचाच श्रणाचार्ष भप्पायस्ध सप्पन्नो. मधिपा स अप्ये अप्यक्ति बर्गस्, अप्पस् मप्पाचं भप्पाचिम भप्पाचेस, भप्पापेस

स देशय मधी सया

हे बप्पापा

हे बप्पाय सप्पायो

हिन्तो अध्या अन्यायो हिन्दो-सन्ता मप्पायत्ती, मप्पायामी मप्पेड्-डिस्ती-सुन्ती, द-हि-हिन्तो मणाणा अणाणको अणाणामी-

८ राय (राजन्) रूपना भर्गामा विश्वन्त का क्रमाने क (१) च्यो च्या, स्मि, जा इब प्रश्वना ब्रावाटी पूर्वना दा वी निक्ये इंशन क सहजो साक्षा सहिम 'इ' ^ह नान नारे- रायजो रायका रायक्रिय

मप्पा

अप्पापा

मध्याचा

(१) डिगोन्समा एकनकमा सने वस्टीमा स्टूबबनमी प्रन्य नदिन 'राय' करना 'श्व' वा 'पूर्व करेस निपने योग स.

थी. ६ सार्थ करा रावे

थ. व. शहर्ष करत रावाचे

## १८३

 (३) तृतीया (चमी ने वर्षान्य एक्सबनमां 'लाल्बो' मार्थनी पूर्व राष्ट्र प्रचला 'साय' मो 'साल्व' निकस्य वान छ.

त. ए रुप्या स्वता राह्या, रायया पं ए. रुप्यो स्वता राह्यो, रायायो

पं ए. रच्छी अवस राष्ट्रणी, रामाको ए. ए. रच्छी अवस राष्ट्रणी रामणी

(s) तृष्टेंचा चतुर्थी पंचनी पण्डी अने सातीया स्कुरचनती प्रत्वशानी पूर्व राष्ट्र साम्बर्ग थे ने निकरण सैच पूर्व

वाव छे. त. व. साहेडि अववा सामाहि

त. व. राहाइ अवश रायाइ ए व } राहेंचं अवश राहचं रायाज

ए व ) राहण स्वयं राहण रायाण प. व राहिंसी राहिंसुन्ती स्वतं रायासी

रापासुम्ता न. व साम्स मचना रायमुं

न. व टाइसु मवन रायमुं राव-रायाच राजनां रूपो.

पद्मव

रापा रायाच्या राया राया रायाणा नाइको रायाणा
 रापं रायाणं रापः राया रायाण रायाणा

ि सर्व रावार्ण राष, रावा रावाज रावाजा रार्ज राहणा रावाणा व रावज-व्यं रावाज्ञंच-क रावद्गि-द्वि-द्वि

ै राज्य-संशायांका-च रापदि-दिँ-दि रुच्या शहरा शयजा रायाचेटि-दिँ-दि रादि रादिः सदि

 रावाय रायस्म रायान-नं रायावाय रावायाम रायानाय-नं रचन, रावन रायणे रास्ये राचि-नं,

र्व्य
पं∗ रायचो रायामो स्वयत्तो रायामो-इ-दि-
द−दि-दिस्तो राया दिस्तो-सुस्तो
रायांचलो रायांचाओं रापदि-दिग्तो सुग्तो
इ-दि-दिन्तो रायाचा रायाचनो, रावाजामी-इ-दि-
रक्यो राह्यो रायाची हिस्ता-सन्तो
रायानेहि-हिन्हो <del>-सन्</del> हो
∗राइचो रा <b></b> ‡मो∹ड∽
द्विन्दो-सन्तो
<ul> <li>रायस्स रायाजस्य, रायाज गयाने</li> </ul>
रच्यो राह्यो शयको रामाभाग-वं
राह्य राह्य-ज
च राष, रायम्मि रायसु रायसु
राषाचे, रायाचिम - रामाणेसु सुं
राहरिय राहिस-प्र
[रायसि राषाचंसि]
पं देशप्रायो रामान् देशना राधान्यः
रायाणो शवा [राय] राष्ट्रणो रायाणो
नपुंसक्तिंग
अन् इस्ताओं नामोर्ग न्तुनक्तिकार्ग क्यों 'बर्च्य' जेना नान है
स्पे में बामों विशेषक के देनां पूर्णीयाची मांग्रेशने वर्षी पुर्वित केर्यी साम के
सम्म (शमेद)
९.श. समा समाई समाहि
वेच असो 'बाच प्रसाने,
प थी. बाम वामाई, वामाई बामाणि
केच समी 'खर्चा' प्रमान
द्वमो मिनम ११ मध्य दिप्पण,

### सुकम्म सुकम्माण (सुकर्मेन्)

प ये सुकर्म सङ्ग्रमाथ

सुकामाइ सुकामाई मुकामाणि, स्क्रमाणाः स्क्रमाणाः <del>स्</del>रक्रमावाचि

अभीनां स्यो 'सम्ह, सम्हाल' प्रमाने

९ मत् यत् समे सत् सन्तरस्य बध्योता स्यो अल्ब 'सत्' गो सेंद्र' करावी अक्रमन्त्र मध्यान्य बवाज बाव क

सिरिमंतो (धीयान्) वस्तीवास्य कियाते (विधान्) बेटबो सिंपस्मतो (मविष्मन्) वन्ते सर्रिसंतो (स्थान्) वरितंत

मगर्वतो (मतान्) पूजः | द्विस्मिता (ईम्प्रत्) तरकान्धे भववतो (क्यान्) फलाद्धं मर्वतो (मतान्) शार

न्धरीयां प्राप्तत प्रवस्ताना एक्टब्स्ममां संघर्ष (स्थान) सामि (मिनियन्) चपार्च (धनवान्) सिरिमं (धीमान्) वरिद्धं (र्थ्वान्) सपस (मंबसन्द्) इरबादि प्रयोग क्य वकान छ.

^{प व} मगर्थतो (मयस्त) भयन्तो (मबन्तः)-र पंगवया-ता (मनाक) भवया-ता (मनाक).

ए मगबमो-तो (मनतः). मबमो-तो (मरत).

का प्रमाने संख्या उपायी शिष्ट प्रचोग पत्र कार्यमं देखान के सुधन्त्रसम्बद्धाः

 इस (बद्धास) व्यक्ति सम्मोता स्थो का अञ्चलक सुद्रीता र्कत अ बाव के केम-जस्तो (वटा) तमा (तमा), नई (बम ). अस (यशस)

प जन्मे बस्य

कसे कसा

	•	
त. इसेच-धं	असेहि-हि	
	वाकीनो स्पा विश्व अस्त	B.
	सुत्रसम् (सुपराम)	)
^व सुत्रसो	सुप्तसा-	
भी सुप्रमं	सुत्रसे स	(बसा
र सुत्रसेज-प	सबसेदि-	-ft*-ft
•	मर्भार्चस्यो दिव अस	
सापमां बदरातां साग्त श्राप्तानां तमत्र		
	बीजो विशेष क्यो	
	त् प	<del>5-€</del> .
इस्स्≉ार	जससा (वर्णना)	बससो (क्प्रनः)
सप्य सम	भणसा (मन्त्रा)	मजसो (मन्दः)
<b>व</b> ्यक्त	बमसा (वष्टा)	ययसा (रक्ट)
सिर=म्ल	सिरमा (हिरना)	सिरस्रो (किटः)
तेय=रम	तेयमा (वेदमा)	हेवसो (दम्पः)
सप=ा	तथसा (कच)	तबसो (वरूः)
हम-धरकार, रा	ठमखा (तमना)	तमसा (वमच )
था स्तु≃गत	चक्सुसा (बहुका)	चस्तुसो (नहर)
काय-देव	कायसा (शब्द)	कापसा (शक्त)
<b>स्रो</b> ग=मात्र	बोमसा (बोगन)	₩. ₵.
6.8.±40	<b>बळसा (क्लेन)</b>	मणसि (मार्च)
भू <del>कात्≖को वि</del> व	- कम्मुण (क्सत्रा)	
श्वसम=चर्म.	धम्मुका (वर्षेव)	
थ्य प्रमाण स्थित प्रकोशो एन सर्वे प्राप्तानो देवाण के		
केमक समस्य गरिमा वि स्टो विद्धर्य कि विशुच्यार [∞] क		
वडे प्रकृत करानेको सूर्व एक छूं पराक्रमने स्वाय करे छ है		

रेक्कमां ने सक्षा वत्-मत् मरावे आहे ७ तंत्र कर्षमा प्राइ-क्या सालु इस्ट उस्ट सास वस्त प्रस्त इक्त इस को सालु इस्ट उस्ट सास वस्त प्रस्त इक्त इस

नेहो सस्स सरिय ति नेहात् (स्थेतन्) वहा सस्स मरिय ति तहास्रो (उटनत्)

**q** 

सालु-विद्वास् (र्रव्यन्तः) ग्लेप्स्ये. त्यास् (रव्यन्तः) रवावस्यो देसास् (र्य्यन्तः) रर्तस्यः रस्य-कारस्यो (य्यन्तन्तः) स्वावन्ये सोद्विस्सो (योगन्तन्तः) योगस्यवे वस्स-विवादस्यो (विश्वन्तः) विद्यनस्य

र्मसुख्ते (समुशन्) राजैनका बाख-सङ्ख्ते (क्यनन्) क्यनका सङ्ख्ते (स्यनन्) स्टनको

रसाको (राजाम्) रशनको यन्त-धाययन्तो (पन्नार) पन्नको प्रशिक्षन्तो (गन्धिमः) गणितको

सम्बन्ध्यामस्यो (श्वमानः) श्वमानः श्विरितमस्यो (भीमानः) श्रीमानः वश्मीतस्योः श्वतो-कारवृत्त्यो (कारमानः) नश्मनस्यो

हर-गव्यितो (क्लान) पर्नेवस्रो सथ-धणमणी (क्लान) फलाको १९ असमा 'स-इमा-सज' ए म्लाने क्रमे क्रे. पीचर्स पीनिमा पीचराजे (पीरले) उपल्डे-पुज्यस पुज्यसम् पुज्यस्थ (पुज्यसे) पुज्यस्थ-११ मक्ष-(भोक) पुज्यस्य पुज्यस्थ प्रकार स्थे है-

: सक्-(बन्न) ए जनेता इच्छ-डच्छ प्रस्ता नाव इस्छ-गामिस्स्मे (ग्रमे गनः) पत्रमा उराज ववेत. , पुरिस्सा (पुरे मनाः) नजसा उराज ववेता उच्छ-अप्पुरस्तं (स्क्रमनि भन्न) जलगर्गा ववेत.

१४ स्वार्वमी-'इस्ल-उद्ध्य-क्ष' ए प्रथ प्रक्रवी अभे के

इस्स-परस्तिको (जन्मक) शेर्यु इस्स-पिरम्मो (शिक्षः) शेर्य राज-पिरम्मो (शिक्षः) शेर्यु स-बान्भो (शिक्षः) श्रूषो सुद्धिसमे (इधिकः) श्रूषो सुद्धे (बुच्यु) स्तु ११ सुद्धे (बुच्यु) स्तु

सपदं प्रत्यका महीना प्रह्म प्रत्य विकरो कारे छै-सङ्क्ष्य (स्वात्रम्) सङ्क्ष्या वैदा विद्यासम्मी (विद्याव) विद्यासम् विद्यासमी (विद्याव) विद्यास

नाणमङ्गो } (इल्सनः) इत सक्य

१६ किनु एसे मन स्वयस्तान वर्ष स्थानेन दिख (रच-वर्ष) मध्यन समे के था मसन स्थान्त पूर्विय था यो भा पान के देमत दम में पान के छा (कि.स.) तो के समा के स्वतिकार (स्थान) केने पानिकार देखने करते के विकास के प्रतिकार करते करते.

बारिसो (बारकः) केना परिसो (रिका) नाम जान केरो-सारिसो (बारकः) केना केरो केरिसो (बीरकः) केरो केना केरो-न्यारिसो (कारकः) कना केरो कारहारिसो (कमारकः) कारा जेरो-

```
हुम्बारिको (पुण्यक) क्ष्मण सम्मारिको (भ्रवारण) बौगा
स्रोते -
सर्वेत व्यक्तिमा (व्यक्त) प्रपादिको (प्रवारक)
व्यक्ति ।
स्रोते (भ्रवा) - स्मेरिको } (रूप)
```

मनियमित उपयोगी तदित राम्हो तुम्बकेचे (पप्पतीत) स्वरो

व्यव्यक्रिये (अन्तरीय) काल्ये पारकेरं पारककं परककं

रायकेरं } (राजकेस्) राजन तुम्लेक्ययं (बोधान्यः) तमार्थ सम्लेक्ययं (सम्लोगः) समार सम्लेक्यां (सम्लोगः) समार सम्लेक्यां (सम्लोगः) समार सम्लेक्यां (सम्लोगे) सान्त्रः

त्रिलियं बेलियं बेलियं, त्रेष्ट्रं (शक्र) केट्रं, त्रिलियं त्रिलयं तेलियं, त्रेष्ट्रं (कर्ग) तेल्रं, इलियं यश्चियं यश्चितं, त्रुष्टं (१०क्रम) एव्हं यश्चियं यश्चियं यश्चं (१०म) एव्हं देलियं बेलियं, केष्ट्रं (१०मा) वेल्रं,

क्षप्रकर्त (महरूप) कर्म हेन.

```
नवस्त्रो } (श्वरः) को.
नवो
पक्रको
पर्यो
प्रको
पनकसि
पतकसिमं
पनकर्या
अवरिक्ष्यो (अपी) उपद्य गस
सुमया } (भ्) असर, अब्रही सर्वा.
मीमाविक्री
सीर्थ (मिल्का) मिल मेर्गु
 विन्तुसा } (मपुर) बीनझे
विभ्य
पत्तसः } (पत्रम्) रत्र प्रेरहं वर्षे
पीक्सं }
पीक्सं } (पीत्रम्) पीक्कं
गीर्ण
शंधमो } (क्रपड.) शंबरो
```

कंपरों } (कापर.) शास्त्रा १ कपित्रसम्बद्ध (सर) धने अञ्चलपंक 'पत्न' (सम) प्रथम गर्मने मनाम के स्व स्थित को ग्रे. तेथे कंपित काम का तो है करती तम के भय-धम्मयरो (यन्त्रन्तः) अवित्र प्रतीमापात्र घन्नयमो (यम्बन्धः) धर्वाधिक प्रदेखरात्र

कड्-बहुयर् (बच्छम्) अधिक बुच आपसके. कड्रपर्स (कप्टलस्स ) तर्ववी अधिक इन्त सरस्यक

सदु-सदुयरो (नपुन्छ) अभिक नानो. सद्भयमो (बबुधमः) धर्वश्री शर्ना

उष-उच्छयरो (उबक्र ) अधिक दंबा

उच्चयमी (उक्तमः) स्वर्ग उनो

कोकिका-धन्त्रपरी कृष्ट्यमी सङ्घरी उच्चयमी नगेरे सन थे. कोई ठकान क्रांकिंगमां क्या जल्लक एन आने छे. धानवता बच्चपमा गोरे.

बेद्य प्राकृतमां वपराता उपयोगी छन्दो

गाजो (हो) वेद दूपम +गाची (जे) वद-

**बहरूरा (कार्क्ड ) नेन-का**र माक (मार) वन

विज्ञासको (मन्त्रक) लाव. बोसिरगं (भुत्सकंग्र्) त्यान

भीम भार षरधार (राविन्) कवा. मम्बद्धाः (उदयक्ति) त ५०० **≠₹ ≥** 

पश्चिम (विदेश) मैनून क्या-

किछि } (दिन्दिक) विकास चिरत्यु (विषत्तु) विवत् हो.

 से प्रध्नम्य सीकिंग भीग्रे धारी आहे, योभी थउ साथ के क्की-क्र्य क्रमें पोनीमां रूपो रहती अनाम केमम 'शब' मां क्रमो "रीवा" प्रमाने वमत्रवी

कक्षासुर्वी (तज्यावर्ते) तज्यावर्ते,

मद्रोची (मन्तर्) हत

गोबादिका

भ गोवस्मि

स्विक्को (सम्री) सम्री असम्बद्धाः (अस्त) सन्त

सासीचा (अपरे) अवीयां पक्कों (पक्क) समर्थे सुद्दर्भ (कार) च्यु मेंड्र सुद्दर्भ (कार) च्यु मेंड्र सुद्दर्भ (कार) अच्यान प्रदेश सार्वे (अपरे) अच्यान प्रकार प्रदेश मार्वे (मीपा) गोबाब. प गोबा योवा से गोबाम प्रवाद से से तोवस्स गोबादि गोबादि गोबादि पंरावस्स प्रवाद

सं हे गोवा! है गोवा!

भागाणी-व्यक्षपु नारे देवें ईक्टलन-द्रक्कल बनोने क्यें
हमेगा तर राज कर इस इक्टलन-द्रकलल दुव्या केर्र व पानक हमें नात केर्न कर इस इक्टलन-द्रकलल दुव्या केर्र व पानकों गामकों गामकों सामी पानकों सामकों पानकों पानकों पानकों पानकों सामकों पानकों पानकों पानकों सामकों

क्रिन्तो-सन्तो

गोकास गोकास

थं. हे गामकि गामकड गामकडो गामकियो गामकी थे हे लक्ष्य बक्रपयी बक्रपड बक्रपमी बक्रपुणी बक्रपु क्षेप क्यों मुणि साह प्रमाणे गमो

अभाजान (सम) आरोत्स, वाला. विमिन्न वि (अभिभूत) परा-

भग्न पराजितः जनस्था न. (अपता) प्रत वासिक प्र (बादिन) बासी

DW क्रिया प्र. (क्रम) राज्य

चवछ वि (चएड) चंत्रक जरिवर चतारि हि ६. (क्सारि) चा क्य रेड. (जनग्र) बनत प्रनिया क्या रेडार

विदेशिय दि. (क्रिडेन्ट्रेन) जन प्रतिप्रधा जीवारी के एँ.

तथ की (रुन) सरीर चार पुरूष (लम) की मदिका दीवासक न (धैक्ल) परीकाई

रक्षाहर्सात्तं (उत्सहरूकिम्) शासाब असे समित्रे. कसपरीकामो (सक्त्रीक्ष्य ) क सद्धराहराचे (बद्धर्मदिमंदे)

शक्कापु (व) नाक वाधिका निज्ञारा को. (निर्जय) कांत्रक

निष्टय वि (निर्देश) दक्षमंद्रितः निष्य प्र (निष्य) क्यांगीता परिकाको (परिका) कह

प्राचार प्र (अपन) अपन. सम रे कि (मून) सरी क्वड भ्रम∫ अगस्य न (सम) शक्त धम मेक्स ग. (स्म) नीसत्वतः, कसरारः, संपत्ति भी. (सम) संपत मि (सम्म)सम्म वारीक.

संबंध सीया की (रीज) रमको प्रशी देस र (देसन्) प्रवर्ष कान सामासिक शको नियववसायाग्रकतं (निकासता-

महानम्म) गोरामा स्वतासम्बद्धाः AUTOR निमसीसम्बद्धेज (मनसीकाकेन) पोताना श्रीचळना सक्सी.

भाष्यप नाप } (नार) शर दर्ग ना থানুদা मध्र (सम लाद शर्प तेंद्**र** ( ** **

विषय रे शुप्त (मूचर) स् न बर्गाः **1-17** 1 ~ थाराय-वे ५ र (मान) दिन्दाह र रणा सन्दर्भ ।... mich er eit ब्राप्ट बाक्या ह

साद (रापन न्यू व पू बन्धे

क्रिक्ट**र्** (ि 11 र ) रण

रेडिरोर्ड प्रदिक्त विभिन्नदावीर विश्वास्त्रमा वदान हेरे। ब्रह्मसून र्शामा अन्याचे साप्*रती*न विश्वनीसकाच प्र^{क्र}ी प्रत्येदया ।

सुरका आरोजा राज आराज्य कराह स पंचार्तन । बराच गुरे वा पूरे वा का पूजर है आगव विवय कवार बाजी ताबाहिक दरिकार रे । कर र गुरूर भगाच्या निक्ति इच्छाद ना निक्योंनि क्रिकेणी अन्तरह ३

का कारण समिनका श्रीवे हरेरा मा दूर कान्ने ब्राप्टिय व क्रांक्षे वि बानुना बदार दार् । बन्दरना अपने बरादीय निदानारम रूपना बन्दर्य होत्या । अरिहेमा बागा पुरस्ता अरिहेन सरम् यहामाहि।

**ल्युके अपन्यागाल अपने रिल्ल ।** farred married diely state of married in रिणा य मजारो बाहियो हरन्ति ।
सरप हर्योगे पराच बनने अच्छरताउ व्ह गाणं कुपन्ति
मध्यति या।
मुजमा पाइसे पगाप सम्ह्रीय विद्वति ।
जब ह्यासपो स्वा पहुमा न ह्यन्ति ।
किसीमा सिरिमला कोगा पायेग गरियर निह्या य मंति ।
विज्ञान के को द्ययरेह को प्रमायंत्रो क्रोणक्या ।
गामिस्ताओं स्वार न रोपनि ।
सुरिष्ठा सागा तलाणं गाणे जुससा मंति ।
सुरिष्ठा सागा तलाणं गाणे जुससा मंति ।

उत्स्वा क्षामा तत्ताम भाव दुस्सा भाव । इदिमयत नरेमु सा दये कुउता । पवर्षताचे वि कच्छी वाउनाम्य विउत्तय वयसा भावस्या । एमे भावने विस्तारय सरिव तत्ता मा लाव्ह । राषकं दर्व प्रयाप दिभाव द्वीरमध्य ।

जीवालं करावयं नातं इंगलं वरित व सिप सार्व नायम लिप्यं तातो तालि विध्य संविष्टकार । वे निराययं गाविवादं वृत्तंति नातं चिरायः । गायीलं तुन्तं वाल्यालं नाइतंति ताला ययिन । मं परिकृषि इन्हेर्नेद्व स्वर्ण निराय सार् पण्णियागः । प्रकारतं निराय समायालि निराय व सिर्मः।

नं परिसेटि इस्मीर्ट सप्यं निरय मार पश्चिमपा । उज्जानां तिराय समयमित दिवय व विशे । पापा सन्त्रसो दिशे पि म विस्तित न सुवस्ति य । सा सीमयेती निर्देशिया य द्वार सम्म नामी समा य विशे य पहराते !

नहस्म सोटा बेरी सरावार सरस्य व तवसी वयसमी व मुहस्म य चन्यू नदा छ । राह्या बुर्श-वयर्ष ! किसार सम क्यापि न बहिस्सं ! क्यास्म हय सरसर वाबीयुं जा पासर म व्यवय पासेर । जीवार्थ क्षत्रीयार्थ य सन्दे सरक्ष जिलिएं ज्ञारिस ख जिलि ब्स्स पवपणे मित्र तेसिक्षं तारितं च सकतं व समह देसके हैं वर्ण मित्रितत्ते, कालेख च पाइ होर संपत्ती । मीवाग मदार्ख पुत्र कको दीहिंस नीसारे मरेश पायेसु घरनोत्तु च निवस उट्याहनानिसमुवन्तो । पायेदु परमोत्तु च निवस्तवासानुग्यतं नु स्था दार्च च पित्राहेता सममाजा महत्ताई चलारि । गुरु सर्पाने तह यहुद सहस्ताहब समर्थ स्था

गुजराती यात्रयो इनम्मा बास्य (ग्रांबा) करेने (गायी) वर्षे ए.

नाग पश्चास मीरी (सुक्कस्म) ग्रन प्रश्नो करीने बाग्यवसी तुनी बाव है इ.सनान कार (साम्यस्त-स्मयस्त) का कन्नत्र सन्तरमधी

स्थान देश पुरीभीने उद्गर करा कत्रमार्थ सम्बद्ध राज परसन राज (राष्) । कुचीन स्वामी पन नाम (परिद्वा) की,

क्या है। (गाय) हाको बाल कर ता का सावता बडरीने (उच्छान बारस्त) कर न कीरे छ.

कणाता सम्प्रतामा (त्रज्ञ) चतु (श्रज्जु) वहे जोतने समर्थ वर्गवरी

माना माना समामा कुत्राची (पाडिकपा) कार्वित पु^{र्}ता मुरी माना करेल

र्रवाज प्रमान पंताना (साम्य) तम वर्ष महि देवान प्राप्त हा

मी कर रा प्राप्त करनावी बरीरत करे हर.

क्या वर वर पुरत अनुध्ये (भाउ आउता) अवस्थे (सीप) क्या (पन्त्रम्) क्या वर्ग प्रमास सरका (तुम्दारिस) स्पेहणका (नेदासु) प्रस्तोए समास नरका (क्षम्द्रारिस) स्पेत असर प्रीत करने बोरए.

र्के स्त्रो दोनेंक्टोना जन्म (ब्रह्मा) बबादे संव पर्वत क्रमर दोनेंक्टोने नर्वे बर्वे जन्म महोस्तव करे के नाक्यप संपत्ति (सीपारा) मां वर्षवण (मस्तिर) न वर्ष करे

युष्डमां (बार्चमा) ग्रंहालुनहि-नीव पोक्रमा अ (अक्टपाळ) कर्म वहेशुक्त सने दुव्य पाने के वीत्रों आपे के के किक्स के.

उदमाना अध्यक्षियों (आस्टीस्ता) बड़े कम्मान व याव ह देवी देमाची माझानुं उच्चेवन करनु नहीं, देमाची साझानुं उच्चेवन करनु नहीं, देमाची (साब) बड़े क्योंनी निर्मण बाव के सने कोच बड़े क्यों

र्ववान छ. योक मन्द्रेश पूर्वाचना द्वान छे, यम अंशानानाझ्य (साधारवेत) छेत व पंत्रित च्योनान छे.

र्नेड्डए राजाने (राघ) क्रमा के हुं राज्यनो स्थाग कर, सन्ते नर्दिसा उनान रहे

सारी ऐसे पालन कराई राज्य राजाने (राय) गर्ड कन अने कीर्ति जाने हे. फारनामां (बाह्यकार्य) धरीसी मुन्यस्य (संवरतामां) गांच पाने हे.

स्दर्भामां (बुद्दश्यम्) प्रशैर्मा गुन्यम्य (सुंदर्श्यम्) गाप पासे है. गारकार्य (पारहेर) इत्य ग्रांकटीने स्वरमानगर्ध (सद्द्रम्) सन दश्याह गाव है. (दयानु)

वर्दे एडिवर्यता क्वेरिम्लक्ष्य गाएं

## पार ९२ मो मर्स्ड भेद

। नानुभोन्य एक क्यो मुद्ध बातुने का या, साथ साथे पै प्रश्ना रामार्थी क्षेत्र विकार सरी तारी सम्बन्धा पुरस्कोतक प्रश्नाक सन्द्रशासी बाद हर

९. चेन्द्रमो उपल्पत "झा" हाव दो स के स" प्रस्तव हस्पा^{हती} "स्त का "सा" मान क सेनाड़—

हम्भ्य-हास्य प्रमास्य हम्भ्यः हे हुन्ते हे. हम्भ्यः हम्भयः हम्भ्यः हम्भ्यः हम्भ्यः हम्भयः हम्भ्यः हम्भयः हम्यः हम्भयः हम्यः हम्भयः हम्भयः हम्भयः हम्भयः हम्भयः हम्भयः हम्भयः हम्भयः हम्भयः

मुख्यानुभावतं उत्तरम्य १ के श्विद्धांच तो प्राप्त दिंगी पर भने श्वित को प्रतुत्वाच है जैसार-

1

रिष्क्ष रय रेयर हुनुश्चन्तोस-नीमा पुर्क्षकोड-बाहर हुद्श्म नोड-नोडर

 सा प्राप्ता आहि हर तुत्र होते हो देवे वत्रमा प्राप्ती त्वा अपि प्रवत्न पत्र तहा य आस्प्रि-नासि

. साथ -मादे सन्दर्भ कर हते 'ल' । सा वर्ग देखने यात्र प्रसाद--'कारावा 'कारावेष्ट

भाग चप्पते केन्द्र अंत प्रांताह का विकले वान के

१९९ भेरक संग

मृख चातु

पारे-सार्गन

पर्~पाड	पाडे,	पदाप	पश्चामे		
बर्-सार,	कारे,	कराष	करात्रे		
दम्—दास	दासे	इसव	दसावे		
माण्∽प्राप	ज्ञाणे	नापाम	ज्ञापाये	शायवि	
बोस्प्र-बोहर	बोस्से		बोध्यां	योस्मवि	
सम्—साम	मामे	समाप	ममावे	समाड	
मे—मध्य,	भिष्य,	मभाय	मेशाचे	नभवि	
दो-दाम	<b>श</b> ोज	दामाध	दाशके	द्रोधपि	
पुष - पोद	चाडे	पोद्याप	बाहार्य,	योद्धपि	
का प्रसाव	पानुभानु	बेरक अय	तवार क्यों ठने	ণ শ <b>ক</b> হৰা	
पुरस्याक एत्वको कचारी पानी साधक बदा गायी केरी.					
कार-कार, कारे, कराय करावि अंतर्ग करो					
धनमानकास्ट-					
चक्रम	<b>াশ</b>		वरूपवन		
7.5					
कार-कारमि	कार्ताम		हमा, कार्यमा		
कारोस			रिमा, कारैमा		
कारे-कारमि			रमा		
कराप~करावसि			करायमा करायामी,		
	मे, परा	मि 🔻	राषिमा, बना	मो	
करावे-करावे	मि	45	त्रीमी (र म	च सु∹म	
vi. 3		\$7	रक्त स्मरतः)		
याः तु स्रार-स्रातिस	-36		ारक कारेक		
च्यार ज्यारास	-1411				

- कारद ----- कराव-करावसि करावेसि करावे-करावेसि

कार-

(ए प्रमाने की पर कक्त)

र्थन्तर } कारीक्ष, वर्वरक } करावीम करावद करावेद

कारित्या, कारेहत्याः

करावेड

कारे−	कारेत्रत्या	
%राष−	करावित्या, करावेशत्या	
करावे-	करावेदस्या	
ती पु		
कार-कारह कारेह	कारन्ति कारेन्ति	
कारे-कारे <u>र</u>	कारेस्ति	
कराव-करावा, करावेर	करावस्ति करावेस्ति	
करावे-करावेड	करावेस्ति (ए प्रमा ^{के स} ते	
(⊽ बर्मार्च 'प्र' अल्बन्दर्य)	प्रस्तकर्ताः)	
<b>%</b> T₹-	कारिते कारेतरे	
कारे-	कार्याटे	
ক্ষত্ৰ-	कराविरे, करावेरटे	
करावे-	कराबेहरे.	
_		
स्क∹रहा वाने त्यारे		
सर्वपुरतः } कारोजज सर्वपुरतः } करावेजज	कारेज्ञा	
नदेशका ∫ ऋरावेशज्ञ	करावेरमा	

मार्गम-मुरस्यम्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य प्रश्नेत्रः रेवाल छ. जेम-वीकरंगी छर्मम् यन्यस्य संग्ने यद्धं बहुं लवतं प्रश्नेत्रः वेत रच्यावेदी (शार्वावत्) वल कच्च २ स्ट ३२

```
कर्बमी---
 र्कंव
कार-कारित्या कारिसु
करिंदुः
कराय-करावित्या कराविसु
करावे-करावित्या कराविसु
 विष्यर्थ-भाषाचं
 पद्मचन
 बदयंदन
¥ 9
कार-कारमु कारामु
 कारसे कारासे
 कारिम कारेम
 कारियो कारेयो
कारे-कारेम
 कारेमो
कराव-करापमु करायामु करायमो करावामो,
 करायिम करावेम करायिमा करावेमी
करावे-करावेम
 करावेमी
 ची प्र
कार-कारदि कारेडि
 कारट कारेड
 कारसु कारेसु
 पारिस्तमु कारेस्ट्रम
 कारिस्मद्धि कारेस्मिट
 कारिको कारको, कार, कारे.
व्यर्गम-[कारिस्कांस कारेस्कांस [कारिस्काह
 कारिकामि बारेकामि
 कारण्याही
 कारिकादि कारेकादि
 षागढि]
 चारे-कारदि कारम्
 कारेट
 कराय-करायदि करावेदि
 करावमु करावेमु
 कराबित्रम् कराबेरम्
```

कराविकारि करावेकारि करावित्रतं करावित्रते कराय करावे

वर्णभा-किराबिस्डिम कराबेस्क्रिस

कराविकासि करावेकासि

करावित्रशाहित करावेज्याहि करावाहि ] करावे-करावेडि-करावेस

đ. t. कार-कारव कारेड कारम्त्र, कारेन्त्र कारे-कारेज

चारेत कराव-करायर करावेड करायग्त करावेन्त् करावेला

करावे-करावेड [कारप] र्क्तु रे कारेज्य कारेज्या वर्षि ∫ करावेज्य, करावेज्या कारेज्या कारेज्यार करावज्ञात, करावज्जात

मधिष्यकास. ₹. 9

कार-कारिसा कारेस्स कारिस्सामि कारेस्सामि

कारिकामि, कारेकामि, कारिहिमि कारहिमि क्रारे-क्रारेस्स कारेज्याकि

कराविस्मापि करावे

कारेकामि, कारेक्सि कराव-करावित्सं करावेस्सं

कारिदिस्मा कारेदिस्स कारिकिया कारेडियाः कारेटियो

कारेम्सामी कारेडामी

कारदिस्मा कारेदिग्या कराविश्मामी करावेदमामा कराविद्वामी करावैद्वामी।

कारिज्ञामो कारेण्यामी, कारिसमा कारेडामी कारिहिसो कारेडिमो,

[कराविज्ञाद

maridants l

क्रमचेत

स्सामि कपविद्यामि, कपविद्यामि कपविद्यस्ता कपविद्यस्ता-

कराविद्यिम् करावेद्रिमि कराविद्यालया करावेद्रित्या

करावेदामि करावेदिमि Ů. y.

कार-कारिडिसि कारेडिसि कारिस्समि कारेक्ससि

कराव-कराविद्विष्टि करावेडिसि. कराशिस्सन्धि करावेस्सन्धि

करावे-करावेकिसि करावेक्सि (प प्रमाने 'से' प्रत्यकां)

er g

कार-कारिकित कारेकित कारिस्सा कारेस्सा

कारे-कारेकित कारेस्सा कराय-कराविकित करावेदिक

क्यविस्मा करावेक्सर

कपने-कपनेस्स करानेस्सामि, करानेस्सामी कपनेद्वामी करावेदियो करावेदिस्सा-करावेदित्या (ए प्रमतने 'सुस' प्रत्नका)

कराविद्यमो, करावेद्रिमो,

कारिक्रिक कारेक्रिक कारिक्टिया कारेक्टिया कारिस्सद कारेस्सद कारे-कारेबिसि कारेम्ससि कारेबिड कारेबिश्या कारेम्सड

कराविक्ति कराविक्ति कराविद्वित्या करावेद्वित्या कराधिसमाह करावैस्साह करावेदिक करावेदित्या क्रमानेक्सर

कारिक्रिनि कारेक्रिन्ति कारिम्धरित कारेस्सक्ति कारेडिन्ति कारेस्मिक कराविदिन्ति करावेदिन्ति कराविकारित करावेस्सक्ति

#### Q 12

करावे-करावेडिट क्यवेस्स (र ज्ञान 'व' जलकरा) (ए ज्ञान क्ले-इरे

**करावे**स्सन्ति प्रकलने समझ्यो

करावेदिनित

बदुव

STIPPL.

कारेला-

कारेन्सर

करायस्ताह

करावेग्वर्ध

र्श्य } कारे**ल कारेला** मर्ग्य / करावे**ल क**रावे**ला** 

पक्रम

## कि पाठिपस्पध

प्र कार-कारम्त्रो दारे-दारेको कराव-करावन्त्रो,

करायम्ता कराचे-कराचेग्तो-बरादेखा कारमीओ

की कार-कारली कारे-काराजी कारेन्द्रीमा धराय-बरायली <u>कराक्षतीमो</u> करावेश्वीमो-करावे-करावेग्नी कारकार्ध

 ५ फार-कारले कारे-कारेश्त धराय-धरायको बरावे-अतावेस्त

> ent will some कार-कारेख-श्वा, कारे-कारेख-श्वा कराव-करावेश्व श्वा,

### ₹•4

## वर्तमावकाळ.

होम होय, होशान होबाबे होश्रवि-श्रवन हुपी 3. ए. होमिम होमामि, होपमि होपमि होमावितः होमावानि होशाविति होनाविति <u>बोमकि</u>

**पर-उता** मान त्यारे.

बोपस्थमि बोपस्टामि होमाबेरहसि, होमाबेरहासि द्योमविज्ञामि द्योभविज्ञामि बोपण्य-स्त्रा बोभावेस्त-स्त्रा बोमविस्त-स्त्रा...

### मत्रहास

स्व व श्रीपमी-दी-दीम श्रीपमी-दी-दीम श्रीमावसी-दी-दीम श्रीमावसी-दी-दीम श्रीमविसी-दी-दीम

#### सर्वमा —

विध-होहत्या दोस्सु, होप होप्या होपसु क्षेत्र-क्षेत्र-संभाव-होमावित्या होमाविसु होमाव-होमावित्या, होमाविसु

### โดยสห้-มาสหนึ่

प. ५ ए दोशमु दोशामु, दोशमु, दोपमु दोपमु दोशावमु दोशांदामु दोशांदिमु दोशांदेमु दोशांदेमु दोशदिमु

### उस-उका का**ने** त्यारे

दोपरबसु दोपरबसु, दोपरिवसु दोपरवेसु दोमावेरवसु दोमावेरवसु, दोमावेरवसु दोमावेरवसु दोमावेरवसु दोमावेरवसु, दोमावेरवसु, दोमावेरवसु

#### मविष्यकाळ

#### 9 S. V.

होम | होतस्स होपस्स होपस्साति होपस्साति | होपहित | होपहित होपहित होपहित होपहित होपहित होगाहित होगाहित

## प्रज−प्रजा अन्देलारे

होपान | होपानस्तः | होपानस्ता | होपानस्ताम्भः होपानस्ति होपानस्ति। दोमादेश्यः | द्रोमादेश्यस्स, होमादेश्यस्सामि, हामादेश्यहामि, दोमादेश्याः | दोमादेशहासि,होमादेशहिम होमादेशहिमि दोमादेश्य-श्या बोमबिन्म बोमबिन्म बोमबिन्म सिमबिन्म सिमि बोमविन्म-एका क्रियानियस्वर्ध दोम-दासन्तो होधस्त होप-होयम्तो. दोपस्ता दोमाव-दोमाबन्तो बोभावन्ता बोमाबे-बोमाबेस्तो श्रीमानेग्वा दोमवि-दोमविन्टो बोभविस्ता होय-होमली हो मन्ती भा बाप-बोपन्ती श्रोपन्सीमो दोमाय-होमावसी डोमायन्त्रीमो <u>होभाषेन्त्री</u>मो दोमावे-होमाबेन्ती द्दामधि-दोमविन्ती हो भविष्यीमा होस-होसल रोमन्तर होप-हाण्यं होमाद होमाप्यं होपस्ताह होमायन्ताह होमाचे-होमानेन्त हामानेग्वाई

होस-होपरक-ज्ञा होप- ;; ; होसाव-होसावेज्ञ-ज्ञा स्व द्व

वमेरे कर्तरि प्रमाण--

होधवि-होमधिन्तं

बोभविक्तार

वर्र	<b>—</b> 11.	क्-का.	शि⊸ण	¥ <del>1. ¶</del> Z.	R-T
पङ्	पाडर	पाडीम	पाइड	पाविदिह	पात्रन्तो
- 1	पाडेड	पाडेईम	पाडेड	पाडेबिर	वाडेन्टो
,	पदानर	पडाबीम	पडावड	पश्चाविद्य	
•	पदानेर	पश्चेर्दे	पडावेड	पश्चविद्य	प्रहाबेग्दो
				दासिक्षि	हासन्डो
	रामर				दासन्तोः दासेन्तोः
	रासेर	दासेईम		शासेदिर	
	शमायर	रसापीय		इसाविदिश	: इसायन्त्रो
1	दमावेद	रसार्वा	इसावेड	इसावेदिर	इसारसो
चास्य-	बोस्तर	बोस्स्रोध	बोस्सर	बोस्सिदिय	बोस्पन्तो.
		वास्त्रेई म		बोक्सहर	नेस्रेन्टो
			बोहाबड		
			. याहायड स्योद्धायड	बोहाबेदिर	बोहाबेन्द्रो
			- वोहाविक - बोहाविक	चोठिविद	बोसदिन्ता
	ari Edina d	althus.	न बाद्धांबर	arQiaid2	difficular
भम्	मामा	मामीम	भागड	मामिदिर	मामनी-
;	मामेर	मामेई म	मामेड	मामेडिय	बामैग्लो-
,	ममाबद			ममाविद्य	ममापन्त्रोः
,	ममाचेर	यमार्श्व म	समावेड	<b>ममावेदि</b> इ	समापेग्ती
	भगाइइ	ममाद्यीभ	समाहर	भमाहिदिइ	धमाइन्तो-
	·				वेपन्ता
	मे भर	वेससी	नेम र	नेप्रविद	
	नेपर	भेपमी	वेषड	मेपदिद	नेभना.
		नेमात्रमी		मेनाबिदिर	नमादन्तो
		वेभावनी		नेमाधिर	नेश्रावेग्दा
,	नेमांबर	नेकदिना	वसपित्र	नेनविदिर	वेजविस्ती-

बाद्यमीद प्रेरक हेलबहर्यन्त सक्तवक्रमृतहरूरतः बस्मारहरूरतः, विभाग्नरत्त मने विभववर्गमिष्टरत्त करनु होन तो क्षेत्र कराने पूर्वे च्हेरा इरन्तोना प्रत्यमे बगाय्याची बाग छ। सनै कमणि स्टाइरन्ट ^{क्र}तु होय तो सूठ पातुनं 'साक्षि' प्राप्तन नगरी भूगहश्वना प्रत्यनो रुपात्रवाची बाग छ सबबा उपान्तव 'का' को क्या' करी भूतहपुरुठनी मन्दर काराजांची एवं बाव ६८ अग--

दस्+मावि+ध दसाविध इस्मा शासिम **कर्+मावि+स≔कराविक्रं** कर्+म कारिश

हमाबाबक्ष हमाबक्त } कावार्षु करान्तुं

4-E

₹-₹ 4-4. कार-कारिक कारिकं

कारेड

कार-कारेड कराव-कराविड कराविड करावे-करायेज कराचेत्रं चार-कारिक्तव कारिम कार-कारेलय कारेस

**कराव−करावित्त**य कराविम करावे-करावेश्वय करावेथ कारिकप कारेकल arrier w

कार-कारिक कार<del>े कारेस</del> कराय-कराविक कराव-करावे<del>ल</del> कार-

कारे-

करावेळण कारिडमाण

कारेडमाच

कराषमाओं कराविस्त्रमाणे करावेमायो करावेदस्समायो कार्ज

कार्य करावर्ष कराधः

कारन्ती-स्था कारेम्सी-स्तर

म—**क**.

कारको कारिक्सको

कारेग्वा कारेपस्थग्वो

करावस्त्रो कराविस्सन्त्रो

करावेग्ता करावेगस्थान्तो

कारमाणी कारिक्समाणी

कारेमाची कारेजस्समाजी

कराद-करावित्रमाण करावन्ती-न्ता कराव करावेदमाच करावेन्ती-न्ता कारमाजी-जा कारित कार--कारे-कारेत कारेमाणी-पा कराविस कराबमाणी-जा कराव-करावे करानेल कराधेमाजी-या कारिता-प **S**IT--कारे-कारेका-न कराविता-ग कराव−

करावना-य

कराचे-

4 (-4 16) 1

विभाग कमिन करान

कारियानं कारेयानं कराविषानं करावेयान कारणीमं कारेमणीम करावणीमं करावेशानं कारणित्रमं कारेमणित्रमं, कराविष्यमं करावेमणित्रमं मा प्राप्त कं नात्रीमंत्रों कर वेण नेवल वही करणते प्राप्तमं

एवं बाद्यमोतुं देशक बोग तेवार करें प्रेरक कर्मीकि माने माने करों

१ स्ट्रामेची अटड कॉटिड के मार्च प्रयाप करते होय तो सन्य साम-स्याचे ए अल्पाने लाने अटड सुन्द सामि प्रत्या स्थान के ते ते तर बनेका स्थाने पूर्व ब्लेशन व्यक्ति-मान्दर-हैस-एका अल्पी कामीने त त काना पुरस्तेवन क्राच्या स्थानार हैता प्रत्या कामी स्थान क्राच्या है.

त्मन क्षेत्री ऐसे पन देशक सूचक कर्म एक प्रश्वक सम्बद्धाः

भ्यापि अस्य सम्बन्धां पूर्वता क्षा मो क्षा एन कोई स्वक वार्त है-क्षानामा-(बारविश्वाकोन क्षेत्रकारिकोटि केरवानाई क्ष्य मा है मेरकमाणि-मावं वयो बाद स. कर+मावि करावि+र्रम=करावीम कर्+भावि-करावि-४२ज्ञ-कराविण्ज कर-कार+ईम=कारीम फर्-कार्+इन्ज=कारिन्न माणु+माचि जाजावि+ईम=जाणाबी म वाज+कावि+काजाधि+४३व-काजाधिम्ब वाज+ईय-हाजीय माण+प्रज=भाषित्रज दा-मावि दोवावि श्रम-दोमानीम हो+साथि न्ह्रोभावि +हरश्र=होमाविरत

को श्राप्तक व्यापाल भा प्रमाण क्षत्र तथार करें। द द काउटना पुरुष्याचक प्रत्यन समाग्री

क्या राजी केवर

हा+ईथ-होईय

इस-इसाबीय इसाबिज्य शासीय शासिज्य-अगर्म कर्ण

श्लीमालकारः बहुददन UNCHWE इसाबीममी इसाबीमामी 93. इसाबीसिस इसाबी इसाबीयमें इसाबीयमे

भामि इत्तादीपमि इसाविक्सी इसा विज्ञामि, इसाविज्ञेमि इसाविज्ञिमो इसाविज्ञेमो द्वासीयनि द्वासीमामि हासीविम

इसाचिन्द्रमो इसाचिन्द्रामो हासीममी हासीमामी. हासीहमी हासीपमी क्रासिक्त्रमि क्रासिक्त्रामि क्रासिक्त्रमो क्रासिक्त्रामो

क्रास्थित वेदि हासित्रियमा हासित्रवेगोः (ए प्रमाद-भू-म अल्प्स तमका । **धे.५ इ.मार्थाभक्ति** इसार्वाप्रया इसाधीमह

इसाविग्रहसि, इसाविग्रिक्त्या, इसाविग्रह श्राविमसि. हासीर/या, हासीयह रासिस्नि शामितिशत्वा श्रासित्वह (ए प्रमाय-सं इतको नमञ्जा) इसाबीमन्ति-न्ते इसाबीहरे

र्धेषु इसारीमह इसाविक इमाबिम्बस्ति के इसाविजिदे हार्यामर दासीयन्ति न्त्र दाशीहर द्वापिग्डर हासिस्त्रक्ति को हासिस्त्रिकेट (ए इसर-प' कन्मर) प्रमुख्या)

वर्षः } इसाबीपरब-रखा इसाबिरकेरस-रखा र्ततः } हासीपरज-रखा हासिरकेरस रखाः मृतदाळ

र्काः } इसाधीयाँच, इसाधिताँच व्यवः } हासीयाँच हासित्रहाँच 4 4 al--

स्मानीर्म-

वर्षः । इसावीय- इसावीरस्या वर्षः । इसावित्रत्र- इसावित्रित्रत्या हमादिक्तिस

## विधि-मानार्धः

प्रस्पतः

पु. दसायीमम्, दसा दमायीममा दसायीममा
वीमाम्, दसायीम्म दसायीममा
दसायीणम् दसायीगमा
दसायीणम् दसायिग्रममे दसायिग्रममे
दसायिग्रमम्
दसायिग्रमम्
दसायिग्रमम्
दसायिग्रमम्
दसायिग्रमम्
दसायिग्रमम्
दसायिग्रमम्

हसाचित्रज्ञेषु ।
हार्नाम् इस्तीमाम् हार्मीमामे हार्मीमामे हार्मीमामे हार्मीमामे हार्मीमामे हार्मीमामे हार्मित्रमामे हार्मित्रमा

स्मापीमम् इत्मापीय द्वामीमद् द्वामीपद स्मापीरकम् इत्मापीय द्वामिकमद् द्वामि जद क्रम् द्वापीरकमद्वि द्वापीरकदि द्वापीरक द्वापीरकदि द्वापीय (भा क्षः क्ष्मापिक्ष द्वापीय ध्वाप स्वापी

चै इ स्मार्थाभाइ हमार्था हमार्थाभानु च्यार्थाभानु चर्चायामा चरायामा चर्चायामा चर्चायामा चर्चायामा चर्चाया

इसापीपरज-रजा इसापीपरज्ञ इसाविरज्ञेग्ज-रजा इसाविरज्ञेग्जर इसिपरज्ञ ग्जा द्वासीपरज्ञ इसिरज्ञेग्ज रजा इसिरजेंग्जर

## मविष्यकाळ

इसायि द्वास बहुबबन

पक्रवचन

iπ _____

 इसाबिस्सं इसाबि स्वामि, इसाबिहामि, इसाबिहिनि हासिस्सं हासेस्म हासिस्सामि हासे

स्सामि, दासिदामि दासेदामि, दासिदिमि दासेदिमि

गै इ इसाविदिसि इसा विस्तिसि इस्तिदिसि इस्तिदिसि

वासिविधि वासेति वासिरसमि वासे स्त्रीस

स्त्रोस (एऽमक्-'से' प्रत्यको )

इसाविन्सामो इसाविदामो

इसाविक्रियो, इसाविक्रिस्सा, इसाविक्रियाः इसिस्सामो इस्समामो, इसिक्रामा इस्स्रियमे इसिक्रियो इस्स्रियो,

वासिद्वामां वासवामां वासिद्विमां वासेदिक्याः वासिदिस्सा वासेदिस्साः वासिद्वित्या वासेदित्याः (व प्रमान-'सु मं प्रतन्नां) वसाविदित्व वसाविस्सर्व

(र प्रतान-'सु सं प्रतान-प्र) इसाविद्वित्व इसाविस्सव इसाविद्वित्या इसिव्यव इस्सेवित्व इसिव्यव इस्सेवित्व

हासिहित्या हासहित्या गा 'डिस-इन्ड' स्टब्बे क्टब्बे

भावित्तास्त्र अने क्रियानित्त्वांमां 'हिंस-हरज' अस्त्रां स्त्रां स्त्

श्री. इ. ह्याबिहिर इसावि दियः इसाविस्सार, इसाविस्सार, इसाविस्सार, इसिसिहर इसिहिर इसिसिहर इसिहिए, इसिस्सार इसिस्सार इसिस्सा इसिस्सार

स्सद्दे द्वासस्सय - नर्वद े द्वसाविन्ध-न्जा - मर्वद े द्वासेन्ज-न्जा

## क्रियातिपस्यथ

पद्वयम पद्वयम \$ हमादिग्ता हसादिग्ता हमारते हमगरा श हमादिग्ती हमादिग्रीमो हसादिग्री हमादिग्रीमो हसादिग्री हमादिग्रीमो ब हमादिग्री हमादिग्ताह हसार

बगरे कनि क्रमार्च

र्ध्य } इसाविग्रह ग्रहा, वर्ष इ } इस्सेग्रहा ग्रहा.

करा- वर्तामा.	<b>यू</b> ¶4.
कर-कराबीम-कराबीधा	करावीमांभ

कर्-करावीम-करावीशः करावित्रत्र-करावित्रतः, कारीमं कारीमः कारित्रत्र-कारित्रतः

१, कराविग्र्याम कारीमहेस शारिक्यहेस पदावीमहेस

पह-पहाबीम-पहाबीमह पहासिज्य पहाबिज्यह पाडीभ-पाडीमह पाडिज्य पाडिज्यह

पहाविश्वहंभ पाडीमहेंस पाडिश्व^{र्ट}न होसावीमसी-ही ही होसाविश्वसी

हो-होमार्गाम-होमार्गामर होमार्गित्म होमार्गित्मर हार्गम-हार्गमर होरग-हार्गमर (हर्ग) रीमार्गि-पीमार्गिर होमावीमसी-ही हीम दोमाविज्ञासी होईमसी-होइज्ज्ञासी है दोसाविड्रम

वीस-वीखर (मड्) चणाबि-चेणाबिह चेण-चेणाम् गदाबीम-गदाबीबह, सदाबिग्ब-गदाबिग्बह,

गारीय-गारीयर

वीसाविद्यं दीसहम् चेप्पाविद्यं चर्णात्रं यहाचीमहेम पहावित्र्वहं गादीमहेम पादिज्ञहंम

गाहिज्ञ-पाहिज्ञह याहिज्ञईम र्थन वनरे वातुकाने सारे इस १५५ हे हजा

म 🖘	विश्व
कराविद्यहरू }	कराविष्ता-श्ती-स्तं
कराविस्सा	कराविश्च-श्जा

२१७

कराविश्त−श्जा काग्न्तो-न्तीन्त

विश्व

कारिका पारिम्स, पदाविदित्रः } पदाविस्तरः } ..

कारंज्ञ-उजा पदाविन्तो स्ती स्त पद्माचित्रज्ञ-रुजा पाइम्सोस्तीस्त पाडेग्ज- मा धामायिक्तो-स्तीक्तं

पाडिस्मा } बोमाविदिश डोमाबिस्सर दोहिर ? क्षास्पर ( बोमायिकिङ

रीमिटिप

गादिदिर

गादिस्सर

शोभाषिक रहा होस्ता-स्ती-स्त टोक्स-क्रा बीम्बाविन्तो न्ती-स्ठं बीमादिस्त्र-स्त्रा

रीमञ्जो-मी-मं (भिन्न स्टा पेप्पापिग्ता⊸नी⊸नौ धन्यापिशक-रका धापनो-सी-स्त

गादभ्या-भ्यी-स्थ

गाटाज-रजा

घण्याविष्ठ पेप्पर गहायीभउ

गदावित्रकर गाटो घड

गादिश्वर

मि 🗃

ऋषवीम इ

क्षाविश्वत कारीयउ

चारिज्ञड

पदावीघउ

पदाविस्तर

पादीसङ

पाडिग्रह

दोभाषीभउ

दोमाचित्रकत होईसड

डीरमञ्

रीमापिड

वीसड

प्रणाविदिश ध-पाविस्तर र चिंदिर पन्पिस्तर गदाविदिय गटाविस्मार (

धेप्पेज्य-ज्ञा गदाविस्ता क्ती-क्ल गदाधिशत-श्रह

### मेरक कमिन वर्तमावस्त्रस्य

प्रेरक करीय संदय कर्रमामह्वरणमा प्रत्यको सम्बन्धार्थ प्रेरक करीय कर्रमासह्वरण वाच छ

स्थानकर्यस्य वाच्यः पुरिकासः वीकिता

करावीम-करावीमानो-मानो करावीमाई-न्वी-ना-मानी-माना करावित्रत्र-करापित्रक्रतो-मानो करावित्रत्र्रः " " कर्षाम-कराविमानो-मानो करावित्र्यः " " कार्यम-कारियत्रत्-मानो करावित्र्यः " " हर्मास्त्र-कारियत्रत्त-मानो कारियाई- " "

- प्रत्यको बालबार्यनामा हुक विकास वर्त्ता वीकी विकास के
  जीती निथितिमा मुख्य छ देश सीस्तो यहाँ एवर में
  शुक्र पेराचे करेड कि शुक्र सीक्ते सीस्तेण का गर्च स्वावेश
  (गृक विकास पान का स्वावे छ)
- भारतम-अकर्में चानुसीमा वास्त्रस्थाना समय वास्त्रपर्वत्र मानुबी पर्वत्, द्वार मोत्रम प्रत्येष्वत्र धानुसी प्रते देशस्य-पास वनरे धानुसीती त्रस्य वास्त्रस्थाना मृत्रदेशमा कर्ता वीत्री विभावता त्रायः मृत्यार छ. जेम----

क ति— त्रेतक— बास्त्रे कागर प्रिमा चार्यकर्—भगमन समयो तिरसम् पढेर स्त्री नामक तिरामी पडावेर—बर्गकर-समया विद्रालित सांगरियो समये विद्रालेर—धी-वय सांग्रेगी तनार्थ कायो-युक्त सांग्री तनार्थ वालायर—रमय पुछो कादौर पिता पुन सांग्री—योक्यने

अबकी जिल्लाहिम देवलहर जानामी बच्छे जिल्लाहिम देवलाहिए सीची सारिता

र्पराणमां केम स्थारकार आदि तस्य वाक्षणाओं है. हैमें आहरूमां नवी पत्र केटपीएस प्रक्रियामां क्यो बाद शास्त्रमां केट बुम्बी ब्याब के. ते पूर्वे कहेचा वर्वविकारना जिल्लानुसन फेरका बर विक्र वाच छ समध्пi÷ समन्तः मृतुष्यते = मृतुष्यार १ किया वरे छ. मृतुष्यिक्षन-मृत्र र-स्रावस्त्र १ पूर्वा वरे छ. मृतुष्यामाण-प पिपासिक पिपासर सिर्ण राष्ट्र कर छ पित्रासिक-म. र

दुमुस्ति-बुदुक्तर रातानी स्वत वरं छ. बुदुक्तिम-म् इ क्षिप्सति विकास नोक्स्सन स्टब्स् शुक्रपते सुम्स्सर्=धन करे द. सम्समत सम्मूम

लामक्समे १९३ च माज-व है. विकित्सति विश्ववाद्र-वरा वरे ४-विविद्याचे विविधनाइ=प्रश्न करे प्र. विविध्वसमाण, विद SERVICE-F B.

यक्तन्त-साम्रप्यतंत्रसाम्रप्यद्र-नदस्य करे च साम्रप्यमाय-न क्र-र्थकार्यम क्रकामाच षहरूभवते चंद्रामहन्द्र व 🗱 🕏

यह्ळुगस्त-चहकर्माति-चक्रमद्र=गरनर च अं च चंडमत वंदमाय-५ इ. व्यक्तिर्दे-देः क

कंकसिएस-निक अकसिय-यः क

नामचानु (दमद्माचने) दमदमाद } स्वतंत्र करे ह

(शुदकायते) शुरुमाइ हारमाभद्द है प्रश्नी क्षेत्र सामात्र को क. (सोडिटायते) झाडिमार है सल पत्र है. (समरायते) अमधाः } समर्गे अम बाचान समरामाः } करे हे

संबद्धमुबद्ध व

चाकित हि (स्त्रक्रित) परेत्री

वि (मध्याम्ब) स्थेतं, स. अभाव सूच संबद्धानम् गर् औ. (विशे) ब्यावस, देग दि सरमुख्य परस सम्बोपय 🌖 कार परी-स्थापन्त है वि (सम्पर्व) स्थाप शिक्षण (प्रद) वर-नवारिय 🖁 नार है. रोड्स. (नम) चर स^{ब्यूबर} <**॰कोरिम ४. (चीर्व) चो**गै माराइषा नी. (महस्प्र) बसायर रू (बक्षेर) बगेश करायमा वेदना सावज्ञीय (न. (चारसीय) कुबुद्ध न (राट) कार माना, बाबीय 🐧 बोबने प्रस्त ক্ষলিত্ব (প্ৰথিত) হতুদান্য सोमा वि (भोग्य) सम्बद्ध सरवार नर्नेची नातुं, बबु शुक्त वि (क्षण) उचित्र, बोर्ग्य, (कर) इ.स. पीन का obi. दि. इ.सम्बर्धः वबस्मि ५. (वास्कि) टार्सी क्रप्रमा औ. (क्ष्मक) क्रम्य, तिमिर व (तम) मोपनो रोष, मध्यम्, अग्रम कुमरबाक्ष रे ३. (इमारवाड) दंग्य-च १५ व (रेग) रेग क्रमारबास 🕽 इन्तरंगः राजाः ब्राव−य∫ अस्य अस्य. केवस ६ (प्रा) केवस्तान मच (भम) किंद वात्र^{सम्ब} **पासर (*)** गेग विश्वतः **फरान्त**, नदृश पु. (अर्नेड) वट. स्पा<del>र् मध्य पैर</del>न छनत्र पीर्व क्ये देश केवा समा बरमान तेतुला ने 'ब्र' व्यापन तथी पूर्वे 'ब्र्' सुधान के बेरब (स्केरिप्) निवा(स्कद् वेदशं (वेस्थ्य) क्षत्रं (क्ष्म्) विपनामा (स्वक्षान) पारित्र (पान्यू) भविज्ञो (मन्द्र)

परका 🖈 (प्रकिन्दा) प्रक्रिप्टा कीर्वि कागर. पपरच ५ (पराथ) परार्थ वस्त. पत्रमें सर्व. पद्दिण न (शक्षिक्त) बररोज

निमाचा वि (तिर्मुच) ग्रवरहित.

परस्त व (पाने) सर्वीय प्रस

पानकाम न. (पापका) पारका वैषक म. (क्रमन) सम्पन. मिया । वि (मर्ग) मध्य मध्य 🕽 सुबर बीरन बीन

मडब पु (सुगुर) सुगट. म्पा } वि (मुक) मूंचा रयबाद्ध न (रूप) एत

पियंभिय वि (शित्रुम्मिन) विरुप्तिः gran वेडरिम वेडसिम सोंदय है (य इन्द्रक) इन्द्र

alla. कीयात्रीबाइ (जीमात्रीवादि) जीर श्राप्तीर स्थादि शर पदार्थी पोइयक्काव (शहनकान) प्राप्त

सचक मि (सका) पूर्न सर्व समजोबासय ५ (धमनोपासक) HHT.

संपद्रमस्तितः ५ (सम्प्रतिनरेन्द्र)

संप्रति राजा

नदिन

सक्त म. (सरप) सस्य सम्माण पु. (सब्मान) सारा भान सत्ता विचमम सरजन्त न (करन्तर) धरनपूर्व सरपाचा नि (तमान) प्रश सासय नि (सम्बद्ध) निस atlanur

मिक्सय ५ (भिद्रात्र) समाने नाम त सियहेम न (सिर्देग) मात्रका मास रा. सहस्र ९ र. (ग्रूप) ध्रुप शक्त

नामसिक धप्यो

पाणिगण (प्राप्तियत) अभिनेत नमुदाब सम्बद्धाः (स्नोनहरू) सन्त जिन् मरणम्य (तम) मन्त्रने धरः

अस्य (कर्-अन्) गोन्तु नहेर्द्र मन भारती उपदय अन्त्र (स्थारक) स्थापन करतुं मानो कहा भाषती. ×डक्क } (क्षरव्) दरित्रं (মাৰ) আৰমি কৰি अथप् ∫े ×पणाम 🦠 भारतास्य पर् अध्यस् (अभि।धन् ) अम्बल ×दाव भागे धीक (रईन ) देवाञ्च ×र्गम **मसिनिक्स**म् (वनि+निक्स्) **XITTO** वरिम नपमने माहे बेरबी बोक्सक उग्पाइ (टब्+क्टब्) उवाद्यु ×पूस (ब्−वलव) द्वाच कास्तु बम्मूस् (वद्भम्ह) मूजवी उचेव्ह्रं मन्द्रप दशक्तको ×बद्धांस् ) (बद्धमाम् ) क्य श्लासक X S TITL (बाह्य ) भार कार्य, ×प्रकाद ×urque वास मधान गम् (पन्त्र) शैदान्त् निम्माच् ) (मिर+मा) क्यार्च ×क्क है (करह) सेतानह, करोरहे निस्सन र ×are ( नामन करन विस्स मा अध्यक्ष योजमां प्रीजी निमनित सुकाव के ×भा निवनका वातुको क्रेस्टमी व नक्तन हे

यातुमो अ**जु-सास् (क्**तु+राम्) दिका-

रागंद्रवनि अर्थे **÷मस्तर्ह ( (**६ सक्_{म्}) निवास विवेच पूर्व कर

वसुदेसको पुत्र दूसमसमय } (दुःवमधमन) दुम्समसमय ( TANK भणवरच (क्युत्व) कर्नु इत्व भवो (सम) सांच मानवे हसेवा

बसुबैबपुक्त (बहुबेरपुत्र)

संबं (सम्बंध) पोत, पोताबी सके सम्बद्धा (सर्वना) सर्व प्रमर्फ इंतूज एं यू. (प्रदा) इंजीये.

सकुर्द्रवय (स्वरुप्तक) इरुप् पुष्पवर्श्व (के) कार्यर,

qή.

सम्भावर (कर्मरर) तर्व कर

सम्पप

×पश्चिमाब (प्रति+भावन्) विश्वास

करक बादर करते

े (बेम्द्र) वींद्रपु क्रके-

×रोम्न्य १ (रोमञ्जर्) वस्त्रोतस्य बन्गोसः ∫

×ियणास् (मि+गत्तम) मिनास

सिर (गाः) पास रकत सुद्ध (बुक्य ) शुन्ती कानु

×परिमास 🖇

फेड (स्केटन) नियस ऋसी

र्मुस् (भुव) सोकन ऋत् वह्नमाण् (ब्रुमानन) सन्मान

करामची

करको

अमिस्सार ( (मिद्र+ग्रस्य) 🖘 र ×नीसार ∫ ×पद्वयः ) (प्र+स्वापद् ) शोकस्तु अ**गद्वात** } प्रस्तान चलु प्रारम ×पव्याव (प्र+प्रकृ) ग्रीट्रा क्यावनी

पसम् (प्र क्रम्) द्यान्त करनी परमुपास (वरि+कप+भास ) सेवा सकित काबी

परिक्ति (परि+विन्छन) विस्ता करव निवार करती अपसील (प्र+सक्ष्य) प्रसारका

दरधी

मारूत वाक्यो । थानकार्य मेन फुरता न कारवेरना !

पाइयकमं स्रोप कस्स द्विपयं न सहावेद ।

बस्रवंता पंडिमाय के के विनरामति ते विस्तिकाप भंगसीहि नदाविज्यस्ति । महं बेज्जारिह फेडेमि सीसस्य बेयर्ज सुवादेमि वहिए, सव

केमि ठिमिरं पणासेमि चसरं, उम्मूछेमि बार्वि पसमिमि सर्अनासेमि बखायरे पा

खाइनं देखया पि हि नियमा दुरियं प्रजासेह । रच्या स्वच्यागर बाहराविक्रण मध्यप्रे महहस्मि सहराई बेह

रशाह रमणाचि य रयाचीमईस । संपर्तारकेन सपसाय विवसीय क्रियेसरार्ग वेदमाद कराविधार। तपस्ती मियन् म छिने च छिश्वय, म प्या व प्यावप ।

समजोबासमी परहाप महोच्छने सब्बे साहम्मिप ग्रुंबावेशिंग? बर पिमा पूछे सम्में पहांबतो ता बहुत्तके सो कि प्लेबिडें तुर्व प्लेक्टों!। वर्षिक तथ्य थिएँसि बेहम निम्मविये।

कमियमं कमाविषणं वक्समियमं इक्समाविषणं जो उक् समर् तस्स मित्र भाराहणा जो न उक्समर तस्स नित्र भाराहणा तमो अध्यका चैक क्रममियमं ।

परिसा रूजगा परस्स बाळण सप्यका ग्रेडामो कि तिरसारि कत्र १ सम्बदा व जुलमेय । सदो बद्धं बहुवेबपुको होळण स्वत्रज्ञजाणं मणबार्षं

क्षत्र के प्रमुख्य राज्य स्वाप्त स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं सक्ष्यं मुक्किय है सम्बद्ध वि हेमचंद्रम्पिया पासे देवाणे सक्ष्यं मुक्किय है सम्बद्ध वि तिरवदराणे मंदिराह कराविस्सामि कि पारणे कुमार

तित्वपराणं मंदिराह कराविस्तामि ति पहण्ये कुमार बावमित्रा कासी । सो परिचे सम्मान्ता त्रिष्यसम् परमुक्षावृंतो मुस्किणं परि क्रिकेटो श्रीवात्रीयारचा तथ् प्राच्ये स्वकटो स्वक्ते वितो व परिणार्थः बहुमाणको साहमित्र क्रमे, सम्ब

चारण प्रमावती विश्वसासकं काक गगई। पार राज्यस्य होगारी ता ग्रस्ति राज्य स्वाचित्र का समावि तिग्रं मेहि शानेहिँ।

यिदे बढा कांचि न शानद तद्दा पहेसीय नीतारिम व।
हो माराके पनको स्वर्धि स्तराता कई तरए शानेहैं।
गुरुषा पुरुषते सामुमारिम कि न कुष्येत्रमा
प्रसाम चेव दुन्तर, मारिकेशस्य होई सम्बन्धे

पक्रस्य चेव दुन्तः, मारिज्ञेशस्य होइ जलमेक्कं बायज्जीय सङ्कुंबयस्य पुरिसस्य चण्डले ॥१॥ बुसमसमय यि हु देमस्रीचा निसुविक्रम बयणाई। सम्बन्धां जीववय कराविमां कुमरवाकेण ॥ <॥ रोवन्ति रुवावन्ति व सक्तियं नंपन्ति पत्तियावेन्ति। कवडेल प संति विसं मरन्ति म य बंदि सम्मार्व 💵 मरणभयस्मि उन्नगप, देवा वि सहदमा न तारेति। धम्मो तार्ग सर्ग गइति चितेहि सरणतं ॥४३ इन्त्य परव्याचे अन्याणं हो करेड सप्याणं। मप्याम विवसाणं कप स वासेह मप्याम ॥५॥

## गुजराती पान्यो

- ९ पिकामे चपाप्यालयी पासं पुत्रोमे तत्त्रोतुं क्रान स्वूच करावराम्बु (शिण्ड)
  - मिश्राते देमक्टरहरियोगी पांचे व्याचन्य रचार्थ (रच) तथी शिक्ष्यीय ए प्रमाण तंत्र गाम स्थापन कासु (छम्)
  - मान हिस्से गुरुमोने योकानी सूख्ये संमायक है (सूख्) सने र्मभक्तवीने पक्ती सना जमावे छ (स्त्रम्) ४ वं पुस्तकामा मिनास करे ≢ (वि~नास्) त परक्रोकमा कवा
  - सांबद्धा करे बहेरा बाद है.
  - सावाव किम्बोने एकिना क्ष्मा खरूमा उडाउँमे (बहु) होन्छा मन्त्रस्य वर्गाते से
  - र नदे राजाने भने समान्य क्रोफान भएत राजानु नाटक **देखा**डरी (शाय-बप्पताय) भने त श्रेत्वाच्यां नटे केम्स्यान प्राप्त कर्ष
  - रिता पुत्रोने विश्वल गुरू पलेची विज्ञासय सरावे हे. (अणुस्तास्त)
  - ८ राजाना पुढ़िशासी सम्बीए पोठानी पुदिवते नगर छएक सामग्रा **प्रकृत्रोता नाग कराव्यो (नासक)**

 एआए उपान्धन्ये केनाकेने (बाहरू—बोस्क् ) नर्तु के हमे एक-प्रताने नीतिकाल क्यां स्वाकरण्याल सनानों
 एमे वे कक्कों जि हेर बक्कानु होत (सक्का) हो वे

नकर सन्त.

11 सरवाए नामा बाक्यप्रेमे बीचवानना न जोक्ए (बीक्)

12 स्थापना नामा बाक्यप्रेमे बीचवानना न जोक्ए (बीक्)

13 स्थापना नामा बाक्यप्रेमे बीचवानना न जोक्ए (बीक्)

१९ क्रिकेंकरो क्ल्य जोगोले संस्तातम संकल्पति स्रोमणे (सुन्य) शास्त्रत पुत्र कराने के (सर्व्य) १३ क्लोबी चोटी कर्या ठेमोले समार विकास स्टब्से (वेंक्)

१४ झारे केली बीचकी (सिसिनिक्सम्) फ्रांगे स्वत्य करीं उपस्था जावार्थ तथी छंत्रा प्रकृत करों करे क्या इमारेले प्राण करान्त्रों (सिन्द्र्) १५ कंसामा ग्रिस्ट एड पुरश्ते प्रस्तुत्व सेरलों के. (बाब) १६ के मार्च्या करी मिनोरे सरस्य वात्राचे मार्च के (सुन्ध्र) करें

वच्छे सक्तम पाने पोरान्तु सानु पन करावे छ (किंद्) दे सरप्र व छ.

१ वृद्धी बचकी एमीए बासी लीक्षण मच्छलां वह वह सार्व बाला चलमुं, तह एकी बज़ों को स्वत्यूमतं क्षाणी रहा वर्षी १४ बल्हुद सम्मासका नेतीन करन की मलमुं काल स्थालों को बेगेन नमानते हैं (बाल्-नोड्)

१९ छात्र पुरसो ऋषे के के प्रतस्त्रों जीताने इंग्रेश ईमहत्त्रसम्बं सत्तरे के (समाज)

२ वर्ष मधीनो त्याल क्या एक बोल्स्स देखी हो सब तेज नर्र पारोची (ज्ये) सुरास्त्र (सुद्धुः) ————

#### - - -

## पाठ २१ मो

## नमास

सिल्म सिन्म संबद्धात राज्या सेचा बटन एक सर्वने जना-बनार के पर दन नसाम बडे छ।

त्राष्ट्रत्यां समान प्रकार सहारानी सामन अनी केंद्र

त्रेम सहरकाते इन्द्र लगुड्य कर्मधारम बहुजारि, हिन्तु सम्बद्धीमात्र सने एकदार एम नात्र प्रकारना समाखा साथै छे. स व त्रमाणे प्राहरमा च त्रैमार---

ेश्रे य 'बहुप्योद्दी 'कम्मभारयप 'शिगुयप चेव । 'तप्पुरिसे 'सम्बद्धमाने 'वगसैने य मसमे ॥

## ' इंद (द्वान्द) समास

न तक मुक्त सम्मा बीमा एक स्था मनक मामी गाये मास्य बात मनवा तो पता मामा एक एक त्याय आधी मोटी माना का करी समय ए ते इन्हें बहुताय ए (मा नमाना के बचा मामा पुन्त हुन्त ए एक्ट प्रकाशिक प्रमान होते ए ) मा नाम्य करा। माहे स्व स्था में दे में दे देशन प्रमान में प्रमान माहे स्व स्था माहे के स्व स्था माहे स्था माहे स्व स्था माहे स्

हत्त्व तमन बहुत्त्वम्यै त्याप च सम् एश शमनी प्रति लाग तमन्त्रे सागे ए दशः — सन्निमनितियो (सन्निन्छास्त्री)क्सनिमा स्नार्त्ता सन्

ध्यात्रका (सामान्य क्राप्तिका क्राप्तिका क्राप्तिका क्राप्तिका क्राप्तिका क्राप्तिका क्राप्तिका क्राप्तिका क्र

स्ते राजिका

देवराणवर्गसम्मा (देवदातवरण्यवां) त्रेन्दा य दायवां
य गंदाला य-को रक्तो अने वंकां
यात्रामार्ग्यकाः) व्यात्रामार्ग्यकाः के कोर्गे
यात्रामार्ग्यकाः (बात्रामार्ग्यकाः) व्यात्रामा से से हंग्
सादगायाविकामा (बायक्याविके )-सावां ध्रात्रिया य-मात्रक क्ष्मे थात्रिक देवदेवीलां (देवदेष्याः) वेद्या य देवीलो स-देतो को स्तात्रामा य-मात्रक क्ष्मे थात्रिक देवदेवीलां (देवदेष्याः) वेद्या य देवीलो स-देतो को स्तात्रक्षमा (व्याव्याव्यो )-साव्या स्व स्व-वाद्य क्ष्मे स्व मात्रक्षमात्रक्षाणि (सन्यामहये )-मात्रक व्यात्रक्षमा स्व

पचपुष्पप्रसानि (पश्चप्रसानि) पच च पुष्पं ब फर्स बन्धर प्रच को कर-

ए शाले-जीवाधीया पासवीरा समक्तमणीको सन् मिनाधि निदाससाद्यामो क्रयसोदमाबोध्यावाधि गः शिद्ध क्री वेताः

स्व इन्द्र समान अवारे तमुद्र बन्नला होव के अवारे ते नमुह्ना एकम क्ष्मिकी निवार बन्नली होव खारे समा-हर बन्द्र समान यात्र का समास एक्ववस्मी क्ष्मी मान नोन्नक्रीतमाम बाव थे.

(बा धमाननो भवाव माङ्गमा खु व क्य वेडाव हः.) क्षेत्र-वस्तव्यपार्व (बंधनवावम् ) बसल ख वार्ण ख यर्थीस समाहारी त्यसंज्ञमं (त्यासंयमम्) तथा स संज्ञमे क पर्णस समाहारो माण्यसणकरितः (हानवर्धभवारिकम्) माणं क मंसण क वारितं व पर्णस समाहारो रामकोव्यवसीर्थं (रामकेपमयमोदयः) रामो क बासो

न्सण व बारत य पणस समाद्वाच रागहोस्त्रपत्मीई (रागडेण्यमयमीह्म्) रागो च हासी स भर्य च मोही स पणित समाद्वाच र तप्पुरिस (तन्युरुप) समास

 प्रवसा निवस्त्वनी छ विभक्तिकास्त्र पूर्वपवाना उत्तरपद छासे समाप काच छ स्था नमाममा चलराद प्रवान होत छ.

क्षितीन-सङ्घत्ता (महमाप्तः) सङ्घ्यां सियगमी (शिष्ततः) सित्र गमा

रूपेन साहुर्वदियो (सापुर्वाचरा) साहाँह परिप्रमे त्रिणसरियो (क्रिनस्हरा) त्रिपेश सरियो कर्मा-कक्रमसुपर्व्य (क्रम्यसुप्रम्म) कक्ष्माय सुर्वण्य

चतुर्ग-कक्षमसुष्पर्यं (कस्रशसुष्पम् ) कक्षसाय सुष्पर भोषकत्यं नाग (मोझार्यं बानम् ) मोपकाय इसै पंचरी-बस्पमहो (ब्रानक्षयः) वृंसपामो महो

पनस-ब्राधामहा (व्हानक्षयः) वृत्त्यामा महा मन्त्राप्तार्थ (जहानसम्प्रम्) सन्त्रापामा मय प्रची-त्रिकेस्को क्रिकिस्वो (जिमेन्द्राः) ज्ञिणार्थ स्वो ्विहस्यो ) (विद्यानितः) विद्यार सर्वे

ादेवासुर्हे } (वेयस्तुतिः) वेयस्म सुर्वे वेयस्त्रों }

१ तंत्रुषः कंत्रतमा एकमि बाप नवा पत्ती केन कंत्रल तेत्रत समुखः कंत्रतमे पत्तमे नकतः कावेदम्यः व्यंत्रत कंत्रल को कन्नदर्शनी कंत्रण क्रियाने क्र

ं विवस्तियों (विजयाधियः) विवसार्थं महियो ^{दि}वहम्हं (वपुमुक्तम् ) वहप मुद् धानी-जिबासमा जिल्लासमा (जिनीसमा) जिलेस कसमी नायोज्ज्ञज्ञो बायुज्ज्ञमा (द्वानोचतः) नायस्मि रज्जनो

कबाइसबो (कसाकुशका) कबास उसबो २ प्राइतमा ने पदानी शान्य निवर्ण वास्त इ (निवस (क्षेत्रको)

क्षपा⊶निम+महिना×निमादियो जिल्लादिया (क्रिमाणिप ) त्रित्रभागिन्द्रार्थन्त्रों त्रिणीनरों (जिलेशर )

वरिनदैनरा-करीका वरिर्मित्रो (वर्गाच्या) वाहु+त्रवस्थाने वाहुवस्थवा वाहुउपस्थवोः (वाश्वपाधवः) अभागत के अब के वर्ष पटी विक्रानीय नगर अपने हा समित मती तथी दसअ ए अले अले पक्षी पक्षी माई एक स्वर कामे

हो पन्नि कान बढि. उदा•--वदामि+जञ्जनदर=वेदामि सञ्जवहर (वस्य स्वर्ववज्ञाः) <del>वरि+उपावा •वरिजयाओः ( बार्ल्युशन</del> ) रवश्यर-पन्नर (स्त्रोन्स) लंबमे+स्राध्यक्तमा सहितं. ( लंबनेऽजिल्ह्या ) वेनो+सनुरो क्नोनो स्पूरो न (वेनोऽन्स्व)

१ उसापमा लाख इन्त समें चैत्र विवास एउने इला सालो कीर्य कर मन कीर्य कारतो इस्त कर प्रजीपने महिन कारे बान क

बचा -इलामो बीर्क-सरालीचा (सन्वर्गिकविः) संवर्धे (अन्वर्गेनिः)

### नम् सत्पुदय निवेदवायक सम्बद्ध स्ट³ सत्त्वा स

निवेदनायक सन्दर्भ झाँ करवा अर्च्य यो नाम साथै प्रशास बाज थे.

षणकी साविधा व्यांकन होत्र तो 'का' सने स्वर होत्र तो आर्था सुभाव से जेलके—

सबेधों (सबेधः) न देखों । सजवार्ग (सनवयम्) न सवर्ग सविर्दे (सविरतिः) न दिर्दे । सजायारो (अनाचारः) न मापारो

## १ फम्मपारय (फर्मघारय) धमाध

विकेषण आदि प्रपदनो निकेचारि उत्तरक साथे समस्य नाम हं का तमस्यां दल भाग कर रहा दस्ति निमयियां वरधन है तैनी का समस्य समसाविकाण न होत है.

प्रतास्त्र विशास प्रवास प्रवास । विद्यान है (वंतरकार)
परितः है (पवित्रस्त ) वेद्यान है (वंतरकार)
परितः है (पवित्रस्त ) वेद्यान है (वंतरकार)
परितः है (पतित्रस्त )
परितः नारितः नारित्रस्त )
परितः नारितः नारित्रस्त ।
परितः नारितः नारित्रस्त ।

निर्धमन्ति } (अधिष्यम्)

क्य<del>ोफ क्रिक</del> (क्सीक्रम्)

नस्पोर्त-स्थान (नवीभीठः) नस्पर-नवस्तं (नवस्त्रम् )

सामग्रिमस् ( अन्यक्ति )

विकेरक्र्यंत-रत्तपडो (रक्षपडा)-रत्तो व्य पसो बडो सुंदरपडिमा (सुन्दरप्रतिमा)-सुंद्रय व पसा पडिमा परमपुर्व (परमपदम्)-पुरमं च वर्ष पूर्व च

परमार्थ (परमपदम्)-परम च वम पय च विदेयनोत्तकार-रक्तसेमो बासा (रक्तजेताऽज्वा)रको ब पस सेमो ध

सीतव्यं बर्ध (बीतोज्यं ब्रह्म्) सीम व स्त उन्दं व

विकेप्सूर्वतः बीरिजिपियो (बीरिजिनेन्द्राः) वीरो म यसो जिपियो उपान्नपूर्वतः-वेदायमं (बन्द्रातवाम्)-वेदो इव मानमं उपान्नोकाल गुद्धवेदो (मुख्यन्त्राः) सुद्दं वेदो स्व

तियांचेते (कितकान्त्रः)निका चंतु व्य भवनतकार्यन्त-जन्माचितिसरं (अञ्चानितिसरम्)ःव्यन्तार्थः वेसः निर्धिरं

> नाजधर्ग (बानस्वस्) — नाणं चैस धर्म पर्ययदम (पर्ययस्) प्रवसेश्व प्रदर्म ४ विस् (विस्) समाध

कर्मवाद क्यान्तर पहेंगी अस्त्य हंक्याईक होन ही दिंदु स्थान बाव के उने हे ह्यूसूनक के मारे एक्यकर्मी करे गुरुवर्कतमां क्या के कर्म करते का द्वार हो कीई कीई देशकें हैं बाव है उने रूप क्यों हीके हैंगाउन्त बीजिंग स्थानी वैसे बाव है तिस्रोमं विस्रोई (विस्रोकम् विस्रोक्ती) विण्डं स्रोमाणं समाहारोचि

नवतत्त (नवतत्त्वम्)-जवण्दं तत्ताणं समाहारोतिः चठकसार्यः ( (शतुःकणायम् )-चठण्दं कसायाणं समाहारोतिः चत्रकसार्यः ।

क्षेत् वेक्ना समझर दियु पुंकितम् एव वाव सं तिविगण्यो (विविकस्यम्) तिण्डं विगण्याणं समाहारो सि

# < व**दृष्यीदी (बद्दमीदि)** समास

भ पराया तमान करों होत सभी सन्य परनी प्रयासका का समानामा होत क तथी का सामानिक पर बीजा नामनु विशेषत बात क तथा निमित्त नचन समे किंग, विकास प्रमाण बाय के तमान स तमान सो सीकिन्तु विकेषत होत का प्रमाण का तो का सदया के प्रयोक्त समुमारे बात का

> कमसायमा नारी (कमसानमा नारी) यदमुदी कम्ना (सन्द्रमुखी कन्या)

- श्रा नाममार्ग प्रवास्त्य वर्तु करीन विश्वपम को छ कमे पर्कानुं पद विशेष को छे. कोई बंकाल उनमान-ठम व कारवारन सुबक पद पम पहले कार्य छ
- ३ जा ममान वे अवदा चना समानाविकरण (समान विमनित्तस्त्र)
  - परानो बाद छ. ४ कार्य उपान समान विमनित न होत स्वीपन का समान बाद छ

तने व्यक्तिकाम प्रक्रमीति करे के

५ का समस्या निम्ह करते प्रयास तिरायने सर्वे विवरिक्ती प्रक्रीय कार के

विक्रय-परावालो भुजी (प्राप्तकानो मुनिः) पर्च नार्ग व सा शुरोता-क्रियकामी युक्तमही (द्वितकाम स्यूसमङ्ग)-क्रिमी कामा केव स्रो

किशारिगको सक्रियो (जिदारियमाऽवितः) क्रिया व्यक्तिको क्षेत्र सो

वचन' बहुबंखयो सुमी (मद्दर्शना सुनिः)-महु बंखनं सत्तो खा

क्य-संबंदरा मुक्किया (खेतास्वराः मुनवः) सेथं बंबरं आणं ते विश्ववया साइवा (श्वनताः साधवः)=विश्यारं वयारं केंग्नि हे

क्त्यौ-बीरनये गामो (बीरवस बामा)-बौस नस बीम सो-कुन्बसीका गुक्त (कुन्बसिक्त गुप्पा)-कुन्हो सीक्रो इस्त भा

व्यक्तिमान्त्रम् । चक्रकरयो सरहो (सक्रकरतो सरहा भक्तक क्रमें अस्य सो

निकेनपूर्वरद-नीलकंडो मोरो (नीककच्छो मधुरः)-नीसा कंडो जन्म मो बानल्क्तर चंद्रमुदी फरना (बार्ट्रमुखी करना)न्यानी

धव गई आए सा-न्त्रकारमपूर्वपर-करणक्या साहबो (करणक्याः साधनः) करमे

चेम वर्ग कार्ग ते

क्य पुनसम्बक्तिसो कियो (पुरसर्वनकेशो किन) पुनो समा किसेनो बस्त सो निष्यं कार्यं से के साम जा जि. बिहु जारे वर्ष रोज रोज जा व बाहू संप्रकार जाए रोचे रामण शिवण रोज प्रमाद राज्य सामग्री राज्य बाव स

ध भवुका (धवुका)-बाँच युका झरंग या भक्तदा (धनाच ) नवि बादा झरंग गा सम भवुक्तसा वुर्तिना अनुवसः वृत्तव कनिव क्रकसा

क्षरप सा मन्दरका मर्ला (धरवया गृक्षि वर्गीय भग्नत्र क्षरम सा

निर्-निर्या क्रण (जिल्या क्रन भिज्ञामा रया करण मा निरादामा वस्ता जिल्हामा कल्या) जिलामा महारा क्रीय गा

चि-विस्ता क्या (विस्ता क्या)नित्तरं स्त्रे कला ना विनर्ग सावर्ष (विनरं भाक्तम् ) विनमा न्या क्या ते नद ) नर्गाता भाविमा विदेश् (निव्यं भावार्षे म ) विदर्गत। नेतार्थ तर्म मारिमा विदेश ना नपुला निमा नस्य (नपुत्र निजा नस्यति)नुसारि

सद प्रिमा सम्पद्ध स १ भ्रम्पर्देमाय (भ्रम्पर्योभाय) समान समर्थ सर्व अध्यः अस्पर्योभा सम्पर्धनाः सम्ब पार

ए का समान रेपायमा का मंद्रिका क्यां ए अन्ते प्रेम भग रोप ने स्म यान ए सम-प्रविकासित (स्वितिस्तिति ) स्वितिस्तित स्थान

एप-उपनिश्वमिरि (उपनिश्वमिरि) निश्वमिरिका समापं विदेशि समे बच्च अनुसिर्ध (अनुस्तिम्स्) त्रियस्य पच्छारू स्वर्ग साह्य सह-- अहस्ति (यथाराष्टि) सचि अवस्त्रामिय-राष्ट्र हुन्द-अहर्विह (ययाविष) विहि अवस्त्रामिय-विष हुन्द-सहि-(अधि)- सम्म्राज्य (अन्याग्मम्) मध्यमि इह (सासमि इहि-)-स्मराज विह

'पर---पर्मवर' (प्रतिभारम्) नयरं नपरं ति-रोव मण्डाः पर्मातं (प्रतिविनम्) विष्य विश्वं ति-रोवः पर्यरं (प्रतिपृथम्) यरे घरे चि-रोव वरेः

७ वद्दसेस (वद्दस्य) समास

स्वस्य सम्बन्धीः

काण स्थारण प्रश्नो कान्त करता ज्ञारी प्रकार यहे हं उसे कार्डीयों तीर बाब ह र एक देव कारण.

जिया (जिनाः) जिलों स क्रियों स क्रियों स कि. नैसार (वेस) नेसे स नर्स स लि

विस्य सम्बन्धीः

विषय (विनये) मामा य विमा य चि सहुय (अधुये) साम् म समुरो व चि

का प्रमाप सहित्यी अदिकां समाणे बाको यही बाजा क. वार्णांक रोत ने मंत्रकृता किस्तुत्वाचा अ शहराती करणो वार क भीत्र हेस्पन्यत्वेत्वतीय स्व पोट्टा बाजा क्याती ( ->-) प्राचन क्या अस्तान यही लेक्नायी हो ज जनमान सीमी क मारे विदार्गीयाय संस्कार निवास क्याना सकी साथों करारे.



तिसम रे उ (फिन्ड) तिस्ड नियम ( नारको तिवस ५ (प्रियः) १६ बाजन ५. (रामन) महर देलः पुकार कि (इनक) इन्हें करीने करी समान राज हेसरा वि (देसक) देवाध्यार,

अपरेक्स.

लाख वि (सप्त) व्यु-विश्वास व (छन) स्थान बाल निध्वप्र को (निर्देश) मोश

निराधी सालव धानित नियाण व (निप्रात) नियमं, करन हेत्र.

<u>वेदर ) २. (नुपुर) शब्द</u> निवर 🗼 मानरच विशेष न्दर TSC BING पैश्वर ४ (यम) गामध् पच्चायीकी (दे) उत्पाक पश्चिमका १ (प्रतिस्थ) सम पक्स वि (प्रथम) पटेश्रं व्यक्त परिचा की (शर्व) समा olu.

चैयव ६ (येवन) कन्द्र मित्र पंप्रचारि नि (म्बर्चारिट्र) म्बर्फ राज्य करवार. **पड़ १.** (तम) भूषिः तासर्वा

वास्ता की (सम) चुनारी क्रीकरी हराम की माचित्र (मानित्र) मानि क्यार समीध

विद्विप्रो नि (बक्रिप्ट) तर्वेदी

महिला को (धम) ती नारी मस वि मञ्जूष जन्मतः, रिवेष (एस) सर क्षय ५. न. (स्प) वेहकारित

होनक भारति सकिय वि (मक्ति) गुपर, मनोइट खुदावि (∰प) कोहप कान्तक-बय छ. म. (मन) मन मिन्स ववसाध (म्बरनाव) न्यापर,

कर्म उक्स चाया की (शक्) शबी कवा चाचीकी (गरा) वाची वचन विपैतिय वि (वितृत्विकः) firem onto. विरक्ष पि. (सम) भ्रम्य योक्

विद्वर नि (निद्वर) दृःबी न्याङ्क विवेच ? द्व (विकेष) विकेष, स्टब्स्ट्रक्यों विकेष

मि (मिन्द्रेन) वर्षित्



वे निवुज्जवार्द तबोबबार्द सेवित ते तथा सुप्तम्मा । बद्दो ज बब्ध बरिप तुबकरे सिमेदस्स स्थिबेद बाग मूळं सम्बदुष्ट्यार्च निवासी सविवयस्य समाधा निवार्द्दा वेपने जगदासस्य परिवयची इसक्रमोगार्च देसमे संसाराज्ञ्यीय बच्छेडो समयबवस्यायस्स ययम सिक् मूला पालिबोन गमेसिस सावते न जोपनित बालोदर्स न सेवस्ति वस्ती में प्रस्तान परिवार्टन प्रदास क्रिकेट गया बेस्सरियो वित्त सम्मया वि दिस्तीयन्ति सि ॥

सुसाराह्मा वहवा सम्बद्धानास्य एतम शास्त्र क्रिकेट काओर भूमा (पिक्को न गोकेटिक काओर क्रिकेटिक काओर न सेविन सम्मे न पेक्सिटि परमस्य, महास्राह्मात्र उत्तमपुरिया न सोविटि संहाद । तेव सरमवादारा पुटिमया विसामो कायव्यो । माने एक्सिटि गन्यूग पिकनं बाज्यु पढिमा । सन्त निकारियादिसिटी विभोगितुरात वह्मायाच । सनमक्ष्येककरसा विपिन्नो सदम्बद्धियोही। ११ ॥ युष्ठा । मुझे वि संत्री नियमे परमाकेटकाई समस्य मूयद प निकार्यकेटकारां माविन्नाह । वेवस्थानसम्बद्धाना सम्बद्धाना माविन्नाह । वेवस्थानसम्बद्धाना सम्बद्धाना माविन्नाह । वेवस्थानसम्बद्धाना सम्बद्धाना सम्बद्धाना

वेचताणवाणक्या वच्चारकवाणिकारा ।
व्यावार्ति नामनित पुक्करे के के देश है । १३॥
विराद्ध वाणिक गुरे विराद्ध वाणिक व्यविश्वकरमारे ।
सारवाणा विराद्ध परिद्ध वाणिक व्यविश्वकरमारे ।
सारवाणा विराद्ध परिद्ध के प्रतिकार विराद्ध (१३॥
सारवा सक्त वाणी विवादक समाजदिवस्त अंश।
सोमगुर्वेदि पावद न हंगे नवसरपादी ।
कमगुर्वेदि पावद न हं वचसरपादी ।
कमगुर्वेदि पावद न हं वचसरपादी ।
कमगुर्वेदि पावद न हं वचसरपादी ।

सारपुर्वेदि पायर न सं "बर्गियरवर्दे ॥"॥ १ ते-विकासम्म १ तेव्यंतः



- ससारमा बुक्तो सेव्ने दे क्यारवा विवेद पाये के.
- प. त समय बायकपी कमलबंदे काम स्थाने क्रिक स्थ्री.
- बरेलुं छे नियालुं असचे एक ठेकेने बोधिनी माध्यि क्लोबी होता !
- तीर्थिकर गंभीर वायोवंद्वे उनालको वेब-पानक समें मुख्योगी सुनामा विका करे छ क्ये व तामक त्रका की वर्षन-बान सब बारिक व्यव करे छे क्ये साहारपदित पुत्र सोकर केवे छे

पुष्पों के दायमां कैश्य क्ये नजरी क्यानोए मानसीमां कत्तम बना एक उपर पुष्पोत्ती कृष्यि नहे.

- बच्चे मुक्तमां वर्व नीतो कट्टा ठर्नको सनस्त कपवासा श्राप के.
- द्दान हे. १ क्षेत्रोनी पासे सदमस्यों घन के तह लाडुबने
- परकोडन सय नरी. ११ स्टिमनोपेर साहार-देह सायुग नमें वर्स नदी ठेवी व
- वे भगना सुवाबाका है १२ के बिकि ग्रमांके सन्दोर्त साधना नर्द छ व उस्त का
- ९२ में विश्विस समाज सम्बन्ध कायक कर छ त जस्र क्रम वासे है.
- भे से शक्ति उच्छं पन कर्या दिना महिला-सैपम-क्रिने तपस्य धर्ममा वपन करे के त संसारस्यी समुद्धी की जब के
- १४ महानक्षी भन्धकारची मेंच चयेकालोंके इन दे व
- वर्तम क्षेत्रप हे
- १५. वे इम्मण्ड वहेंचं सिक्याप्रणी बीचणी मन्त्र क्ये वे पक्कमी देमचेंद्रस्थितीती मदस्यी मस्मांची मुख्य नाने ग्रन्थ प्रमुख्ये.



बकारान्त पुरिस्ता सम्ब (सर्व) यद्वय पक्रय

य सामी समी

री, सर्घ

सुखे सरवे सम्बा

त. सम्बेश सब्दोर्च

समोहि समोहि समोहि न सम्बाय सम्बस्स सम्बाय, सम्बेमि सम्बाय सम्बायं

समाहि समाहित्तो

र सम्त्रो सम्बामी सम्बाद, सम्बन्धा सम्बाधी सम्बाद सम्बाहि सम्बाहिन्दो

समा

सम्बासुन्त्रो सम्बेहि सबोद्दिग्वो सबोद्दग्वो सरोधि समाव समार्थ

• सम्बस्स

ह. सम्बद्धिः सम्बद्धिः समाच समाचि समाचि

मचोस सप्येस

रं. हे सम्ब सच्चो सम्बा सर्वो

प्रके

प माने दीस विस्त (विश्व) वद-उम (वस), उदय-बमय (उमय) अन्त (अन्य), नन्तयर (अन्यतर) १पर (१तर), क्यर (कतर) क्रथम (कतम) सम (सम), पुम्ब (पूर्व) सवर (अपर) वाधिक विकास (विश्वास) उत्तर (उत्तर) ग्राव (स्व), term for triury by free

निवेप. बदा-बद्दमां दपी क्षदक्तमां नाम अ वने अब्रोका ब्युरनम्मा उद्दरह, ब्रह्म्यं समन्द्र, ब्रमम्बं नाम के नीजां स्पो स्थान म 🛊

## ध्वनामना स्वीधिन हुए।

कारमंत्र बीवित वर्षमानां को साध्यमत बीवित समर्थ date um b.

विश्लेष-प्रदो विभक्तिमा क्षत्रकरमा पर्दिन प्रस्तव पत्र प्रवोतनी अनुसारे सागे है अने आर्थमां 'सि' प्रत्यन पत्र आगे हे

बाबारका सीविंग संद्या (सर्वा)

**UEU**0

सव्यामी सम्बाद सम्बा

५. सच्चा

री सच्ये

व सम्बाग सम्बाद सम्बाप. सम्बाहि सव्यादि सम्बाहि सत्त्वेसि सम्बाज-ने, सम्बासि ¥ -4.

सम्बत्तो संस्थामो सम्याउ सम्बत्तो सम्यामो सम्याउ सच्यादिक्ती सम्बासक्ती सम्बाहिण्डो

र सच्चाम सस्वार सन्वार, सन्यास, सन्यासं सम्ब

🖈 हे सम्बा थकारान्त नपुसक्तिंग सम्य (सर्व) सम्बाद, सम्बाद, सम्बाधि प की सरदा

सम्बार सम्बार्ग सम्बाजि शंडेशय

बाकीनां क्रय पुस्सिग प्रमाण त्त-पा(तद्) पम-पतः (पतद्) कः (यत्) फः (कि.स्)

इस (इदम्) बामु (धदम) शरह (शस्त्रह्) तुन्ह (पूप्पद्) कारतीयां क्यो.

त-न (तव्) धान्दनां घने खिंगनां ऋषी offer.

पद्धय ૧. સાસો સે

बट्य०

744		
	तेज हेर्च दिजा केज जेर्च विचा स्तास तस्स से	वेकि वेकि वेकि वेकि वेकि, वेकि बास वेकि बाव वाणे सि-
4	बस्य वां वम्हा वन्ते वामी वार वाहि वाहिस्तो वा बनो, जामी बाद वाहि बाहिस्ता वा	मेसि जाम बार्च वचा वामा वाठ वाहि वाहिन्दों चासुन्दों, तेहि तेहिन्दों, तेसुन्दों वन्ते बामो बाट चाहि चाहिन्दों बासुन्दों केहि केहिन्दों सेसुन्दों
•	वर्षिस तिमा तत्य, वर्षिः, वंशि बर्षिः जिमा पत्य, पर्विः, वर्षिः, •वादे ताका तत्रमा	तेस वेसं क्षेत्र, वेसं
ता+ ती का की कौर्किम		
प ची	रहरून सा- र्व	बहुपकन तामो ताड ता तीमा, तीमो तीड ती- तामो ताड ता तीमा तीमो तीड ती
₹.	तान तार ताप तीम तीमा तीर, तीप.	ताहि, ताहि, वाहिँ साहि वीहिं सीहिँ
त्यहे कार्यत्र प्रवेश्याचे रक्तां इस अर्थमां कृतस्य के +तायेती जाये बी, काये की, प्रवासे पर्देशस्य यो इसी का विकास के हु १२ हुसी		

242.0

तीम तीमा तीर तीप विचो. बीमो बीड विचो बीमो बीड, वीदिस्ता तीविन्तो वीसन्तो ₽ ताभ तार तर्प, तासु, तासु तीम तीमा तीर वीर वीस तीसे

च्या-स्त्री वो यन क्यो आ प्रमाचे जानता. नपुंचकरिंग प्रस्थान नहर्वजन

कार कार्रे कावि τ. et } α चारं वारें पाचि क्कीनां स्थी पुल्किय प्रमाधिः

व (यत्) पस्टिम

प्रकारता पहुच्छन

प जो अप g. rt. ≠

ताउ ताडिस्तो

अहे का केरि केरि केरि

ष खेल, डोर्च डिका

बेसि, बाप, बार्च ₹.इ. जास कस्त

116

शतो. शामी. मात्र माहि

< बम्बॉ बतो जाओ

कराव के

शाव बाहि, बाहिस्तो जाहिन्त्रो असून्त्रो. केटि केटिन्तो केसुन्तरे, ÆΙ य बस्सि बीम, शरूर पेस. जेसं वर्षि, वंसि +बादे बाढा डाइमा दा∹भी (यत्र) स्त्रीकिंग **4** E1 कामो काथ का प्रीमा प्रीको बीड मी ৰা 💉 द्यामो तार बा बीमा बीचो बीड बी

त बाम ताइ बाप माहि, बाहि, माहि बीम, तीमा तीइ बीप बीहि सीहि सीहि प. इ. जिस्सा श्रीसे बेसि बाज शार्थ शर्मि माम राष्ट्र आप बीम बीमा शीर बीप.

पे काम काइ जान सन्द्रा, सत्ती जामी काड जादिन्ती, बची बामा बाद बासन्ता वादिन्तो बीम बीमा बीह त्रित्तो त्रीमी, श्रीउ

बीप जिस्तो बीको बीहिन्तो बोसन्तो श्रीव श्रीहिन्ती.

**+माडे मारि जमे क्यों जगारे के बच्छे तेवा कर्ममां** 

व साम बार्, बाप. मास. वास

बीब, बीमा, श्रीष, बीस, श्रीसूं,

THE नर्पुसक्रीयग

बार नार्डे, श्रापि

कती कामी काउ काहि

शाकीमां स्य प्रसिद्ध्य प्रमाचे 🕿 (किम्) पुर्स्छिग ব্যৱস্থান बहससन को के 4î. e के, का त. केय केय किया केहि केहि" केहि **१. इ. कास कम्स** कास देखि काण काण

कचो कामो काड काहिन्तो कासन्तो काडि फाडिम्तो का केटि केटिन्सो केसन्सो कस्सि कमिम कत्य देस देस कदिं कीस.

⁴. कियो कीस कम्क्रा

+काडे कामा कामा का, की (किम्) स्रीमिंग

9 **4**57 कामो काउ का

कीमा कीमो कीउ की. भी कर. कामा काउ का

कीमा कीमो कीड की त. काम कार काप कादि, कादि" काहि

कीम कीमा कीर कीए कीड़ि कीड़ि बीडि

+काहे बानि प्रव को नवारे अवदा करे बनते एता अर्थमां

बपराच छे.

प की 🛊

Q4e भ विश्वत कोसे कास केसि काण, काणे कार्सि, भ विश्वत कार कार कास कीम कीमा की। कीए

ं काथ, बाद, बाय, नम्हा कशो कामी कार कत्तो, कामा काउ काहिन्छा, कासून्ती कारिको चीम कीमा कीर कीए.

किसो कीमो कीड किसो कीमो, कीव चीरिको बीहिन्ती बीसन्ती

थ. काम काइ, काय, कास, कासे कीम कीमा,कीर कीप कीस कीस

क (किम्) वर्षस्करिय कार कार्रे, काचि v eft. Fec.

राजीयों क्यों पुलिस्य प्रमाने पत्र पत (पत्रक्) पुस्सिग

बहुब्बत. पद्मवन पस पसो वसे षप

रचं रणमो et und षप. पभा

पयति पपति वन्ति त. यसम पर्यं प्राजा

पर्यास प्रमाण प्रमाण सि पत्ती, पत्ताहे, (पत्रती) एमती प्रमामी प्रमामः

पवि. पर्यक्तिको पपसन्तो

🚆 है पबस्य से प्रमाशी प्रवाद व्यादि प्रवादि प्रमादिन्ती प्रवासन्ती

पश्चादिन्दो एमा

ध. अयस्मि ईमस्मि एमस्सि, एएस्. एएस पमस्मि युःच प्रमंति

पमा पर्द (पतद) स्वीर्किंग

र पस पसा इर्ण इक्सो प्रमासी प्रसाट प्रसा

र्था थांका

र्णामा र्णामो र्णाड र्णा-

थी. पर्य पर

कपर प्रातके

व वशास प्रमाद प्रशाय, प्रशादि प्रशादि प्रशादि

पाँस पाँसा पाँच पाँच, वांद्रि वांद्रि वांद्रि

ेपमाम प्रभार, प्रभाव प्रमाण-र्ण, सिं,

^{क ∫}र्योग र्यांगा, यौद पर्पास प्रधासि,

पॉप. मे पर्वेष-र्ग

🕈 प्याम प्रभाइ प्रमाप 🔻 प्रभन्तो प्रमासी, प्रमाठ

(पमत्ती) प्रमामी प्रमाठ प्रमाहिन्ती प्रभासन्ती

प्रसाधिको

र्पाम पाँचा पाँच पांच वालो वाँमा पाँच वाँकिलो

र्ष्यक्तो प्यक्ती वर्षमी

र्पात प्रांकिको

ट प्रमाध, प्रमार प्रमाप, प्रमास प्रमासी

र्पाम पर्वमा प्रीप्त परित परित

पत्र (फनद्र) नर्पसकर्मितः

पर्म, पस इर्थ, इसमी प्रमाई प्रसादित.

.

बादीनां १५ दुन्तिय प्रमापे

ध्म (ध्यम्) पुर्विद्या पः **जय इसो इसे** क्रो ध्मे ध्माये वा

की हो। इसे से व इसेर्ण, इसेल इसिया वेगा. केवा किया

र. } इमस्त से भस्त ४.

इसची इसामो, इसाब

रमाहिन्ती प्रमा

इमस्सि इमिम, बस्यि

१इ इमंसि

इमा इसी (इदम्) क्वीकिंगः

५ इमा इतिमा श्मी श्मीमा

गी इसे, इसि इसे स द ध्रमाच इसार, इसाय,

इमीम, इमीमा इमीइ हमीए.

वाम चार याप.

च } इमोध इसाइ इमाए, ■ } इमीस इसीचा इसीइ

श्मीय, से [श्मीसे] र्व क्षमाच्य इसाइ इमाय, इमेडि, इमेडि, इमेडि वेडि वर्डि वेडि पति पति पति

इमेसि इमाज इबार्च सि. इमत्तो इमाधो इबाट इमाहि

इमाहिल्लो इमास्न्ती इमेडि इमेडिका इमेसुको

हमेसु, इससु

पस पसं

इमामो इमाव इमा

इमीमा, इमीमो इमीड इमी

इमाहि, इमाहि इमाहि.

इमीबि इमोबि इमीबि चाहि नाहि वाहि थाडि माडि माडि

इसाप इसारी सि इमेरि इमासि इमीज इमीर्च

इथलो इसामो इसाव

(मी-

इसची इसामी इसाव इसाहिन्ती इसाहरूठी

मास भास

इमीम इमीमा इमीइ इमीप, इमिन्तो, इमीमो इमिन्तो इमीमो इमीट, इमीठ इमीडिन्तो इमीडिन्तो इमीसन्तो ष १माव १मार १मावः श्मास १मासं

स्माहिन्दो

रमीम स्मीमा स्मीर स्मीमु स्मीसु इमीप

इस (इदम्) नपुंसकर्ष्टिग पर्यादं स्वयो इर्ग इसारं इसार्वे इसार्थ

बाबीनों स्प पुरिस्य प्रमानं. भम् (भव्यु) भाते पेतुं पुस्सिय

प. भइ अस्

थी अस ट. समुगा

^च्डेममुको ममुस्स •

मभु समुद्रिस्तोः स. सपस्मि इसस्मि. वमस्मि, वर्मसि

प. सह असू थै. सर्म

। समुनो समुत्तो समुद्रो समुद्रा समुनो, समुद्र, भम्दिन्तो भम्सन्ता

भगम भगमं. स्त्रीदिय

ममुमो समुद्र समू.

यस्यो भगड भगमो

ममृद्धि ममृद्धि भमृद्धि

भमुजो सम् समुपो सम्

समय सम्ब

 सन्य सस्मा, सन्द, समृद्धि, समृद्धि असृद्धि सभूप. समुम समुक्षा समृद्, समृद्र समृत्र ण.∫धर्मूप.

समप

धमहिन्तो

थमप्.

प बद्द अर्मु री. सम्

प्यवस्था

र्णमि. वस्तिः, वस्त सस्द

अभिक्र, समित

वे [मपा]

कर्म

समुक्ता समूची समूठ असुकी समूक्ती अमूक

े बर्म्य समुद्रा, समृद्

नपुंसकर्किंग

नम्ड (अस्मन्) हे (वर्षे सिमानो समावे)

€ की. में, सर्ग सिमें कई के अपने, बरहो बरह के

प. इ. मई सहर्ष किया, असह, अस्ट्रे, सरही भी वर्ष

य सि. मे सर्ग मगए, व्यवदेशि व्यवदाहि, वस्य मभार, मह मप, मयार, सम्बो, से

च ) में सद, सब सह, जे जो सङ्ग्रह सम्हें, मह मन्स मना भन्द, सन्ते, सन्दो, सन्दोण-पं

बम्द्रिन्तो अमुमुन्त्रोः

समृद्दं समृद्दं समृद्धि

अमूरे अमूरे अमूजि

समाज-वी सहाय-वी सरकाच्य-वी

समूच सम्भा समृद्द समृतु समृतु

बरुवयन

 महत्ता महमो-ठ-ममचो ममामो −उ−क्रि⊸ दिन्दी सन्दो बिन्दो ममेदि-दिन्दो-सन्दो ममचो ममामो-उ-हि-बरहत्तो बरहामो-ब-हि-हिन्तो ममा महत्त्रो महाधो-उ-हि-हिन्दी सुन्दी बारहेडि-डिस्तो-सस्तो किन्तो महा मरमची मरझाओ∹उ∹डि दिस्तो मस्या

244

🖣 मि सदमसादमप्,मे अम्बस्यिकिम सम्बस्यि समस्ति-सिम समिसि महस्ति-सिम महसि मनास्यिं सिम मनासि अम्हे, समें सहे सब्दे [मर्मिक्की]

बम्बस्-सु, मम्देस्-सु, ममसुर्सं ममेसुर्स महसुन्तु महेसुन्तुं, मग्रह्यु-सु मन्द्रोसु-सु, भग्दास्-सं तुम्ह ( युप्पह् ) तुं (वने सिंगमां समान ) में तुम्में तुम्हें तुम्हें ᇤ को तुम्मे तुम्हे तुम्हे

तुक्त तुम्द तुम्दे, उम्दे उन्हें तुप्हें, उपहें, मे

प्रति तुर्वत्व थै∟ तंतु तुवं तुमं तद तमे तप मे तुम्मेदि, तुम्हेदि तुम्हेदि य. में दि, देते तहतद.

काशेदि काहेटि तपहेर्दि तुमे तुमद तुमय.

बयहेदि तमे तुमार

च. } तह है ते हुम्ह हुइ च ∫हुई, हुव हुम हुमे तुषों में तुष्म तुम्ह नेता बमा रुख बना तुमो तुमार, दि, दे इ. ए, तुम्म तुम्ह, तुत्रस क्या उन्ह उस उम

तुष्माथ-चं, तुपाय-चं, तुम्हाज-क तुदाज-क

तहत्ता तहंगा-उ-हिन्दो तुपत्तो तुपानो उ-दि-दिन्तो तुमा

तुम्हाच-जं तुमा<del>ण-जं</del>,

तुमत्तो तुमामो-उ-हि-दिस्ती तमा तुरचा तुरामो-उ-दि-किन्ती नका-तुम्मत्तो तुम्मामो-४-४ि-

तुम्मको तुम्मामो-उ-दि-दिला मुन्दो तुष्महि-दिस्तो-सुन्ती तुम्हचो तुम्हामा-उ-हि॰ हिन्त<del>ो सुन्तो</del> मुम्बदि-दिन्तो सन्तोः तुम्सचो तुम्समी-य-दि-

दिन्दो, तुम्मा तुम्हको तुम्हामी-४ हि-दिन्ता-तुम्हा तुम्बत्तो तुम्हायां-उ-दि-विस्त<del>ो तुम</del>्हा तुष्य तुष्मु तुम्य तमः वहिन्दो

क्ति प्रमो नुमहेहि-हिन्दो-सन्तो तुम्बचो तुम्बाबा-उ-दि-दिन्दो-सन्दो तुम्बेडि डिन्तो-सुन्ता रक्ती-रक्तमा-र-हि-दिन्दो सुन्दो रप्रेडि-दिन्तो-सन्ता बस्त्यो उम्हानो उनी-हिन्हो-सुन्हो बम्बेबि दिन्ती-सुन्ती

स. दुमे दुमप, तुमाइ, तर, तप त्रीम

ਜ਼ਬ ਬੰ

तुवस्मि, तुवस्मि तुर्वसि तुमस्मि, तुमस्सि तुमसि तुरमिम, तुर्दिस तुर्देसि द्रमामिन, तुष्परित तुष्पंति

**?**(4)

तुम्बम्म, तुम्बस्सि, तुम्बसि तुम्हिमा तुम्हिस्स तुम्हिस

उपयोगी रूपो

थम्द (थस्मद्)

प घडें है

भी मंगर्ग ८. सप, सद

च }में मम, ■ }मद्द मञ्ज्ञ

५ ममत्तो ममामो

न महमऋते

ष्यः तुंतुर्म Ф.,

च क.तुद्द तुव

च नुमय, तयः

पं तुमत्तो तुमाभा

ट. तप, तुमप

भग्देस तुम्ब (गुप्मद्)

तम्मेस तम्देस

बस्दी, भरदो

थरदेषि ।

कार्य अस्दाण बाइसी भादामी

तुम्दे तुम्हे

गुप्तिहि तुम्हेहि

तुबसु-सं, तुबेस स

तुमस्-सं तुमस्-स-

तुबस-सं तुबेस-सं

तुन्दस्त-सं, तुन्देस्र-सं

तुम्हस्-सं तुम्हेस्-स तुष्मासु-सु, तुम्दासु-सु तुन्हासु-सु

तम्मय-सं तुम्मेस-सं

तुष्माण तुरक्षण

तुष्मत्तो, तुष्मामो

240 गयो बोरिजा औ. (६ रहरिय) देरी. मध्यमारिया औ. (मनवरिया) निकस दि (गम) वेपावेस

सावार्थः विष्येष ५ (मि^{ट्रे}न) मान अञ्चयाह ५ (महान्द्र) उपरत प्रयास इ. (बच्चम) व्यक्तम परेपरा बी. (छम) प्राम्य बद्धरिक्रम है. (इस्तीक) उपा-र्जन कोले. परिधाय मि (परिका) वरिपवन क्षविद्याली (उपनि) माना पान्तरका को (बारण) ग्रेक उत्करम शास्त्र ररपुद्रशी शी (ग्रनी) इस्मी सूर्य

सप्पद्धप पु (जनर्भन) बाहुबैवर्ड बराकुमार ५ (नम) बहुदेश राजना पुत्र बामुख्यकी मोडी

अराहेकी की (सत) वसवैवकी कायब 💲 (शहर) नहांश्रीय

केड में (ज्येष) मीची चड तिविद्वारी (विभिन्न) प्रतासकारी (सन बचन नाबाउँ). उसम और (चित्र कि दीक्री कूट न (सा व्ह क्षेट्र, मान्ट

मिसी को (देवी) केवी पाएँ सह वि (वे) होरा बंध द ब, (बक्त) का, 'डेर्स'

बसाय ग. (स्था) योर्च एवं

विषरिक रेनि (निगर्तन) उन्त विवरीम 🕽 बिहसिम कि (विहतिन) ग्रेसा^{हेर} क्षेत्र सी संपुष्क होत्र एका क्योकिंग सामोगां की औ नक्षी (शहरी)

वादिर वे. (धर) वार्ष सूस इ. व (मूर) <del>बन्द, प्राची</del>

मोम प्र (सम) बालादि निपद

मारण ५ (मारसन्त्) मार्

नार्व वे

असी (इप्पी)

क्वरी (क्वरी)

मुख्य हैं उस स्तुषी (हपी)

इस्से (पूर्व)

२५९

विसाय ५ (निपार) चेर, चार **धारक वि.** (धम) केवल चेर १ स. (वेर) वेद समाजनि (सन्) होतु यनु ं पार 🖇 दुसमाच्य. [!] द्वाचानि (उपस) प्रदेशुं. सदी की (सकी) सकी बैनाकी ं संज्ञम कि (संक्रुप) पुष विषये. संदेत. सामि ५ (मामिन्) सामी नावड, अधिपति. सन्नोग पु. (वंबाय) संबन सेस वि (प्रत) बाफी मेक्स मध्यय (ৰৰি) শৃণাৰ্থকীন षु (के) निन्तास्वक बहुस्रो (खुर) भोरतर. शहरा है (हन्स्वा) बन्वका मोरहहा ( (ग्रुप) ग्रुप व्यक्त चारका 🤇 भा ३ पैत मुद्दा र्वसि (भार्) बसर बाद् बीसे (विश्वक) यारे छ। प्र पक्रसरिय (१) श्रीत्र रूपी संप्रति इसची चामर. (इ⊢विक्) तर स्वक, चवर} (दे) केस्त्र, प्रस्त प्रवर्ग} अस्ट WIPSI दप्धी ∫ पातुमो दार्पस् (का+वृत्) नश्तुं, उपद्य मारम् ) जपदो } (ब्य+एम्) तत **कर्**कु-मारम मक्कम् (काश्यम्) रचन्तु महे (प्प्र) क्यु व्यक्तात कर्ष क्युमब (धर्+मा) जनुभर करती शक्य (खन्। सर्व करने TUE **भासास् (भा**नपत्त) रानित कराबी कामानन व्याप्त बीह (काव्) तत्रका पामचे.

पमाय् (म-मार्) मान् करे सर्व (बर्) तब्बे शब्द बस्ट पव्यप् (त्रभात् ) वैक निमच्छ मास् (मार्) कर्म् विक्**ष्टे** (मिन्डी) वेन्ड्र संपन्न (तप्+वर्) मा न्य सीय रे (स्वनकार) स्त्रे प्राकृत भारती बर से पिपान पन्त्रहमो होन्तो तो बहु होन्तुं। शहर किया पुरवस्य गिर्णाती ता इकि परिश्त पराम मेच पार्वितो । समिसि गुजानं बस्कोरं क्सममिता। धुरको सर्वा सन्द्र एक्कानु । कालोच मयक पुरिकामा सामि! कतो में मर्था महिस्सर् सामिषा कहिय जो पस ति ब्रेह-माथा बहुदेवपुरी बरादेबीय शामी बराकुमारी नाम हमामी ते मन्द्र तमो जापवाण अराङ्गमारे छविसाया सोपण विवर्षिणी विश्वी किविमें देशिया सहा ! यह यह वासुदेवपुरी होक्रम समस्त्रमिष्ट कविष्टं साधरं विभासेहामि' सि तमी भापुविद्वारून बाइवतर्ग जन्महणरम्बन्धर्यः गमी वयवाध त्रराष्ट्रमारो । भर वर्ष दोश्त ता सम्बगुणसंपद्मा दोन्ता । है बीर्छक्रिकेसर ! तह क्रूजस अन्द प्रशाय बह न संसार

चिद्रक हुरै मन्त्रो सुरुत प्रणामो कि बहुफको होत् । च में मोन्तु सन्त्रो कवियो इसीय, शा मुंब वर्ष <u>स</u>क्रस्तरको ^{सा}

बारहे निवृद्धिमी ।

क्रोडि ।

**२६**०

साहर्षि हुएं जर ते भरिक्यमें तो सम्माहिए अस्ते मैदिस्स कैंकण चेरपार्रं बंदावेदि, तीप (वेदीप) मणियं तुम्हे दो जमें सह देवे तत्य वंदावेदि॥

दे बाहेर्दि काम्रगपदि समाविद्वि परिणय-वप भवागारियं पष्पदिति ।

कि मं कहं, कि या ने विश्वसंत्ता कि या सक्कणियमं व समायरामि ति पत्त्वस्ते स्वया झायवर्षा । में बेण नया स्वया, जारिल काम सुद्रमाह्न व्यवस्त्रियं । से तेण तथा तत्त्व तारित्त कामे दोरियनिवर्ष व संपरम्हा ॥ सं इण माम जेण सुद्र को क्लिय चित्रेत तुत्र सम्बं । वामिम सम्बन्धीय स्वयं नीया चर्मानु में। विसी में सम्बन्धयन, वेदे साम न 'क्लिया ॥ १.)

वार्तिम सन्दर्शीचे साथे बीधा बर्गतु मे।
किसी में सावमूग्यह, वेरे मास न विकास ॥१३ ।
सम्बर्धन सम्बर्धनस्य मगदमो सम्बर्ध किस्म सीसे।
सम्बर्धनस्य सम्बर्धन समावमा सम्बर्ध सि ॥१३ ।
सोसे जिसे साह दंसवनाजीई यरपसहिष्ट ।
साईति पुण्यामां सा देश इरस हरियार वेरे॥
इसक मराम साह सिहमको इसामु करामु म महीय।
इसक मराम साह सिहमको इसामु करामु म महीय।
देश समाव सामी (विशे स्वामी) में कृतीया करामी विमाद

दा क (विध्) सर्वनामना स्थान कि यू मूँ (विण्) सन्ने पिन-वि (मन्ने) प्रश्न तकाशानी कर्ण्य का दुनि सन्निक्सर्ग बात है. कथा, क्यान (क्यावीक्ण) कांत्रें केया (क्रियोज) को से क्य क्यानी क्यानीह (क्यावी) को त्रंच केयी (क्रियोज) को स्थल करंट केर, केर (क्रीया) कोइक क्येंच (क्याया) कोइने, केर (क्याया) कोइन कर क्यांच (क्याया) कोइने, केरी (क्याया) कोइन वर.

सामाध्यस्मि र कप, समन्ते इय सावने इयह अम्बा ह पपण कारजेमं बहुतो सामाध्य क्रमा ॥५॥ बद में बज्ज प्रमाजी, इसस्स वैद्यस्तिमाह रपनीय । बाहारमुबहिरेहं, सन्त्रं तिथिहेण बोसिरिशं ॥६॥ प्यो इ मत्यि में कोइ नाइमन्त्रस्य कस्स्तर। पर्व गरीजमणसा अप्याचमणुसासद् ॥॥। क्यों में सासमी बन्पा साजरंसजर्मनामी। सेसा मे बाहिरा मावा सम्बे संद्रोयस्वता ॥४। सैजोगमुका बीवेब, पत्ता तुबकपरंपरा । तम्बा सन्नोगसंबद्धं, सन्दं तिविद्धंण बोसिरिजं ॥धा

711

## गरिहेता मह देवो, बावण्डीव ससाहणा गुक्तो । जिवदन्तरं वर्च इम सम्मर्त मर गब्दिय ॥१०। गुक्रराही बाक्यो

- देवो शर्ने असुरोता समुदायथी वंदायेका एव क्रियेंगे क्षराह रहन की के भुकारेक्सने प्रान्ति करें 💌 बुश्चामाँ पडेकानो स्वार ^{करे}
  - के बारणे बानेकार्ट रक्ष्य वर्ष के ते प्रश्रीपते प्र^{त्यो} **Marce 9**
  - महिसा शैक्तम अने तथ ए वर्ग वैजोग इरक्मों होन के वैभीने देशे पत्र नगरपार करे छ.
  - में समुख्य पर्तनां त्यान परीनं केरत खाद्य करें। सोगोते ^{हें के}
  - के ते कोडएन कहमां तक गानी धकतो करी ५ वर्ष सम्बास प्रदेश संदर्भ को है।
  - हे बलाव । धर्मनी खपदेश आपवाधी उमोप मारी जन्म
    - सराम क्यों है. ररामीची अवद्यार्थ रहेर्च देनां व दनाई फलान हे.

ज्यारे पुज्यते साथ बात के त्यारे छाई थिएरीत बाव के
 दे ममा। त्यारा परम्यं छाई क्यों क्यों स्तुष्य समार तरहे निर्दे!
 भा तीवमा से द्वास के बाह्यस क्यां क्युं के ते व परमावमा

वाने माने छ. देशी शु समन्त्रीमा संचय का ११ मा संस्कृता कोलं बीक्न सरस्र छे !

१९ में मीरत एतं मज्जना मने मुनियो आवता होन मने के हमेर्छा परीत्यत्र() होन तेतु (प्रीयन सप्प्रज हो.)

भी मा सद छ करें का ताई छ ए प्रमाण इस्टका सनवास्त्रामें होने छ पण महासामान का नार्नु जग्द पांच्यु ज छ भि तुँ नहें छ के जा नार्य मारी छ छमे लग् मित्र कह छ के ना

चोराये एती छ का कमारामां स्त्याची काम छ है १५ दे माराये आ छोकामाने अने पेडी डॉक्टीमाने बची कडो

श्यरी शीपो. १६ एमा एवस्म कोओ दज्जा क पेस सारता कांच छ करांची आपे छै क्जे सारी पछि दोसन हु कांस छ !

> पाठ १५ मा सञ्चारशक शम्बा

१ या-या ) (गव पक : ६ छ (वर्) ए पक्ष-इक्ष : • भक्त (कर्ग्) शत २ दो १ (द्वा के : दक्ष (कर्ग्) शत १ दे : दक्ष (कर्ग्) शत

अपना विव ना पर्या ना नो आहे अपूनद्र ना अनूत

१५ प्रव्यस्य / (श्वरस्र) ११ थगाराह^{<७} } (एकत्वर्) थगावस } अभिवार पुण्यसम् १६ स्रोक्स } (गम्बर) स्रोक्स १२ दुवाहस १७ सत्तरम }(कारम्र) सत्तरह्र र

114

१३ हेरकः }(त्रकोरकर) तरस } ठर १८ सङ्घारहः } (शनास्तर) सङ्घारसः } असर १४ कोरद

यग एक एक्ट, इक्क स्थरतं स्वीतनं स्थितः स्पत्त ह क्स तम स्तो 'सम्बर्ध धन्दर्गको बेराज धन छ। को दी' करकी मंत्रीने सहारस्य गुरीम तंत्रवासक सन्दोध रूपे प्रकरणी माने के तमत क्षेत्र विकास तमान क पाम के बाहारता हाचीना केंद्रशायक सुरुप्तां प्रधीया बहुरवृक्तां बहु समें बहु प्रस्तव समी है.

पुरिस्टन पप (पद्ध)

. पनो मो जरे

भी. पर्ध

वही पगा प्यन्तं, प्रान्तः, प्रोसिः

s. unter.

यक्षेत्रं को 'सब्ब' बेबा. ^{८७} रोबक्सावक करामां कार्यकुष्ट प्रं को एँ वाल के करे

देखीन 'तांनो है' निकल्पे नाथ छ। (वर्षाच्य)- बाधीना स्पो 'स्तरपा' वेपा नपंसक्राह्म पगाइ पगाई पगाणि

444

५ पग

भी पर्श

म भी घरो

यत्त्रीतो स्था 'सरख' नैरा दा-बे (द्वि) वच स्थिमां. ति (बि) अबे निगर्मा. प } चुने दाणिय तुरिया वी दिविण विक्यि दा वे तिच्यि (तमो)-

व बादि शोदि बादि तीदि तीदि तीदि विदि बेटि बेटि तिषद्र तिषद विको नीमा नीक

व } बोण्डे शोबन पुण्डे पुण्ड ए. बिण्डे येण्ड विण्ड यिण्ड प दुलो दामी दाक बादिन्ती बोसुन्तो वीदिग्तो तीसम्बो. विको बेमा वेड बेटिज्ञा पसम्तो 4. बोस दातं चेस पेस र्नाम भीती धाः (यतुर्) पंष (पन्नर) नहीं, बसारी बजरो बनाटि | एव

ट बरुदि, बर्जीई बर्जीई xuals, पंचर्डि पंचर्डि चनकि चनकि चनकि र्शकारी चीवण्ड ब.स. कडण्ड, कडण्ड

रंखको. एकामो पंचार रं बढतो बद्धमो बद्धव र्वचाद्वित्ता पंचासस्तो-बर्माको बन्धको बाउमी करत

741

बर्जाहरूतो बरसुरतो. व बक्स बक्स पंचसु, पंचसूं, बउस, बडारे

छ (पप्) मत्त (सप्तन्)

9.4% G e e

सत्तवि सत्तवि सत्तवि य करि ग्रांट करि सत्तरह सत्तरह ब ह. सम्बंद, सम्बद

र्व क्लो क्लाका, कार्ड सराको सत्तामी सत्ताम धादिन्तो अस्तरतो चनाविको सरासन्त्रो

L VA DA

थाः (मधान) रजी सह

त. बाहि बहरि बहार

< 8 शहर, शहरू

चत्तम्, चनत्

नद (वदन्) मवदि, नवदि नपर्दि

×पकेदि-दि -दि स्तेष्टि दि"-वि श्लानि स्पो वय जीवार्य क्टब

के. बारवेंद्रे ओवदेंद्रे स्थितवास प्रत्यों ।। निर्धायः माः १ ४ १%

पं. महत्ता, महामी सहाट मयक्ती नदामा नयाउ महादिग्ता, महामुन्ता नपादिस्तो नपासुस्तो व बहुत सहसु नवस् मयस्

मा प्रमान दह इस शारिको सङ्गारस मुबीनो वपा जणारी. कर (कवि) केटलां तेनां क्यो बहुयचनमां धाय छै

प की फर्ड कादि कांदि कांदि

er er atiaf aliaf

करतो करमो काँच काँदिस्सो काँमुस्सो

कांस कांस

९ पग्चवीसा× (एकत्रविष्ठि) । २३ तेवीसा (प्रवर्षिष्ठि) ध्रीष्ठ-

स्रोगचीत. ९ पीसर (मिग्रन्ति) दीस

११ पाषीमा ) (एक्विडि) पक्कपीमा }

रफरपीमा । एकमि. २२ वायीसा (श्रमिक्ती) वादीन

अमारमा जन्म 'जा' नो 'म प्रम बाच छ. ठमी एगूम्पीन वीम वामिन वडारेड पनशिन एक्सैन एस्प्रकीन होन बनीप

तनीन छनोत अदुरीय-प्रश्नीम एग्राचनाशीय चना ीम यावाडीय क्षाव-सावारित शहकार-महक्ष्माकीय प्रमुपासका प्रसास प्राप्तक-<del>एकालल क्रमल-सम्मन्त्र स्मारस्य-स्रात्त स्मारमात् रहरे य</del>य

है माना स्या पुरित्त सन न्युंगर्कियमा प्रदमा तया दिनीयाना एक-बक्तमा प्राप्ननाहितमा देशाव हे वरा प्रमुक्त सहित्यह बीनितं बी. ए (बहुद िश पृ १७८)

बनारीन आंदम जुस संस्थित प ए (स्टिप्ट १९) रीनं क्यांतेषु अवस्ति तीतं क्यांगरीतु व ए. (राम्पप्रीमान्त्रे)

१४ घउवीसा १ (च्ट्रा शिर्रि) भोगीसा १ नोगीय-

१५ पणबीसा (पेशनियनि) १६ क्रयोसा (परविचरि)

सम्बोग.

व्यवपाद्धीसा

संस्थाना

च ताबीसा (च्लारिवर्)

Title.

350

तः भगावास्तासा (१९४ म घरणास्ता (१४४४) अरुणास्ता (१४४४) भगामा (१४४४) भगामा (१४४४)	६ सम्ह (६८) सन्द १९ बगार्गाह (१८४८) एडमाँह (१८४८) इसमाँह
क्पांदरन्ता ब्रष्टांदरम्याया १) प्रधावन्दांत्या (१६७वा	ा वार्गीहे } (देवरी) क्या बार्गीहे } (व नर्गाह } (वरी) केट
**   **   **   **   **   **   **   **	नवाह ) १० व्यक्तिहि (बन्न' ) व्यवहि ) व म्ह
वारामा वारामा ११ वराज्यामा १८ व.स.	् वागाइ ) ः र न्यमीई हे सम्पर्धाः सम्बद्धि हे रूगः
# (	( unit ) (***)  ( unit ) * 2  ( unit ) * (**)  ( unit ) ****
	ा भरतीति (सम्बद्ध) भरतीति सः
stant   stant	to arrestable & to and service of the service of th
MANAGE & Account	*73 * 1

च्यामसरिः } (एक्नति)   एकस्मस्रि हेकीन	< शेसीइ १ (घराँपी) शेमासीइ (सली-
इक्झसत्तरि   ७१ पावसरि   पाइसरि   (क्षित्रवर्ति)	८४ चडरासीर (न्तुरसीठ) भोरत्मीर नोएसी नुससी
याहरूरि (दिनव्यवि) विस्तरि वर्तन विदस्तरि	८ पणसीर } (क्षाप्रीते) पंचासीर } पण्डी
॰३ विस्तिरि ) निद्वचरि }(विन्डिशेनिक सम्बद्धि	६ छासीर (नमाँवि) हामी. सत्तासीर (नगर्वामी)
क्र व्यवसत्तरि (च्यु:नवर्षि) वोवत्तरि   वृत्तीक्र वोसत्तरि	स्टासीर (मचचीत) बहासीर (मचचीत) स्टासी.
<ul> <li>पश्यासत्तरि } (पश्यावति)</li> <li>पंबद्वति } पश्यातः</li> <li>स्वति } (पद्यावति)</li> </ul>	<ul> <li>शबासीइ (नवाबीरि) वेदली.</li> <li>पर्युजनवङ् र (एर्डान्स्वरि)</li> <li>पर्युजनवङ् र नेवली</li> </ul>
क्रम्सपरि } ब्रंज ॰॰ सत्तस्त्रारि } (ब्रञ्बलक्षे) सत्तव्यरि } स्वयेजः	र शबह } (सपति) मेर्चु भड़द }

४९ व्यासीर (एकडोठ) (९३ तेववर )
प्रकासीर १ प्रमार्थः (तिजवर )
स्वासीर (१ वर्षायः )
४९ वासीर (१पडोठि) जाला विकास }

नव गर्दे हैं.

श्राह्मचरि (कश्चन्द्रति)
 श्राह्मचरि (कश्चन्द्रति)
 प्राच्चारि (एक्नेन्स्रति)

मसीड (क्वीरी) प्रशे

(दिन्तरि

वासवर 🛭

९४ सङ्गणबङ्

सङ्घणसङ् सङ्गणसङ्

धारणकर

सब्बद्धाः (

५ शयणहरू ) (श्वनविति)

(पद्मनवति)

(१म्बरी)

(सप्तकपति)

ਵਲੀ

सत्तार्थ.

९५ पैचाचवर ]

१ प्रकासर }

१० सत्तापद्म

**उ**च्चडर्

सत्तवद

पदाणवर

पण्यज्ञहर

```
सचणउ
 पगुणबीसा व नवजबह शुपीना सम्बोमां बन्नो बाह्मरान्त है
 रेमचं ब्यो 'हमा'-ये देशंबाव के बसे दे एव्हों इक्साना है। हमने ब्यो
 পুকি' নী ইবা কৰবা
पगुणसय व (एक्टेनक्त) क्यार्ट्र.
 शबस्य न (श्वप्रत) नम्स्रो
×सय न. (इ.४) मो.
 शहस्स व
 सहस्र) हमा
 दुसप
 इससहस्य १ न. (१६१न्द्रम)
 विसय
 शासास्य रे प्रधान
 को सयाप
 भयतः रेन (भवन)
 तिसय
 बर्तम 🦠
 दम हमार.
 तिक्षि सुवार
 स्यमहम्य न (एकाइ) बास
 चरसय
 स्वयं न. (नदा) साच.
 बचारि सवार
 द्सस्यव्य ४. (६६२८) इन कास्त्र.
 पैषसय रे ६ (प्ययान)
 काकि गी. (धेनि) एक क्रोड
 प्राचनी-
 पणसय 🐧
 वसकोदिनी (रहमति) रव
 ग्रसप ६ (१३३५) हनो.
 वरोड.
 स्तानस्य व (नप्ततः) सन्तो
 मपद्योदि का (धन्त्रोद)
 भाइसय) व (क्यस्त)
 इंदरमे
 चा ऋषेड
 गडसय
 x सब, सङ्ख् को दश्य इ धप्रा प्रयोगने अनुवारे प्रविश्वका
 पत्र बराह्य के पत्र —सोश्य सम्बन्धा वर्णन पूर्वनी (प्रवासीकी
 (विविधिए, मन. ९. व. १३४). मेंद्र व्यस्त्र वा. ४४
```

	,
सहस्मकोडि मी. (बालकोडि) इन्स क्योर	कोबाकोडि सी (क्रेयकेरी) कोबाकोस कोनी
सम्बद्धीरि से (स्वयूर्ध)	कोशकोरी कोनी करोड वडे पुकार्य
काच करोड,	वे संबंध वाले है-
पिक्रमोचम इ. १. (प्रस्थोपन) पर	चोपम समय प्रमान विकेत.
सामधेबम ५ ह. (सम्प्रेयम) धार	होपम समय प्रमान मिन्नेप
रत भी	सन्त्रेये पत्नोपन प्रसान <b>प्रसानित</b>
भपूर्णी	क राम्।
पाय पु. (पार) चांबो भाव पर	मर्पुष्ट रेश (मर्नयुर्व मनुत्र) सर्देष्ट । साम प्रत
सम् रेड़न (नर्ने) नर्द	
महर मिन मान	<b>भद्रपंज</b> म पि (भर्नप्रवस)
पामीक) वि (शत्ति) पीर्च, पामक । पाभीते	नाम भार
पाऊन पांभीते पोच	अञ्चलक्ष वि (अर्थनक) समा प्रोप्य-

स्रवाय वि (एराव) बना धा

विश्ववृक्ष वि (प्रवसर्व) रोड

सद्द }

भाइताहमा 🛚

सर्दर्यय-भ

वि (गार्न) वोष्ट्र अर्थ

धंबनापत्र क्योगी बहेच

(सन-स-न) सन्द्रा पोच

सवस्यपेकं म नि (क्सन्स्थ-४)

बहित.

पाळज-पोज कर गुष्तमा एव कर्तात करा निद्र कर हे

बबसत्तम है. (क्षेप्रका)

मक्काम कि (वर्शकाम)

भक्तवस वि (वर्षतम)

**सहर्**सम वि (वर्षेत्रम)

सवाय-सङ्ख-सङ्क-पानीय-

पानोपपंच~न }

40 F

धाम सन

द्वाचा सार्थः

शाग का

मि (पार्योजन

₹.9₹

```
संस्थापुरक शप्यो
पदम-पदमिक्त (प्रवम) १ हो.
 प्रवास (प्रवस) ५ ई
बीम-विद्य-दुद्य } (विकेश)
 छ। (वन्द्र) ५ ई-
दुरम-दास्त
 श्चलम (शब्दम) ७ मं
त्मि-तर्म-तर्भ (त्रीम)
 बह्म (नरम) ४ म
विश्वत विश्व } १ छं-
 लवस (धम) ५ म
चडरप-चोत्प (बर्ज़्ब) ४ हं
 बह्रम ((रहम) १
तुरिम (तुर्व) ४ त
 दसम 🦠
 प्रकारस वर्गरे सदयाबावक मामा बपरवी चंदवापुरक सन्ता
 प्रकोवन अनुसारे अन-स-धास-इस प्रत्यन सन्ध्रव्याची वाय के आ
 प्रस्थव कव्यक्रतं पूर्वेनो स्वर् क्रोपाच क्रे. दंगज पंतरत सिद् प्रजीप उपरकी
 पन प्राक्ष्य निकास्त्रकार केरफार वद वपरान के.
 तेवीस-रम-(त्रयेविग-रिटम)
पंककारस-म (एक्स्प्स) ११ मुं
 ₹1 E.
 बारस म (हारम) ११ सं
 च उषीस~इम (बहुर्वेस-कितम)
 तेरस म (बयोरण) ११ स
 चउद्दर्भ-म नदर्शकः १४ स्
 पंचमीस-इस ((प्वर्मस-विका)
 पग्नरस-भ) (पबरह) १५ हं
 पणपीस-दम ∫
 पचदस म 🕽
 छप्पीस~रम (ग्राभीग-किम)
 सोक्स-म (केक्प) १६ ह
```

पगुणधीस-इम (एक्टेनविस-थद्वाबीस-इम् (भए।विचक्तिम) विक्रम) १९ मे चीमुक्स (निच्छितम) र स पशुणतीस-इम (एक्टेन्ट्रिय-२४) पक्रवीस-म-रम (एक्रीच 95 B. क्रिक्म) २१५ वीसहम (जिस्तम) ३ बाबीस-इम (हाविय-ठिठम) पपक्रतीस-इम ( एक्क्रिए-सम)

93 A

सत्ताबीम इस (बर्खरंग्र-क्रिय)

चचरख–म (बहरच) १७ ध्र

मद्वारस-म (भग्नदर) १८ स

वसीस-इम (इ.जि.च चम) १२सु	चचचास (क्वन्तार्रेड)
वेचीस-इम (नर्वक्षिप चन)३३मु	चचचासीस }े <b>४</b> ०ई
चरतीस इम (नतुनिय राम)	महत्रकार (महत्रवार्ति)
}v <b>±</b> .	महपातीस <b>्र ४८</b> है.
पंचतीस-रम (पत्रतिस-रम)	पगुजपन्नास(एकेन्फ्नक) न्त्री
पणवीस-इम १५ ई-	पन्तान-संद्रम (करहा-राग)
<b>छत्तीस-र्</b> म (म्रुविच-राम) 🚞	5 AL
11 E	
सत्ततीस-इम (क्लिब चम)	पगावस्त-स } (एक्समाब- यमपन्नास इस } दम) ५१ई-
1 · #-	वामन्त-च्या (वित्रवाह) ५१ ई-
<b>सहरीस-इम (नवनिष</b> -तम)	विपंचास-इम (जिल्हास-तम)
र सं	51 E
पग्पवस्तासः 🕽 (एक्नेक्स्सिरियः	चडपच्य∹हम }(शतुपस्ताद
पर्ग्जनाधीस }-७न) १९५	चंडपम्नास हम }-तम)५४ई-
रम ∫	
चत्त्राख 🚟 ] (नतारिष तम)	पेकावस्य (पञ्चपदाय) ५५ ह
चाक्रीस−म } ४ ∄	क्रम्पन्न (पञ्चनक्र) ५६ स
वचाहीस-म	स <del>ारावरम व</del> य(स्क्रपस्त्रक)५७क्के
पमकत्तास (एक्पनारिश-सम्)	महानम्त स्व (मटल्याव)५८ <u>सं</u> -
- 49 €	पर्यूषसङ्ख (एधेननः) ५९ ई
भाषासीस-इम (इन्स्करिस-	च_द्विदम हे (वक्रिका) ६०-छे-
्रम् ) ४३ हो	सक्रियम ∫
तेपाढीस-इम(जिल्लाभिय-छम)	पयसङ्क (एभ्यड) ६१ ह्यं
भीस	वासद्ध (इथक) ११ ह
चडचचाळीस-इम } (वद्यक्त-	विसङ्ग (निक्द) १३ हं
चवपाकीस-इस ∫ (श्रा-सन्)	च ब सङ्घ-द्विस (च्छान्य-व्यास)
_ w &	ŧ×⊞
पवनाक (स्न्यन्तार्वि) ४५ई.	पंचसङ्ग (सम्बद्ध) १५ 🕏
काषाकीस (स्वस्ति) ४१५.	
	कासङ (वर्षप) ६६ ह

W

सत्तसङ्ग (सत्तर) (अर्थ महसङ्खाद्भ (मरगर-दिलम) यगुणसत्तर (एकोन्यसः) (९मुं र् (उप्तरंतना) सत्तरिमम पगसत्तर (एक्जल) 📲 षाउत्तर ((दिनःस) 🕶 मु वाइचर 🛭 तिदस्तर (विगनः) 📲 च उदलर (च1ुन्तमा) ४तुः पंचद्रसर (१२ग४) 🕶 मु **एदत्तर (ग्द**ग्रल) ०१म सत्तदत्तर (मानमा) अर्थ यद्भार (उल्ह्या) ४म षगुजामीय यम (एक्टबरी॰-किया) ७९.म

क्षमीहम (क्ष्मी)त्रम ८ व यगानीहम (क्ष्मी)त्रम ८ व यगानीहम (क्ष्मीत्रम) ८१वुं वामीहम (क्ष्मीत्रम) ८१वुं वेयानीहम (क्ष्मीत्रम) ४१वु यदरामीहम (क्ष्मीत्रम)४४वुं

ध नो ई फ्रारी वय छ.

े पंचासीहम (पराधीनम) ४५म । छासीहम (पराधीनम) ४६म सत्तासीहम (काडीक-रिजम) ४०म ४०म

सङ्घासीय-म (जग्रणीत-दिम) ४८पुँ क्याचनुद्रय (एक्टेन्स्यत) ४९पू

महर्य १ (नातिमा) ९ म मयर्यम १ पद्माणस्य १ (४७०१२०) ९ भ्रम पद्माणस्य १ प्राप्तस्य (४१२१०) ९४म स्वरूपस्य (४५२१०) ९४म पंत्राणस्य (४५०१०) में

**एनरद (र**मारा) (सं

मनायउय (गनारा)

सहायाज्य (स्ट्रगा) १८ई स्वयाद्व है (साराउ-दिया) स्वयाद्व है (साराउ-दिया) स्वयाद्व है (साराउ) १ ई स्वयाद्व है (साराव्य है)

र प्रयान परकुत्तरमय-परकात्तरमय तुरसामय-तिक्तरमय वर्गरे काम कासी वंत्रमान प्रसा प्रमा की ठेत. 'प्रयक्त की 'तिक्रम सुरीत वंत्रमानक कीतिक का

'पदम थी 'तिह्य तुरीत संस्कृत्यतु अतिम श्रा सर्वताची बात हे बादिय नेदचानुष प्राथति अतिम प्रतः समस् पणकारसी-चड्सी-चड्सी सत्ताबीसी-सत्ताबीसमी-तीस-समी-चाडीसमी प्रास्त्री बावतरी-स्पासीसमी-सम्बर्ध गरे. ७०समूच प्रसा स्थित होतते त्यं को पुनिमानं देव सम्बर्ध की क्रीस्मार्थ प्रसा समे देवर्गी प्रमाने कार्यः

सकामानक कभी करायी व्याप्तिस्ति विश्वमिक्टेम्बे 'क्रूच्य' (कृत्वायु) त्वत्र क्याप्तामी बाद के. छात वर्गाला 'क्यूच्या-'क्यूच्ये प्रत्य पर क्याप्त छे प्रताई छात क्या साई क्याब्य, छात्र ब्रि.स. व्याप्त क्यां क्या ब्रि.स.

त्र ह्या हु, इस मा इस अन्य बहुत् मा खड नाम छ. सार-सर्ग पराहुते प्रकृति (छत्र) एक्नार हु-बोध्यो पुनसूत्री (छै) वेगर

ति-तस्त्रं तिस्तुत्ते (विः) भगमः चत्र-चत्रस्तुता (वृत्) भगमः

पंचहुर्त पंचनमुक्ते (प्वास्त) पंचार, स्वपृष्ठं स्वयनमुक्ते (प्यास) येनार, सहस्पद्वर्तं सहस्पानसुको (यागास) हगायप, सर्वतपुर्तं सर्वतमुको, सर्वतसुको (स्वयन्ताः) स्वयन्त

नकार कर्पना हा (या) कने बिह्न (विचा) त्रवन बनकान के प्रमाहा क. (एकका) प्रमाहित कि (एकप्रिन) एक उकारे.

प्याश्च क (एक्पण) प्रश्न क्यार. ब्रह्म क (क्ष्मण) प्रश्निक क्षि दिनेश के क्यारे तिका क (क्षम), तिक्षिक कि (क्षिक्ष) जब प्रश्नरे व्यवस्तु के (ब्रह्मण) व्यवस्तिक कि (ब्रह्मण) वर प्रयोग्ध करवा कि व्यवस्तिक कि (ब्रह्मण)

.

महुद्दा भ. (मएपा) मद्रविद्व वि (सप्यविष) भार प्रचारे वसदा भ (रचन) दसयिह वि (रचनिष) रच प्रकारे. बहुद्दा थ. (बहुबा) यहिष्ट दि. (बहरीप) अनेक महारे. संपद्दा म (एत्रा) सवविद् ि (एउदिव) से महादे सदरसदा थ. (नरप्रपा) स्तरम्सचिद् हि. (मार्फ्यप) इसर प्रकरे. मापायिद्व वि (मनापि) ह्या त्रुरा प्रस्रोट

द्मयो

भारतय पु. (अधियव) भनियव मिमा प्रभार भैरा न (भद्र) भावाग्रंबरि वार धन सरीर सरीराज्या.

भंग १ (माम) भौतन साह

भाग्नाच नु (अन्तर) प्रश्वन अनुह मान प्रधान शास्त्रक

थपिय र (मर्चेड) नम्ब न्यस्ट यणुभागदार स. १ व (अनुयोग-

(P) PTILES. भद्रमागदी था (मस्मावरी) कामरू भाषा. भमापासा । ही (मनास्का)

धमापस्या

भरिद्र ९ (म १) र्न्बस मदियगर ६ (म'(एर) मरिव

भाइ पुर्मा क्योर, त्रयाम

भाउद् २ (शाक्ष) पत बाखापणा द्वी (व्यक्तना) विश्रीत वर्तन करमान

उपैस पुत्र (ठाए) भेकर प्रवत विश्वा करतार भूत्र थाद्विप्रश्चित्रामर्थात्र हर

मीतुहान (भ*ित्रप≖पी परायाँ जागा क हान) करिय ३ (मार्रिक) मार्रिक मान

क्षपछी } धा (मरप्री) हेड. कर्मा । क्यार पु. (सन्) कालीमा हातू. प्रविष्ठ पू. भी. (वृष्त) करत केट.

तुर्यु ६ व (त्य देएनु सम्राप्त कोमन्दि वि (श्रीप्रविष्क) वास्त्रन-

सर्वेभ्या बर्गामा दशम्ब बहेत्र.

आदेश हुन, (अल्य) कुछने पृथ्वेची बाह्य माग्र व्यक्तिय ६ (वश्विष) दाल निश्चानी ग्रामहाम न (धूनस्थल) मिध्या र्राप्ट मानि चौर् गुस्स्यान्त्र ध्योत स्थल. र्मपम १ (पम्पक) पार्टी छात्र. भारत ५ (नेप्र) नेवसाय. আহ্ববৃদ্ধি (ক্ষমানি) বভাগী ड बंडनो लक्पितिः वैवृदीय ६ (बन्द्रीय) शंकत तम हैं मेंपच्य प्र (जनपर्) हेए विष्ठ } नि. (ज्वाद) मान्य विष्ठ } क्रीची सोट्रे, क्रेस्ट-मासा ही (मना) नारा बतन ं रधन राजी. विकास मी (किकि) श्रीम दिन

🗗 यर्गय पु (इंद्रपन्न) निद्योगनि मद्देशि (सद्दः) मोद्दृब्दः मद्देशे भेष्ट विस्तृती मॅरिसच न (स्प्रीन्त्र) त्वत्र बाम के बेनी सन्दर पाच इमने सदर है. निगम इ. (१म) म्थलसम्बर्ध त्यान, न्याराधीमीओ बहुराय,

संपत्ति विकेद-निरदाप र. (निर्मान) मोस् पश्चम्-स प्र. व. (बर्डर्ग-क) शुप्रकिरेय नि विचर्छ-पञ्चनशाच न (पर्वनधान) अन्त, अकाम देवो पर्यंग प्र (फ्टेन) फ्टेन्प्रे पश्चम नि (प्राप्तत) स्वामानिक बीच पासर् सूच व

मिक्कि प्र. (मिनि) कालनो

केवर, प्रकारी सम्बन्धी

पूरम } पूरम } WATE. पुरव वि. (पूर्व) मानविदेव सम्बद्धः ५६ (अस्यः को व पर्योग्ये तम्द्र एक पूर्व शत में (मक्का-मरन्त-भा<del>गा-</del> वर्गन्त-म<del>क्त</del>न्त्। स्थान्त्-

देववस्य कावासकारम

विदेशका संस्कृत को

प्राप्त याचा-

मि (पूर्व) शूव

वयोगा वन करनार-मगधर्रे सी (बलाई) भगावी सम बोचर्स संग्र सरहात (भक्त) क्लाकेन श्रीकारमंदिरम् प्रदम् तुक्रः भारक रू. (नत्छ) नक्कीनः

5,34

मसस ५ (ध्रमर) ध्रमर धारिधर ६ (सम्बर) बन्बर, मस्रंतपाची (मन्तरूप) राज बासदर पु (रबबर) पर्वेत एकाने पामक, ब्हरिने सम्म विदेच. ч¢. विषय वि (तिन्द्र) बाद्य पाने उ मियन्त्रायरिक रि. (भिताबरक) र्ण ज. (रें) बारवालंग्यमां बर भिशा दर तर है. मोब पु व (मोन) सनाइ विचित्रिक्ष वि (मिनिर्देश) विदेवे घरताहि विकास की क्षेत्रवन मणपञ्चव पु. (मनशर्वर) बतुर्थ विवार ५ (मिका) विवार कान (बीजाना सनना माबोने सउपा पु (एड्न) पद्मी-बयानाद हान) सिक्स व (निय) हम्रा विश्वकरा मृत्रसुच व. (मृत्सूप) सुप्रक्षित्रप. दगरे चन्त्र. यम ग. (र") सतः सराज संतिष्ण कम् (सर्वक) बार सोगंतिम ९. (असम्बर्भ) दर-पानच नहीं पदेश संचय्टरिय रि. (वा लाविक) दिश्च. सरमार ५८% वार्षिक क्रोगबाल ) (शेक-४) इंग्रेग इतिचवारम व ((रिश्वपुर) स्रोगपान ( सिंच पु. (निष) बीरपर्न साउ मान्सु मान छ षायणा धी. (रावन) शवम द्रय ५ (सम) बाहा, धानुमो भारताय (अनि सार्) जीवन्ति पवा (मध्यक) ब्रह्म पती वरदे राम भागी. अधि-सिंख (अनिश्विष्य) थणया (ब्युस्य) शतुमार्थ मनिरेष परश थायु (शब्द) शब्द अन्य

मधारकं

विद्व (ी+पा) फर्च क्याचं

पसब् (प्रश्तु) अन्य अन्तरः

उत्पन्न पानं

चवनसामी चडम्हं समजार्थ सुत्तरस यायण देह । र्चच पहचा सिक्रगिरिम्म निष्याणे पादीम । कामो कोहा सोहा मोहो समो मञ्जरो य छ विवास जीवाज-

महिमारा । भर्दिस बजाये पनपीसा जैवा छत्तीसा थ छिंवा पगासीई

केकीमो सहसही बंपमा मरिय। सो समग्र प्रधारमो महोहि सह येत्रिपसप्हि । नदे सचर्यः रिसीयं सच तारा बीसन्ति ।

समोसरजे भगमं महाबीरी वैबदाजबमणुमपरिसाय बउई मुद्देषि अञ्चनागरीय मासाय धाममारकतः। तिसका देवी बहत्तमासस्य सुरकपरचे हेरसीय विक्री

महाबीर पुर्व प्रवाही ।

बसहि बसहि सर्व होर इसहि सपहि सहस्ति। इसर्दि सहस्तेहि सहयं इसदि महत्रहि सपत ब ॥१॥

जसमे म^{र्}रहा कोसंकिर पडमरामा पडममिक्कायरिए, पडम वित्यवरे पीस पुष्त्रसयसङ्ख्याः कुमारवासे बॉसचा वेपद्वि पुष्पसयसहस्ताई राजनगुराक्षेमाणे खेहारपानी सदयदभगगत्रवासामा बावसरि कसामी बोबहिमदि छागुणे सिन्यानमेगसय एव तिथि प्रचाहितहार स्विष् सर उपविश्विता पुरासर्थ राजस्य समितिया तती पण्या क्षेतिपदि देवैदि सबोदिए संबच्छरिये वार्ष

शक्त परिवासी । तिकार प्रमादस संगाजि बारस दर्बगाजि क **क्रे**पगैदार इस परश्रगाई बचारि मूकसुचाई, वेशियुत्त-बणुमोपदा राह च दोस्य कि पच्छातीका माममा चेति ।

रेंब्रहा-मानार्थ पुरम्मार्ण शोहिनार्थ मणपन्तवनार्ण देवसमार्थ स ।

र्मते । नाण कश्यिद्धं पन्नतं गोयमा ! नाणं पंचयिद्धं पन्नतं.

पुरित्तस्य महिलाप, महाबीम मुणेयम्या ॥शा मदापीयं रूपमा शहपात्रीसं च तह सहस्यारं । सम्बेमिपि तिणाणं क्षांच माच विचिद्दिर ॥४॥ पहले न पहिमा दिल्ला विशेष महिल्ल घर्ण । चेह्य न नवा तलो, घउत्ये कि करिस्सर ॥ ध सत्ता सह हरिला कामे नागा रने य पारियरो । किवणपूर्वमा करे समला गंधेण विवाहा ॥६॥ पंत्रमु मत्ता पच पि पहा अधागदिभवग्मना। ^{पार्} पचसु संसी पंजार भस्मनय मुद्रा ॥आ क्रुक्रमण्ययद्गियाप्रत्मित्राप्रतम् पदमं तमा महावश्यादिमाप, महणदाषा । ना वायचरितुरयरसदस्ययसमारनिगमजनयपर्य पत्तानागयपग्यदम्याणुपापमणा ॥ पद्दस्यारस्यणन्यमदानिद्धि-पद्मस्थितदस्य परराज्यस्य सुद्रस्यहे भू ग्रीइयगयर नवसंद्रम्लेमार्था

छन्तरागमधाडिनामी भागी शासारदेनि स्वयं स्टेडको ॥दा।

संति प्रयामि तिर्थ सं दि विदेव मे ॥ +रासामदिव ॥ युप्पम् ॥धा मा ब स्त्रीका गानिनाव नवानरी छ + वे (सं ६) सामने दिव (स्त्राची राज्य) सा वे छर स्थित

र्वं संति संतिष्टरं संतिकां सप्यवचा ।

₹¤ Ò.

पत्तारि क्षागपाठा सत्त य मणिया। विकिम परिसामा ।

परायणो गईहा पर्रत च महाउदै तस्य (सक्रस्स) ॥था वतीसं किर कपटा माधारो कुविछपुरमो मणिमो ।

## गुजराठी बाक्यो

- त एकमेल क्य चारित पाती समानिवर्शक साथु गामी बरमा देव क्रोकमी क्रेप को
- मनगर ग्रहारीर मास्तो मास्ता स्थानास्थानी एकैए नार्ने क्योंने कर करें। गोंते क्या स्प्रद क्या प्रचारतं कार्तिक साधकी एके। गौतास्थानीमि केमस्यान वर्षे देनी वा वे दिक्ती सम्बाधी केच मात्र है.
- १ कैयो छ प्रथमे काम कामी, बीर कारे यह तरब रच पतियमी कमे वीर गुणस्थानको राज छ
  ४ अवकोए किनान्योमी बोलाई खाडातका कमे प्रकार छैती
- भावतत्त्रप्रयो पर्जावी जोरए. ५ के मरतक्षेत्रजा तथ धंत्र त्रिते ते बासुदेख बाद को वे ह
- भ मैं सरतक्षेत्रमा त्रभ यंत्र त्रिते ते मासुदेख बाव की में क खंड नित ते सक्तमार्थी कान के.
- र्रार्वकरेने कर अधिवाने कमानी होन छ (मज कमीसमानी वास्त्रिया अधिवाने वन देवोचले कमानिस ओव्यांन करियांने एम कोबीस अधिवानोत्री विद्यानित र्यार्वको होन छे.
- सर्व अंत अने स्वयंत्त क्येर स्वतंत्रां त्राव्यं स्वयंत्रती अंत शेष्ट अव सर्वतं तर्मः हे
   भोटर इन्हों देस्तर्गत् वृद्धः स्टेक्स्यों क्यान्यतंत्रत करे हैं
- ९ किंद्र मण्डेको काठे अम्मेंची वृद्धित होन छ-

प्राक्त ध्याकरण नामं है.

- कुमारशास प्रमद नम्मर देशोमां जीवन्या पळते हते.
- १९ भी देल्लेक्स्रिय सिख्डेक्स्याकरचना अध्या कारायां

११ मा बंबुबियमं छ वर्षपर परित्रे कम सरत परोटे सान के कि

१३ भीषो मे प्रकार, गति चार प्रकार, प्रतो पांच प्रकारे मने भिसनी प्रतिमा वार प्रकारे थे

१४ मा परिश्व का क्याच्यात्रमा बाट कप्ताको क्याच्या छे अने परेक मन्द्रक्ता बार बार वारा छे उना हुं हात भवाबी बने माउना मध्यको वे यहा सम्बो सं १५ ते बधने में मुख के बसे बार हाब के देशों एक हाबलों दीन के

चीना हापमां क्या हे भीजा हायमां बन अने बाबा हाबमां ঘৰ ৩ भ व्यापुरता हूं वर्णन पर मन्दो एता बारेड हमार ग्रन्थों बाद

क्ष हमारेड बास्त्रों इसी हुई मने ब्रास्त नतम धार एमा धी वस्ते ह

## सुपना

**ए**ड १६३ हेराच कारूमी बढ़ता मा निका देशनी है. क्मीरे भूग्रास्त्रते देव प्राप्त कगाउराची कारी मृत्यूसन सावः à tu-

गय-गथर्पता (गतपान) प प. सुय-सुवर्षता (शृतवान्) ए० ए.



## पार्**भसरको**सो धारसय पु. (व्यक्तिश्व) व्यक्तिव **शकास** पु (सम) स्थापन, सन्

महिमा प्रमान ×श्रद्रहरूम् (मति+कर्) उत्त्वक 475 ×मार्-बाय् (मति।यात्) बीन-विंग प्रके (맥) 팩 वर्षेष थ. (मर्त्रंष) बर्क्नत. चतुम प्रकाशिक्षेत्र. **घरत्या ही. (स्वोध्या)** मधोष्य वयरी म (मतः) एवी ए मतो 🕻 बर संद र्थमण ९. (एम) मानल, पोच.

ग. (अकृत) व्यवस्थार, भौग न (छम) नवनत्र भागारी-विदे चैगार-छ } ५ (महरू) ईपार-छ } वेनचे चेज्लो भंगुकी बी (ब्म) बांवळे. भैज्ञच न (महन) सब्द्र आंग्रारा मोक्समो सरमो. भोधा वि (सम) बर्च करो अव ५ (काश) भारतभ व.

×भ**ञ्या** (नर्ष) पूर्ण सरस्य न. (सर्वन) प्राः धक्कवा वी (मर्क्य) पूरा

×शक्सम् (मान्सम्) दवलद्रीः भक्त पर्य बागान. (संग) बागस विकर समामो क (मनः) वर्ष

बन्द ६ (तक) सर्व

Ω×.

करमास्ता की (कर्मका) क्लाबा^{स्}रे बान्से मोन्छ देवे बगारम (स्म) कः सरिग पु (क्रमि) समि

×धरम् (क∮) आरर कस्त्रो समान कामु कीमा काकी ×भग्य (एव) बोम्यं

धरकाय में (मतर्ब) वरियं great शब्दंत ५ (ज्ल्ला) गर्ड

भाष्ट्रबर्ग पु (अस्त्रव) विद्याप विपरीय सामान-

सम्बाह्मी (जर्बा) द्या क्लार

×बस्स (क्ल) केतु.

```
१८५
```

अभिष्य १६ (जनीक) सैन्य करूट.

बाधुमाइ ५ (श्लुम्ह) उपकार करते १मा करती

×मणु–काण् (क्श्न+स) आधा--

भागधी

अधिष्ठ ५ र. (सम्रि) नांकः

**अच्छोर** न (बार्च्य) विस्मव

मधीव पु. (छम) समीव

कारकार सक्रिप्य न. (मजीनी) संपन्ते.

×भणु–सर् (भनु+म्ध्यक्) सनु सञ्जास. (सर्व) भार. सव करवी बादबु क्रीउद्धयाज्ञ न. (जन्दन) अन्तरन **सम्राय ५. (धप्यान)** धनन्ये ×भणु-दा ( (भन्न+क) अनुस्कु, म्मूच माव अधिकार विशेष मणु−का∫ पाइक वर्ष बाह्न } सुब्द (क्षत्र) पन बस्तु, मणुसास् (भन्न+प्राप्त् ) विकासन सरम प्रतीका संसर्व विकर भागनी उपनेश भागनी ×बाह् हे (काह्य) अस्तन करहा, भाषा गापनी. सद्दं∫ मेटच्यु क्रणेस वि (क्लेक) एकवी बनाटे. महिर्दे (धी. (धरनि थी) सरगै भण्यमणी म. (सन्वोऽन्यम्) मश्र्वी 🕽 संगव करण परस्पर, पुण्यास्त्रवे मध्य व. शती सभाव बारणया भ (सन्दर्श) सकानारे, मजत वि. (शान्त) वस्त, नीनी बखते. व्यक्तिन. ब. (अन्त्रवा) निपरीत भण्णहा १ मर्णतक्तुन्तोः ) म.(कारकालप्) गानी परे. व्ययपदा ) मणतक्तुत्तो 🖇 जर्मदीचार. सम्पद्धि । मर्णतरं न (कन्तरम्) मोत्स-सरग्रह म. (भग्दत्र) बीब स्त्रीत, प्रस्त अक्याच Bull. **भवगारिया ही (अ**नगरिय) शक्पाणि नि (स्वानिन्) शहानी साम्रपन्ने. सबस्य 🕽 पु. (सर्ग्व) तुबबल् मगुद्ध 🕻 नि (अनुन्द) बद्धापास भरुं हुई सपाचाइ वि. (कालाय) वीय-मत्य पु. (भरत) सम्बद्ध पर्वत व. सन्. व्यवसीय...

**भ्यानी जी.** (मा) केले. थ्र. (सम्बर्ग) वा कावनाः भगाषासा । सी. (मध्यान्य) सपुर 🕽 ममाबस्सा । अद्यसम्बद्धी भी (वर्षमाक्ती) मकात्वी समा मसप व्यवस्त ५ (यक्ट) र्वाट-भ्याप्य है (काँच) जॉन कर्ज़ के कर्ज़ अप्य वि (अव्य) बोड व्यप्पेकेट वि (बाहबीय) पोतान असिमुझ दि. (वसिम्हा) पराभूत पराक्रित. मनि-नंद (धन) प्रक्रंग फ्रस ×मनि-निक्यम् (सनि+निव्+ मर्खित । क्या) संस्थाने मही केली अमसि-सि**ष्** (समि विल्क्) व्यक्तिकेक काली कारम रू (काल) शेव वावळे. क्यात्यमा भी (कश्रांग) ×जन्मसः (मन्त्र) कमान⊸ কৰা ভাৰত ×**व्यानास**र् (मधि+उर्+न) उद्गर क्यार व (दम) देत.

न. (अपूर्व) मपूर्व. ममो न. (१) मर्ज्य

R Rer, Steet. थयि ) (अपि) प्रज समावन

न (क्लूपन) मन भारत को (महोत) कारित, प्रकार समझ स्थापित

×धरिष्ठ (नर्द) समझ व्हा कोल **पतु**्या कसी∟ **भवज ४ (**६म) सं<del>बाह्य</del> वर्षे स्की सम्ब

मार्कम (५००) पर्वाप्ति पूर्व धीलेच मध्य

बद्धेष्टिय वि (कश्रुत) होक्ति.

थकाडिय. (१) पर्यंत क्र्यं

## २८७

असम्बद्धाः वि (असम्ब) गएव

भद्दी म (नम) शीह क्टबा

भार उ. (म्प्) अन्त्र अन्ते,

Ditt Breit.

सम्बन्धी

**(77** 

ПИ.

-×भक्ती (म्ट+ती) आध्य करको

मारितम कर्ष्यु प्रदेश करदो

×श्रद (अरस) दृष्ट्य वात

अम**हे (**बान्द) बन्दा

×सस् (तम्) (चे च्यु धाराष्ट्रं सः (अन्तरः) नारताः

भागाय व (बर्स्स) मीक्स

बसाग ५. (सरोड) बरोड. श्रासाय न (स्ताः) पीश दुनः सपस्य र (भारत) प्रव धमार रि (गम) सर किट<u>क</u>े संयक्ताच न. (जरूराल) दृष्यंत Aru's पुष विशाप धसुर ९ (नम) मनुध स्परमा को (मान) भागन श्चापुरिव ५ (भग्नरेग्र) भग्नरोनो AFER मध्य-सम्मू 'धा+सम्ब) आहा धाइ भ (मर) इर गणियार का विश्वास कर के स्यमाच्य (भग्नान) सरमान धदय १ म (जरता) दिना बा धदया 🕽 Corre महिम्न ६ (मध्यम) द्युं, क्यारे व्यवयाय ५ (सरतार) दिन मराष महित्रम् (मधिना) सन्त्र Marat ( airra) (tina) ¥-पन का टे ९३ में भाग ध[देक्षु }ि (मनत्र) निपुत्र व्यवना था (भाग) व'वद्याता महित्र । efre. व्यवस्तद ९ (असम्य) नन्ते बीव मदिग्तार ५ (म भेरण) म्यु ×सप्तंत्र (नन) भाषर देश. शय दश्ज श्चितिकार् ) (सा_{रे} स) मोता **घटुषा ध (४५**२) न्री महरूर है क्या क्या (H-1

3

मायरिक 🕽 उ (ध्यन्तर्व) कार्यक

महार्थ पहेर्ड नंद.

े}(भानरम) कद कर्यु

मापारंग व. (जनसङ्क) वर

मारेम १ (स्म) मारेम करवो

×शाहकत् (का÷वक् ) क्ट्रेब उपवेद कारनी समजलन् ×भारम् (म प्र) ग्रेस् बार्य्य ५ (शारेस) तुर्व भारक थि. माजून) ब्याकुत म्बर स्वी स्मात्रहर (समुद्र) एक मापस ५ (भरेष) हुस्म

मायम ९ (६२) सक्द, हिम्सान्त बागय में (माक) सावैक. मायास ५.व (भावत) भारत भ्षाडा } (मा+र) कारर करवो भा**रह**ि सन्तु भारत थाचाची (मज) ध्यदेख हुन्म बाबास 🖫 (धारल) हातीने धानकाली खेती.

×बा-में (बा⊹ग्रं) व्यवतुं भाविस् (मा+विक्) स्वदेव कानो प्रकासन् ×मा मोप् (भा+योगम्) देवन विचारके उपन् भाषद् सी. (सक्ते) अभिकास भाषत्त में (सम) माबीन. मापार ५ (चना) नागाः

भाषव (५ (बाल) भारत राज्ये

करूका करती जोतान. ×मा-राइ (वा+राव) वारावना करते येवा करते. थाखाव प्र. (शक्य) दश्रनी सम्बद्धी नीतन-या-स्रोप (मास्बोद) देवन्, ×मासीय (स्प+क्षेत्र) सक्षेत्रय पानी देखालुः निवासं

नाइरिम 🕽

×मार्या

पारव

मास्रोपचा हो. (बाबेक्स) देवारमुं अन्य कर्तुः, नको दोन कोता. भाषया को (असर्-न) जलरा भावासच (२. (ऋशतक) श्रिक-भावस्साय () वर्ण मर्यद्वाध्यक्तः थास ६ (वर्ष) चोत्रो भासच व. (कालव) वेकालं

ARC HIL

पीच.

को (नी)की गरी आसम्ब नि (नम) हमीर रहेन धी a. axis. इयर दि (शह) शन्य पीत्री औन भारतम् 🖫 (मात्रम्) भाषमः इयाजि र ×भा-साग् (भा+भागत ) दानित इयाजि अ (इरानीम् ) सम्प्रति मारवी आधागन देवं हमर्थ का बगन्, दापि मामायवा हो (भागाना) दापि रिपरित बतन जागान-इप मिष भासिन ५ (शाधिन) जलो ग्रन क्ष (इत) ऐंडे जैस पिष साहार ९ (भ्यापार) आपन चिय कालक साधक. अने जेरे रेन व्य माहि ५ धी (मावि) मन्दिक षिम 🕽 ची हा. इस्मरिका है। म. (ऐपथ) बैजन रंगरिम र म (हति) एव का इष्ट् रे स. (१०) मणेवा गा # (हज्या) अध्यक्त र्श प्र (एप) स्ट distriction. इंदिय व (१६-व) व्यन्तिरहर्वाः शंभ ही ग्व (राव्य राज्य ईमर दु (शि) कि क Pr 5:43 TH) दि ५ (सम) बन्ध ब. (रिट्) कोई अन्य 14:1 4 (U) tag ETC (IT IT!) IT! TIT!

> द म (तम) निशः चित्रका इत्यापर शिक्षण स्वरं

उस म. (१) रूके हेन्रो

(T. 5) 4×1

Ere M. (rm) ch ha

₹₹. भ्डम् (मि+६) क्रम् वर्षे (उर्म) उत्तर प्रम्यु उस्मेंब् (स.) उपलेख कर्तुः चिमा मि. (तम) तीन प्र<del>थम</del>. (Althou) Aine व्यक्तिम् ( विविध कि. (उदिन) धोरव कम्माम् १ (उद्भवान्य) वर्ष देश्य-स रि (उरफ-४) उत्सा रम्याम् ∫ ऋषे उस कार्यु d, ×द्रव्यक्रम् (उन्+पद) उत्सम्भ वर्ष् बच्छाइ 🖫 (उम्मद्ध) बलाह परि उत्पन्न व (बायक) काम्य परमञ्जल (उपत) लहर बम्मल में. (उग्यत) या गंधे. ×दश्यम् (उद्दर्भाः) अस्य उम्मूम् (उद्भाक्ष्) यूनर्श क्षत्रो अस्त्य प्रत्यो रके छूं. बज्जम ५ (उक्स) उक्स महेक्त् बबयस ५ (इपक्स) उपकेत. कामकेत ५ (तम) मित्रह उपन्त्र (उत्तर) उत्तम भा 397 काश्याम ४ (SUP) SUP. क्यक्रियम नि (क्जिक्ति) वेश काजीग पु (स्वान) प्रकल ₹tt. करम हुन्स वबासाय ) ५ (बराबार) भ्यातम् (द्या) स्वाद क्यो। स्रा<u>त</u>्रु रे (बन्धस्त्रा) क्ट्रह क्दता 5 भवन-चूंच् (उप+र-'न ) देखाओं बड़े (उद्रश्य) बाबु उव विस् (उप-निक्) स्वरू बन्तम है मि (नम) भेन्द्र कारते. वित्तम ∫ डव-मूंब् (डए+मुण्ड्) बोधार्ष वर्षर स (ब्रह्) उत्तर, बहारे, क्तंत्र को (AA) क्तं विद्या ×बप-चर (बगम्ब) क्रक्ट करता. बदग रे म. (उरह) हथी 🦡 वस्यार ३ (क्लार) उत्तर, भारत केरा.

```
क्ट्रसरियं स् (१) एस
 म (टरि) उत्त्
 रार्ग ध्राम्.
 प्रक्रिय
 वादर्शि
 वक्रमिम
 अ. (एक्श) एक
अञ्च-पञ्च (उप पद) अयस्य
 पञ्जामा
 पगया
×इप−सम् (उप+रम्) रास्त
 म. (१९५७म्) १मर्च
 व्यक्तप पु. (उरभः) उराभः
 थ. (सप्र) मर्दि
 जैन नामुखनु निरातस्थान
 बम्बद्धि ? न्हीं (इत्रवि) माध
 क्रायण ५ (रम्बर) स्टब्स
 उपकृत्य साधन
 eret.
 उद्या पु. व (दरा⊈) भागा
 जीतम वि (च्या) एत पर्या
 नर्बन जिल्ला बल्तार सृष
 र्गेन्त्रं कचा प्रकर्त्
 मूत्र विरूप
 स. (एक्ट्र) का प्रमाधि.
 उदाय पु (२०४) उत्तवः
 श्वयद् (उद्भार्) रहन कपू,
 वाक्त कर्ष
 या
 ×डच्चित्र (उद्द+तिक) रहण करता
 देम
 न (ए४) अध्यक्ष
 मिम्प वर्ष
 ×उचे (टा+इ) प्राप्त वर्षु
 उसह } ५ (क्स) प्रम
उसम } वितेक्ष गम.
 च्यिम
 रचेम
 उत्प्रह रे ६ (१४४) ब्ला
 >थम् (मा+"ऱ्) शावर्षु, द्वार
 विद्यानी काल करती.
 अप (४) बच्च, गमने
 घोष (मिश्रा) देखाँ,
 ×ए (बाभार) कार्य
```

```
भोसम्बद्ध २ ५ (भौतन) ग्रीदन
 क्रिम ३. (कर्षेड) कर्षेड गर्न
 घोसदें
 मोद्द ५ (मोन) स्प्रसन
 ब. (१९८) सार्वा
) पु. इ.स. (अवस्थि) सम्बन्धिः
 मपदि
 शन (सपी परावाँनी
 era)
 न्नासम्बद्धः सर्वन्दिव इत्तः)
 4.E
 el ($19-at) 44f.
 नि (पूर्ण) वरेके
 अक्टब्स् (क्यून्) वर्णात्रके
केन्स्,केस्ट-
 4K (
 पु. (प्रदि) व्यव
 ब्रह्ममार्थ्यः (क्रम्कः) क्रमः
 कामा की (कम्ब) कावा की.
 कठरब ५ (धेरव) इस्स्थ्रमी
 कामस व. (वन) काम.
 प्रतास वदात कीन.
 बूदाचा है. (हरण) विश्ववर्गन.
 काबा मी (पट्टम) विद्या
 फ्राम पुत्र (कर्मर्) सम्प्र कर्म
 क्रम] व. (इते) गारत
 ,हाल्यानीयारि कर गर्थ
 भ्रम्
 श्चिमणुनि (स्कः) स्त्र
 िक सम्बादनेशास्त्राः विश्वस्थान
 कर्त्त (त्य) तस्य कर्
 क्रयसी है और (११र्मा) वेस. 1
श्यक्तीय (रम) केल्चुं शुल्कुं
 (कार्ब) काम, काम.
 क्रमा म र्(करा) क्यारे,
 बार (गए) सध्
 वः -(क्शक्तिः) को
 क्षप्त न (चेंड) इन्ड क्षप्तर क्ष्य.
 बाह्य (वरव) उपस्ततु, स्प्राप्त
 क्रमिष्ट नि (ननिष्ट) नार्च, दु,
 ×कर (र) कर्ख
 क्यो पर्य.
 क्षरपान (क्स) हिंद कार्च हेतू.
 ५ (१म) शत्रहेर
 ×करिस् ((१५) केम्
```

FRVE S

मार्च.

ष्ट्रायच्या रि. (कॉन्न) क्रवा तारह.

(शब सन विकाम)

युष्टिष्ठ यु चीः (इति) अस

ब्रिक्स क्रुक कारों (क्रांन्युन्त) क्रेक कारों

श्रापा श्री (सम्) हैर

कसमा पु. व. (बरप्र) की

क्षांच्या सम्बद्धाः

43 Ld

ब्रामचेत्र के (बारनेत्र) बन्न-

कसायी (क्स) करा कास पु(गम) कक कि पु. (गम) कश्चित कशीमा TITE. ST किमंत्र (क्रिक्र) केट'-कित्र न (काञ्च) कात्रे सा कात्र विनार प्र (सम) किंनर, का-भारती कारे रिद्येष. फर्ति है। ज (कर्म) स्वाती कात किन् श. (गन) वस्तु पत्र #13 } कियान हरते) कम क्ताप न (४ क्या) नरपाय र्भविष्यु (की) व्रधेश्य स्तरं. च्याद्रे पु. स. (कार) कार क्रिक्ट (१ (१९४) शाम काराई) ጀጥር. TĆ. अपयान पू. (नाम) पंशीवना प्रदान विरोध (हिन) अभीजा कवि ५ (क्ष) बहुत नियम नाम द्राप्त व (दर्भ) क्रम् PITER THE কিন্দু ( कागर हे भ (कवेश) विल्ह्म (बध्द) जिल या 4.5HZ } क्रियम (६. इ.स.) कपुत समी, PEG (41) 4 ( किया भी (१४) रण यादे (अ (कार्स) वस ती यादे (अ (कार्स) वस ती 119 4th 11 पुष्पमार ( पु. (कृष्परा) र्यभाग ∫ कटा के (क्या) बस बार्च पुगर (इव i) भाग की Migerin 4 (undient)

क्षांबि में (प्राम्मेन्) प्रदेश रामा प्रदेश कुटार ३. (इस्त) इस्ता ×579 (8) 90∮ ×कुप्प् (दुप्-कुष) कोर करने दुमार रे ५. (इमल) हमार क्रमर ∫ क्रमारत्त्रण न (क्रमारत) प्रमासप्र कुरु दु र. (मस) देखनु सम्ब ×क्रम्य (ह–पूर्व) परवु, सरस्य कुरुष्ठपुर (सम) कुर शंक्र केपाइ थ. (क्रांकिन्) कोई वहे केरिसी को (भीरत) को का अधारणी केन्द्रस्य पु. (एम) फेनल्यान जि क्षमानासम् अन्दरम् केरके म. (सम) प्रदेश पूर्वत केवित ५ (काकेर्) कार्य brauff ein. कैसरि इ. (केवरिन्) रिक कोसा स्त्री. (ब्रेस) क्ट्य ₹ÚA कोसकिम न (भौतकित) क्योकार्य उत्तर प्रकेट

क्षं भन्नेषु (क्यान) सामु क्या स्ट्रांट एंड ए. म. (सा) क्या महित्य (क्षांट्य) साम स्ट्रांटी क्या था (क्षांट्य) लाग्य, क्या, उत्तरम सम्बर्धमा स्ट्रांड (स्ट्रांट) या

क्या ५ (चड्रा) कामा

कोइ ५. (शेव) शाव

भ्यात् (दन्) बार्ष् बार्ष ६ (१७) दन भ्रष्टिचेट भ्रष्टा (बद्) क्षत्र भ्रष्टे नार्थ सामी द्यान चर्च भ्रष्टा (ब्रह्म) रोग्डं क्षत्रकानुं स्थ्रे न्यून सम्बद्ध क्या वां (द्या) स्था, बेस्से मनार वांग्ल, बेस्स प्रयो

व्यसस्याय पु. (ब्याक्रमण) सायु, इयाप्रवास होते. व्यक्त रि. (सम) हुग्दे, कराय, पूर्वल काक्रिम में (स्वक्रिय) पोर्चु, भूकेक्ष में समय पूर्व

र्येगाकी (सम) वर्धते वस्म

श्रा**च्छ (**सम् ) गमन परपु, मपु

×ग्रष्म् (मम) मन्द्रप

लसर कुब. (द इसर) रोक

विद्वेष चरवर्तु, सम्.

×पा } (याद्) नार्चु समयु चाप् गंमीर वि (सम) गंमीर अंद ×िंगम् (सम) किया करकी ×गरिष्ट (वर्ष) निख् रायुष्यं व (कार) शाक्षारा मर्च द्रवी ×िराज् (गित्। केंद्र करवा गण पु (सम) समुनाब. गणहर ५ (कायर) गमध अस्मानेस अस्त्रो >ियाप् (थिप्) प्रक्यु व (गर्मन्य) उत्तम मिर्पम (क्षिम्प्) ग्रीम हाकी चुरसम वस्रोपा ×गल (१३) गदी रहे, पार्ट्स, धीय } मि (क्रीत्र) सब न्यध कमय नानुं पाससु इंग्यू अपि समाप्त 🐗 गणि 🕊 (नॉयन्) गणपर गणी मीर रे र (धोर) दूप गम्म व (गर्म) वर्भ धीर ( गच्य द (वर्ष) मान अभिमान मु रेम (यउ) नियव विर्म गरियम (र्यान समिनानी नेमास्य निरम्ब. of le (भुभू) साम पामा ×गबेस् (व्हेचर) मरेरम करी वनसवं टर.स ( भोचान (हेत्र) हेत्र नेतन गय ३ (वत्र) शकी गरस ५ (कः) परिवन गइ औ. (पति) मी जापार, यदा दशी देशादि चार यन्ति. ×गद्व (धर) मदन दरहे गरिद्व है. (ब्लिब) पर्यु कोई (स्थ्) ग्रेन्यु, स्मान्त्रे गरिदाकी (वर्रा) निग्नः

चैवज र. (कन्दन) कन्दर.

×चळम् (प्रम्) सम्बं, सरक्ष

×बन्द् (ग्र+सांड्) सार करो,

चक्रवद्विष्ठ (बध्यतिन्) बध्यती

याक्सर इ. म. (मध्) व्यंत

चल्रवाय इ. (क्याक) नवि

ए रोज्यो सचिपति.

चीर ग्रन्थकार.

ग्राणि नि (गुनिन्) नुबस्क्ये

श्रुष्टम रे वि (पुरुष) मोद्री

ग्रहण की (१६०) सोहती.

गोपम ५. (बैडम) भी सदाचैर शामिला स्वाद फलबर,

याविसाज र. (वेनेकन) क्रम

शेष्ट व (मम) वर

गारु प (तम) तुरु विक्रि.

```
श्रवद् ((ब∺स्रु) वहतु
 भा-पेड् े वस्तुं जास्य पर्व
 चय् (त्वत्र) स्थान काली
×वप्∫ (बर्) ग्रनितमान
×बर् (क्षम) बाक्रमुं, बखु
 परमा) वि (सम्) केन्द्र
 चरित्र 🕽
 चरप र. (छम) बारित
 चरित्त न. (बरित्र) चरित्र
 भावरम.
 चरित्र } न. (चारित्र) संबम्
चारित्र } नत निरति सब्दाति.
×खब्द (सम) चलब्
 पन्तु ।
 बरुष पु. (बरब) पत् पर
भ्षप् (रमु) चरवु पश्च
अक्षम् (क्यु) का<u>र्य</u>, बोसन
 चवछ नि (वक्त) चंबत
 # Car
 चलेडा } जी (बपेस) कपड
 चमेडा ∫
 रमाची.
 चार भि (त्याधिन) दानी
 विमासी. (वित) क्लि के
×ियारच्छ) (विशेख) विकिता
विगिक्ते 5
 .
च्या स्वा
```

कारी

अवर ४. (कररा) ची स्वार.

विचार. चित्रच न. (चिन्छन) निवास्त विषय है म. (निष्क) विन्तु, विपद्द क्रांकन निधानी सम ×िखाइ (स्वा+तित्र) उसा रहेव ×िषप (वि) एक्ट करत चिरंच (छम) रीचेन्सक अपी ×**মুক্ (** (মৃত্) লচ ৰু अस्म र प्रस्तु, पन्तु, मूर करती ×कोपद ? (मध्) चोपक्त मक्तु 🖔 मिनाव करत ×च्चोर (धम) बोरी करबी भीर्यक्रण न (केस्परम्पन) केल्वनें कारकर. योज्य न (योष) शास्त्र प्रज्ञ. चेत्रम १ य. (बेस्य) व्यक्तराकतम

बार्च । जिन्दालय प्रतिमा

खोरिय ग (वीर्थ) जोए खोर पु. (हम) जोए

×**ध्वर् (**पुष्) मूक्षुं, क्रोस

×िष्ट्र (सम) विन्त्रका

चिता की. (सम) विक्ता

परि-चित्र क्यू विकार

अस्त्रजो

अध्यत् (राष्ट्र) क्रामन् क्रम इ. (बन) वसन

क्रम्पम इ. (स्ट्रल) सन्त खाया सी (सम) कामा कारित

प्रतिदित्र कल्पको समाप **फार्टा** भी (हाक) क्रमा सालका

चित्र (तम) केरन

×िष्टम् । (स्यम्) सर्ग्य करते forc s

🖸 दाला (ह्या) ह्या अन **प्रदा** की. (सुपा) अपूर, क्षेत्रगंच ५ (क्षेत्रमून) निजीनारि

मार पु(बनी) विते मानु बाइ (वरि) वरि जा अक्राय वि (देन) जिल स्वस्थि

जैन जिल्लास

व्यक्षमस्य प्र (जेनकर्म) जिले-भारतो ज*ै* समो बचो ेम. (क्त.) आयो

र्शन (का) करन के केमके

व्यक्तिक म. (नग्निकित्) के पर्ध

मदा है

वैविधा वी (क्यूना) क्योतुं नाम

29/

शागर (

रूपय ३. (क्ल्क) क्लि. वर.

अस्त म्. (मन्त्र) चंत्र अंत्र

अनेतुपु (तम) प्राची नीव

अपूरीय ) ५ (अन्त्रांभ) शिक्षं बंबहोप 🛭

×त्रेप (क्व क्य ) स्थेवं,

शक्कापु (वश) वध्र.

बन्प् रे (प्राप्) कन्तुं शक्किपु(≉टिक) शमम बराचारी श्रम प्र. (अन) का ग्रामा ×**वाज्** (बन्ब) उत्सन्य कर्त्तु

केत का

**बाजह**ध्य पु. (क्लाईन) बाधु^क

44

वाचर्व

ब्रमक्षय पु. (क्लाल) देव क्र∺-KH.

चडा.

बत्ताको (शत) सत्र, वर्षे

सम्म पु. (अन्यन् ) बन्ध ×अस्स् (४५) वत्सन वर्ष ×इस्यु (बि⊸क्यु) बच यानको



ì., बीव ३ (सम्) कीव क्रोम प्र. (बोध) व्यवसार, बोब, कीवद्या औं (छस) जीवर्वा अवोध (रह) देख्युं, क्षेत्र मीवियतः ४ (मीनिकन्त) ×बोध (बोद) जनसङ् व्योगि ५ (बोक्टि) बोबी प्राचनी बाब जीवस्थोग पु. (बीवकोक) श्रुन्थि क्योगडा की (ज्योतला) पन्छलो भोवदिसा की (शेवदिसा) PER नीगोबो सम कोब्याजन (बौसन) एक्स्व मीचाइ प्र (जीवादि) बीव सजीव लपानी ओह छ. (बोब) बाहो. कोरे का छत्त्व. मीचार छ. न. (बीहाद्व) जीनाक रावं क्षीवयं काम जीवन इस्ट (द्यू) सम्बु सम्बु बीबिय ग. (बीमित) श्री म क्या गरनी श्रद्धाति ) स. (महिन्नी) सम्ब बीवदर. ×कीष् (करम्) करवा प्रसमी संदित्ति भ्येष ( (ज्य-तुरुव) जोस्कू असर (वर) कला रक्त राम्य (उर् उप) भवा प्र ×सा (चै) चान परत भाजद (काव) व्यव देख न (दुव) दुव, क्याह, व्यक्ति प्र. (गरी) क्रम द्याच नि (बुच्च) उनिय मील ×ठव् (न्यसम्) स्थापन कर्षा भोदित. बोड }ि (क्यक्) मोई हर बिड } ×ठा (ला) ऊपा स्टेश डिम नि (रिक्त) क्<u>र</u>्टी धोर श्वर (भग्) त्राग्र प्रस्को म्बीम् (गुण्ड्) कम्बु, श्रीका मोन्य वि (पोल) गोरन कालक

```
1.1
```

भरद (ग) राज्य *वर्*य प्रपी } (स्प) ज्युट्य घाष् } स्प LI. शुत्र (त) रिन्दं प्रथ 2 (4) Isa भ्यक } (ध्यक) इंग्लु अल्ब्स साम } चूच } × (रून्) निश्वर चूच } × (रून्) निश्वर दिश्द (१४) ६४-५ त्मर् ध्य (ग्रे) स स्पू बेंद्र रि (हेर) ग्रांत नास्त्र मच रे स (a) अपन स्थाप क्षो = ()) ध्रिप क्ष्यल मार 🕽 *(1 काल ] # ( \$r) #f1 MAKE ( & ) MAKE *4£1 (tri) this 414 मरबार ) Luc (1) Miss aged = (4,1 be) THE R (SEA) SCREEN * ( ) * ( * ) sund y to the act ) = 15 ) 41 44 eric! (2) 6,42 424 and a call to Against hote fort MINERS OF STREET STREET bal # (at) \$4, alf. t 15** सम्बद्ध (न्या) न्या शास्त्र ** feed a fee ) (re-36 (mg ) 1474 A Liai विकासी ४ ८ चरर

ञ्दर्(१ू) वर्ष विद्वसम् } व. (विश्वव) स्टब्र (सम) भार तिश्वम ∫ चय संब विषद्यास्त्री (तुम्म) स्ट्रह तसाय व. (डगर) कात. tion Profit. ×লৰ (প্) জৰু तित्य र र. (तीर्व) दीर्व तव प्र (तम् ) स्थ. वदस्यि 🕽 🖫 (तप्रस्पर्) त्र पनित्र स्वाम वित्यवर पु. (वैनेन्र) नर्वन विमिर व (तम) व्यवनो ) स. (तवा) देश व दे रोन धन्तरात स्टान. यक्षा ( सकि । तिस्रम⊸गपु(तिस्क) तिस्क. रुक्ति। भ. (क्ला) ल्यं दर्मा. तिस्य वि (तीम) तीस्य जन UΕ THEC. ਸਨਦ विविद्य रि. (त्रिनिव) त्रव प्रसारे. ता रेम (फनर्) स्थापनी विक्रिय और (शिक्षे) शिक्ष दर, सन्दि ताम. (स्प्री) संत्रकते. तु } अ. (तू) रानुवस्य समाग स्ट े ग्या अध्यय पार्यामा अताबः ? (पारतः) साका काती ताम ( माध ×त्रद रे(इस-उर्) इन्ड. तारग ने (करड़) सलार, तरह 🦠 ×नुबर् (ला) लग क्लो सारा की (गम) सकत राहा नाव प (स्तर) साव संनाय दौता ×तुम् ( (इत्-इन्न) संकेष नावस ५ (वान) तमा धोबी तदमं िपम्ता प्रधी मने तारिस वि (यरध) क्यू. व्या तेपंसि ६ (तबसिष्) तेबली. प्रशास तिभस ५. (भिरध) रेद. अध्यक्त (ला) क्रमा रहेवं धिम नि. (स्वित) उन्हें धोन तिकका} वि (धैनन) री#



```
विक्ति बाँ (स्पि) एईन अब्ब
 दुरिय व. (द्वरीत) शर
 (इप्-इम्ब) बोक्टि
अविष्यू (र्वप्) रेपन्, प्रशासन
 अस्स ऽ
 दिवस रेड. र. (विक्र) रिक
 (इप) रोस्ड
 दुवि १ मि (दृतीकर) इ.ची
 विका रेज (निया) निवरी
 डॉनेन ∫
 <u>नुद्रिम</u>
 वि (इन्ह्रेक्ट)
 प्रतिश्रम (
 नोक्ति क्यो.
 REL
 हिंद्या)
 बो. (दुवित्) र्यक्री
 चेतिया ।
 कूट ग. (स्प) हुए.
 अवेषक् (स्तृ) श्वनु, जोप्
 व (द्वार) दरनामा.
 देख इ. (बम) देव
 विकिन पु. (वेकेन्द्र) वेशोन्य वन्द्रः
 द्वार नि (इनर) हु वे कानि
 वेबाक्सर इ. म. (हम) वेस्त
 वरी संदेश ते क्लासामा
 MR.
 हुस्स } ग (६व) हुन्य
इस
```

(सप्रम्) रूच

ऋगी.

T SET

पंचम बच्चावयोः

देवी ब्री. (सम) देवी बराम की

वैसम वि. (वेसक) वेदाञ्चर देखणा औ. (देशक) देशक वैष्ट ६. व. (क्य) चपेट दैसदिए से (रेक्सर्र्फ) रेक्स पारम्बागारको स्थाय, देश-बोरिया औ. (स्तरिय) राजी

उररेक

RU.

विया 🦠 दिसा भी (विश्-का) कृतिः ब्रीम वि (श्रीप) करीब. बीपस्था नः (रीनान) परीवर्त्र बीच प्र (चैप) सेवा. दुमार ।

बरम्बण इ. (बर्जन) वर्जन

**ब्रस्ट २ (इ**स्प) दुव.

शुक्रोहरू ५ (१वॉक्न) वाम हे

अनुस् (मृ-१७४२ ) ह व व्हरित्

विवद 🔞



100

निरंद उ. (तरेन्द्र) प्रशासनायः स्तित् उ. (तरेन्द्र) प्रशासनायः साम् १ (तसः-व्यत्र) वास् साम् १ (स्ताः-व्यत्र) वास् साम् ३ (तरहाक) साम् ३. (तरहाक) आभ्यत्रकः साम ३. (तरहान) वास पंताः साम ३. (तरहान) वास पंताः साम ३. (तरहान) वास पंताः

भरम रे प्र. (नत्क) न्यत्की

नास ५ (स्वाच) ज्यान पीतिः नायक्त पु (द्वाचुन पीतिः नीरहामीद गाः नारी थीः (सा) की नासने (तो) भीग होतीः नासने (स्पण्ड) गांत करते। प्रसान (स्पण्ड) गांत करते। स्वाचन (स्पण्ड) भीत

श्रांतमः (१९) वर्षः निभागत्वः निभागत्वः (विका) निधन क्षेत्रेशे प्रन्तिः। श्रांतप् (न्मा) निष्यः निप्यास्त्य (१. (निष्यम्य) प्रस्य स्थितः। तिसिषद् } (मिन्स्) प्रकृते तिसाद् } विद्या क्रमी विद्या करती जटकरन्तुं तिसास पु. (स्ता) व्यापन्यात्ते स्थाल व्यापारीकाता स्मृत्याः तिसमुद्याः वि. (विश्वण) सुन्यादिन

निरमुख वि (निर्मुत) गुनाहित निरुक्त वि (क्षित्र) शरीरस्य, धापन निरुक्तछ वि (नियर) रिक्र, अपन प्रक

अपने हरू अतित्रहर (तितन्त्र) दन करके बाद्य करके कर्मने द्वन करके विज्ञारा और (निर्वण) कर्मन स्टब्स

श्रमित्रहार (हे) क्षत्र पासलु निकड्य वि (भिन्द्र) सिन्द्र निक्य (सिन्द्र) सिन्द्र निक्य (सिन्द्र) सन्तरस्य

सुरावर्षु, बरातार करा विद्यं नि (निर्देष) दक्षायैत निद्यं की (नित्र) निरा निष्यश्र है (निराय) कैरान निष्यश्र है (निद्यं) केरान निष्यश्र है (निद्यं)

निष्यक्षत्र के बहुं, सिद्ध बहुं, गीपत्रहें निष्यक्ष वि (निष्यम) श्रासदित,



पंकास न (पड़न) काल पंकार म. (पड़न) वांक्क. पंडाब पु (पानमा) पांडु पालमा पुत्रो पांका पंडाब पु. (पांच्य) पंडाल. पुरुष्क हे वि (पक्ष) पाने हुं. पिका

पण्या प्रश्न प्रथमाहितुं सारों मार्च सारों मार्च पण्या प्र (पश्चिम्) पश्ची, पण्यापण्या में (मरमक) प्रसाद देवीरी, श्रीय सारवार्च पण्यापण्यास म (मरमास्त्राम) न्याप सम्मानी प्रशिक्षा

पञ्चा अ. (रच्या) पक्षे अनस्त्र, पश्चामी पञ्चामात्र इ. (पञ्चाप) अनु स्माप्ता प्रशासना परअवस्ताल व. (पञ्चापन) सन्त्र, परकास इ.स. परकास इ.स.

स्पोत्तर.

प्रज्ञुक्त पु. (अपुत्र) कारतेव विक्तुन्ते पुत्र प्रपञ्ज्ञकास् (पर्युक्तम्) हेवासानिः, प्रपञ्जः } (स+स्वास्त् ) सोन्तन्ते, प्रद्राक्षः } सन्तन्तकानुं, सर्पत्र करते। अपुत्रः (पद्र) परसुं परित्र कर्नु

भयब (पत्) पत्थे पतिन क्ये भयबिक्कम् (क्षत्रक्यः) निश्त वर्षु, पाक कार्युः भयबिक्कमक्ष व (प्रकारक) प्रतिकास क्षत्रपत्र क्या, पत्थी पाक प्रदेश पविमा क्षी (प्रतिमा) गूर्वे, प्रतिमा क्षी (प्रतिमा) गूर्वे,

पडियार १. (मिन्स) हमा वहारे. पडियापक १. (मिन्स) गु ×पडियाक (मिन्स) स्पेस करते क्षेत्रक वरते. पडियाग १ की (मिन्स) पडियाग १ क्षा करते. अपह (क्ष) नक्ष

पश्चिम् । श्री (मशिरम्) पाडियामा । इत्या राजी प्राप्त (१८) मन्तुं प्रदास व. (१८म) मन्तुः प्रदास व. (१८म) मन्तुः प्रवास प्र. (१९म) समस्त्रम् प्रवास प्र. (१९म) समस्त्रम्

## 109

>पय् (पत्र्) पत्रमस्त्रं रोबद्

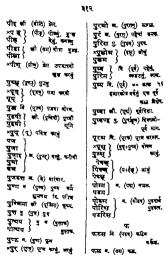
भपन्यत् । (प्र+इसन् ) प्रस्पना

पष्पक् रेक्टबी उपवस भागवा यय पु. न (भर) पर सन्दरसमूह, परणा जी (प्रशा) दुदि-विमक्ति सन्तवासं पर पर्गाः ५ (सम) मध स्थानः पर्यंग पु. (श्वतः) पर्वमीय अप**चि** १ (प्रविभइ) विश्वास पयत्य प्र (परार्व) परार्व पश्चिम 🕽 बर्बो नायन बरबो सरदना सर्व. ×पश्चिमाम (प्रति+मावन् ) विश्वास ×पया (ध+वनव्) जन्म भागवी न्यानो प्रदेशि क्यवरी उत्पन्त कर्ष ×पल्प ( (प्र+प्रर्वच ) ब्रावना पया की. (प्रजा) प्रजा संनाम. TEN S न्त्रचे. प-पास (प्रकानक) प्रकारत परिषम वि (प्रार्वित) सन्तरा पंचास दु (महास) अनारा WUITE. पयासग वि (प्रवासक) प्रवास पभाष 🕽 पु 🖦 (प्रमाव) क्लार पदाय 🖇 HHRL. यर दि (सम) अल्ब धेष्ठ ×प~साक् (प्र+सम्बक्) प्रभावका परपरा की (सम) परम्परा परवी. अनुकार इस्. ×प सङ्ख् (प्र+यूत्र) प्रमार्जना परकाम प्र ४ (पराचम का सचित्र समार्थ्यः करवे साथ करत परकार पु. म. (सम) पर की ×पमउत् (प्र+थव) प्रमाद करा परकारा का (धम) पर की भूनां परच्चर ) मि (परसर) ×प-माप् (प्रश्नव्-माव्) प्रमाद पर्व्यर } एक्नीजने मन्त्रो नको भून्युं परोप्पर अस्य. पमाच पु. (प्रमाद) प्रमाद, मूळ परमपच र (परमपर) मोध वतात्र पर् अपमद्रस् (मि+स्प) मूच्यु, विस्म-पराभव ५ (सम) परामव त्व का

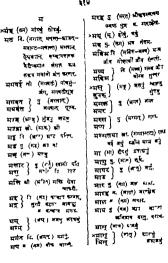
×पछोदद (मन्तर्) क्येर अपरिकास (वेप्टव्) वर्पेट्यु, क्षकोरम rica. पछाटत् ) (पर्वस् ) प्रेक्ष् पन ×परिकार } (परिभांभ) परीका परिकार } कारी सामन् ह्यु विकास ਪਲਟਵ पसरवं परिकास म (गराहर) परीका थ-धरकः । (प्रभवते) प्रत् ब wert. अपूरित परवे.. ष पन्दें 🕽 ×परिचय (शरि+रप्र) परि पबच्च पु. (६वन) प्रव वानु परिकास साव करता चवयच्य त. (प्रदक्षत) बसम्म परिष्यतः । दि (पर्रश्यकः) Out. परिकार है जान कार्यन पविश्व वि (प्रदिष्ठ) बरेश वरेन. परिषय नि (प्रमिक्त) परिपक्त. पविचया ती. (१६३७) चरिष्णीच दि (परिष्णीन) पर्रकेड. diam'r. ×परि तप्य (वरि+तप्र) पद्मनाप पयासि सुड़ (प्रवाति) सुनाम्य करवी गरम बच्च-×परिदेख (सम) विकास करवी परबाद (प्रजब ) प्रदश्या हेरीdar ed. अपरि-विकार (परि+विर+वा) ×प–षण्ड (स्थर) स्वीत्स करो. बात का यर करियत गतुः प्रमुख्या सी. (प्रसुत्या) श्रीसः ×परिष्यय (परिज्ञा) रोग्य केरो प्रकास (गर्नन) वर्षेत परिखर ५ (नम) हमीन पस्त ५ (सन्द्र) प्रथल परिसा पर्यद-पर्वदक्ष) सम्ब 1011 ×परि-सा (पर्म+ ग) कोरक. य-क्षेत्र (४+६न) प्रदेश करी बार्य करत. प सम् ५ (प्रक्रम्) धार्मि परिका की (परिका) लाइ. कारी-धरोबधार प्र. (गरेशकर) क्यो प-सन् (मन्द्र) प्रतन करका अभ्य अस्तवी अस्तव्य परेतुं अपरकाद्य (बाह्यक) सन्दाहकं, सन्दाहकं

255 पाय प्र (शह) क्या पात्र अर्थेन पसाय ५ (प्रशत) महेरकनी क्त्रो बोधो भाष. रवा स्पा. पाय प्र (पतः) पत्रबु पस्य प्राप्त (प्राप्त) प्राप्त पायड ( वि (प्रकट) प्रकट पदार ५ (श्राम) प्रदार. पयड 🖠 पद्दाप प्र (प्रमाव) प्रमाव चर्चि पायसो भ (प्रायमम्) प्राय सामर्थ्व चल करीने पदावरा नि (प्रमानक) प्रमावक पार्टीक पु (पापर्वि) पारची प्रमादना करतार उन्मति क्रिकारी की मुख्या WATE. ×**पारं-नाव्यक्** (पण्डाण्ड्) पार पश्चिम पु (पनिष) मुसापन पामन पद्म प्रभू) प्रमु, स्वामी पारेपम रे प्र (पागक्त) पारेना ×पहुष्पू (प्र+म्) समर्वे वर्षे पाराषम ʃ ×पा (पा) पाच पान करव

पाच पु.स. (प्राच) पुरिव हितरे र ज प्राचो (शेव हिनदे ज तक्क प्राचोग्ल्यान आहु) पाध्यादयाय पु. (प्राचीता) औव दिख प्राचीता जोव पाचि पु. (प्राचीता) औव प्राचीत पु. (प्राचीता) औव पाचिय पु. (प्राचीता) औव पाचिय पु. (प्राचीता) अव प्राचीता को (प्रियाना) व्यव पुणा



यहिर नि (निपर) गर्द स्कार् (परव्) बार्च चौज् यद्द-भ } वि (स्ट्र-व) एप्ट सदुरा } वि (स्ट्र-व) एप्ट फाम् 🕽 ×फास् १ (स्त्रम्)लर्ज≉को बहुमी अ (बहुसम् ) अनेक वार. फरिस् } पास ५ (सम) सम्ब पास ५ (सई) सई. ×पाद् (शप) पीत्रपुं कनत्त्रुं ×फेट्ट् (एड्-प्रंस्) विकास, \$रेंद् } प्रदर्भ भागेनु धीलने बासा श्री (सम) इमारी क्रोडनी रुगल की-प्रसाद (नम) प्रसाहत भ्येद (स्केटन) दिनास करता धादा स्त्री (शर्द) हाथ भुना दूर करत षाहिर १ वि (शप) वस्तु ×षेष् (नम) कन्बन कम्बु, दोबबु पमस् 🖠 र्षभाग न. (सम्पन) वेदी सटकाव याद्व पु (सम) इल मुग चपन्. विंद न. (सम) चिंर प्रतिमा बैघव पु. (शम्बद) बच्. निय ×धीड् (मी) वीतुं जब पागलु पंभु उ. (टम) बोपव मित्र ×युपक (पर्व) गरना चन्नी बम्मपारि वि (बद्रवारिन्) मधायव पाममार ×तुम्झ (नुष्+नुष्य) बोच बरो इस **र्गमधे**र ब. (महाबन) मेक्टरच जाग्य समज्ञ वस्द्रवरिय ×पुद्रम् (मर्ह) इरी ब्यु यमचेर बुद्धि भी (तम) इदि बद्ध व. (तम) सच्छि तामध्वे. पुद्द पु. (दुव) वीक्ट. ×वप् } (मू) श⊅कुं 37 3 ×बुदुफ्क् (कुपुत्) धारानी क्ष्म वसिद्ध नि (वसिद्ध) सर्ववी कार्यो. वस्तान, बोस्फ (६५) भेन्द्र वहि-दि ) बोड् (रोष्) योग वर्ग सम्बु क. (के(म्) व्याग बोहिं 🗗 (येषि) छह कर्मधी



TTI.

धानु-

मिन्नाचर मिश्

मिक्यु १ (तिः) निधुक्त साधुः मिण्यापु (मृत्य) नाम भिरास पु (मम) मिन्द ×मुज् (सम) जमनु मुपम पु. (मुम्ब) नप भ्भुस्त (श्रा) मृस्तु, पृथ्यु भूम ६. र. (क्) अनु प्राची ×मृम् (प्रा) धामावदु धन-भूसच य (मूरव) आसूरच म्गेषु १ मि (मानिन) भोग भोगि 🖇 ेनका विश्वधी भोग 🕻 पुन, (मान) मनोइ मोम∫ प्रश्तादि विपना पानु त, अपमांग. मोपचन. (वोत्रन) मोक्रट. सह भी. (मधि) हुद्धि महरू ५ म. (तुक्त) सुन्छ. मेगास व. (मग) भेदा कन्द्रव

मासा प्री. (माय) भारा बाधी

मिक्गायरिम वि (निग्राचार)

माबि नि (मारित्) बनाई. ×মিবু(সিব্) মণ্ডুৰীন্দু

करन् नाजारन र्मन पुत्र (सन्त्र) सन्त्र दिकार गुप्त वा", मैति ५ (मन्त्रित्) मन्त्री सद दि (तम) पीने माप्तु ಫ್ मीवर प्र (नम) मद पदर मंदिर (सम) मंदिर जिल्हाम मध्य पु. (मर्देश) मान्य मक्रियमा रेकी (मिरिस) मार्ची-मंचित्रभा 🖯 ×समा (सर्मात) सलब् साध्ये सम्म दु (सर्म) ग्ला सब्बे दे (रीदे) मध्य सी मच्छर पु. (माना) र्म्म हेर. ×मञ्जू (मक्) मद करवा संक्या शीमसान करवा माज न. (मप) मप बार मरिय सरकाया की (मर्नाता) सीमा द्द म्यनस्या

सजहां ब. (सम्ब) श्वर्मा मातिरे,

WITE.

Ψť.,

×र्मन् (संग्यन्) विभार कारो.

नि सन् (निमन्त्रव) निर्मत्रन

सम्बद्ध पु. (सत्त) भागस्य अज्ञानहात (अन्नात) दिस्तरो ≻सर् (म) मर्ख महिमा की (यतिक) मधी. भरक न. (दम) क्लु मख् श्र्मरिस (**एड) में**गांड सम्बद्धः (सन्त्रः) सर्वे वितः सञ्जयक्रम ९ (सन:नर्बन) चतुर्व श्मरिस (२४) ध्वर रख, क्म इस (बीमान सक्य गानेले जनावनार्व क्षान ) मबेसि नि (मानिना) प्रधरी -्रेम (सना<del>र्</del>गका man ( मध्ये प्र (हम) म≷र. मन्तुपु (मन्तु) क्रोब मधास ५ (स्तुष्त) सनुध्यः मणारह ५ (मनोरन) मनोरव 101 महोद्याद ) मजोरज ) नि. (मनोड़) सुन्दर मचाण्य 🕻 अइस्सप

संपर्ध भव्य ५ (भ्यसम्म्) म्बस्स मदाबीर ५ (छम) बोमीहम ÷. मदासई की (स्थलते) बक्त धीक्षणको स्त्री महिवाछ ५ (स्विप्रक) ग्रम महिस्स औ. (सम) भी बारी सञ्जूष. (सञ्जू) सर्व महर वि (महर) महर, द^{कार} first sitt. मदोसद ( ५. (महोता) होये

महोसहि भी (महीपनि) भेड

ब. (म्र) म

भारसव सद् देति (सर्गः) स्टेडे महित्र ।

मार्ड मिरद्वा व. (मिक्स) क्लाव

मच वि. (तम) सरकुष मत्यय ५ न (मलक) मलक, मानु अपन्त (मन्-मन्त) शास्त्र (मर्) मिमान, गर्ने.

रि. (क्त) मधै गरेत

मार्कसमा । वी (प्राप्तमा)	मदेखे.
मार <b>म्ध</b> ि मासी नास्त्रनी । स्ट्रेन	×मिसा (मी) ग्रिम्म बर्चु, कर मानु
भ्याज् (सम्बु) सम्मन <b>व</b> र्षु	×मुंख् ] (सुब-सुन्ब) मृब्बु
भारर करते माण पु (मान) अभियान कर्न	मुद्री छोडन सक्ता प (तर्म) गुर्भ
माणि वि (सावित्) अमिनावी	मुक्त । प्रति मूर्म मुक्ता
मायरा )	मुक्परस्थि वि (योद्यार्थिक) मोद्यार्थ अर्थी
मामा की. (मानू) मान्य माड मा क्रनी.	×मुक्तर् (छर्-छप) सम्राष्ट्रं साह सम्मा धरा सर्थु
मार }	मुख् (डा) बावर्ष
मापाक्षी. (दम) कपण्टक मान्साको (सम) सङ्ख्याः	मुचि ५ (मृचि) सुनि काप
मास 🖫 (स्म) महिनो मास	मुचित्र पु. (मुनीन्त्र) भागार्व मुस्ता )
मास } = (मात) मान मेस	मुसा है ज. (एय) निष्णा भोसा पीद
माइट्य पुन. (माइसम्ब) महिमा	मुद्द न. (मुच) सुख माद्
मोउद्गुप्रसम्ब साइफा) व. (ब्राह्म) ब्रह्म व	मुद्द्ध-र नि (मुखर) गामास.
माइज हु. (त्राक्षण) त्राप्तण. चैमण	मुद्दा ) स. (मुपा) वर्ष मीरवद्धा । प्राप्ता.
मिश्रेषः ] इ. (पृत्यः) कन्त्रः मृत्येषः	मूग वि (मूक) मूंगो. मूद्ध वि (मम) मूद्य मूर्थ
सिरा } १ (सूरा) हान. सम्र	व्यक्रानी,
मित्तपुन. (मित्र) मित्र	मूल व. (सम) मूच वारव व्यक्ति पारव
मिची को. (नैजी) मित्रवा चोस्तीः	मूखाबाय ) दु. (श्रुतार) क
सीविका के (मिकिन) मिला करें	मुसाधाय है तत्व भारत स

३१८

मेक १ (क्स) मेक पर्वत. रविष्य (क्रम) सर्द भेस्य (प्रव्) मृष्यु, क्रेस्युं रकस्सानि (क्षस्त) ग्राप्ट में इ. (नेप) मेप राइपुरत) ख मोक्खी ५ (मोइ) मोस रक्किम वि. (रिक्रेन) रहित वर्षित मुक्स 🕽 रका । और (विका) समि मोम्पर 🖫 (मुद्दक) माध्य राके मोज ] न. (मौर) मौर ×राय } (ग्रा-मि+ण्ड) मडब | प्रामाधी बानीना वि∽रोप्∫ बॉमनु, निरंग्यु र्गक्य समिपन राह प्र (क्स) मह निक्रंप मोर पू (भक्त) मोर रिको ची (च्छा) वर्धवानि 🕮 रउष् } मि (तीत) शास्त्र रोष् } भक्ष्याः = दिश्व पु. (रिपु) पत्रु भेषक, ग्रीवन ्रीय (सम्) सुनी कह रिच्छ पु. (क्रम) रीज **रक्तु (ग्व) तात्र क**् दश्चन (स्त) स्प रक्षाच र (स्त्रा) शहर प्रश्न ×ėu रक्कम प्र (ग्वन) एक (व्यु) रो<del>ष्</del>युं रक्त र (सक्त) राज्य रका वि (रुद्ध) स्थल अराज्य काद-न्या दि. (इ.न) रोपी रागी सदस्य <यम् (सम्) रमद् क्यांत्र स्**व**दो बक्स पु. ब. (१७) हार रमंत्री की (संग) की कुन्दरी दच्या (रण्) स्पर्न पहर सोव पन्ने <स्यः (रचन ) रचन, योद्यक्षे

325 क्लापुन, (स्प) क्षेट्र, इसन्टि ×िख्रपृ(सम) डींफ्बु, वापम्बु क्सिंब दु (निम्ब) शीवशनु शाह मुम्दरता माइन्ति ६४ ×कस् ] (क्प-इरव) क्रोध करवो ×िकेड् (धम) चाट्यु दरम 🕽 ंरोय करवो (মিয়া) ভ**ৰ**ৰু अरेक (एक) क्रोमन् - BE ×रोमन्द्र ) (रीमन्दर ) वागीतन्त्र ×खुष् (क) क्यक् वम्गोस् 🕽 लुक्द दि (सुरूव) को भी सोसुप रोग ५ (सम) सब, व्याबि नासक रोम वु (रोप) रोप कोप ×रदुष्पा (हभ्य) होस करही ×खुइ (मूर) योषु, शाफ कर्षु, रक्तका म (मधन) किइ नाम Guy सेट्ट पु (डेय) केत कतान सम्मानि (सम्) संबद्ध सम्मा स्रोग पु. (बाट) नांड दुनिया सम्बद्धीको (न्ह्नी)सङ्गी स्रोगवास्य ५ (शहरात) स्ट्रानी भराज् (तस्य-सम्ह) सम्ब दिस्पात. पानची चरमानु स्रार्गतिस ५ (नोद्यम्तिः) दर सद्भवि (व) ध्रम्यर. नियेप स्रहि पू (बाध) सामग्री नासी मुंडिय वि (मुच्यित) ध्यारतात्वी स्टाइ} व (बसाट) मल पशास । म्बं के ने बी के स्रक्षिय नि (बनिट) सुन्दर, मलोहर भरुष (ब्यु) थेलकुं पद्देव स (स) शाझदवाके. अस**र् ) (ब**म ) फैल्सर्च पाम**र्च** क्रम् ) यहर ] पुन. (वज्र) वज्र सर्-भावि (बदु-न) उटा ×पेब् (सम) रुखु, केराई,

٩R

×बाह् (शम्ड) बोर्ड्ड, राज्यु चंद् (छन) वंदन कर्तु, बसर्चु बाह्य न. (बाह्य) बाह्य. भ्यपद्माण् (लावराम्) ध्यारमार Wer, the Grants वक्ताच र. (म्यादमान) वसाम विदेश करना. वस्पापु (शर्ग) वर्गकशूद बन्ध दुः (न्याप्र) शाम ⊁षच्यु(म्म्) स्तु **445 € (₹3) 87**3 बच्छ प्र. (बहुब) काल्य बाउरके. वश्रक्रम वि (श्रक्त) रायो बद्धाद्व १. (बहाभाग) शरकान-**एड. ब्ल**एस ×वज्ञ् (पर्वत् ) त्यान करतो. अवस्थार (कर्) ध्येतं म्बद्द (श:-सर्व) सर्वे होत. भ्या**र्थ** (दन्-वर्न्) वस्तु वपस्तर ) सी. (रक्तरि) वज्यार ) स्थानि

युगिमा) को (४०००) की

(रर्गप् ) यकालबु

विस्तवा

बाध र (रख) वर्ग धर बस्मद् पु. (स्त्यंब) शमक्ट अवस् (वद्) सोवन्-WE S. E. (NY) NY, PROF. व्ययप्र स. (श्वम) स्वयः बयक्रिज्ञ वि (नवरीय) शाय, Gerr apres. बद्ध (१-१) मर्च, व्यंत कड बार बंद (तक) गढ, केक बराब मि. (श्यक) पर्धवः ×बरिस् (१९) वरतनु, इप्रै क्स्प्रै बरिस ) इ.स. (१९) १छ, बास ) क्यूनर, सम्र तर RECEIPT, RECEIP. वरिसा ] बरे (शर्ब) धोमार्ड पासा अवसम् (कास्त्र) पश्युं बनसाय ९. (ब्ब्बनाव) ज्याराट कार्व कहार. म्बस (ब्रम) प्रम्मं, प्रोत

बस्त वि. (स्तरि) वश्री बस्ति सम्बद्ध

क्षि ३. (स्त्री) सम्ब

बार्य व (शक्र) रक्ष

क्टा को. (बार्टा) बाट, स्ना-

वचार ] हि. (बल्यू) बल्य

पंसत ५. (सम) वसन्त ऋतु. बस्य र (अस्त) क्या इत्तर ×षमीकुच ) (वधी+क) वधमां वसीकर 🕻 बसीह्रथ नि (बडीमूत) बस ययेन न्द्र**म् (स्त्र) पहेल, बद मन्** बंद पु (बय) बन, मह भी (क्यू) वह भागी. श्वायम् (वि+आ+क) करेपं भोजन् प्रतिस्तान करते. षागरको न (म्यक्टन) स्वा वापरच वारच 🕤 उपदेश उत्तर बाणिक्क २. (शकित्रव) व्यापाट पार्थीकी (सम) नाजी बजन-पाम वि (सम) इत्व ध्रतिकृतः बाय (राक्त) बोबड्रं मन्त्रं मनमञ् बायका भी, (बल्का) बल्का वायस द्र (तम) कागनी षाया (राष-वा) वाची वाचा यारियर ५ (शारिकर) ऋकर, मत्त्रचारि. वापार ५ (न्यूनर) न्यार, स्वतस्त्रक. यायारि वि (ऋगरिष्) व्यारी पार्वाको (क्षत्री) सलगै-

बास एवं (वर्ष) वरस व, वन्स मारत भावि केन बासहर ५ (वर्षकर) पर्वत विश्वय धासुदंब ५ (हम) बाह्यदेव धर्मचन्त्रती निर्म वीच दाहर पु. (स्थाप) श्रीकारी वाहर (वि+भा ह) बास्यु बदेव बोटा में बादि ५ (म्बापि) म्बापि राग विक्रस पु. (निक्रम) विक्रम बिउद्य (मि+इ) क्रावत परक् <u>নির্মর</u> विक्रोग प्र (निक्रोग) विकास. विव ) न. (क्ष्म) स्थाप **İ**1 ) विधिम रे प्र (प्रविक्र) वीकी विम्युम 🤇 विश्व द. (विश्व) विश्वाधा पर्यक

प्सर श्रीबिक्स } (मिनझे) नेणमुं चित्रके र रहते करते चित्रक (सिन्ननेति) होतु बनु चित्रकरिय द. (निपानित) मन-मार निपानि बित्रका को (सिन्न) सिपा

सम्बद्धाः

विज्ञाहर ५ (नियास) निया-	बिरख नि (तय) भन्न गी.
वर विद्यासको	विरक्षिम में (निर्द्धन) रोह.
	व्यव शिलाक
×वित्रम् ) (म्बच-वित्र) शीतवुं,   वृद्धाः   वैत्र करतो	
	चिरुद्ध मि (सम) मिनग्रैन,
×ियद्व (अर्ह) उत्तर्जन करने	प्रतिकृत उम्ह
अकरनु पेश करनु	विकर्णान जिल्ला) करण
चिष्पद्वनि (विभ2) कम्म पानेस	A&r
विषय पु (निवन) विनव	यिगोष पु. (मिरोप) निरुद्धाः
विष्या थ. (भिन्य) वन्त्र निराय.	विवक्ति औ (भिपति) इन्ह
विविद्या है (वितिर्मित्र) निवने	विवासीम ) वि (विपरी)
करीने क्षेत्रावयः	विवरिक्त उर्द महिन्
×विष्णत् (गि+इगन्) निर्मा	विकास ( (विनाद) वर्ग का
करमें मार्चना कान्ये	34
विष्णाच व. (विज्ञत) सन्त्रोच	
क्टर विकार करा	×विवाद् (विश्वाल्य्) तम्ब करा-
विकास के कि किया किया	विविधः १२ (मिनय) क्लेक
विद्या गुप्रावन,	प्रथम, स्कृतिय
विमाच पुन् (भा) रिमान	विवेद ५ (निवेद) विदार
विस्त्य ५ (निस्त्त) वार्क	वर्द्देचची संद
वियंतिय व (विवस्तित विवस	विसाद्धाः सः (विश) मित्र हेरः
वियेशिय ति (सित्रुश्मितः) विकास पामेण केपावेशः	विस्ता वि (विसा) एका,
वियम्भाय नि (नियक्त)	Cha mark
इन्द्रीचर, इसक	विसय प्र (विका) वांचे इन्त्र-
विषया) भी (वेरण) वेदना वेषणा पीछ हुन्त	कोना सरदादि निक्तो निक्त
विधार पु. (निचन) निचम सरवर्तिक	विसाय ५ (विका) यर बोन्स
वियार ३ (विक्र) निरुद्ध,	विद्यास व (विक्रम) मोई-
Page	वि-सीव (विश्वाद ) केंद्र करवी-
	I in differently .

विसेस इ.म. (मिडेन) निस्त प्रवर, मेर व्यक्तावार पिदव फ. (मिमन) छपदि, देख-विद्वपि नि. (मिमनित्र) छपदि बद्धिस नि. (मिननित्र) सुवा विद्वसिस नि. (मिननित्र) सुवा-

येत विदि ५. (मिन) तिथि कनुष्यत विदीय) ति (तिर्मन) वर्तिन विद्वार ) ध्वेत. विद्वार ति (निचुर) इन्ह्यी

श्री-हे (ति: वा) कप्त वतात्र् बीजा क (मा) केवा बीयराम ) तु नि (बीतप्रम) विवराम ) चलदित क्रिक् बीमराम निकार विवराम वाई

श्वीसर् (ति स्य) मृरी विस्सर् त्रे मंत्रज्व पीसस् (विभ्यन्) नियान करते सरोहो क्या. पीसम् द्र. (विभान) विकास्त

पीसाम पु. (विभाग) विश्वनित् विशयः वीम् व. (विशव) कमण्याः वारे यहः

संस् ।
बुद्धि को (इति) इति, वरणार बुद्धिणम न. (इतल) इद्देश्य प्रवेद (वरण) वीर्ष्य संगेरत बुद्धि को (इति) इति वर्णान

(मप्) नगर्

पुष्ठ ति (उष्क) बहेत. सेन्न्य दु (देश) हैय. तेन्द्रसिक्ष दु व (तेन्न्य) वहत्ते बहुरिक्य देशे सेन्द्रस्था दु से, (वेशास्त्र) सेन्द्रास्त्र सेन्द्रस्था सेन्द्रस्था सेन्द्रस्था सेन्द्रस्था देशे सेन्द्रस्था सेन्द्रस्था सेन्द्रस्था

बर्दर | बेरमा म (बराम) वैराम अवेस् (का) कम्पुं आमेस (क्स्) कम्पुं उडक्स कस्यु कीमस्यु अवोस्ट (अनिनक्स्) उसम्बु

बेस्तबण १ (भाग) इसं बेस्समण विकास बेस्सा तो. (बेस्स) वेस्स बोस्सिट् (विश्वप्र) वेस्स बासिट् (विश्वप्र) स्थय कारो छोर्स्

×सी-पत्रम् (सम्पद) प्राप्त वस्तुः धन() भ (एना) (मेहा » स्रं-प-सरुब् (स्त्र्भ्य+ब्र) कर् Brete we have we स्तरो अर (सम्बद्ध) एक मस क्षेपण्डिकी (सम) क्षेत्र करि edf भा (सर्वा) सर्वा भौ संकास ५ (एसम्बे) सर्वे. स्त्राण प्र (बक्न) स्त्री य

170

संयो

काकर्राज आहि निनिध

करतानि अञ्चलित संग

प्रकार करकी श्रीकर्त

र रही

करतो जाकोस परारे

सकता ती. (बुद्रका) शंतक.

सीच इ. (सम) संघ स्थापन

अप्रतं⊸क्रम (च+च्या) संक्रम **के**नी

सैज्ञार <u>५ (क्</u>मा) सका चारित्र

में जब (स+का) सारी प्रशीत

स्रो-बस् (स+ज्यक्ष ) सम्बु, क्षेत्र

संजुक्त वि (स्कुर) कुक परित सोप्रोस g. (समार) संबंध केना

भौतीस ५ (धन्तान) बन्तीन

विद्यादि वायोगी निवास

र्श्वम ५ (सम्बन्ध) केर्ड संब बोधन संग्रे

धमार

×सं भए ] (वं भय) समन्न वरव् संबेग प्र (यम) संदारको देखन मोक्समिकार

ससमा ५ (संटर्प) संग, नाकव.

ससार ९ (सन) क्रेका सारका है म (शिम्ब) शैरम रिस

4077

सक्द ६ (६व) स्त्र

×सन्दर्भ (सह) समर्थ बडे. सम्बंधः (सम्बद्धः) प्रमध सत्तास व (तकास) संतीप

समा ५ (लर्स) लर्स देक्टेफ संख्या न. (रात्य) राष्ट्री वर्षाने

स-विस (त+रित्) दर्भको पहुचा समाचार पहेता.

संघ् ) (छ+मा) समितु स्य-ध्या वीरमं, सा स्टब्स्य में (क्षनार) प्रानारी क्षप्रक अ (क्रमति) शत हमली.

सत्य म (शक्) सक् इवीमार-

सरह वि (उन) ठैवार.

सम्बद्ध (धाउन) महास्व सरधान. (बाह्र) वाला मागम सुरका) 🗣 (एक्स) इस्स सम्बादी (५३) थेप्य, इन सेन्द्रा | पवारी. सम्नाम्(मास) नारर कर्पा समहाय ५ (साम्बान) स्त्रती सप्प प (मप) स्म. सम्बाध परास्त्रेन सच्चाव वि (सप्राव) प्रात्रो मादि ऋव सहित. अस ( (ब रू.) वत्र वृत्य गर करते सन्भाष ५ (नव्भार) सम संद्रिम ति (ग्रीन) सफ्रैं मह अस्टिल नागव संदर्भ (सः) सुल्बो समेता ) भ. (समन्त्रम्) बार समियं म (सर्वत्) भीगं**री** समंतेष । बाह्य सर्वे अप सार् ५ (बन) कल समण पु. (धमन) भमन नाषु ×सहद्र (भर्+वा) भद्रा कात्री समजोबासय-ग ५ (भन्नेपा-सक) भग्नक साधुमानी सद् } ३ (भाष्र) भवक सरद उपाउ **শ**বাস্ত্র सदा ] भी (भदा) मह समत्त वि (समत्त) कपूर्व राष्ट्र सददा सम्भव वि (हमर्ब) समर्व सर्दि (नार्पन् ) गावे शक्तिहासी सत्तान (सत्ता) वतः पराज्ञमः समय पु (नम) समद कार्य, सित्त भी (घषिः) शामर्थ्व बतात अवसर दाल. पर्म

×समाय् ) (सर्+राष्) हमान

सन् ३ (चष्) वर् समाब 🕽

सर्गुषय ५ (ध्युरुवन) स्थि-

े कर्तुं पूर्व करत समाच वि (इसन) सरह दुन्न विस्ति बाह्यानुपाम 🕏

सम्ब

**धुनुबर्द ) भी (वनुष्टर्या)** 

समाज वि. (१९) व इ. विव संज्ञा 🕽

वेरीते याम ४. सरध पु. (नार्ब) काथ वसुराय, सहस वर्षे

समापरच ४. (छ्माचरम)	समामार ५ (क्लक्त) उक्त
श्वकरम जावर्ष् कर्ष	arc.
श्चमायर् ( <del>गर्।मा।वा) क्र</del> बु,	सर्(स) भरकां कर्नानां
नावाच करवु	सर् (म्य) समल कर्यु, बर
×समारम् (धरासम्) सह	पर्य समाज्य
	सर प्र (सर) करूर
क्ष्य दिमा कर <b>ा</b>	सर प्रन (श्रम् ) स्थार
समाहिष्क को (नगावि) विकास	सरम व. (धाव) शत शाधव
स्वस्था सन्त्री चरित	सरवन्त न. (कत्वरा) धरवाउँ-
समित्रि ) भी. (नमृद्धि) स्पृष्टि सामित्रि । स्मृत्यु प्रस्तुः	सरस्यां ती (तरसर्व) वर्ण
	वास वर्षाः
समीय वि (समीप) पासे	1 -
नगीर	सरिष्ध ) में (बरह) बरब
खमीदिम वि. (नगीदिन) इ.इ.	सरिक्क∫ ंसमस्
नारिका.	सराय न (नरोड) रमस
	सरोदह न (तरोब्द) कान
समोमरज सम्बसरण । इ.स. (इम्बनल्ब) सम्बसरण	×सम्बद्ध (श्राष्ट्र) प्रदेश करने
Hert M (mar) - 1 1	सस्ताहा की (स्रांग) वकन
सम्मंत्र (सम्बद्ध) वारी रहे.	प्र <del>चेता</del> -
सम्मच न (सम्बन्त) एवं तत्व	×साब् (रुप्) बाग देवो सोक्न देवा.
क्षण भद्दा, सम्बन्धर्यक	×राष् (६) जन्म बास्सीः
सर्प रे व. (लब्म्) पार्ट,	समज न (प्रत्य) शांत्रज्ञां
सर्) पात्रमानेहे.	सम्बद्धाः) सः (स्र्वेड्स्) वर्ष
सपज इ (लक्ष्म) इर्राची	सम्बत् । प्रश्री को लड़की
श्रातिवर्गें,	सम्बची)
सवर्षं भ. (लक्त्यू) विस्तर	सम्पत्य । अ. (नरव) वर
सपड वि (तक्का) पूर्व सर्व	सम्बद्धि देशने. सम्बद्ध
	444

सरवर्षा पु. (स्र्वंड) धर्वंड

वे वही समझामाँ ग्रहेन् मयरान् धर बाजनार सम्बविरद् बी. (तर्वनिरक्षि) पश्चे साय व (शह) सुप म्बाप्तरोतुं पालन सर्व पाप सार वि (छम) भष्ठ उत्तम सारदि ५ (सर्ग्य) कार्या म्यपारको स्वायः सम्पया म (कर्वरा) पश्च हंमेछां. सायग ५ (धारक) मारक. सम्बद्धा म. (नर्बन) हर्न प्रसार. साविया वी (भ्र.विष्य) श्र विषयः सास्रव न (शहन) समन शहर पसा ) 🖈 (म्ह्या ब्हेन बाह्य दिस्त ससा साखय दि (धायत) दिल मर्मक ९ (एएए) चन्त्र सरिन्धा भ्साइ (सम) श्रद कम्बु सास मी (यम्) गापु ×सद् (यत्) रामबु साइ (४५) ग्रेवं महभ (गम) रावे ×साह् (माप ) सापंतु, सिद् करंतु सहस्र ) वि (गण्डर) प्रतमहित समस्र । स्टब्स् साहण साहस्मिम दि. (स पदिक) **एका सम्बद्ध** करन परिसदा सद्दाका (नमा) सना साहा ी (धन्म) धान्म. सदाव ५ (म्बनाव) प्रश्नुनि. स्वाद्ध पु. (नावु) साबु, बोशमार्म सदा सी. (मनी) नद्वरी गुरचनार सार वि (मार्) मद्रा साहित्रह ) न (नदाप्त) मरा स्थापन<u>ार</u> साहरत साद्देगम स ) साय ] ্ৰু (শৰ্) কুল্ট विष } इ. (निष) निरः सीदः सामि ५ (सामिन्) ग्यागी ×सिष् (नय) हाटबुं बीनुं काबुं. सिक्त्र (मिन्द्र स्पिष) क्रमें हो बत्ती साममा वि (ताशस्त्र) क्रावस्त्र-

194 सीय में (सीव) ठेड डेप्प ≈स्टिप्रश्च (रिकु+रिज्ञ) स्तिह पर्व असिकिन्स (लिक) स्नेह एउसी सीचाकी (नील) राजकी की चित्रक प्र (एम) विक्राः सिका सीयस्त्र नि (बोर्डन) बीर्ड सर्वत क्रिकाक्षव ६ (सन) निर्मान सीयास प (सीवचन) श्रीको . स्यान सीस न. (धीष) घीन्छ असिडिक (विश्वन्त्) विभिन्न **€**लातका (तिहर्द ) तिहार परवी सिक्सि की (स्म) मिक्सि मोब बोकी समझ विकेष सिकेश प्र (स्था) स्था, प्रेम. सिस्स सिप्प न (फिल्प) माधिपध ×सीस् (क्ष्म ) क्षेप् Drenft Serve सीस ३ (किथा) सिमा सिरी भी (भी) भनी सीस उ. न (पोर्ष) मस्त्र . ×सिकाद (रचर्) प्रक्रंग करनी. सिकेस (किए) मेट्रां, सकिन सुक्ष ५ (सग) उन करन सक्य मि (प्रचन) प्रचल सम्बद्ध ×सिक्स (सि_क-सीम्न) शीवनुं, शावनुं सिविय ) सदङ्ख्य (१९४०) मारी (१८. सुविष ব ন (কৰে) ×स्रुषः ) 🖫 शंसकः। विभिन समिन 🕽 4 सिवान (किय) कम्बान सत सुरका र क्षे (खर) उत्रर धोश. चेंसा 🕽 सिस इ. (शिक्र) वरफ सक्तान (दुन) एव ×िमाद्र (१९४) चारच १९३वं सार इ. (स्थ) देव. सत्त वि (इप) इत्रा क्रिक्ट म. (विक्ट) विकट

•समर् (स् <u>)</u> सात्र <b>कर्</b>	संचायद् ५ (स्थानत) उत्तर्भा
संसङ्ख् सुरिह नि (दूरिम) सुमधी	×स्तेष्य (सम) सेवा करवी.
सुराक्षात (द्वराम) तुमया दुस्त सुनवी	सेपा की (नम) सवा बाकरी
×सुब् ( (नर्) कंदन स्व. सोब् ) विवाधि केरी.	भवि
	सेस व (धर) यमे अप
सुपन्य न (पुत्र्यं) द्वारा. सुपित्रज्ञ पु (पुत्रय) सारा नैद	×मोप् ) (गुर्-ग्रार्) शह श्रोद्
सुवे म. (पन्) माती नामे.	स्रोत्परा व. (मीट्ब) मुख
सुमाज । व. (सक्षात्र) मनाव. मसाज	स्तोग अ. पु. (छोक) शाक दिवनिरी
×साद (पुगक) मुनी कर्म	सोस व (भाष) की कान
सुद्द म (पुग) पुम्द	सोम ५ (सम) पन्द
सुद्द 🕶 (गुम) संगद कम्बान	×सोस्त् (रष्) परावर्षु रोपषु
सुद्रा की (नुपा) अपून	×स्रोड् (धाम) सामन्
सुद्धि । (प्रान्ति ) पुर्यं	सोट् (छापक) ग्रद्ध करवी
×सूष (नृष्यु) त्यम असी	व्यवस्था कर्याः
स्र ५ (६ए) ६ए वराजनी	सोइण रि (ग्रामन) गुन्दर
स्र्रि ५ (मृरिंद) भाषार्थः	मोद्दाल (सोना) साना
स्म पु. व. (सूब) सूब शाव	<b>चै</b> ति
िक्षेत्र सन्त विद्या	•

दरव ५. (रान) शय.

सेणा हो. (सन) हैना

33

इत्यिकाश्चर ग. (इन्तिक्सर) भवानं नाम. ब्रास्थि इ (इस्टिन्) शानी war ! w. (eifen) me बबी रे प्रमुख्याच म्बर्फ (हर ) इन्ह्य साम्ब वय पु (सम) बाबो अबद (F) दरन नर्खा, कर नद ×द्वरिस् (हर्-स्त) इर्न क्लो यशे न्हें न्**वत् (४) दो**न करवा

14 ×द्रास् (तम) द्वानं

भ्रतिस्त् (धम) विशा **म्र**गीः अविद्धा (केल) क्षेत्रवा कारी

×दूष्णु (इ) होम करही हेड्ड म (समस्) भीने. क्रेस व (देसत) धनर्व देशकोब पु. (देशकात्र) भी देश-कर सरिते. ×क्दी (मू.) दोर्च⊾ पत्र

शिराकार करते जिला करेंदी.

दासिश ३. (हाबिन) चंद्रण-द्विश्वय रे न. (इरन) इरन मा

अहिंच (छा) बहुं, मानु

चित्री भी (ही) सम्बद्धा

## गुनराती-माक्कत-सम्दक्षोप -----

क्षन्यमा **आक्राह**्नहा स. (मन्द्रश) ^{वदी,} मन्मि पु. (कक्रि) बपमान करबु काव सम्म् भैव और स (सम) (सर्व+सम्ब) र्थम संद्रण न (सद्रन) भगिमन्तु सहिसन्तु सहिमान्तु मजीर सम्रीय दु(मजीत्र) ~स्तु पु अभिप्रम्यु) भवानी क्षण्याणि वि (भवानिन्) ममिमान मय पु. (मर) मतिएव बाइसय पु. (सनिएव) सम्बान सद्भास पु (शस्त्राम) कर्मन संचर्चतः । (जल्कनः) कमर अमर प्र (ग्रम) नता भवत सदिव्य नि **भग**रा सम्हारिस वि (भरत) (अस्माद्दा) मात्र बहस्य बहस्य व (रेव) अमाबारका अमायस्मा यो नवर्गधाहरम इ (जवम) (अभागम्या) बजाब धाउद्माय ५ (मजाब) अपन अयय समिय व कथरक भारत्यस्य व (जल्बका) (সমূদ) भन्य अवस्थ-हू यु (अस्थ) धर्भित धरिदंत सरदंत भागत मर्गतगुत्तो ध धरदेत ५ (स्दर्) (minitala) स्तरून असंविभ वि (सन्तरून) क्रमात्र धारम् १८ (दान्व) जञ्जम (१४म) असुद्ध म. (असुम) न्तुष्य अणुग्यद् १ (भ्यूष्ट) मनुषः राश अणुगिषद् अणु अपल कामच्य म (अन्य) ग्तब् (धनु+प्रः) मुखायाय मृमापाय म्पुन्तर्च यणुनसर (म्पुनस) मोमाबाय ५ (एपास्त) =भेषय–पर⊾(र) भनार बसार ि (स्म) भेरण विमिर् न (नम) तम **म**्डिमरच परचत्र (सप्र)

রুণ (ব্যবু)

वर्षना वर्दिसाधी (नम्)

व्याप्ति करते परा-व**दद** Ħ (पराभक्ते ) भाषाध बागास ५ नः (माधन)

112

बद्ध-न्त्रं सयस मि. (तक्क) सम्बाधि (र्न्स) संख्यान्तु इ.स. (पशु)

बेंस्ट पुरुष, (नेत्र) भायम भागम प्र (सन)

मध्य थम्य ग. (आ) पुरस्रो **₩.** (3000 )

भाषत सावार पु (अला) मानाव भावरिय भावरिय g (मानार्व) सूरि पु. (स्रेन्ट्)

मद्रा साचा भी (मद्रा) कार्रेप शापस प्र (अप्रेप) आपि साहि पुत्री (नारि)

मान प्राचारा पीच (प्रीपू ) माओं संघनि (तम) मागत का के (का)

ब्यम्रस्य सहस्य व. (स्पत्र) व्यक्त बाउस बाइ द न (#31)

मारम बारेस प्र (तम)

राष्ट्रं मागम्बद्धत र

(अस्टब्स् )

न्यरोपन साम्रोपणा गी. (भाषोपना)

मराक्षे भर-राष्ट्र (माश्यूष )

but feet 5. (by)

बार करता हि. (३म)

વ્રે (ਦ≆)

रक्ष को (रहनी) घर वि (क्य)

नारेष्ठ काराय क. मू. (अ*न*ा)

म्बर्धा राष्ट्रवी सर्वितन्त्, **सर्वेदन**्

माधर्वे सरक्षेत् गः (स्टबर्व)

स्टबंद आहार पु. (शहरा)

रच नि. (स्त)

मानव भासच रि (महरू)

नागलय मास्ययना की

(माधलग)

(भगनीयः)

वत्तम बत्तम बत्तिम नि (उनम् बतास अविका मि (शराय) बलान जच्छाह ॰ (उल्पा) उदार करने कबार् (वर्शन) रक्षम पत्रज्ञोग 🖫 (उद्योग)

भागो मान **भासिम** ५ (म^{ाद्}न) भदार व्या**दार** ५ (स्म) **श्नाम पाहुद र (प्रायून)** पारितासिम वि. (गरिताकि ए। एम पु. (स्त्र) सनक

यम उपरि, उपनि म. (उपनि)

ए ज्ञमात्र एम क्ति इद इञ अ. (११५)

Œ.

^{कृत्}या करना करनगा ती (करना

द्यार मास व. (व्य) छसाइ

🎔 की हु (इस्ट)

के में क्षेत्र (कर्न)

महार २. (१७१३)

-41441)

र देन सम्बद्ध पु (सपरस)

रुमद पोस्स पडम ४ (१६

क्मातुं बाउज् विद्यत् (वर्ष्)

भ्रम् इस् इद्(स्त्)

करवा क्षायक क्षायक्य वि. (कर्तन्य)>

करव कारथ म (सम) निमित्त

काड काछ ५ (धम) समय ५

न (सम) देउ ५ (१५)

कार कारत न (कान)

राम्य क्राया व (राप्य)

कीर्ति ज्ञास पु (वयम्)

इवेर बेसपण बेसमण पु

(**न**म)

(रमरम)

उत्तर करता उव+दिस् (उप+ क्ख कर् कुल्(ह) रिया) क्ष समायरण न (समायन्त्र) उपांग उच्चेग पुन. (उपाद्र) करण न (धम) टपःच बयाय ५ (उपाद) कर्म करम न (कर्मन) रक्षका उपाद्याय काम्हाय कॉसर क्रमक्षय पु (कीत्रय) मोम्झाय पु. (उपाप्तक) करान कहाज र. (क्यार) वना ग्हेपु हा (रका) क्यारी निद्वस ५ (निषय) र १९५ सहस्तम् (बरिश्वम्) कार पत्र कियि किमवि भ परिष्ठिष एकि रिक्रियं।(परि) (दिमपि) कवि मिसि 🖫 (द्यपि) कागश पापस ५. (नम) कारबंधिय (धिष्) ८६१म स**दमा म** (सम) कामदेव मयण पु. (मर्ब) ण्डसिंग म. (१) काम प (क्रम) एकं सभास (४८) काम काउद्र न (कार्य)

```
क्रमारचन न (क्रमा
 स
 कंट और उत्तर (कर्ण)
 2 PE)
 वानं सुद्ध (सृष्य्)
वृत्ती वयस्य मोहस्र वे क्यू (बेन्स्)
कुरूप विकास नि (निस्स)
क्रमधे स साच ४ (पर्)
 ब्रुडी बंदेन सुद्दल क. प् (सुवित)
 क्रस्य किया न (इसन)
 तुरिसम-त्सिम ५ ५ (इप)
 इपन कियाज, किविया नि
 बन्द्र १ करिस (१९)
 (इएस)
 अया विद्या की (अया)
 चेन्स् 🕽
 चेत्रत शास्त्रिय त. (शास्त्र)
 gm (क्रम्ब, कम्ब 5. (कम)
 विषद्ध ५ (विन्तु)
 यमस् राषक्षरः उ. (यसम्)
 देशसाल देशसमाण न विवध
 मन्ति साह परी. (वरि)
 BIA)
 गमीर गमीर में (सर्ग)
 केरको केपांकि छ (केपकिए)
 कर्लु रुक्ट्र सीम् (स्पृ)
 बाई एवं कोबि घ. (कोवि)
 कोद्ध कासद म. (क्रमंदित्)
 परीय बीज में (क्षेत्र)
 कोई बच्चे कया न (क्रा)
 (ब्रेड शक्स न (ब्रेड)
 क्षाच-क्रोप क्रीह पु. (क्रोच) क्रीव
 बाबे मच नि (समे)
 g. (429)
 লকাহাল গ (কণ)
 भिन्नर उपमुख्य <u>५ (वज्र</u>कार)
 क्षेत्र रहत कुच्च (इच्च)
 कोग्य कडरच पु. (कोरव)
 क्ष्मं रेष्ट, गर् (मन्)
 क्य करण, कह कहि करि
 पुषस्कानक गुष्ठाहाच्य न. (पुषस्वान)
 पुर सुरू, सुरूष ५ (पुर)
केटम सीचम ५ (केटम)
 a ($7)
 क्लाबी करती, कमी करी
 क्यो क्यो क (इन्ह)
 प्रदेश करने शिल्ह गह (प
 क्या क्या तो (शम) केंति
 क्षी (स्वर्मेख)
 वर्त बहु, बहुम वि (क)
 व्य करो सिरश्रपु (निर+३)
 सर्वित स. (मर्जन)
 मर घर म. (ब्रह्म) क्रीह म. (व
 क्षेत्र केस ग. (क्षेत्र)
```

गोवं भूपवा व. (भूका) ं डाइरी बाद्धा की (सम) पी घए न (इट) द्योकरो कास्त्र पु (मम) साध मास प्र (स्प)

वराणी वयसपहित्र (वस्तरित्)

**11**1

का निपक मर्थक ५ (मृत्यः) वद धन्न प्र. (बना) हेंद्र \$ (tal)

वान चम्रच व (वरप) वरित्र चरित्त नः (वरित्र) भारत सहस ५ (संस्क) चरित्र

न (कामित्र) खरण न (करम) طلط فحث (عُمرة) दिन चित्त न (वित) दिमय द्विम न (इरव)

विष्यिय निषद्ध र (विष्र) चैत्वरंत्रव चीर्यद्रश्य व. (बेस्वास्ट्रन) पामनं परिसा-धामा धः (बक्

चेर बीर प्र. (बीर) ^{यागै} सोरिम = (वीर्व)

**एंस्पुं सिन्** (भिन्द ) धला छादी छावा

(মেবা) टीनदेनेतुं बहुएतु (बा+विह्)

षेण बरम बरिमा (श्रम) धोषुं मुंख् (तुःव)

बीम क्रियमा भीडा को (रिद्य)

बीन स्त्रीय सीय तीय वि (धीर) कोर और पु(नम) दौररवा जीवत्या की (धम) शौरन प्रीपण जीविध न (बीप्र-शेरिन)

कीर वर्गरे जीपार् पु. (गैरार्गर)

क्लाइसा उत्यन (अल्ला)

(सम्बद्धाः) बब्द श्रदस्स म. (भरापप)

বৰ জাতত ৰ (শম)

बाह्य झांसर व. (वस)

(छिन्देशी)

बन्द जिल् (वि)

मयत क्यांच्या अन्यामा व (भाषा)

क्रम **श्रम्म श्रमण ९ व (बन्मन्**) अपूर्वत अनुदीय अनुदीय उ

बाम्बर जायार, जाउ नि (शरु)

बिनास्य जिल्लास्य न (विनास्य) ज्लिया जिल्लार, जिल्लीसर पु.

कप्तु पोड् चुक्स (९२-५००)

बीर्सिंग जीपरिमा भी (तप)

जिनदिक जिलापिय (निनांद्रमः)

क्यातक तका व. (त्या) र्शनद जीय जिए (मैन) कातवड-(जल्) ती क्यार जीवाउ ५ म (जीवान) **ठराल करती सन्मा (त**र्मात्र्) अवानी जोडबया न (बीबन) करफ पद भ. (प्रति)

केम इस विस स्थान (६४) व्यं वर (३) केवं आरिस नि (नास्प) तका सकाग सकाय (तका) जेव बस अहपासम्म पु. (देववर्ग) त्सन सामस ३. (द्वन्द) करनार वारम नि (तन्न)

कोनु पास परम्य (परम्) बेक्न (ए) शास्त्र नायपुत्त नायवत्त ५

(बलाव) চল বাজ জালে ব. (ছান)

ज्या बहि, सहि सह सत्य # (<del>**</del>4) क्यारे तथा भ. (स्ता)

बार बच्छ प्र (रथ) तक प्र (FIII)

नेपान विस्तरीसित्र है (feelfalleri)

हुन्तु विसरस जस्तान (जिस्सम्ब

तत्व तत्त्व न (नत्त्र)

চলঃল রভাল ব (ককেন)

क्लामार्थ तत्त्ववत्ता मी. (कल-

लाव राष्ट्रं सम् (त्यत्र)

व्यवे सारम व. (क्वक) वारा

रिक्रक विद्या ५ (कि.क.)

र्श्वन तिल्य सद्य भ (देवें)

र्तनेश्र तित्यपर ५ (ठर्नेश्र)

वरेसं तुष्टिभ 🔻 🔏 (वृद्धित)

ठंड संबिध्य, तंबिष्यः. (म एवं ठवर)

तेनी समीन (फेट)

टब हारिस वि (इट्य)

तो पन सद्यक्ति व. (उनारि)

लातकिं। तकि तक तत्व

d (49)

खानी **चार** वि (लागिन्द्र)

ल्बर पड़ीसमामः (कः) लारे तथा क (वरा)

र्षक रियान साहित्रिस्ट

न (क्रम) झड्ड कारचंद्र (क्रम्) इत्र मच्छार ग (गामक) ч

कर भ्राणान (पन)

```
दिक्किणिस्स नि (दाक्षिनस्त)
 क्मी बस्स पु. (क्स)
रंग करतो हन्द् (राज्यु)
 बर्मित्रन धरिमार्ड पु (बर्मिप्ड)
बर्दर इसका व (रर्हन)
 माग्य सम्माय (भाग्य)
रदी वृद्धित (दनि)
 भागक का बुंधरि-द्वा परि-धा
শেল বাজাৰ (ব্ল
 (परि+भा)
रिवन विदास विवाह प्राम
 विकार पर चिकि चिकी चिची
 (विक्स)
 थ. (निक्-विकृ) कि भीथ.(विक्)
र्पसम् दिवा दिसास. (शिया)
 थीरज चित्र की (कृति)
रिका विसार्वा (निका)
 बीम बीम खिलाय म (सर्तेम)
चैच्य विकस्तार्था (शीका)
 আলে প্লাজান (আলে)
र्यमादीच प्र (रीप)
 चनाधास सामापु (चन)
इ.स. उद उसका न (इ.क)
इकी दृदि दुविका वि
 क्यकं क्यार न (क्यक)
 (32001)
 कट सह पु. (स्ट)
दुर्मन दुरुज्ञप ५ (दुवन)
 भनंद नर्णादाकी (नवान्द)
इंग्डर्भ पावकसम व (शतकर्मन्)
 नमदु जम्⊸सद् (नम्)
६व द्वास त (दुरव)
 नाम्बर कवा नमसु (नाम्ब)
ए गपु धव-मे (म्य+र्थ)
 मात्र निरंप नरंप पु (नरक)
द्र मुख्य पु (सम)
 न्दीटर करनद्द−करनदा स
 रेंबबाक देशस्त्रीम पु (देशलोक)
 (सम्बदा)
 च्य ज्ञाजसय पु. (क्रमाव)
 गवर्षु पक्तिलाब् (प्र+क्षित्)
 पेक्स देखाया की (बहुना)
 বাবৰু সমযু (রুখ)
 स्पद्यास दुस्द न (प्रस्त) भाग
 पारक नाहरा नुदू ४ (नारक्र⊸
```

पंडिस ५ (गोक्त) पुद ५ (५०) नाम प्राप्त प्र (गाव) वर्षेत्रं पश्चिम र म् (विता) नाव पान्तुं जस्सु भास् (नदः) **बन श्रक्ति पि विव (क्र**ि) नाय करनी नास् (शस्त्र) लेल मासय वि (धारह) िहा 🗷 (एन) मित्र मिद्र (न्ति ) गरिष्ठ ( क्रे ) क्षत्र प्रकार मि (का) पान्नेक परस्रोम परस्रोग 5 निमित्तिको निमित्तिका वि

114

(Africa) मिन हे नियास न (निरान) मिर्जाप निजयादा को (निर्जात) निर्देश पागरी **विधियात (निर**+दिय) मिनार निधास हि (निनार)

निकर्ण निस्सर मीवर (निन्तर) कीरी नाय प्र (न्यूब) नय प्र (नम) नीव की (बीरि) (संक्षित्रक)

मेलिसन मीइसत्य न कुल सब्दार (दूर) मेत्र मेशा प्रथम (केल) कीम क्रिकेश किमि इ. (सम)

न्यान साथ ५ (न्यान) न्वस्माने नायममा ५. (न्वर-

मर्गा।

कार्य गिक्ट (म्ह.)

पनी पवित्र 5 (प्रक्रिप्)

नग्रीपबदाव (स्थलः)

पंदित सहित्यु नि (समित्र)

(CHIT-THE ) ९ (राम) (PR)

पन्न पस्त त (ग्रह्म)

(पनतार)

रबागान पद्यक्षायाच ई

(परक्रोक)

(अस्यो नव)

(9R+cm)

(परायशितः)

जम चरम नि (नम)

क्रजी परदारा ही. (तम)

परम्पर सक्ताका सक्तोका सरवासका सक्तुच्य ति

वर्गमा कानी परिकल, परिवर्

परोपमध परोपपारि वि

वर्धक प्रकास प्र (पर्वाव)

प्रभावतु राज्याच पालाच हे पनन प्रवास 🐒 (पत्रन) बाड परंत प्रथम गिरि ३ (कॉन-

क्षेत्र परिस्ता श्री. (क्वर्-वरिवर्)

(पुननक) शंधा पु (मन्ब)

पर्वत पण्ड स्टब्स् रोस् (स्त्)

व्यत् ज्ञाम, पद्चर ६ (काम-प्रदूर) क्टबे तेबर्क (ध्यः ) धोश पूर-पुराम (पुरम्-पुर) पूत्रन अवस्थान (मर्बन) भारेचं पद्मातं (पक्त) पुत्रनु सच्च (भर्व) क्षण्याम्य पाइसास्याः स्रो इप्नी पुरुषी पुरुषी की (इनियी) (परकात) विष्यती की (पूर्णा) पाणी**बस** न (इस) वारि न वेदा करनु शहलु (सर्वन-भर्नु) ^{(म्ह्र}) **उद्ग-द्**गन (उदक्) पा**वार्त निश्न वि (भित्र) सप्यकेर** पार**पाय** म (पाय) **दुरिम** म ति (ग्यरमीक) (इरिट) क्रमण पदास ५ (प्रभव) पर्तिपाव दु (गए) प्रशास्त्र च प्रमास्य (प्रभन्नाम ) ^{पाम}नं पाद् (प्र+माप्) प्रयासा वि (प्रयासक) पर पामनु पार्रमास् (पारत्रस्ट्र) प्रमापया की (प्रमा) पास्य पास्य (पादन) मनिमा पश्चिमा की (मठिमा) पळनार **पाछना वि** (पाइक) प्रक्रिक्सल प्रक्रिक्कसम्य न पारव करता पासिस्त्रेत का (प्रतिकासमा) म (पान्यसभाग) प्रदुष्त प्रशाहरण पु (श्रयका) क्षिम पिद्यर पिद्व पु. (वित्) प्रभाव पद्धाय पु. (प्रभाव) वजधातु (बनक) प्रमान **एक्स्यूम्स-इ**षु (प्रस्**र्**प) पीम्युपीस् पीइ(पीक्ट्) प्रमातमा पूर्व भ (प्रग) ^{पी}ड पा पिच् (श⊸निर्) म्भ पद्म ५ (२भ) उन पुत्त इ (इन) सुम्म इ म्म्बर प्रमाय पु. (प्रमार) (80) मनोय प्रमोग पु (प्रचाव) प्रश्र पुरिस ५. (५४४) माजब ं प्रवृत्ति करवी प्रवाहः प्रयाहः ৪ (নদৰ) হল ৪ (ক) (प्र+वर्ष्) प्रम पुष्फ व. (प्रम) त्रवेष करवी प-विस् (त्र+विष्) उत्तर पुरुषय पोरुषय इ. न. प्रभ प्रवह पु. (प्रज्ञ)

शए हास ५ (बक) शक्त वास्तु सदस्य भारत् (स्वर) गम करते नास (गमत) निश्व सामग्र वि (सावन) विरुद्ध जिंद (Are ) गरिद्ध ( ४) निर्मितिका नेसिनिया वि (বিনিনিছ) विश्व के विद्याख न (निश्रह्म) मिर्मत नित्रप्रदा भा (निर्मत) भिरेत वास्ता **विधित्रक (विद्+रिध)** क्षिक निष्यस्य रि (स्थिक)

लिए वं निरसर भी हर (निरन्त्र) नीनि भाच प्र (म्ब्ब) भच प्र (का) नीइ की (बीनि) मे निरात्य मी इसस्य म. (পঃশিত্তাৰ) कुन संघ्यानं (दूरण) मेत्र मेच इ.स. (नेत्र) श्रीम विलेश केत्रि प्र. (छम) न्दान शाय १, (त्वाद)

म्बन्धर्म साध्यस्य ५. (म्बन and to पक्षम् गिष्डः (म्ह्) का पविकाद (प्रकार) कमे पच्छा क (भ्यन्)

other sufference for (-0-)

वक्षेत्रं पश्चिम म ग (पीन) वप स्रवि पि सि स. (क्रां) कित् भ. (सम) वच्य च<del>वक्र</del> वि. (पःव) क्योड परस्रोध परस्रो ड (41et 4) प्रस्म प्रस्म मि (नग) पत्त्री परदायः की (हम)

प्रस्पर काण्याच्या बावधीच्या शक्तासका सक्ताका है (भ्रम्भो अन्य) वरीका कभी परिक्ष परिवा (9R (m) परोक्षाय परोक्यारि 🙉 (परायक्तामिनः) पन न प्रशास प्र (सर्वात)

फारवं रक्ताव पाकाव है (रहानु-पानवः) प्रवस प्रवृक्त पु. (प्रवस) बार्ड इ. (गर) पर्वत पच्चप, मिरि उ (क्वेंग (DAT) वर्षरा परिस्ता औ. (वर्षर्-परिवर

प्रधास द (प≭) प्रवास प्रवासाय उ

(marrod)

सवसप र (सम) मन पाम**त्र भीड्** (मी) ^{मरदेशे}त्र मर**द्वल** र. (मरदेशेत) भेषु भर् (म-मर्)

347

मन्द्रजीन सम्बन्नीच दु. (सम्बर्जान) मन्द्र मस् युक्क (भप) ^{मर्क} मायर, माड ९ (भानू)

^{मार} **माच**्य (नम)

भिष्ठ मि**ष्मगृ**ष (मिध्र) मुम् लासिम न. (स्विधित)

मेरमुपादुक्टन (अप्यून) मोध भोगग न. (कम) मागत्तु सुब् (सुन)

भाइन मोयज ४. (माइन)

मक्त पासास यु (प्राप्तक) यर व (क)

^{मीग क्र}मेंग**ळ ग**्राम) ^{मारा} सा**दश्य सादेश्य** न (माइएय)

मन्दि महित्व (ग्रम) चेदम

बारा ४. (केल)

मभामसाव. (सम्ब)

भैत्र मेत्र ५ (सन्त्र)

मैंबी मैति पु (मन्त्रिन्)

निवमराजन, (नम)

म⊀ सदुव (सचु)

। मन्**दुताइ, सास्** (ताइन)

सर्ज सम्म ५ (सर्व)

मन्त्र माक्षा की. (नम)

सुव सुद्द न. (सुत्र)

मीन मास्त मीस व (मीन)

मर्पात्र मस्त्रापा औ. (मचरा)

महत्र्या महत्या पु. (महारमन् )

महामंत्री महामंति पु. (महा-

महोराज महोराज्य महस्र

महोसब ५ (महोत्सर)

मारेकप, कपका कपका म.

मल्ला काज पु. (कन) मण्स

माना माधरा, माउ की (मान)

मानु मत्त्राय (मरन्त्र) सिर् र (शिम) सीस प्र (गीप)

मोद्र राज्य रुग्य वि (सम्ब)

मान माप्य पु. (मान)

माया माया 🕬 (सम)

सानव सम्बद् (सम्ब)

मन्त्रित्)

(Ta)

मामने साद् (काव)

g (मनुग्य)

माधमु सद्दार पु. (सगर)

मित्र मिश्च पु. न. (भित्र)

मिथ्या सिच्छा च (मिथ्या) सक मुद्ध, मुत्त वि (सक)

न (शहराव्यक्तरात्र) बदेश बहिर वि (वीवा) प्रत पाज इ. न सन्दर्भमां (आर) प्राणास्त श्रीषियंत ५ (अपि शय उद्याप न (उपन)

प्रतान स्वयंत्रम पाइसवागरण

340

क्षेत्र **बहिसी** संगिषी ^{को}

(मियमी)

ৰফাৰ বাকার (শন)

गीतु करना वि. (क्रा[™])

तर्वे प्रक्रिक की (६३४) पुदिशारी महमेत वि (म^{न्या}) केन्द्रं उब-बिस् (३४+विष्)

बाब पासको बुजरा (इव-इन्ब)

मार्च कार्चेट, कार्चरिय

क्षेत्रकोर न (नदःवर्ष)

बक्तन माह्य वेमण ५-(जन्मन) ~ **भ** 

भगतान भगवेत समवेत 5-

सेवि सोहिली (शवि)

राज्य बद्ध (र ) बार्ड दुवार, हार, बार र

(ETT)

दन्त) प्राणी पाणि च (श्राप्तिक्) अंतु T. (3PM)

म्रप्ति पश्चिमो. (शन्ति) क्रिय पिप वि (फ्रिय)

मीनि चीक्र भी (प्रीर्टन) कर प्रस र (सम)

भाग पाड पत्त (प्राव) ₹रप्र किय (कियू) णम्य सुद्धा ण (तुक्र) मोरउह्या

**■.** (**4**)

मन्तर्भ रक्त (रक्ष) न्द्र समझ में (राष्ट्र)

सम्ब ति (ना)

क्ला बेबज र (स्वर)

नप्र चैचात्र (३०५)

भ. (सर्वात)

म् पद्र बहुम ति (सू) सर्वि

कर बाहि बाहिर ब. (वर्षन्)

(अपलग् ) नजता अंग सधवई-अंग 4

नक्षं सेय (सम)

(भक्तती-मा)

स्वर् सम् (स्प्)

मन्त्रं सम्, पद्ग (मन् पर्) मनर मसक, समर इ. (भन्द)

```
इन्तो सह (इट)
केष क्षेत्र व (केक)
```

343

क्षेत्र स्रोग स्रोम ३ (क्षेत्र) बप पु. (अल)

^{बोट्युं} प**र्धोद्द** (प्र+स्ट्र)

क्षेत्र स्टोइ ५ (क्षेत्र) बोबी स्रोद्धम ३ (मुप्यक)

म्बर समय पु. (छम) कास पु

(<del>U</del>4)

वक्त समझ पु. न (क्वन) क्षेत्र गुरु गुरुभ वि (गुर)

^{बन्त} करतु धेव् (ब^{न्}ष्) वंशायक वंशिक्ष क मू (वश्वित)

**गण करको हिस्स् (**छम) व्या वहद (र्व)

क्ष एक्स कारकसा न (अरम्ब) विषय (~न)

**पन्तरि दणस्यद् बणफाद्** स्री. (क्नस्प्रित)

^{वानार} वरिस वास पुन (वर्ष)

बलक् चरिस् (वर्ष्) गर्नेषु बरुष् (सर्वे) र्भवरिस बास उ. व (वर्ष)

वर्षक बासहर ५ (वर्षकः)

मनदी वसदि वसद की

(ঘৰনি)

विकि सिक्ति प्र (विकि)

(सम्बद)

विजय विषय पु(नितय)

बसंत का सम्रत ३ वसंतरिक

बहेर्स पुरुष-पद्यम वि (पूर्व प्रवस)

बारन्त्रय च**च्छानुः** २. (बारनम्ब)

क्री (क्मन्<del>य कर्</del>ग्र)

दल बत्यान (दक्र)

बहुसङ्की (वस्)

बाब खम्ब ५ (बाम)

सी (शब्द-वाचा)

बाइस्ट मेह्र ५ (सेप)

बाररा कथि प्र (कपि)

ৰদৰ্ম হামা 🕶 (ৰাণ্)

निगरे बाह प (मानि)

बाह्यस बाह्यदेव पु. मम)

विचर द्रदा मरिस (६५) मंत्

विद्यापर विक्रमाहर पु (विद्यापर)

रिष वी चित्रज्ञरिय पु. (दिवाविष)

विवास धायार, धाउ पु. (विवस्त)

श्वित चिरुम में (श्<del>वित</del>)

नामा मुद्दर वि (मुखर) बाजी बाजी ह्या (मन) वाया

विग विषा म. (विमा) A. (निपरित)

विपरित विवरीम विवरिम विमान विमाय पु. व. (विमान)

बिरक्षिम रि (प्रियीग) हेर्गु अपूरा अपूर्व दि (न्य) रदेषु वस् (हम) शंसवर विद्वासिम विद्वाहर. रोहे वसण २ (व^{तन)} (Agha-Res) स्तान रक्यस ३ (ग्रन्त) संकद् सुरक्ष (५०) एक संप्यं संस्म द्र^{त्र (सन्त}ः स्रोते मुच्चित्र (मृति) तम राग इ. (न्य) समाका पश्चिम प्र. (प्रतिक) गत्रा नरिय मर्ग्य (अरेन नुर्व भुक्य सुरुक्य ३. (मृष) निवद प्र (प्रा) क्यु सच्चु ६. 🕬) राज्य १३० म. (साम) मेच मेद पु. देव) धनौ महिसी सी (मध्रेरी) मेळाचुलाइ (न्स्) यमि राप्त रिष्ठ नी भाषि) मेर पर्रन सेंग पु. (सम) संबद ित रिच्छ. रिक्स ड (च्च) g. (94) शिक्ष रिकि प्रविद्य को (काँदे) मान मोक्स भूपना हु (गान) समिवि सामिवि 🕏 नोधर सीक्लपंध न (मोक्सर) (तपनि) मोर मोर पु. (मदा) विकाली करिएकी भी (वर्षातारी) स्तु रुपय व. (रक्त) विक्रिम अक्ष्यमा पु (विनियम) नव केटर न (कार) लों को ने (गी) इंद स्टब्स ४ (१४) क्ष्मण सम्बद्धाः व. (क्षमणे) कोमी क्रांसि पु(को स्वर्) सम्बद्धाः 🗷 (क्रमणः) क्यां संस्की का (न्हां) रक्षण पान रक्षण ( स ) ताञ्च पामनी **सम्ब** (सम) रक्षण रक्ष्मण ४, (रक्षन) कमेनो सद 3 (मर) बीर 3 रण्य रख (रचन ) (dtc) ≈र्म्न रोग्स (३<del>१ उ</del>न्न) ध्या अप्राच्या की. (अन्तर) क्य क्ष्या औ. (क्य) रहते सच्च ५ (मार्ग) सामवं का<u>त्र</u> में (मानगी) र्णाल परिस्त के. (एकि)

```
इन्स सह (इ)
केय क्षेत्र ह (क्रेस)
बोड स्रोग स्रोध पु(बोड)
 44 (3. (34)
 वह बहुकी (वन्)
भेरतं पस्रोदद (प्र+प्रङ्)
बोन खोइ ५ (बोम)
क्षमी क्षांद्रका पु (अध्यक्)
```

145

वबार समय पु. (छम) कास पु

**(**84)

वचन ययम दुन (वचन) क्कैर गुरु गुरुम वि (दुके)

बंदन करणु सन्दू (यम्बू) वेशक वृद्धिक म् (सन्ति) **वय कावो हिंस् (**सम)

बब्द (न्दं) भारका द्वारकात (काला) वकान (प्र भी. (बन्सानि

क्षमदि चयमसङ् चयपमङ् बानबु धरिस् (बर्१) बानार वरिम बास इ.न (वर्ष) र्क्तुं बज्ज् (रहे)

र्म धरिस पास उ. न (र्म) वर्षक सामद्वर ५ (वर्षका)

नन्त्रे समहि पसर्श

(বনদি)

बलक सेह पु(भेप) ৰপেমিকা 🕶 (ৰদা)

बाधुका बागुदेव ३. पम) निगरे ब्याइ पु (भारि) विकार हरा मरिख (स्प्) मेर् (सम्बन)

विचाय चित्रज्ञाहर ५ (विदास)

विमान विमाण इ.न. (विमान)

वर्षेत्र इत्र यसत् ५ वसंतरिङ

बद्देतं पुरब-पद्यम वि (पूर्व-प्रवम)

बस्प्रय स्ट्रह्म न (बाल्स्य)

**ब्री (स्मन्त-नद्रा**)

क्त्र धरधान (स्क्र)

नाम सरस्य प्र (गाप्र)

श्री (राष्ट्र–वादा<u>)</u>

बात्तर कथि ५ (र्राप)

बाबाज मुहुर वि (मुखर) दाची द्वाणी भी (सम) दाया

Rt. (प्रिपरित)

रिच दी बिउजरिय पु. (दिवादिक) श्डि**व चिउस्त वि (निद्**य) वियास घाषार,घाउ रू (विवास) निवि विक्रि प्र. (विक्)

क्षित्रय विषय प्र (निमय) विष्णेत विष्रीम विवरिम

विवाधिया कः (निध)

अप्रतर वावार 5- (स्प्रत[्]) विवास विकास इ. (विवास) AT WE S & (AT) **अध्यात विद्यक्तिम ७** मु. (Rollin) त्रम् सत्तु ५ (ध्रु) रिवर्

fter fres ft. (m) निरात विद्याप 5. (निवार)

विभागि केरी बीमम् विस्मम् (R+442) प्रियुन राष्ट्री बीसम् विस्सस् (Pt+UP)

तिय विकास स्व (वि) निकार करता चिर-बद्ध (मिनवर) fere finance from R (fixs)

र्शकाव बीयरात ३. (ग्रेक्स्य) कर बीर पु(सम) राग्ड बुईच्य र. (यत)

की पानी सरिधा (गर्न) वयम विकित्य चिक्र (विनमी) कार केवला विवया औ - वेरल

देन्त्र विद्या थी (देशा) बच बेजल प (बेप)

तर्भव विशेषा 🖫 (बेरामव)

रधारक वैधायक्य न (रेवाल)

अध्य बातरण प्रापरन

बारजन (गारम)

भाष बाहि ५ (म्बर्ग)

इवन सम्राम्सिम्बाकी (हर्य) इस्त्रं सरक र, (इस्ट) बरीर धारीय न (घरीर) देव S. K. (H)

(Fer) धन्द सद् ३ (धन)

धर ऋतु आ-र्रम् आरह मार्ख्य (ग्रामरा) धन सस्य म. (६न) बान्त संति कः (लन्नि)

दानित भित्र संति उ. (प्रा^{तित)} धा माठे 🕏 (किय्) क्रियर सिद्धर र. (विकार) चौर सीख ग (^{द्रीर})

क्रिक सिगांक प्र (एवंग) क्रिक्ट सीस 3 (^{क्रिन्य}) समर्ग सद व. (धन)

होडन मना (मकें) धान्यं साह् (बाम) विन्र

(विभाव) (ध्रमस्त्र)

स्वतान सुसाम मना^{ज रू}

भश सका सहा की (पर

प्टर⁴शन **पश्नाच** न (म्यादचन)

įų.

थहा एननी सत्वृष्ट् (धर्+वा) <del>पशुदान विद दुंद दुन (इन्द)</del> भागसम्बद्धान (ध्रदम) वस्तापु (वर्ष) प्रमुख सामग ५ (ध्यक्ड) ममुत्र समुद्द व (समुत्र) सागर ^{क्रेप्ट} मद्द स**ई**त दि (सद्द) प्र (मम) सम्बद्धाः सम्मासः म (सम्बद्धाः) H रुष संघपु (सम्) व्स्रण २ (बर्धन) सम्बद्धाः सन्दिष् (सं+वि) मस्दर्भ सरम्स्त्री की (सम्बर्भ) ^{भनोप} संतोस ६ (सन्त्रेप) मरोदर सार पुन (सन्म) सबम संज्ञम पु (संबम) धर्म सद्या प्र (सर्प) <del>ण्डार ससार पु. (६</del>म) मर्भद्र सम्बच्या वि (सर्वह) नवारक समारकक न (समार सर्व डेक्स सम्बद्धाः, सम्बद्धाः सम्बद्ध स (मर्बत्र) मकी सादी को (नकी) सर्वेची मोद्रे और ब्रिक्ट वि स्त्रस्थ साज्ञण ५ (सास्त्र) (344.) सर्व संदक्ष व. (दर्ब) महरू कर्यु साम् (सम् ) भार्षु (सम) स्टब्स्मा **संदब्**समा उ मामञ्जू भूरण् (ध् (मरम्मर्ग) क्षम**र्टने सुणिऊ**ष व ५, (भूरा) ^{छन्}राची स**रक्षम**य वि (क्षन्तनः) सकार् प्रवासका वि (शतका) मपात्र **सार्ध समस** वि (मण्डा) सदस्य व. (सामार्) समा**सदा जी** (समा) मावे शह व (सम) सर्वित्र म <del>सम्बं</del>समस्य वि (नमक) (नाचम्) समस्मन समोसरण समव श्रावर्षिक साहरिसम्भ नि (मापर्निक) सरका स. (६२२मस्ब) **बाइ साइ ३.** (बा**इ) भिक्लू** ममादि समादि स्री (समापि) ३ (मिश्र) बर ५ (बी) समण समाब दि (बगार) सरिस पु (भ्रमम्) रि. (नाप) सरिष्छ सरिक्स नारी रीट सुर्दु भ (सुपु) सम्मं नि. (नरस) भ, (सम्बद्ध)

Sinc सिंग्स क्लीक ड (मिंग्स) नाम सिका प्र. (गम) सिंड बड़ सिडाइ (नियर) विकास विकास प्र. (विकास) रिक्टेन सिक्टेम य (निवर्त्त्र) विकास संस्था ५ (ए<u>ड</u>क्र) सिक्दगिरि ५ (६म) विशय विद्या म. (दिग) हंग्ह्र शहराम् (का । छा) क्षतर स्टोक्टम (३ (धारान) मबाउद्य-मबाच्य वि. (स्तेष) उष्ण चुस सुरम् (५७०) हुए सुद्ध व (सुक्)

स्तर्भ क्षर भ (स्त्रिने)

न्त्रति करच धुष्प (गु) को दर्मा थी व (मी)

सारो वेच साविज्य 5. (प्रवेष)

ब्रान्स्कि सुद्देश (इतेन) १ ए. क्षया सक्ति व (तुनिक्त्) दमस्य (६व)सुभाव (धून मन्द्र (सन्त्र) प्रकं श्वकत (स्वर् केन सेक्स दा (गरा)

के । स्पेक्स 🔺 (४८) नार्गः सूधवळ्यारः पु (नुवर्नप्रः) भाग हम (हन्द्र)

स्ताका सम्झाय ५ (स्वाध्य लामी सामि इ. (लान्निर) (एप इ.स. (१११) (eces €0 € 1° (€) हमचे बहुया व. (नक्रा) (मेण स्तर, समा भ (क्य) €रखं **हर**च्य त. (तक)

स्रोत्र बोच २ (स्त्र)

स्थित विदर्भ स्थित

नरा समा इ. (स्मां)

न्देर मेह सिवेद ५ (स्व)

सप्त्र सिमिय सिविय सि

स्वित प्र. व. (म्बन)

11 * ME REN (t. (t%) **ਰਵ**ੜ ਨਿ. (ल्म)

हुम्बदर मा-रिस्(बर्भ

शप दल्य ३. (न्स) शाम करिय छ (स्थिन) **रात क्षार उ. (बन)** क्ति किया ति (P4)

रात दियस दिस स (हर देवसम्य देवन्यस्य उ

विश्वच मि (मियुव)

# परिशिष्ट १ संपिना नियमी स्वरसंपि

(१) माझ्यमा सिन्द भिन्द है पर्याना स्परीनी संति विकस्पे दाव 🛡 भा वं पटा सामान्तिक हाना अपर्यु नोट ठकाच असामासिक वं रहोमां एवं संदि याय छ (प्राक्टनमां ज्यां संवि वास छे रचे प्रस्तरता निक्स अमान सकि करवी पटके के नजातीय स्वर पक्षी समादीब स्वर अपने हो दने स्वरो सब्दे आई पीर्व स्वर नाव छ। उसके का को प्रदेश के के का की व तो में रक्तोंने वत्रके पश्चीता हरराना गुल बाब 🛡 ) (टिप्पण ६ ) भ<del>। गन्मा-नयराहियो नयर महिमो (नवरावि</del>र) भःमा-मा-विसमायवो विसममावदो (विमान) भा+भ भा-पूराबमरो पूराभवनरा (आवनर) माध्या-वाताळ्ळ शंताबाळ्ळे ( क्राक्तम्). १भा रं-वरीस् अनिरस् (अरीप् )-ए ई ई-मुणीको मुजिईसो (म्मीप) रं+इन्दं-पुद्यीको पुद्यीहको (प्रविदीन) र्गः र-पुरवीसरो पुरवीर्मसरो (१० बीचा) रार द-माण्यमो माणुरद्मा (मान्दर) बन्द-द-गुक्रमाही गुक्तसाही (गुक्तमाह) क्र+बन्क-सासूषवागे सास्टबवारो (यम्पना )

क्ष+क ळ-बहुमयो बहुकसबी (श्यूस्ता) बभ्द=य-बासेसी यासासी (श्वहरि) (१) राजो बन्नियां ॥ १-५ ।

वारों के स्वितंत्र द्व. (स्वेव) विव स्थित दें (स्वा) विव स्थित दें (स्वा) विव स्था दें द्व. (स्वा) विव जा वितंत्र (क्वा) विद्वाव स्वितंत्र (क्वा) विद्वाव स्वितंत्र (क्वा) विद्वाव स्वितंत्र (क्वा) विद्वाव स्वारंत्र (क्वा) विद्वाव स्वाव (क्वा)	स्ताव धोष म. (स्टेम) स्वित वित वि. (स्वि) स्वेद के विजेद इ (स्वे) स्वेद के विजेद इ (स्वे) स्वा स्वाय इ (स्वः) स्वा स्वाय म. (स्वः) स्वा स्वाय स. (स्वः) स्व स्वय इ (स्वः) स्व स्वय इ (स्वः)
(ध्रुन सम्ब (ध्रुन)	

# महसोसं नईसोसं (स्वीभाद)

गामरं गामरं (व्यूक्टम्)

(४) दुन्त क रोलं इ-वृंक च-क्क पड्ये निजातीय स्वर अध्य ता मंपि बाद महि, उसम स के को पटी कार्रिक स्वर आर्थ ता दंगि बढी सवा (टि. १३ ८९)

> क्यामि अक्रवदर (क्यामि-बाक्कम्) पदाविक्रमस्यो (मनलत्वरःः) **पहमवन्दो** (व्यवन् ) नद्वतिहमें वार्वधारीह (नवाल्डेयन जवजनना) तियो **आगच्छार (क्रिन क**ामदादि) भाधिकसमे पिक् (जाउसमाह इराजीम्) महो अक्टरिसं (महा मार्थ्स ).

(५) इ. मादि पुरुष्योकक प्रत्यन प्रक्री स्थर आप ता सकि बाव 4R. (R. 11)

### दोर इद्य (मनिट झ्ट)

(६) स्थेतन सदित स्वरमांकी स्थेतकाना स्थय क्या कर होय स्वरनी पूर्वत्य स्तर छाचे संवि बाव वर्षिः कोइ ब्लान संवि बेन्यवामा पन कार्य छ (छि. १).

निधाभरा (निशासर) । क्रममाचे क्रमाचे (क्रमधाः)... रपविभरो (गःभिवरः) सुबरिमो स्रिस्तो (प्रपुरप) होहमारा खोहारो (बाह्यार) पयाचाँ (प्रमापति )

(४) व दुवर्नस्थास्त्रे ॥ १-६ । एदाता स्वरे प्र १-० । (५) त्याचे ॥ ५५५। (६) व्यस्त्योद्दते ॥ १-८ ।

मर्ने व्यन्तरेसी नर्दामा (नरेत). भारतम्य-महेनी सहाहमी (महुर्व). मार्श प-महसरा महाईसरो (महभा). म+क भा गृहाभर्ग गृहद्रभरं (गृहोराम्) स+ऊ॰भो-पननोसवा यसन्तऊसपा (रणतोष्का)-धा-व-का-बागाया रागाउपम (बहारच्यू)-

भारक भो-महासया महाक्रमया (नहा गर) बनमन्त्री-इहाबेपनद १६ सबेक्यह (स्रोतेका). तत्यागमा तत्य बागधो (तनतः)-( ) मुक्र ज परार्थ के स्वरों साथे कावे तो अपि वर्ण वर्ध.

इसर इसरस्या देवाओं या शहरेत देवते एक नविवय ए. (दि. १)

राबिर, रोबी (मरिरवर्ति | राबिर राबी (राहर्प्ती) पाबिर, पाबी (परिरवर्ति) | दिसा बीधा (वर्षक) (1) म्यानमा सरोध राज अने धीर्पनशा एटके इन र र रोर्थ नरा क्ष्मे रोर्थ रताना हरत शर अच्छेन स्वारी बाम छे. (बोर्ड देशान जिल्ह कर्न शर्ड देशारी निकर्त म

#). (R. 2) लग र्राष्ट्र-अंताचेई (म्न्तर्वेति )

धत्ताबीसा (का बेहिंगे). र्णेंबरं, पदवरं (पतिद्यम्)-बारीमा धारिमा (धरिमत).

वेम्बर्क वेस्वयं (वेसुनवर्)

रीका इस-केंड्यवर्ष केंडवाचर्ड (बल्लास्ट्यू). गोरिक्टं, गोरीक्रं (बेरीक्स्) (१) नवनित्र एकावेद्रपि (इसी) १-५।(१) वीमिली मिना इसी म १-७



<(॰) न्य पर रूपं द्विय लाला ध्वाको अनुसरै सद्य सेर वर है (पाइ २ ति १)

विममीसा (निष्मेच) विजीसरी (श्रेष्ण)

14.

मारि वामाम के शहरकता आर्रिनरास्त्र प्राप्त होते हमें

थान्द्रे । वाच भारताथ (रामात्र). अद्र शर्म अद्भ (वयम् )

(६) असि (मरी) अञ्चल बड़ी एवं बड़ती बड़ी आरे ले ^{[48} मानिये धाँ विकास तासास छ। (हि. ४) नं अपि सेवि समिव (तर्क) कि भवि दिनि किसवि (किमी) केश मवि केशवि केणावि (दशांत), कई भवि कहेवि कटमवि (कामी) (१ ) पतापता सभी वारी देखि में बस्त कि सपाप है वर्ग काम्मा भार म होब मी जि. सुकाब छ देशम मानवती सामित दिन ने बात दान नाम के (हि. ५८). नदश्ति नद्गति (तक्षेत्र) पिको इति विकासि विकस्ति (क्रिक इति).

मञ्च+पत्रध=मञ्जूष्ट (क्रून

मीसामनासा (विकामस्याली) विविद्य (विका) () स्यक् भारि गरमाम अने धन्तको पनी अर्थेग स

(R. .).

खो।दमा मोमा (शक्यः)



स-चंत्रुमी (कन्तुर) | सहयो (साराव्यः) | प्-चंत्रुमी (क्युव) | अक्टर्स (अव्यः) | य-चंत्रा (सन्या) | विश्वे (विश्वः) |

(१४) 'बाब' सादि धाजोमां प्रशासकर-दिगीनस्वर को पूर्वस्वर वर्षे प्रवासक्षित (निष्य क विकास) मानुसार वाल व

प्रवासकर जन्म-चन्नं (बन्ध्र्), शंद्धु (शस्त्रु), संसं (श्रान्ध्र्), र्वसर्च (बन्ध्य्य्), विशिष्टो (बुध्य्य्), संज्ञापे ) सरजापे }

हिरोमसर उपर-समेदा (स्थल्यः) प्रणंदी (ग्वाल्यः) गृतीसरा उपर-समर्थिः (त्यदिः) समित्रसम् स्रामुख्यः स्रामुख्यः

(१) राम्पर्वा सदर रहेना अनुस्थारको प्रधीन स्थान पर कर्न । प्रश्नि सम्बद्धिक विकार कर के ( कि ३० ).

सनुस्तिक रिक्रणे बाव हे ( दि ३० ). क्-पैको पहो (पहा) सोबो सङ्को (स्क्रुका)

क्-पंको पद्दो (पहः) स्त्रेको सङ्ख्या (स्कूलः) क्षेत्रको सङ्ख्या (म्ह्रूलः) क्षेत्रणं क्ष्मणं (स्कूलः)

स-केनुमो कम्बुबो (कन्द्रक). कंक्षणं कम्बर्ग (काक्रम्) संक्षित्रं शक्षित्रं (सक्रिय्) सहा सम्बर्ग (कान्य)-

र्-बेडमा, कप्टमा (रच्छक.) चन्त्रेडा राह्मण्डा (स्टब्स वैदे कप्ट (रम्बस्). संदो सन्दो (पन्ट).

स-नेतरं कारारं (कारारतः). पंता कारां (काराः). वंदो कार्यो (काराः). वंदाते काराये (काराः). स-केरारं कारारं (काराः).

कर्मणे करामो (करमा) वार्रमो बारममे (मारमा) (१४) नकरामणः ॥ १–१६ । (१५) मटेलचो वा ॥ १–३ ।



कासर (श्स्व रेग्.)

भीससा (१ स**ः**)

प्य-बीर्स (विध्यक्र) ण-वीसिन्ते (शिवकः). म्य-सार्स (ग्रस्यम् ). ज-बासमा (ब्रह्ममा) स्म-विकासरो (धरस्यर) मीसो (P स्वा) स्स-पीमदा (निस्सदः).

मीसरा (Paस'डी) अपनाय-कोई हैपान का किया समानी वर्गी स्थारे भी निकानुसारे एवं रहेत 'स-व-व' प्रदोतनहार क्षेत्र दव है. विस्मारर (<del>१ -५८</del>३). करसार (क्रम्सकित)

 क अवस्था दमक अरकात स्वर्त ग्रन्तोमां अने ग्राम प्रत्य निवित्र इपि मरज के 'जा' केचे निरूपे 'जा' बाव है. (प्र. ४६)-

<del>धरपयोगां चइ-सदा (नया) तह तहा (त्था</del> महम-भव्या (भन्या). व वा (वा E ET (ET)

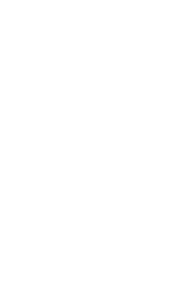
ष्ट्रचाताति --डक्लयं-डक्जार्य (उत्जाभ्य)। षमच बामरो (बान्र) हविमो टाविमो (स्यापितः). पवर्ष पायर्थ (प्रास्त्र)-इक्षिमी हाकिमी (हाक्षिकः). कमरो कुमारो (इमार)-

यम् प्रत्ययान्त-पवडां पवाडों (श्वार). | पड्टें पडारों (श्वार)-पपरों पवारों (श्वार) | पत्यकों पत्थाकों (श्वार)-

व मो प (१६) सद्भाग व्यवस्था एते 'ह' होन को विकासे ए बात हे. (सि. ४४८)-धंबई, विवह (विकात). सेन्यूर, सिन्यूर (सिन्यूप्त)

धामिलं बरिमार्क (परिमानाय). वेण्ड्र विष्क्र (विन्तः)-को देखन प नजे नहीं किला (बिल्फ)

(१८) राज्यकोत्काव्यसम्बद्धाः १-१४। वनुष्टेवीः। १-१४। (20) 82 823 H 3-45 J



च्य-वीर्ष (५व्य ३). प्य-मीसिसी (श्रीपक) स्य-नामं (रक्यन् ) घ-बानवा (। प्रामा) रम-नीमदा (भेम्सः).

बन्ययोमी - बद-बन (नया)

क्रकार (क्षश्यकित) साझे ध

क्य-विकासरो (िक्क्पट)-

कासर (ध्हरवर) बाममा (१ स^प) बासा (श्रमः) मीसरा (Pसा^{री)} स्तार-भी देखों मा निया मानी वरी रही ती भिन्नात्मारे रेप रहेर 'स प न' प्रचासामारे दिन दव है

निस्तर (प्रेन्स)

(१) ) सन्तरीयो कान जरम्बात स्पन्ति चरारोयो भने चन् प्रतार श्लित्ती

वृद्धि बदन के 'सा' तथे निरूपे 'स' बाप है. (R. ४९). तद तदा (ल्या

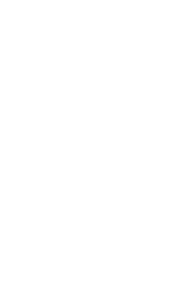
मदब-मदया (मावा). य वा (वा E ST (ST) बस्याताति -समये बामये (बान्त) बनगर्य-बचनार्थ ("स्पान्त)। वचर्य पायर्थ (प्राप्त्य) हविमो डायिमा (स्चाक्टि). इमपे इमपे (आ^{न्}

इक्सिमा इत्सिमो (इत्सिक्.). धम प्रत्यपान्त-पनको पनाहो (भ्यारः). | पहचे पहारो (श्वारः)-पवचे पवारो (भ्यारः) | यहचे पहारो (श्वारः)-

इ.सो. प (१९) बदुक्त पुरुष्यों पूर्व पूर्व दोन वो विक्रमो ए बान के (१६ ४४) पब्दे, विक्षं (विक्या). सेम्बर सिम्बर (सिन्द्य) पामेत प्रमित्त (बीमक्य) केन्द्र, विष्ट्र (विक्र)

कोई देवले 'प' को बढ़ी खिला (खिला)

(१८) राजसन्दिकसम्बद्धाः । १ १०। वसुक्रेयं ॥ १-१८। (30) ET TOT 11 3-64 1



ŧ	सिंगी (सूरः)
1	सिकारा (बुबरः)
1	बिगारा (गुप्रमः)

किया (अप)

बिह्न (बच्छ)

सिंह (सूचम)

विषयी (पूर्वा)

मिक (चड)

धकी (मक्रि)

गिक्सी (सर्वतः)

क्रिको (क्रथ )

THE (MALL)

श्राप्त (भूप्यः)

पुष्टई (पृथ्विन )

पश्ची ( ब्रक्ते )

पाक्को (पन्नूप)

पावको (प्रमृत)

पहुँची (प्रवृतिः)

पर्दार्ख (प्राभुत्म )

परह्रमा (परमुख)

मर्र (मा

विषये (इरस्म )

rd

सियासी (शक्तः) विका (प्रमे) प्रसिन (इसम्प्)

क्रिक्ट (क्रम्म्) समिदी (स्युदिः) नियो (स्प) किच्छा (कृता)

चित्रं (परि) किविका (इपनः) क्रियाच् (क्रस्तः) मिसंसा (नुस्र)

(१) 'म्ह्यू' व्यक्ति घण्योका समय स्थापनिक स्थल कर्य चौन

राज्यात 'कर' तो 'क' राज के बिद्वां (निक्षम्य) निकर्म (म्बूट्स) विक्रमं (स्थितः) संद्रमे (त्रकृत्य)

हत्तन्त्रो (बसन्तः) विध्यम (निर्माण) fergi (Frift:) वनं (कुनम्)

माउदर-भाडघर (मात्रस्य) (६)-वह महामानी ॥ १-१३१ । बीमानमान ॥ १-१३४ ।

प्रमायको (बन्दास्य) **प्रव**े (परः)

माजमहरू (मात्रकाम)

विक्रमी (ध्तुर)

किवार्ष (क्रमन्द्र)

विस्थुओ (बुविस्)

विस (कुन्म्)

feet (Ch.)

क्रियं (क्रुप्त)

eeft (me:)

किया (लगः)

ST (FET)

बुबबी (बुन्दा)

दसद्दो (ऋरण)

पञ्च (सद्धः)

मुचार्क (सूनव्य )

बाहिस (पद्यम्)

विषयका (रिवाना)

ব্যক্তির (শহর্ষমূ)

पहली (प्रपर्दे)

भाउमी (बर्मुक)

হ্লান্ডেমা (কদক্ত) माक्रमो (मनुषः) मादका (मनुरः)



** रिमहो-उसहो (जन्मः). रिक-रक (स्टाः) रिसी-रसी (क्या) (१४) 'छ्यू' ररानो 'इस्ति' बाब w ( प्र नि २ )-

किसिम्बो (वसकः). किकिसी (पसर)-ये नोप तया भा (१५) शामती सम्दर 'दे' मो 'द्य' बाब रमन बत्व' स्वदि इंग्लोम

सद्दं नाव के (दि. ६ केकासो (बैवाव) सेखा (चैना) सेन्न (सेन्न्य) बेज्बी (बेब)

क्ष्मपो (क्रेममः) तेखक (वैशक्त्र) बेह्रध्ये (वैनन्त्रम्) यराचमो (देसकः)

देख' व्यदि वक्ते पदक्रमो (वेदर्गः) बहच्ची (रेश्य) सर्ग्न (देग्या) प्रश्रमाणरो (वधान्य)

मासरिमं (१पर्वम्) करमचं (क्शम्) भवरको (भेरद ) भरसाहा (नेवायः) बहमतं (रेग्ट्य) बद्रसाको (बैकार) बरमासीसं (किलीका) मार (सेप्प )

बद्दपमी (वेंदेह ) बार्स (केल्पा) बदपदी ( केन) भी ने भो तन श्रह

(११) क्लूबी अन्तर सी' सो 'को' बाव रेसन 'पोर' करी यमोमो सर्वे नावंत्रं (\$2.६६).

(२४) सत इतिः नक्षण-नक्षाने ॥ १-१४५ ।

(रेप) केन पत् ॥ १-१४ । अहरीन्यानी च ॥ १-१५१

(९६) जीव क्षेत् ॥ १-१५९ । बदा बीगुरी व ॥ १-१६९

```
144
 المدلك إشره
 बासबी (बरीरम्बी)
 शंक्षतं (दीरम्)
 धीयो (बीब)
 Salls (Sales)
 पानिमा (वी'एव)
 G1 24 2ml
 Tri (7)
 मक्स (गी।)
 बरर प्रमं (बीहेरस्य)
 म्हान मोत्रम
 क्रारत (की र)
 मश्ये (बीग्र)
 First (Agent)
 मारा (गी?)
 Little Wille
 , बामा (वी)
 ust (min)
Nto-
 444 (4-1-)
 पुषारिमा (रो र १)
 Lare 1 tal
 मान्य-गान्ये (मे बद)
 all () i x 3 ax 9.
 मारत्यो भूना बरमान्य रहेरतमा नरवारा
(*) et t- en r st. Tes
 mg (c .)
 8"E (4+4)
 THE ! C !
 La (-n
 AIR, (L.d.,)
 STORY ! SHIP
 #4mg } (and)
 entagent restore)
 (15, to egue 3 3-11 :
```

पसगुषा (एक्टुचा) सम्गुषा (प्रपृत्ता) (१४) 'बिहुल' बार कार्ति करकारा क्षेत्रका क्षेत्रक स्टेक्स । स्टे सा के 'पा' पाक देशक स्टेक्स क्षेत्रका क्षेत्रका कर प्रेत्रके 'पा' पाव के को 'शिराद' सारि करोगा कर संस्के 'पा' पाव के (घा १) सि. १-१-४ )

सरिया (शरित), पाडियमा, पाडियपा (श्रीतर्)-संपमा सप्पा (ध्वनत्), पिरा (गरि), पुरा (गरि, पुरा (गरि)-सरमो (बरद), सिसमो (शिक्टू),

विषेप-सूदा (हर) दिसा (पिट्र) बाहसी-मार्ड (नार्ड), शब्द्धरसा अवस्टरा (अन्तर्), बाहस (प्रज्ञ), पानुद्वे-सन् (नार्ड) वार हे

(१९) छलानी सम्मर हराती एक्की बर्गनुष्य में कि-स-बा-म-पानी ए-पा बा है वर्षकरोपी प्राप्ताचा प्राप्त छेन पात्र है. एक अपनित हर पंत्र को प्राप्त के हैं एक अपनित हर पंत्र को प्राप्त के हैं ऐसा कर के हिम स अपनित को में पात्र को एक अपनित बा को प्राप्त का है (हि. १४).

कार के ( दि. १० ).

कार के ( दि. १० ).

किं- सोमी (का) तिरययरी (क्रैक्फ)

किं- सोमी (था) तर्द (यापू)

किं- सो (था) कार्य (यापू)

'स - रवर्ष (काम्) प्रयास (रक्ताविः) 'त'- पापास (प्रसाध्म) को (पतिः). (९८) श्रेटच् सर्-मभेड्मा १ १५ । रो स १-१६

करतारे/त्॥ १-१४ ।

गया (गरा) सुप्रविका (स्पृत्या) क - विश्वामा (एवा०) वमामा (प्रवादः)

R- Filted (+4-41) को (विव ) क्षेत्र बन्ताया (स्त्र) धावदा (एएर) (Lt) (LL) क्र गन्मायमा (परक्र) मनेमा (रक्र)

311

(دکد) لِعِدُتِ - ع.

A. LX (11)

(1) tay to a the about it as medical ੇ ਵਿਵਰਸ਼ਬਾਦ ਪਦੂਰ ਪਦੂਰ 'ਲ' a, a de, sand, a deam, done 13 to man ( 6 . )

112

यमारह (एकरव). तेरह } (वनेरक) च्यारख के तेरख } वह, वस (रक). पाहाचो } (वतकः). (१९) कररनी सन्दर स्टरावी एक्टा कर्यपुन्त भागी 'या बाप है. रेसत्र बाल्यों आधियों हैं होना सो विश्वती था नाम है

( BL 26.) वार्थ (शबस्) नार्ण । (इत्वस्) नरी । (तप) घर्ष (शबस्) मार्च । (३३) चलको बार्पमा 'पा' होल हा 'क्ष' वान के हेमन बान्सरी

पद्मी भी मान ता नोई उन्होंने 'खा' नाम के. (शि. १९०)-बसी (यमः) संब्रमी (स्वयः) बस्रो (धर्म) संत्रोपो (ध्योदः) बाद (यानि) अवद्यसी (क्यवर )

(१ ) कल्पानाची एकी 'ह्र' करने हो 'ह्र' हो 'ह्र' विकली जान के सित्रों } (विषः) संधारों } (विष्रारः) सीहरः । सिहररें }

(११) देख्य रहत्ते र. ॥ १ ११६ । एम-यानांते हु ॥

(देश) के मात्र पर । बहुते ।। ५-५३० । (BE) with an is 9-eye ! (६४) हो मोञ्चलातम् ॥ १ २६४ ।



संपत्तीह --(३ ) ग्रीनंतर एका अनुसार पक्षा देवानामा देवन नारेकपुन स्थानंद्र

ब्रिल बाल क्यूरी देसद**ं र-बर**ेपन द्वित पत्र वर्ग ( PL +1 ).

212

कनुरवारण-तंसं (प्रकार) र्शनंसर फामो (सर्घ) र्वसरो (र्थयः) थस (ग्रम्) संधा (सन्बर) भाषा (मारा)

बंगचेरं (महत्त्रम्) र- मन्देर (होन्दर्भ) कादावयो (कर्तश्यः) इ~ विद्वते (निद्वतः)

(३६) समाधमा दिए विकले बाब छ ( दि. १ )

**रेवत्यर्ग-देवयुर्ग** (देवस्तुःक्षः) नहस्मामो-नहस्माने (न्येद्यानः) इस्रमञ्ज<del>यो इस्रमण्यये (१९४४=</del>ः)

( ) तंतुष क्षेत्रका क्षेत्रे 'सन्तर-धन्धन्धन्य-र' धन दो उदे तथा केंचुच व्यवस्था पहेचो कांत्रन 'क-ब-च-र' होन तो क्षेत्र --

ज्यां करें स्थानको स्रोप सन्ते होय त्यां ह्राधिको धनतारै वैमाधि एकनो क्षोप करतो (हि. ४४ ) दश

कार्ष (बनका), एक्के (वस्ता) सर्वे-सर्वे (अपन्त) बार-बारं (सन्य.).

(क्ट) व धीर्ववस्तरहा ॥ २०५१ । १-वीर ॥ १ ९३ । (कि.९) समावे का त व रच ।

(४०) अपो ल-न बहुस् । १०० । वर्तत्र स-प-राजपन्त्रे ह

.....

```
मॅ-गरा (पर-) । दे-पर्यः (पद्मः)
 र्भ- माना (न्या) १४ - माना (न्या)
भ- याना (न्या) १४ - याना (न्या)
 MAE } (214-11)
 सदा (४४)
 - ब्रह्म स्ट्रास्य) (- वामा । ता
() कार भारत पुर का 'बुस्त' काब के बार वाद देवाने का
 विस्तित वर्ष के विकास का राज्य वर्ष वाल्यान्त वर्ष
 ¥ (tr)
 Tat (str)
 mfreut (em)
 THE (CT
 · red t)
 दार है (भीन्य)
 , जीति)
 प्रमा । स्वीत्यः ।
स्वी ।
स्वास्य सी)
 (क्यो } बर
 वरण (तर)
```

36.4

चयर (स्वयति) नक्का (इत्यनि) सम्बं (इस्यम्) बामी (स्थाक) पच्चमा (प्रत्यकः) बहुद्धं (बैस्यम्) (vv) प्राथमी सम्दर प्रचारने शतुसारे क्षेत्र उकान 'रख' में 'पर्च' 'चर्'ा 'च्छ' प्रति गेल्लाका 'चर्या ने जिहाँ ^{चन} 0 ( R. vs ) 'त्व'- किया (श्रवा) 'ब'- चिन्तं (निहल्) 'प्य'- बुरुहा (स्ववा) मोच्या (प्रया) ... सम्बर्ध (ग्रष्टम्) मच्या (नहवा) 'च्य'-पिच्छी (१व्यी) समो (बार) (४^५) इस सरने पटी स्थ<del>न्त सान्य</del> भाषे हो **'स्ड** 414 B. ( R. 43 ) **'च्य'** – पच्छ (त्य्यन् ) 'स्व'- रुक्टाहो (गसार) सवच्छरो (समस्य) मिच्छा (मिच्या)

प्त'- क्युच्पर (उउपरि) ह्य - पण्छा (महारू) मध्येरं (मद्यारंगु ) .. संस्कृत (अप्सापः) ( ६) क्रम्पनी मन्तर 'दा-द्या-दें' होत श्रः 'क्रम्ब' दात के हमन

म्पनियां दाव को 'क्क' बाद छ. ( हि. ५३ ). 'च'- मन्त्रे (रुचम् ) 'प्य'- सम्बद्ध (एप्पा) बेज्जा (वैद्याः) सदर्भ (नरसम्) 'र्च'- मरहा (स्पर्प)

- सर (प्रके) ... परवासो (स्परिः)

(४४) ल-प्य-स्-वाय-क-प्र-स्टाइक्क्स ॥ १ १५ ।

(४५) इसाग्र प्य-व-सा प्यामिकी ध २ २५ ।

(128) 4-04-41 at 11 3-3v 1

महाभी (नर्गत )

केपहों (केपता)

प्रचारण (अन्तम्म)

(पर) कपती अन्दर्भय था 'हु' बाव क अने आदियं होव तो

ठ पाय थे. (दि. (प)

कप्तु-ह्या-ह्यान्त्र्य आ कर्माण 'यु' वा 'हु' व मे अर्थ.

पुड़ी (खया)

कहुं (कप्या)

पद्मी (अप्रिक्ता)

पद्मी (क्या)

पद्मी (क्या)

पद्मी (क्या)

(अ) आप्रा-कन्दर्भ स. स. २ २ १ । से सी । २-११ ४ १

(अ) स्वान्य-क्यार्थ स. २ २ १ । से सी । १-११ ४ १

(४९) स्वान्य-क्यार्थ स. २ २ १ ।

पयहर (श्वक्षके) चंदिस्य (ल्वतिच्य) महम्मो (र्वतिच्य)

्र विद्यों (निक्या) संस्थी (लहा) (४८) 'पूर्व' कादि एवर कार्कि 'स्वे' वा 'हू' याव हा. (२ ६६)

 मायर (प्याचि)
 ।
 गुरुष्ठ }
 (प्रधान)

 - श्रीण (प्याच्या)
 ।
 सङ्गी (प्रधान)

 - प्रधा (क्ष्या)
 ।
 सङ्गी (क्ष्या)

... भरतह (न्ह्यारी)

सिकाइ (निध्यति)

(१०) एक्ती जतर ध्यां क्ये द्वां तो 'जझ बात ह क्ये बारियां होत हो झां बात हे हमत 'झा' को विष्ये ध्यां पत्र बात छ। 'ध्यां- बुसक्षर (तुष्यवे) । 'झां- सुरक्षर (तुष्यवे)

## 

( ) समयी संतर 'प्रम' सने शासिमां 'म' के 'ख' शास	भूतो प्रसंद अवंदान है। इ. (१८,५८)	
'मन'-पश्चावजो } (म्यूमनः) पश्चमनो	'क'-विश्वाचे } (रिवास्प) विश्नाचे }	
n जिल्ली (श्रिक्तम्) निर्मत	, शर्व (डान्प्) शर्व }	
क्ष्मत⊸'व' (त–घ) ना'मं	को भाग एक विकास वास है.	
पक्षां } (श्वा) एच्चा } भक्षां } (श्वा) भक्षां }	सच्चोत्र# } (सच्चेश्वप्) सच्चोत्रम }	
भक्रा } (भक्षा) भक्ता }	बार्व} (कास्म्) पाणे	
(५१) ग्रन्तमं अस्त 'स्त' होन होन यो 'श' मान के (ति	के रिया गान हे क्यो स्टब्सिट	
इत्यो (ट्रस्तः)	योसं (स्तोतम्)	
नत्य (गस्ति)	योचं (स्तोतम्) प्रा (स्तुक्ति)	
धन्य (लस्ति)	चनो (स्तर)	
भारतः—समस्य समे स्वर को क्वी	य ग्रम्मा स्त्रने स्ता के घ	
समचो (स्थस्तः)	र्शवा (स्तम्यः)	
(५९) सम्बन्धी जनस्य 'क्यूम' असे आसिमा होन सो प'नाव से		
'र्'-कुणसं (१इमम्)	'कम'-बप्पिची (श्विमर्ग)	
(५०) स्य-बोर्बर ॥ १-४१	को पा छ १~ ३ ।	
(५१) स्तरून कोऽक्रमस्य-स्त्रज्ञे ॥ १ ४५ ।		
(५२) इस-क्सीर ॥ १–५१		

(६३) क्लाबी अन्तर 'ह्या' अने 'व्या'तो व्यक्त बाब के अने आदिसी हान के पर नाम के (दि. ३८).

ूब्य-येक्ट (येक्सर)

क्षेत्र टेप्रके फाँक को नहीं स्वारे प्रशेष विकास सार पर **174 A** 

नियाने (जिसमः) परोव्यरं (सरपद्म् )

(१४) प्रस्पेनी सम्बर्ध 'क्क' तो 'क्स' विषये जल के अने आदियां दोन तो भिंदान के. (टि ५४) बिम्मा, बीहा (विद्या) विष्मतो विहस्रो (विहस्ः). (१५) एक्सी कन्दर इसे हो 'इस दाव हे करे 'इस' हो 'इस'

विषयि यात्र हे (दि. ३६

'मा'-बामो (क्रमः) | 'मा-बामो (दुगाप्) 'मा'-बामहो (म्माः) | 'मा-विद्यो (विगाप्) विवा (विगाप्)

(५६) राष्ट्रकी जन्दर रहेका 'इस-चा-सम-का' को 'म्ह्र' बाव क्रै ^{मने} पहम सम्तम इस्म'नो तम 'सहु' बाथ के कोद देखने धिनो किमो क्यावस ध (डि. १).

(५३) मराबो का १ -५३ । (५४) को भाका। १-५०।

(५५) स्मो सः । २~६९ । स्मो दा ॥ २~६२ ।

(५६) पस्त-स्य-स्य-स्र को स्टा १-५४ ।

1	t	ć	ı
ľ	١	٦	•

'दम'- चम्हाच (च्यमीय). 'पा - पिरश्रो (ग्रेप्सः). 'स्म'- पिरहाओं (दिस्मक्ष 'दा'- परदा (श्वा). n बस्दलो (शकायः) बमणो ( काइ बकाम किंद्वी बाग बनी

(भा) कुला <del>का का का का का भाग वा</del> सामा का अप । हो तहा

सचे (स्मः)

सिण्डो (मिस)-क्या (१८४३)

च्यात्र (स्नानि)-सण्ड (बहन्त)-विषद् (केश्यम्)a'- बद्धाची (न्द्राप्त)-

- पस्ताओ (स्वापः) मद्रो-मद्रो (नद्रः). समुद्रो-समुद्रो (एन्द्रा).

'श्म'- सपद्दं (गुहमम्). (५) धनानी सन्तर प्रिं केषुक संकल क्षेत्र को प्रार्थ ए

ब्दो-ब्द्रो (ग्द्रा).

(५८) डे संबद्यात २~४ ।

का क्रोप विकाये बाब हो. (दि ५) चम्बो-चेद्रो (सञ्जा)

**'स्व'- सग्दं (श्रह**्यार्)

च-पच्छा (वडि-).

'क्व'- विक्त (दिव्या). 'स्न'~ बोग्डा (भारता).

'ER' 4.7 St. (Rt. (1) 'स्न'- पण्डा (म्हा)-

रस्सी (गीवन) (५०) सन्तर्ग सन्तर रहेच 'इत-च्य-स्त-**इ-इ-इ**य' से सी स्त्रमा धन्ना ध्रमानो ध्रमा न च टना के ले

भग्दारिमी (बस्माप्ट)-

बस्दा (स्पा) बार्बर (बार्क्स) बंगचेर ।

चर्द्ध (पश्चम)

कुन्द्राची (१६मा॰).

```
(१९) सम्परी सम्पर 'हैं' शा 'रिह्र' बाव छ, छमत झी-ही-
 हत्स्त-क्रिया का घरनोमां धंतुष्ठ मन्त्राक्षरती पूर्वे ह
 मुकाम के. (हि. १८-७१)
 मरिश्रंतो (मर्गन) खिरी (पीट)
 मरिहर (महिरी)
 विसी (ई))
 परिद्वा (वर्षा)
 कसियो (इस्ट्यः)
 परिक्रो (र्फेन)
 किरिया (भेजा)
 (१) बन्दर्य सन्दर 'हो' के 'पैं' वो रिस्त' विकले बाव क सने
 तप्त-राज राज्यमा पन लेवक सम्बन नकरनी पूर्वे 'प्र'
 बागम दिश्लो मुक्तव हे. (टि. ७१)
प-षावरिसो) (भारहाँ:)
 तविमं १ (क्युप्)
 यायसो
≺-वरिसा } (व्यी)
वासा }
 षरिसद् ((स्पेन्न)
 (६१) ग्रष्टाक्य सम्पर समुख व्योकस्या समस्याक्य 'क्र' हान ता
 क्षी एवं 🖫 गूनन 🖝 (कि. ००).
 किसियो (क्रिन)
 विस्तार (स्मार्थ्त)
 गिसायर
 सिक्कि (श्विक्य)
 मिस्राइ } (म्स्रावरी)
 सिखोगो (म्खोकः)
 मिह्नापद्र (
 किसेसो (क्लेक)
 (५९) ई-बी-बी-क्रम्ब-विष्य-विष्याधित ॥ १-१०४
 (६०) र्थ-केल्स-वक्रेका॥ २–१५ ।
```

(48)mm 11 3-9 4 1

NR

सारिम (प्रीर्वेम् ) बायरियो अवर्धः) संदर्धिः (केन्द्रपेन्) बस्बाबरिम (बसवर्यन ) (६३) सन्त 'की सनुष स्थापन दोव एउँ। कार्किन नाग्येन्से 'बी' नी पूने 'ठ' मूध्यय के (दि. ८४) तशुनी (जनी) सङ्ग्रेवी (चनी) पुहुनी (इच्छी) मञ्जूषी (स्वरी) भारकी (प्रार्थ)

(६४) को अध्यक्ती करते 'का' होत तो केने वनके 'हि इ-नर्यों ब्रुगान के. (दि. १), वडि वह बत्य (१२) । ५डि, वह कत्य (१२) तडि तह तत्य (१२) । अवडि वन्त्रह, सन्तत्य

(६२) स्वाद सम्य-केश्व-कोर्वकरेत कार ।। ६-१ ७ ।

(६६) उन्देशकोष ॥ २-५५) । (NV) with files-rest in new ten i

# **छिंगा**ल्यासम

(१५) मातृष्-रारद्-तरिय ए घरने पृक्तिको वपस्य 🛎 (R. 14)

पाउसो (मन्द्र) सरमा (एरइ) **उरणी** (ध्यक्ति) (११) दामन्-शिरस नमस ए छन्ते विना 'स' नगान समे 'म'-

करान्य सम्मो पुष्टिकमा बपरास 🕽 (टि. 🤫 ) सान्त बसो (थयः) े नास्त अस्मो (क्स) पमो (पक्) नम्मो (र्यः)

वमो (धमः) मस्मो (मम) उसे (ग्रः)

वेमो (वेदः) दामं (राम). सिरं (किर). नई (रमा).

नीचेता सन्दोनो कोई डेकाने बर्युसकर्तिनामी एक प्रकोप रेवाप थ.

सेपं (भेन) बर्स (क्यः) समर्ग (सम्म.) सम्मं (चर्म)

((४) सिक्स (नेत्र) शरक एएरो सने 'प्रचन' सादि वको पुक्रिया निकरो नपरान है देमत नुष्य गोरे शब्दो बर्पुनवक्रियमं निकरो बपराव हे (दि. १७.)

(६५) मास्ट-सरस्तवकः प्रेसि ॥ १-३१ ।

(३६) रूपरामधिये-पाट ॥ १-३२।

(६७) नाऽपर्यक्-स्थनाचाः ॥ १ ३३ : गुच्चयाः झीने सा॥ १–३५ ह

सहिछर् }	पर्यवार
वकार् } (वहारी)	वित्रतृषा } (विषूर्ग) वित्रज्ञूष }
नयणा } (श्को) नयणार }	भाइप्यो } (म्हल्लम्) माइप्य }
होसणा है (लब्ब) क्षेत्रणाहर्	दुपता है (इन्हाई) दुपताहर्
<b>गु</b> षा व्यक्ति सक्ते	
गुणारं } (प्रनः)	वेवाणि } (व्यः) वेवा
विस्कृतं } (ध्नितः) विस्कृता }	खमा } (ग्रह्म) खग्मो }
करवर्रः } (करहः) करवर्राः }	रक्तार् ) (रमः) यक्ताः }
(६) 'इसन्' वर्ष राज एका कक्तो टेमन 'ब्राह्मक्टि' बगेरे के वीकियमा निकार कराव थे.	
पद्मा महिमा } (१९ महिमा). पद्म महिमा }	पमा गरिमा } (एव व ^{र्} स पस गरिमा }
पसा व्यवसी } (एव जवनिः). पस चवसी }	पण्डा } मनः).
वाच्छी } (सकि). शक्तिक	वारिमा } (गैर्मप्) वोरिधे }
पिति } (शम्प) पिति	
(4c) Buisreign Regif ( 1-1-1	

#### कारक-विश्वस्थर्ध

केंग ऐस्टिमां ड कार्ड हे टेम कहीं प्राप्तकां एवं धर्व वित्तवार्थों ऐस्टिम कर्मुगरे जलवें हमां विश्वस्ता नीचे प्रमाने हे.

(११) बाहरता शिष्यले स्वामे बहुत्यन यात्र छे हिस अध स्थापना गाउँ बहुत्यमांत नामनी लावे निमन्दर्श हि स्थापी प्रयोग पास है

दोष्यि कुपस्ति-बुधे कुपस्ति (हो इस्तः) क्षेत्रिय नरा दोहिस्ति (हो स्तो स्परःः)

हरपा (हन्ने) पापा (वारी), शया (बक्ते) (क ) कुरी श्रिमकिने काने वदी विमाधि वाब के एवं की माने करकी श्री के किया के कार्य के कार्य करकी स्वाने कही निमाधि विश्ववे वाब के कार्य करफाना कहारीते एकाकारण संस्कृती स्वान के कार्य करफाना कहारीते एकाकारण संस्कृती स्वान के (कि. १४) मुर्पियस्त मुणीय वा वेद (हनवं मुनेका वा दराति).

नमा चेवरस देखामं का (म्मा दशन देशमा का) नमो माणस्स (म्मो झनाक) मयो गुरुद्स (न्मा पुर्दे) व्याप्यमा देखस्य वैद्याप (देशक-विश्वमा).

(*1) विशेष-तृश्रेष-पंत्रती को एसमीने स्थापे काह डेडाले हती विमन्ति एक क्यान्त हो

विमन्ति एव वराज हो विजेयन स्वावे — श्लोमाघरम्या बाग्दै (डीमावरं वन्त्र) एकेनमे स्वामे—चावस्स खुद्धो (व्येन हत्त्वः)

हेसि प्रमाणाहण्या (जेल्फानार्थम्). (९९) विश्वसम् बहुवयस्य ॥ २-१३ ।

(७०) क्युप्यां क्या ॥ १-३१३ । स्ट्यांक्ट्यां ॥ १-३३२ ।

(७१) काविष प्रित्याना ॥ ३-१३४ ।

#### 101

क्यांमि स्तान-बोरस्स वीहर (गीव्ह विमेट) की-परकोगस्स मीमो (रागेन्द्र गैन्द्र) कर्तमंत्र स्वाने-पिट्टीच केसमार) (७१) की डेक्टरे विदेश का तुर्वको स्ताने करने विदेश

बात के छमत्र पंषयीन स्वाने कोई देखने गुडिय के छात्री पन बात क. (दि. ५४). बिरोमने स्वाने एएडाी—गामे यसामि (प्रमं वसमि)

विशेषने लाने एक्टी—हासे यसासि (स्त्रं व्यक्ति) स्वरं त्र हासि (त्रारं व व्यक्ति) रूपेयने त्वाने व्यक्तिमा पुरवी (वेश्ल्ब्य प्रतिथे)

्रवस्था रवस्थाने स्थाने कुनीना—बारेज सीहरू (नीयर् विवेषी) - बन्ताने—बारेजरे र्यामके सामासी स्था (सन्य पुरुष् रसाउठको सामा

(१) स्टब्सीने स्वामे कोई डेक्स्ये श्वितीया यात्र के वित्रहरूकोर्य प्रस्त र्रास्त (शिद्वाद्गीत स्वामि स्वीय) व्यक्ति सुरीया एव यात्र के तेया काळेच्ये तेची समयूर्च (प्रस्तिम् कके प्रस्तिन् एक्से)

(उस) दिरोध-तृत्रेषकाः सन्तर्भ ॥ ३ ११५ । एकस्वास्तृत्री च ॥ ३–१३६ ।

⁽४३) प्रकास क्षितीय है ३ १३ ।

# भातमोनां रूपान परिश्विष्टः---२

अहर स्वाह्यकार्थ कारेला अदस्त पातुआंगां के 'का' कार के. ते बरवारको सार्वे छ देवी छ मानुकोने स्वक्कतान्य सामीनै क्षर्व कर्यु एसी हुन इस दिनेरे पातुमी स्वक्कराना होताबी मूत्रभवनो द्विम प्रश्न नवास्य हे हेवी ह्रवीस ह्यीस बसीम निगेर क्यो का ब

 क्रमीब सद प्रेरड बातुमीनां क्रीर मने क्रमीब सद हो वरबनान्य बाद उपायी बनेत्र होन हा मुनकत्वा 'हुँमा' प्रापन काहमन मने रसास्त करावी बनेड होग तो तं बहने वेसी-दी-दीय प्रत्यव सागे 🖮

(बहुमाबाबन्दिरामां भा प्रमानं प्रनीयो करेका हे)

मृतकासनी क्यो

वर्षव अद-कर-फरीय-करीयाँ व करिक-करिश्वांस

हो-होई म-होई मसी-ही-हीम होइरत-होइरतसी-ही-हीन

कर्मण सबै माबे क्यो

चिद्धोम स्वास्थलना सच्यम सम्बाद (प्राप्तेत) मां समित साहे

क्तोबा 'ई.स-५३% प्रत्यको महिष्यक्रम को क्रियादिपरिका ٦ . वहुमायावित्रवापुत्र ११-१-१॥ सन्धर उच्चारवादीः प्र १८५ ।

ने महस्त्रमा सूत्र हर- ९१६ व २२६।

1 मा प्रस्कोतो शर्वस्तर रहुमाचाचित्रकालो इस्त करेड हे शोसि-कि-विश्व. ३१-४-११३ प्र 144 1

वृत्याला स्वतः ईम-इस्ती यका ॥ १-४-५१ ॥ १-११५।

स्थोयां अवशेष्य सभी एवं वह्यशासनिक्ष्यां क्योत्स्याः स्वे विनारिपरिकाः द्विय-इपक्ष प्रत्यव क्यापीनं स्थो करावाः काल्यो हे

क्मिन राज-स्वर्-सरीस करिस्स हो-होईस हार्ड्स मीला पुरुष पद्मवसनना स्रो

वर्ष --करीभर-करितज्ञ कोईमद-कोरश्चर

कार मधानकात्रामा कारण्यात्रा वास्त्रमधानकात्र्यस्य कारण्यात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रमधानकात्रभात्

करीपट करिज्येत बी-बाईसट द्वीरज्ज्ञ बीईपट कारज्ज्ञेत

> मी दैनस्वकाश गामा — कर्-करिद्वित करेडित

को-कोविश मिनेरे क्रवरिक्त वान्योविश मिनेरे क्रवरिक्त वासाय प्रसर्व :--

कर्-करीरहित करीपहित करिक्रिकित करिन्केहित

हेमत व्यर्पमां क्य वाह स्तर्क हुँग्य-हुळा ो प्रवासे देखाय हैं-स्रेत-त्यापित्रस्थानिति जगतः वाहरित्रकाचे व स्वलद-बंहरिक इति स्वताति, संविद्यानां व जानाति-कामान ह सुरू है है दो-दोर्ग्रहर होरप्रदेश दोर्गामहित होरप्रमेदिर हेन्द्रा-कार्ग्य-कार्ग्यहर कार्ग्यहर कार्ग्य-कार्ग्यहर कार्ग्यहर क्ष्यविक्त-केम्ब्राच्य प्रमाय —

करमान्यसम्बद्धाः प्रमायः — कर-करमां करमाण

हो-होस्तं हुस्त होमार्थ

गृह्माना प्रमान ...

कर्-*करीयस्त करीयसायः करिजनतः करिश्वसाय को-डोईयस्त होईयसाय बोदजनतः बोदग्यमायः

प्रेरक कर्तरि सङ्गा-

कर्-कार-कारे-काराय-करावे प्रेरक कार्यमा जीवापुरका एकाश्मना स्वो क्ष्मान-कारत कारेत करावत करावेत

म्लब्क-'पार्ट्स कारीम कार्ट्स कराव्हेंस करावीम करादेईस

हो-होम होए, होनाव होमावे ! होमवि र्यं--होनह होएह हामावह होमावेह होमथिट.

फे वहसम्बद्धान-प्रदेशक्षकात् कोरतः ॥ १-४ १ ॥ ४ १६७। ६ वहसावा स्त्र-नुपरीर्धानवाँ ॥ १-४-११ ॥ ४ ११३-११५।

वर्षेताविष्ठकातं क्रियतियातियां 'स्ट्रा' क्री माण' प्रवयो क्यायी स्वी वर्षेत्र क्षे स् त १-४-४१ त त १।
 वर्षेत्रप्रकृत-अवेत्स्त्रकात् वर्षेत्राः व १-४ १ त त १३०।

द्वारसी-दी-दीम दोमायसी-दी-दीम होभावेसी-ही-हीम को सक्तिकी की की म

विवि-मात्रल---कर-कारत कारेड करावड करावेड क्षो-क्षोमय क्षोपक

सोमायर होमानेत होमनित मनिल-कारिका कारेका करायिका करावेका बारदिर बापदिर बोमाविदिर

14

क्रोबाबेटिश, क्रोमपितिश

विकारियांत ---कर^{_∪}कारन्तो कारेन्तो

कराकतो करावेस्तो कारमाची कारेमाणी करावमाची करावेमाची हो-होमनो होएसी

होसाबको होनावैको होसविक्ती होसमाची होप्साची

हो जावसाओ, हो मावैसाओ, हो मविसाओ-

गरमान्याम् कारस्य कारेश्य होत्रस्य होएला स्टिरे

मचेची परेवा है, ४-१९३-१३६

प्रेरक कर्मिन---

भक्त का विस्त

कर्-कप्तवीम क्यांविस कारीय कारिस हो-होभावीय होमाविस होईम होइन्ज

र्ष —करावीमद्द कराविस्तद कारीमद्द, कारिस्तद दोमाबीमद्द दोमाविस्तद दोईमद्द दोदस्तद्

म् -- करायीम् इंग करायिकार्गम्
कारीम् मे कारिकार्गम्
कोमानीम् कारिकार्गम्
कोमानीमची-दी-दीम्
कोमानी-ची-चीम कोमानीमची-दी-दीम कोमानी-ची-चीम कोर्गमसी-ची-चीम

विवि-स्टार्थ :---

कराधीमत कराधिनमत कारीमत फारिनमत होमाधीमत होमाधिनमत होईमत होर्रमत महिष्य-कराधिनम् कारिनम

होमाविहर होदिर गोरे क्रिस्ट ।

क्ष्यः-कराविको वराविमाणो कारन्तो कारमाणे गेरे केरिक होमापिन्ता होमाविमाणो होस्तो होमाणो  वहमावायनिकार्मा (इ.स. इ.स.) प्रत्यत लगावी अनिव्य जाने किया विवर्तियों स्थारे आहेती के

के व्याप्य प्रकृति —

कर्-कराबीदविद कराबीयविद कराविक्रिविद कराविक्वेदिर कारीदविद, कारीयविद

कारीरिज्ञहित कारिज्येहित हो-होसाबीरहित होमाबीण्डित होमाबिरिज्ञहित होमाबिर्ज्यहित

होभाविकितिहर, होभाविकते होईबहिर, होईपटिस होरक्तिकि होस्केरिय

होरिजिहिर होरजेहिर क्रिनियसि-कर्-कराबीधस्य कराबीससाण कराबिस्त्रस्य कराबिस्त्रसाण

कार्यमस्त सारीयमाण सारिश्यस्य सारिश्यमाण दौ-दोसाणीयस्य होमाणीयमाण दोर्गेयस्य होमाणियस्याण

होइरक्रम्य होइरक्रमाण एक-रक्का त ज्यो स्टब्स्टी तस्त्य

वर्रमानकान विश्वकान सने दिथि-प्रश्वार्थमां स्थेतकात सने स्राप्त कने वरतमा महायोगां क्रक्तोने स्थाने **श्वा**नका

९ स्वतः एव ॥ १-४-१४ ॥ १४-१४४ । १-१. देस्पुत्रम्-प्रदेशला समित्यस्त्वेष उत्र स्था गा. ॥ १-१४० ॥ कुम्पन के स्वरान्त बाह्य होन को पुरुषकायक प्रश्ननानी पूर्व पन किस-प्रमा मुक्तन के

विज-प्रजा प्रत्यवनी पूर्वे को होब तो अने तो या बाय है केंग्रियन—

^{क्रेस} इस्+म इस-इसेन्ड्र इसेन्ड्रा दो-दोन्ड्र दोन्ड्रा दोन्ड्रह दोन्ड्राह दोम-दोप स दोपन्ड्रा दोपन्ड्रह, दोपन्ड्राह विषय

भवश्य एक्य महा सर्वकालना सर्वज्ञतकोन स्वानं उज्ज-उज्जा कार्य छ

बोरत-बोरता-मवित भवेष सयतु समयत् समूत् वम्ब मुपात् मविता सविध्यति समविध्यत् स्वर्थः

ने निष्यस्याः :— दैस्स्या प्रमाण स्थ पु छोत् सा 'प्रमाद प्रस्थ सने पद्माणा प्रमासे 'प्रमाद-कनात्र' प्रश्य स्थापीने प्रयोखे करेला है

हैम —इस्न-इसेन्बर, इसिन्तर हो-दोन्तर होम-होपन्तर, होरण्टर

सभ्य च न्यास्त्राह् वा ॥ ३-१५८ ॥ ज्यान्यत्र ॥ १-१५९ ॥ वदस्तरहासून्यन्यन्यदेश वार्ता । ० ४-१९ । ४. १८६ । सभ्ये वादस्तरहा १-४ ४ ॥ ४ १८६ । → वैस्त्रपुर ८-१० ॥ इत्यस्य वृत्ती ।

३ देवद्व व्यक्तवस्य स्रो ॥ ४-३-१६५ ॥

संस्थात स्था ह्यंत्रमान्त्रि ॥ ४-४-१४ ॥ १८-३८४ ३ इ. इस्त्रीय क्षत्रस्थनस्य इत्ता १०-१-२६४ ॥ वर् --द्रायु-द्रसेन्नश्-उन्नार् द्रसिननश-उन्नार द्रो-द्रोजनश-उन्नार द्रोत्र-द्रोपननश्-उन्नार, द्रोरजनर-उन्नार

बर्मापानां संपित्रकानमां 'हि' गर्नामं सम्बद्धे न्याने पञ्च-पञ्चा ना प्रयाना आरोग है

देशकारसम्पर्क - इति प्रकार का क्षांत्रका कार्यक्र - इति प्रकार कार्यक्र कार कार्यक्र कार कार्यक्र कार कार्यक्र कार्यक्र कार कार्यक्र कार कार्यक्र कार कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र कार्य

क्य--हो-होण्यन्त होज्यमात्र होज्यामात्र होज्य-होण्या परे होन्त होमात्म. हव+म हप-हवेज्य हवेज्या-हपन्त हवमात्र-

द्वः म दप-द्वेत्रत्र द्वेत्रता-द्वपन्त द्वमाणः देम प्याकरण प्रमाणे —

हो-होत्रस होत्रस होत्यो होताओं हरा-ह्वित्र हेरेत्रस हमको हरमाणे हरा-ह्वित्र हरेत्रस हमको हरमाणे हरा व्यापना नगान सन्त्री त्य क्यारामं क्रिक्सपर्य 'ज्ञान्यस' ना माणे दिन्यों-मु निर्माणकरेते यूर्व क्रिक्स नगारे सा-द-य पत केश के विश्व क्षेत्री हम क्रीक सम्-हाजसी होतासी होत्रहीस ।

हाज्यामा होज्यामा होज्यामा होज्यामा वरमात्रासम्बद्धान्यान्य वरामना का नार्यासम्बद्धाः

४ वर्भातामुझय्-यस्य वरा।-त्तं-एवर-जानिस्पति ॥१ ४-१९॥ छ-१९१। जन्मिति विगनिर ॥ -४-५ ॥ ४-१९ ।

८ वर्षणस्यान्त्रायमधीत् व सद्या ॥ १०४०-४१ ॥ १८ १९३ ।

स्य प्रमान प्रमुखनानं प्रवोद्यो करेला होवायी सर्विष्टकाश्रमां एक प्रकारी पूर्वे प्रश्न-क्षा वा स्व श के यु प्रवोक्ते सनुमारे वर एके के तुर्वो ----

दांत्रित्रदिद होउछेदिद दिगरे व्यो एव वाय छ.

पर्मिना 'उद्य-उद्यान स्था —

ম বিশ-সন্থানা স্থানী কম্পি হাল ইল্ছ কম্পিনা স্কেবনি বিল ৰ ব্যয়েত্য ব্যাস ৮ বাবী সংক্ৰাসী বুৰ জল-সলাবা মৰানা সাৰ কৰে। নহি

र्णात मा-दो-दोर्गम दोराम दस्-दसीम दसियम र्कमन-दोर्गप्रम-स्था दोरामेरम-स्मा दसीप म-प्ता दसिरमेरम-स्मा

विस्-बाहार्य – ,, मधि क्या -होक्ज-हारमा इसेरम-इसेरमा कर्तरिकत

बहुसाया प्रसाचे —

मधिन्द-होर्म्पदिरम-उमा होर्म्मिक्म-उमा होर्रुमिक्म-उमा होर्मिमिक्क-उमा इसीयहिरम-उमा इसीम्बिरम-उमा इसिन्मिक्मिक्म-उमा इसिन्मिक्म-उमा

क्रिय--हाईपरत-रता होरच्यरव-रता इसीपरब-रता इसिरवेरब-रता ः क्रेन्ड क्रीरितं पत्र-उद्वार्थ क्ये दा-दोध-दोध, दामान दोमाव दोमाव दस-दास-दासे दसान दसाने

बद्धात —

हा होपरजर्-होणस्थार होसावेश्यर-होसावेश्यार होसतिश्यर-होसपिश्यार श्रिन्ट होपश्य-व्या होसावश्य-श्या होसविश्य-व्या

इस्-हासेश्व-रता इसविश्व-रवा विक-मदाव —

हो-होपरकार होपरवाज हामापेरकार होमापेरकाउ हामपिरकाउ होमपिरकाउ निर्म. होपरक-उद्या होमापेरक-उद्या होमपिरक-स्था

द्वापरप्र-रक्षा द्वोमाचेरक-रक्षा द्वोमपिरक-र दम्-दासेरक-रक्षा द्वमाचेरक-रक्षा सि-सर्वे प्रसर्वे सा—

भिर-वर्षे इ शर्रे व सी— दी-दोण्डकर दोप्यकार दामारिककर दोप्यकार दोमारिककर दोप्यक्रिकार दामारिककर दार्थक्रिकार दम-दारिकार दार्थक्रमार दम-दार्थिकार दश्येरकार करुप-दोप्यक्रिकार

द्रोधावेग्बद्धिः होमावेग्बाहित

योमविरतदिह दोशविरश्चादिह परिविध्य १ इ.३ कि.३ लक्षे

होपन्त-रजा होमाचेनस-रजा होसविन्त-रजा दम्-दासेरब-रजा द्वसावेरब-रजा +पेड्सासा चन्त्रिका मतः (प्र. १३५)

वो द्रोपहिन्छ-न्या द्रोभावेदिका-न्या होमविद्यिक-रका दस-दासिद्विक-एका दासेदिएक एका इसाविधिरध-रमा इसावेधिरम-रमा

क्ति --- होपरूच होपरूचा

श्रोभाषेत्रत श्रोमानेत्रता बोचवित्रज्ञ-बोभवित्रज्ञा इस-इसेरन-रहा इसावेरन-रहा

पङ्गापा प्रमानः--

म्बराना बाह्या 'न्य गाव' प्रत्यवती पूर्व क्या-क्या भावे त्यार होयात्रस्त होयस्त्रमाण होयस्त्रामाण होधापेरकत होसावेरकमाण होसाबेरकामाण द्रोववित्रज्ञन द्रोववित्रज्ञमाण द्रोशवित्रज्ञामाण

देशक कर्यक्रिया क्य-क्यानी स्पा भरवकाने स्थाने 'कन्न-प्रका ना प्रजीयो करवा

प्रेक्ट क्योंने जह

को-बोमाधीस बोभावित्रत्र दोईस द्वारत्त्र इस-इसाबीय इसाबिज्य हासीम हासिज्य वर्त विवि-माहार्च --

हो-होसानीयम्ब-स्ता होईपमा-ज्या शोधाविक्तेरत-रहा शोहरवेरत-रहा

FURTIER S GL SAY PL V 1

इस-इसायीण्यम-प्रता इसीय्यम-प्रता इसायिप्रवेशभ-प्रता इसिग्रज्ञश-प्रता नदि प्रिया —होप्रस-प्रता इस्पायिप्रय प्रता इसिग्रस-प्रता इसायिप्रस-प्रता इसीय्यस-प्रता इसीय्यस-प्रता इसीय्यस-प्रता इसीय्यस-प्रता इसीय्यस-प्रता

वह्नता स्पर्वः ---व्यः --- हो हामार्याहित्य-उनाः हामार्वयहिण्ड-उन्नः हामाविज्ञिहित्य-उनाः होमायिज्ञेहित्य ज्ञा-

होर्रादेश-का, हार्राविश-का हार्राक्षित्र-का होर्ग्वेदिश-का. हम्-हमार्थावरिश्त-ग्रहा हमार्थायरिश्त-ग्रहा. हराय्यित्रहिश्त श्रह समार्थायरिश्त-ग्रहा. हार्यावरिश्वरिश्त-ग्रहा हार्यायरेश्व-ग्रहा. हार्याश्रवरिश्त-ग्रहा हार्याश्रवरिश्त-ग्रहा

दिय -
हा-हामापीएउम-उमा होमाबिरअउम-उमा

होर्गपरम-उमा हाइरमेउम-उमा

हम्-हग्राषीएउम-उमा हमाभिरअउम-उमा

हासापरम-जन्ना हासिस्डेरम-स्वा-×ह रस वर्षीदी ह ह १ र मां का विभन देवाई ट

ष्ट्र १ भी का क्रियन केवाई छ बारमी--विद्यक्तितियाँ सि-हात अपनीया अधीत का देखांव के संम--व्य पहुषीना मानो व परित्रतेनो त्या तम क्षित्रे केवनार्ये सारीमार्गते ।

# ॥ सिरिपाइअ–गडज-पडज-माला ॥ नमात्यु पं समजस्स मगदमा महादीर-बद्धमाणसामिस्स ।

(1) ॥ संगर ॥

। पष नमुस्कारमहामंत्रो ॥

नमो स्परिक्रताण

नमो सिजाज

नमो शाषरियाण

नमो उपक्रायाण ममो कोए सम्बसाइणं

पसो पंच नशुक्कारो सम्बगनवण्यपासको मगस्राज च सम्बंसि पहले हवह मेगळ ॥

वचारि मंगलं-

भरिष्टेंचा मगर्च सिद्धा र्भगर्च. साह मंगळ केविकपसत्तो बन्मो मगुरु ॥

चत्तारि सोग्रचमा-

भरित्वा छोगुचमा सिद्धा होगुचमा

साह कोगुचमा केनकियमची घम्मी छोगुचमी ॥

## चचारि सर्ग प्रश्नमामि— व्यक्तिसरण प्रश्नमामि सिद्धे सर्ज प्रश्नमि साहु स^{र्व} प्रश्नमामि, केवस्टिपन्तच प्रस्मे सर्ज प्रश्नमामि ॥

(२) ^१सीयायप्पर्वा (चित्रकार्यनम्)

सीया क्वणीया जिल-१रहस अरसरलविष्य<del>स्य हर</del>स । भोसत्तमस्तरामा बढ्यक्यदिम्बक्यमंदि ॥ १ ॥ सिविपात मधायारे. विकां करस्यवकार्विवास सीदासण महरिद्रे, सपाधपीर्व जिजनरस्य ॥॥॥ आष्ट्रपमावमञ्जो मासुरकुरी बराभरणकारी। स्रोमियनत्वनियरको अस्त थ ग्रस्कं सपसङ्ख्य ॥३॥ छट्रेज व भत्तेर्ण अवस्वसाणेज सुरदेव क्रिको । कैसाहि विस्कारी बादवा चलमें सीचे ॥ ४ ॥ बीबासमें निविद्रों, सम्बद्धीसाच्या य दोदि पासेहिं। वीपति चामराविं, मजिर्क्जविचित्रंबाविं ॥५॥ पुस्ति चनिकासा माणुसेहि, सा बहुरोमकूनेहिं। पच्छा वर्षति देवा सरअसरा गरूकनार्गिश ॥६॥ पुरको सुरा वर्षति असूरा पुण वादिजीने पार्सनि । वनरे नईति गरका मामा पुत्र कारे पासे IIVII वजकेर्ड व <u>कस</u>मिन, परमसरो वा बहा सरक्काडे सोवद क्युममरेण इच गग**न्यतः** सराजेर्वि ॥८॥

सिरास्त्रणं व तहा किमारात्रण व वयस्यणं वा । सेवह क्रुमुमारेणं, इय गामव्यकं सुरगणेहि ॥९॥ वरपकानरिक्राते—संस्त्रस्यसहस्त्रेष्टि गृरोहि । गरप्यके सर्पियकं नृत्तिनाको परमरम्मो ॥१ ॥ वतवितत स्वाहस्त्रः आक्ष्य वत्रसिद्ध वहविद्धिय । वाहत स्वाहस्त्र आक्ष्य वत्रसिद्ध वहविद्धिय ।

याचाराङ्ग-द्वितीयसृतस्कन्ये

( )

# ै(दियपिसयमावणा इंद्रियविषयभावना)

म सक्य न सोचं सहा सोचित्रसमागाया ।

रागरेशा व ने तत्य से मित्रम् (विकाद ॥१॥

रागरेशा य ने तत्य से मित्रम् (विकाद ॥१॥

रागरेशा य ने तत्य ते मित्रम् परिकाद ॥१॥

न सक्य रसमागात्र नामापिसयमागय ।

रागरेशा य ने त्य ते मित्रम् परिकाद ॥३॥

न सक्य रसमागात्र नाहाविभवमागर्थ ।

रागरेशा य ने तत्य ते मित्रम् परिकाद ॥१॥

सारोशा य ने तत्य ते मित्रम् परिकाद ॥१॥

रागरेशा य ने तत्य तिमन्तु परिकाद ॥४॥

रागरेशा य ने तत्य मित्रम् परिकाद ॥४॥

माचाराङ्ग-द्वितीयमुदस्कम्पे

¥निम्ममो मिक्स् परे-क्यरे पन्ने अक्लाप माइणण महीमवा।

लंखु परमं बाहायच्या शिकाल वे सुनेह मा ॥ ॥ माहण बाहिया पेस्सा बहाला बहु बोहमा । यसिया प्रसास सहाला बहु बोहमा । यसिया प्रसास होते व स्थारंत लिस्स्या ॥ ॥ ॥ परिमाहनिहिंदुर्ण वेरं तेसि पबहुद । बारंतमित्रमा बामा न ते सुक्विमीरमा ॥ ३॥ भाषायिक्यमाइच, नाहको दिस्परियो । ॥ असे दर्शत व दिस्परियो । सम्प्रीद किवति ॥ १॥ माया निया पुराम भाषा माया पुराम साम्या साम्या पुराम साम्या पुराम साम्या साम्या पुराम साम्या साम्या पुराम साम्या साम्

(4)

स्वकृताल-वितीयभृतस्कन्ये

'पुनलरिगीवच्यम् (पुन्करिणीवनमम्) से जहाजामय पुण्करिणी सिना चटुवरगा बहुसेस्य 'बा लका करहा 'पुण्योकिणी पासानिजा वरियाणिया अधिकर

पुरुषका क्या पुरुषिणी पासामित हरिसणिया अभिस्य पिडेस्सा टीसे जे पुरुष्करिजीत तत्त्व तत्त्व हेसे देसे टी वर्षि बहुरे पुरुषकरिजीत तत्त्व तत्त्व हेसे देसे टी ¹¹हर्श्य वच्चमता गंधमंता फासमता पासाहिया दरिस्रिक्य समित्रना पश्चिता तीसे गं पुरुक्तरिजीए बहुमस्त्रोहसभाए पगे मई पामदरपोंडरीए सुद्ग्, लागुपुट्युट्टिए हस्सिए रुद्द्रके बन्नमते गंपमते रसमंत पासादीए काल पश्चित्र ।

¹³सम्बापित च में होते पुरुर्द्वारणीय तत्य तत्य गंधे देशे वर्षे वर्षे पदमे पत्रमवरगेंद्रशीया पुत्रमा आणुपुज्नुहिया कलिया वर्ष्या बाव पडिरुवा सध्याबंति च लं तीते व पुरुर्कारणीय पदम्यतंत्रमार एतं महं पत्रमवरगेंद्रशीय बुद्द्य आणुपुज्नुहिय बाद पडिरुद्धे । १ ।।

स्त्रकृताह-द्वितीयमृतस्कम्ये

(₹)

'निपम्बज्ञा (निमिन्नमञ्जा)

न्युक्त प्रक्रोतायो जनवत्रो माणुसस्मि छोगस्मि । जनवत्रमोहिकत्रो, सर्व्य पोराणिये बाद् ॥१॥ बाद् सरितु मध्ये सर्वयुक्को ब्युक्तरे बन्मे । पुण ठवणु रक्षे अभिवित्तस्त्रमद्र नती राया ॥२॥ से देवकोगस्तिसि ध्यन्तेवत्रस्त्रमा बरे भोप । बिलु ननी राया पुको भोगे परिचय ॥३॥ विश्वेस सपुरवाणस्य मध्यमितिक् च परिचय सम्ब ॥१॥ विद्या सपिनिक्सन्तो एम्पनिविद्वियो भयव ॥१॥ कोस्मह्यतम्य सासी मिद्दिकाय्यस्यस्त्रम्म ।

वर्षा राबरिसिन्मि भमिन्मि अमिविवस्मान्दन्ति ॥१॥ भस्मृद्रियं रायरिसिं पम्बजाटाणमुक्तमे । सको माइयहरेज इमें बयणमध्यती ॥६॥ किण्णु भी कञ्च मिहिसार कोग्राहस्यासंद्वता । सुम्पन्ति शरणा सशा पासामम् विश्वस् य ॥॥॥ ण्यमट्टं निसामित्ता इउकारव्यवोद्यो । तमो नमी रायरिसी पविन्द इजनस्वरी ॥ ॥ मिदिसाए चर्छ बच्छ सीमच्छण मणोरम । पचपुष्कमञ्जावेष, बहुवं बहुगुण समा ॥९॥ बाण्य द्वीरमाणस्मि बहबस्मि मधोरमे ।

दुदिया कहरणा जला एए कन्द्रींना भारता ।११ ॥
एममह निमामिता इंडकारणवाह्मो ।
वजो निमावर्धित इकिन्दो इक्माव्यवा ॥११॥
एस बानी य बाक व एवं इम्मार मन्दिर ।
समर्थ बन्दार तेणे, कीय ले मावरेक्टर ॥१२ ।
उसी तिमामिता हेकारणवाहिको ।
वजो निमे रावरिमी हेकिन्द्रक्रमावर्थी ॥१३॥
सुद्रं बद्यामी जीवामो नैसि मो निम्न क्रिका व ॥
सिद्रिशय बन्दामानीय, गम बाह्म कि व थ ॥११ ।
वार्षे वस्त्रमानीय, गम बाह्म कि व थ ॥११ ।
वार्षे वस्त्रमानीय, सम्बन्धार मिन्द्रस्थी ।
विसे न विज्ञ क्रिका स्थापनिक्रमानीय ।।

ण्डु मुक्तिनो मद् भणगारस्य भिक्तनुत्रो । सम्बन्धे विष्ममुक्तस्य प्लान्तमनुषस्यको ॥१६॥

परमह विद्यामिता, इवकारणपोहमी ।
वको नर्मि रावरिमि, देविन्दो इलमध्यको ॥४५॥
दिख्य सुकर्ण मित्रमुच कमं दूस व बाह्यं ।
कोम वृह्ववर्णानं, तमो गण्डसि स्नित्या । ॥४६॥
परमह निमामिता हे उकारणचोहओ ।
वको नमी स्वरिक्त दिव्ह इलमण्डवरी ॥४७॥
सुरुण-रूपसा स्वरूपमा असंस्या ।
सरमः सुद्धात म तेहि किवि
इच्छा हू (७) कागाससमा अस्वरूपमा ॥४८॥

प्रको साली बना केन हिरणी पश्चितासङ्ग । परिपुष्ण नाक्ष्मेसस्य इह विश्वा तर्व करे ॥४९॥ परमह निसामिता हेण्डारणकोहमो । तमो नोम रावरिति हेलिनो हमसम्बन्धी ॥४ ॥ कर्म्हरणसम्बन्धे मोए क्वासि जिल्ला । ॥ क्युत्वे कामे पत्थिति संक्योण विश्वसासि ॥५॥

* वरिय

प्रसाहं निष्ठाभिक्ता हेक्कारणचोहस्रो । यजो ममा रागरिसी, देविन्दं रूपनवस्त्री ॥५०॥ सकं कामा विस कामा कामा आसीविश्वाचमा । कामे प्रयोगाच्या सकामा बन्ति होनाई ॥५३॥ बहं वयन्ति कोहर्ष, मान्त्रमं बहमा गई । साथा गहरविश्याणो कोमाजा हुद्दको सर्थ ॥५४॥

चार वास्त्र कार्य, साम्म्य बहमा गई।
माचा गर्यहरमामा को बोमाना हुर हो सर्थ ।१५४॥
अवस्थारक साह्य-तर्थ वित्रविक्त्य हुन्यूषे ।
पत्यह असियुक्ततो हमाहि सहुराहि बमाहि ॥५६॥
बहो वे निश्चिम कोरी चहो गाने पराहिमो ।
बहो निश्चिम माचा बहो कोमो पराहिमो ॥५६॥
बहो वे सम्बर्ध साहु बहो वे साहु सहस ।

बहों ते कश्वरं साहु बहों ते साहु मत्य । बहों ते बतामा प्रती बहा ते मुत्ति बतामा ।१९४। इह सि बतामी मन्ते पष्का (१९९०) होहिसि बतामी । अम्मुच्युक्त कर्म सिद्धि गष्कारि नीहिसी ।१९८।। एवं अमिनुष्यन्तो रायरिसि बताम सहाय । प्रसाहित करेन्द्रों पुत्रों पुत्रों बनाह सहाये ।१९९।।

तो बनिक्रण पाए, चर्चकुमध्यरको प्रुविवरस्य । धामासेणुण्यस्यो, धविष्यवर्षकुण्यतिरोडी ॥६ ॥ नमी बमेह बप्पाल सक्तर्ज सक्षेण चोहमो । बहुइल मेहं च "वेदेही सामग्रे पाञुवद्वित्रो ॥६६॥ (७) 'वयक्रकः (झतपट्रक्स्)

विविमे पदमं ठाणं महापीरण रेसिञ । वर्षिसा निक्या दिट्टा सम्बम्एसु सबमो ॥९॥ बार्विति छोज पाणा तसा अदुव मावरा । ष बाजमबार्णवा न इष्णे यो विधायय ॥१०॥ सम्बदीवायि इच्छंति कोवित न मरिन्जिक । वन्दा पाणिबद्द मोरं निर्माया बस्त्रयति यं ॥११॥ अप्पमृहापरहाया कोदावाळ इ.वामया। हिंसगम सुर्स वृक्षा नो विकास वयावय ॥१२॥ मुसानाओं य स्रोगस्मि सम्बसानुद्धिं गरिहिको । षविस्तासी य मुभाण तम्हा मासं विषयाय ॥१३॥ विचमतमविच या अस्य वा ऋड्वायड्ड। र्वसम्बद्धमित्र पि समाईसि अजाइमा ॥१४॥ र्वभप्पणान गिण्डति नो वि गिण्डावय परं। अभ वातिकामाणं वा नालुकार्णति सञ्जया।।१५॥ नर्गमनदियं भोरं, पमाय दुरहिद्रियं । नायरंति मुणी कोय, भजाययणवश्यियो ॥१६॥ मृष्टमेयमङ्ग्यस्य महादोससमुस्सर्थ ।

वन्द्रा मेद्रणसंसम्भं निमाया व वर्षति ज ॥१५॥

विद्यमध्येत्रयं छोज तिकं सर्व्य च प्राणिमं । म ते सन्निद्दिमिक्छति नायपुत्तवजीरमा ॥१८॥ खेदरसेस अणुप्तसे मन्ते बन्तयरामनि । जे सिया सन्तिहिकामे गिडी पन्नइप न से ॥१९॥ अर पि बर्स्य च पार्य वा क्रम्बस पासपुंडाणी। तं पि सक्रमसम्बद्धाः धारेति परिदरंति स ॥२ ॥ न सो परिमाही बुची नायपुचेण वाहणा । मुख्या परिमाही बची हह बुचै महेसिणा ॥२१॥ सर्विम भ्रहुमा पाजा वसा अद्भुव भावरा । बाइ राजी बपार्मेतो क्यूगेसणिक वरे ॥२४॥ पत्र च दोस इडठूज नायपुरेज मासियं । सम्बाहार न गुंबंति सिमाबा राहमीयथं ॥२५॥ **ब्दावैका**खिकस

(2)

राष्ट्रणस्य पञ्जापाची (राष्ट्रणस्य प्रमातापः)

रत्तुल जजपताच्या सेमं स्वाहादिशसा बहुत्युर्थ । विनयेद बुज्यदिश्या म च जिया हम्मं सुरित्यो वि ॥२१ मा चर्च श्रामुम्मला सीचा छङ्गादिश्य तो मलिया । पावेल सप सुन्यदि! हरिया समोचा दिखवनती ॥२३॥ तिर्देश्य वर्ष विस्तोगरि । क्लंडविरिकास पायमुक्तिस । क्यसान्ता परमदिका स मुख्यिका मण तिर्देश ॥१३॥ सुमस्तेत्र वयं तः, संसद् रिमया तुम विसाद्धवरी !। रमिशामि पुणो सुद्रिः सपड माछन्त्रणे छैतः ॥५४॥ पुरस्विमाणास्ट्रा, पेक्ष्रसु समक्षे सकालग पुरुष्ट्र । मुद्रमु उपमसोस्य मगर पसाण्य ससिपयणे ।। ता मुजित्रण इसं सीवा रामारकण्टेण मणाई दहवयण । निमुणहि सक्त वसक अब से नेह समुख्यहसि ग२६॥ भगकोनवसगएण वि पत्रमी सामण्डली च संगामे । एए न पाइयतका सङ्गाहित ! महिनुहारहिता ।।२७॥ तान च जीवासि अह जाव चण्याण पुरिसर्सीहाणे। न सुषेमि मरणस**र्द रच**यणिकः अयण्यसुद्धं ॥२८॥ सा जिन्द्रिय एवं पहिया धरणीयक गदा मोह् । **बिट्डा प राज्यणा, सर्वावस्था प्रवक्रियस् ।। ९।।** मिरमात्रमी खण्य जामी परिचित्तित समाहती । कम्मोक्ल बढ़ों कोचि सिमहों कहा गुरुओं ॥३ ॥ विदि चि तरहविस्त्र पावेण सप्र इसे क्रम कम्म । अमोजपीइपमुद्दं, विकोइयं अधिमं नियुत्रं । ३१॥ समिवण्डरीयवड्ड, निडयकुक्षे बत्तमे कर्च मलिण । परमहिसाय कर्म वन्महभिक्तियत्तिये ॥३२॥ बिद्धी श्रद्धो अकम्ब महिला में तत्व पुरिससीक्षण । श्रवहरिक्रण वणामी इहाजिया सरजमुद्देज ।।३३॥ नर्यस्य महापीही कडिप्य समामका श्रवपस्मी। सरिय वह पुरिक्षिक्षिया वर्गियक्या क्ष्या नारी ॥३४॥

जा पडमरिट्ट सन्ती, अमपण व मचा पुरुष अज्ञार । सा परमसत्त्विता, तदर्याणस्त्रा इह जाया ॥३५॥ बद्द वि च इच्छेरत समें संग्रह एसा विमुक्सस्माना । तक वि च म आवद चित्रं, अवमाजनुत्रमियमकस्स ॥१६॥ मापा में भासि अया विशीसजो निययनेव अणुरूसे ! क्वएसरसे दश्या न मधा पीड समझीलो ॥३७॥ वदा य महामुद्दश करन वि विवाहक पहरजोहा । अयमाणिका व रामो, संपद्र मे करिसी पीई ॥३८॥ बड़ नि समयोगि कई, शमस क्रिवार्गे चयवनिवदयया। सानो वनाइदियाने असत्तिमन्तं गणही मे ॥३९॥ इद सीहगरदकेड. संगामे रामछक्त्य क्रिपित । परमविमनेज सीबा परका वार्ज समप्पे ह ॥४ ॥ म य पोदसस्य द्वाणी एव कद तिन्सद्धा थ में किसी। दोव(बि)इ समज्ज्ञीर चन्दा ववसामि संगाम ॥४१॥

प**रमच**रिप-

(९) इयागिरमहरहनरिंदो-

अन्तया य भेदरहो इन्सुक्यूक्तयाऽअहरणो पोसङ्काकारः पोसङ्कायाध्यमितसञ्जो-सम्मन्दरम्याहर्षे कमजीवहिष्टं सिवाद्यकं प्रद्यते । सर्वेच परिकृत्तः हुक्कवितुककं तक्ष्तिं सम्मे ॥१॥ Well

'अमनोचि स्वर रासा, 'सा माहि'चि मिलव ठिमा आह सो।

वस य बजुममामो पत्तो, ^रमिडियो सां वि मजुरमासी ॥३॥ वहसञ्ज्ञो राप मण्ड-स्थाहि एव पारंबर्य एस मन भक्तो।

मेहरहेश मिवर-न एस दामक्रको सरक्षागता निक्रिया मिवर्ग नरकर। बह न देसि में सं सुद्धिओ

सरमहुकारकार्मि । सि महरहेण मणियं-जाह जीवियं दुष्मां थियं नित्संसर्यं यहा सर्वाज्ञानार्थं ।

भवित च-इन्यूप परापाण अस्पाणं को करेड् सामाणं ।

भव्याज शिवसाज करून मासङ् भव्याज ॥॥॥ कुरुवस्स क्रिक्संतो हुन्ज पर करेडू पडियार । पाविहिति गुजो तुक्कं, बहुययर क्षत्रिमिक्ज ॥॥॥

ण्य अणुसिट्टो मिडियो मणह--कतो मे परममणो ^१शुकसहरूपदिषस्त ! मेहरटो मणह--वण्य मेस साहे द्वार पनि गुक्लपदिवार्य,

सहरहो सन्दर्भन्यक्रम संस सह द्वाह होने सुरस्तपत्रिहार्य, विस्टब्स्ड पारवस शिक्सो भण्ड-नाई सर्व मर्ग बेसे सामि *इस्टुर्फेन सर्च मारेड मेस सहं सामि

हर्णे भर्च मारेड मेंस **मह**्यामि मे**हरा**ण मणिय-

कतिव पारावको तुष्कः ततिर्थं मेध सम सरीराको गण्डाहि भार्व पारवर्थेच सम्बद्ध (सिडिको) । भिष्ठिपवस्त्रांच्य स्वाया पारेवर्ष हुझाए वहावेड्स, वैति-पासे नियम संसं छेत्त्य वहावेड् । बह् सह 'हुमेड् संसं सह सह पाराहमा वह हुनेह्।

इस वाधिकत्य रामा साठहरू सम तुष्टार व ।।६॥ वा । वृ । चि भरनरिं। । चीता इस साडसे नवसिर्व । वि व वप्पाइसे सु एसे न तुष्टह पारेनमी बतुर्य ॥७।

प्यन्मि देसपाठे देवो विकारमधारी दरिसेह बाप्यं भण्य-राम ! सामा द्वार सुकता जैसि एवं दणवंडो. प्रं कार्य समावेता गर्यो ।। सम्बोदाहिंदीय प्रयमक्यके द्वितीयमार्थे

(१०) महेसखचन्दा-

ैवासजिचीतवरीते सङ्ग्रहच्ची सत्यवाही । वस्त विष सञ्चरनामो विचर्चच सारकक्षण-परिवृश्विकोसामिमूको समी स

यान्त्रभा महिलो बाजो वरिंग नेच विसाद । मायांचे से 'स्वं विविध्यविद्धस्त्रका बहुका माम 'चोच्क्वाइली बास्त्रकें माम सुन्निया जाया तरिमा नेच महरे । महिल्या जाया तरिमा नेच महिला प्रह्माविद्याद्व परे स्वर्धें इविद्याया पुरितेष सह करसंक्रिया पत्रकेंद्व च 'बहुक्काण' चिद्वह । सो च से वस्से साम्बो बनामो महिलावस्त वर्ष

मार्ग परियो । तेथ पुरिसेज अत्तर्धरक्तविभिन्न महेसरा

र्वाकतो 'विवादेद । तेल छहुदूरपायाय गाडप्पहारीकमो नाहर्त् गृह्य पडियो । चितेद्र-महो! व्यवाध्यस्स फर्ट पठो बाद मंद-यमो । एवं च कप्पार्ण नित्तमानो जायसवेगो महो गॅरिकाय करो हारागे बाजो । स्वच्छरजायभो य महेस्टरक्तस्स रिमो प्रचे हि

विस्मिय समय विडिकेश्य सो महिसी येण कियेकप मारिको। सिद्धानि य बंबजानि पिक्मंसागि, इचानि जनस्म ! विविविविवास व मंसं मळ च आसाएमाणो ^पपुचसुच्छीनो काक्रण तीसे ^६माउमुजिलाए संसर्वाहाणि स्निवह । सा वि वाणि परिद्वा मक्तइ । साह च मस्त्रक्षणपारणय व गिइमणुपविद्वी, पसार्य महेसरक्षं परमर्पतिनैपवर्वं वक्षस्यं च ै बोहिका चामोएकम चितिञ्जसमेणं-झडो[ा] असालधार एस सनु क्यांगण बहर, विद्यांसाचि च सायर, सुणियाप देह मंसाणि । भक्तांति य बोसण निमामो!। महेसरक्षेत्र वितिय-कीस सम मात्र अगद्वियमिकतो अक्टबन्ति य बोलुण निमानो ?। आगमो य साह गयेसँवो ^{११}विविचपपसे इदरूज वरिक्रण पुष्प्रद्-सक्तं। किंज गहिय निक्संगम गहे! जें बा कारणपुरीविष तं कहेडू । साहुण मणियो-सन्दर्ग ! व ते मेंत कायम । पिश्रहस्तं क्रव्वयं समाध्यस्यं सच्छक्तं च रेरेमासि-प्लाणं बहाबचमस्त्रायं । त च सीठण वायसंसारनिक्वेकी दर्सेंद समीदे मुद्धगिह्दासी पम्बद्धी ॥

### बसुदेवविंडीय प्रयमकण्डे प्रयसमारी

गामयपोडास्प-पर्गान्स सगरे प्या महिका सा मसारे सप कट्टाईजि वि

ता 'निकीसाइणि 'पिक्कामी चिता 'अजीवमाणी सुर्ग पुर्च भेकु गाम गया, भी शरको बहुंता मार्थर पुण्छत् कर्ने मम पिपा है, तीप सिट्ट बहा मभी इति, तभी सी पुषी पुण्यह-केण पगारेण सो ^४जीनियाइको । सा मण्ड-^५ओकनाप ता ¹लाइ थइ पि भोद्रमा।मि सा मण्ड-न वाणिहिसे कोन

मिर्छ, तमो पुण्छइ कह धोछमिलाइ, भविमो-दिवर्ष करेला-सि केरिसो विणयो । मण्ड- जोकारो कायरको मीर्थ के सियल्बं 'छंदाजुवतिया होयन्बं तको सो नगरं पहाविक्री, भवरा मणेण बाहा संयाण गहणस्य ^कनिलुका विद्वा वजी मो । बहुज सहपं देसि बाकारो कि मणह देण सरेब मध

^९ रहाया तमो क्षेत्र करेंदिं सो घर्त पश्चमो ^{९ र}सन्मादो अप्रस कांत्रमो, ततो तेषि मणियं जया धरिसे पेक्टेन्डासि, तया लिखे कंतर्दि नीय जागतव्यं न य बहुविक्षप्त, सव्वियं दा तजी कमा गन्धंदेण रक्ता हिंद्रा तजी निस्तुकंती मणियं सणियं पर्र-वेमि व रमगार्थ पोचना डीरेवि ते ठाणं वंशिकण रक्तंति,

सः निष्ठकंता पद्द एस चोरो चि देवि गद्दिओ वंविको पिन्मी य सम्मापं कविष सुकत हैकि मित्रप-एनं मित्रकासि-सुर्व नीरमें निम्मछ च मबद्ध कर्स पहन, तभी सी तपरसंसुई एड. दमस्य बीवाणि वाविश्वति तेज मजियं-भूत ! सूर्व मीर्यं लाइ, कसो य पडड, दमो देहिं किमकारणवेरिओ एव भासद् ? ति, गर्विको पंत्रिओ पिहिओ प सब्सापे कहिए सु<del>बको</del> मणि-तो य-एरिसे करने एवं मण्याह-बहु एरिसं मबतु ^{१३}मंड मरेक् एक्स, वजी पुणा नयरसंमुद्दं पहः, यगस्य ^{१४}महय नीणिक्जेतं बद्दु मजह-बद्द एरिसं भवत, अंबं मरेड् एयस्स तथ वि महिजो पिट्टिको च सब्सान कहिए सुकको, मणिको य परिसे कामे एवं बुवड परिसेणं अवतियोगो सवत, अमस्य निवादे मगर-मच्चतविभोगो भवत तत्व वि विदिश्रो सम्मावे कहिए सुक्को, मणिनो य परिस कुछ्न एवं मण्डाइ-निकर्ण परिसयाणि पेरिक्रमया होह, सामय एवं भवत ततो गण्डतो एगत्व ^{१५}निषक्रवर्द्धं रहिय १८ठूण एव मगर्-निवर्ण परिसयाणि पेच्छं-तय होइ सासयं व में ज्यं इवड, तत्व वि गहिमो पिट्टिमो थ, सबमाबे कहिए मुक्को भाषानी य-परिसे कब्जे पर्व मणि-ण्यासि एयाओं में छद्र सुकतो इवड चि वतो गच्छंतो गगत्य **केंद्र** मित्रा ^{१ १}संपादय करिंते पिक्छाइ तत्व भण्णा-एयाओं मे 📲 मोक्स्नो भवत तम्रो तत्य वि पिष्टिको सब्माव कहिए सुरको, गर्बो नवटे, तत्व एगस्स इंडि(ग)कुळपुत्तस्स ^{१७}जडीको सी सेर्वतो अच्छा, अमया दुव्यिक्ते तस्य कुछपुत्तस्य ^{१८} जंबलक्षिया (जवाग् ) सिदिकिया तस्त मञ्जाप सो मण्यद बाहि महाज्ञणसम्माओं सदावेदि केंग मुखद, सीपका अपानी-मा भविस्सइ तेज गर्तु सहामणसको बहुण सहेण मणिमी-पहि एहि सीधकी किर होइ अंत्रसक्तिया सो अध्यातो पर्र गएव ^{१९}अंबाडिको मनितो ध-परिसे काले नीयमार्गत्य कल्पे कहिरजह, जनमा वर्र पतिचे तस्स मस्त्राए मजितो स्ट

सर्ताबर टार्डा नि यतो सा तत्व मत्रो सन्तियं सनिवं क्षाकें देकिण करना कर्दा, काव सा तत्व गया सन्तियं सनिवं कावकं देकिण कास्ताव वच्छे ताव यां सन्त्वं र हानियं, स्व सि क्षातिशो, सनिया सन्ति सन्ति न सामाना न ति कस्ता-सन्दा किंतु अपान्य पेत पालियं या गोहनं वा नार्षि वा मार्ग्स सि सुन्तार काव विकास अन्तया आस रिह्यात्व व्हर्मास्त्र रेष्म्वितमा मूमा निमारण्ड मि गामुचे हुत मोहणा-दर्भ वा।

सापर्यक्रस्**वर्**चीः

(१२)

मिसुबामकरा [ निशुपामकरा ]

बहुरैनमुमाय सुभा दमयोगनायहिके महिए।
बाओ कारमुमीऽसुप-चक्कितिओ कारद्वपद्धी ।११०
दृद्दम तभी सम्बंधी, बक्रमुसे पुराममुक्तामार्थि।
दृद्दम तभी सम्बंधी, वक्रमुसे पुराममुक्तामार्थि।
भवदिसादिन्द्रस्पूर्ण, पुरामद्र नेनिविध सहसा ।११।
शिनियस्य सुनिक्रम, सादिये तीह दृद्दिषयाए।
बद्धम दुम्म, पुराम, महाक्की दुम्मको समरे। ११।
दृद्धम तम्म दुम्म, महाक्की दुम्मको समरे।
होदी तमो विध सर्च गुरास ते निक्ति सीहो ।११।।
सादि अववेदिसी, पुर्व सीह नाम कन्नद्वसा।
साद निक्ष सस्स तिसे समुख्युमुमको ॥६॥।

वो कण्हस्स विश्वकक्षा, पुत्त पावेद् पायपीडीम । बनग्रहतामकस्य, सो वि सर्य से स्वमित्सामि ॥६॥ विद्युपाको वि हु जुम्मण,-मस्य नात्यको कमस्पेक्षि । वयनीह सम्बद्ध से वि हु -कमह समाय समस्यो वि ॥३॥ कमर्ग्यहस्य पुण्ये वातिकतो ण विहुद बाद्द । कम्मण तम्मो क्रिम्से पुरुक्षेण ज्वामग्रह्म ॥८॥

#### स्वरुकाहस्बद्धी

(१६) फमकामेमा

ेवारवर्षेप यख्येवपुष्तस्य निसद्यम्य पुत्ती सागरवर्षे याम द्वमारी स्रवेण य विद्वह्रो सम्बेसि 'सवाईल इहें। तत्य व वारवर्षेप बत्यव्यस्य वेव अञ्चलस एज्ये बमाधांप्रधा नाम वृद्धा विद्वह्मतिया । सा य वैद्यासय्यत्युस्स ध्यवेषस्य वरि विद्या । इत्ये य मारस्यो सागरव्यस्य द्वमारस्य सागर्यः व्याप्त्रे । अस्पुर्द्धा । वत्रविद्व सागर्षे पुष्कप्र-मरक्ष 'विष्के अस्पर्येश्व दिहु । बात्र तिर्दे । वर्षि ' इद्देव वारवर्षेप सम्-येष बमायास्य नाम वारिया । क्यांस दिनिवा है। अपार वर्षे सस्य । यमारेक्यानुस्य वर्षेपस्य । व्यो सो अगद्ध बस् सस्य वाय सम्बोगो होत्वा है। 'तथ्यव्यक्षपि मन्तिया गत्रो। सोय सागरवारे वर्षे वर्षेप न विकासण न विस्वव्य विदे वर्षे । यं वारिस "क्यांस पास्त्री नाम च गिण्यतो अव्यक्ष्य, नारमी विकासमोन्याय सर्विष गत्रो । वाय प्रविद्याने-विव

विह्यचणण भज्युवी। दश्री सागर्यने सुविष्ठवा प्रजाये निरता। मारएण आसासिक्षा । तेव शतु सागरवरम्स बाइक्सिवं वहा इच्छड चि । वदो य सागर्यदस्स माया सम्ने य इमारा रेमहन्या मर्रात गूर्ण सागरचंत्री । संबो आगओ बात विश्वह सागरचंत्र विस्त्रमार्थ । वाक्ष् अपण "पच्छको चाहरूम व्यवसीयी शक्षि वि इत्येदि काइमाणि । सागर्वदेण मणिय कमकामेके ।। संदर्भ मिक्स माई कमकामेका कमकामेको है। सागर्थरेज मिक् आर्म तुमं चर कमछामंत्रं शारिय मेकेहिसि । वाद् वंदि इमारेहि संबो मजिजो-बमहामेर्ड मेसेड्डिसागरबहस्स । न सम्बद् । वजी सम्बं पायकण अस्मुक्तक्काविज्ञो । सन्नो विगयममा विवर-क्यो । मप (भाको सम्मुक्तमो कि सका इयाजि लिम्बहित्र) वि परमुक्त परनति किर्ज समाइ । तेम दिग्ता । तत्रो वस्मि निवसे वजरेवरस विवाहो शन्मि विवसे विस्ताप ^६पडिस् विवस्तिकणं कपक्षामेका जनवरिया, रेक्प काळाणे गीया । सन प्यमुद्दा कुमारा कामार्च गर्छ मारबस्य रकस्य मिहिता कामा मेर्क सागरचेर परिवाविचा तत्व किनुदा सम्बद्धि । विज्ञापि समर्ग पि निवाहे बहुमाने सहुद्धारी काडणे क्याइये । वसी बाओ कोमा । म तस्बद्ध फेराइ इरिव ति है। तारको पुष्किमी मनद-विद्वा रेवद्य बरवाले केल वि विकाहरेण बबहरिया। तमी समझवाइजी शासको तिशाओ । सनो विकाहरस्य कारून सुन्तिक संपद्धमारे । सब्दे 🤚 श्लाराहणी पराह्मा । वसी नारा-पनेन सर्वि समो। तमो बाहे नेन बाब 'रहो ताव'ति तमो सं वक्रमेस परियो । क्रकेस १ विवाहियो । तसी संवेज समिर्य

पता बन्देब्रिं गवक्क्षेण बप्पार्ण सुक्ती दिहा । तभी कण्डण दमसंबो बणुगामिओ । पच्छा इमाणि भोग सुंबमाजाणि निष्ठि । अन्तमा भक्त अस्ट्रिनेमिसामी समोसरिओ । तभो सागरवत्री कमजामेखा य सामिसागासे भन्मं साकण गहियाणु व्यवि संबुक्ताणि । तको सागरवदो बहुमी-वब्दमीसुं सुम्नवरे वा सुसाध वा एगराइयं पडिस ठाइ। धणदेवेणं एप नाकःण ^{९२}तक्षिणमो सुर्देको भदाविभालो । तमो सुन्तपर पहिम ठिम स्त वीसम् विकागुलीनह्सु ^{६३} सक्तो (क्लो) टियाओ । तमी सम्ममद्भितसमाजो वेबजामिमुझी बाखगतो देवो बाझो। ततो विश्वभिष्ये गवसितेहि विद्वो। सकतो आओ। विद्वाओ स्ईओ। गर्वेसितेहि १४तवकुरुगसगासे स्वस्त्य-समादेवेण कारावियामी । कसिया क्रमारा घणदेनं समोति । तुण्ह पि बद्धाणं सुद्धं संप कर्म । तमो मागरचवो देवो भवर ठाउमं दवसामेइ । पच्छा कम्मानेस्य संस्वाभी संगासे पम्बद्धा ।

पुहत्करापीठिकायाम् ।

( **१**४ )

# पुडूा तरुणा च मंतिणा-

परिजयनुदी बुद्दा पानायारे मेन पनगड, अस्त कहा-पगस्य रुनो बुविहा मंतियो, तदया बुद्दा य । तरुणा मर्जित एए बुद्दा महमसपत्त म सम्मै मंतिन्ति ।

वा श्रक्षमेपर्वि । अस्ट्रे अन पहाचा । बन्नमा हेसि वरियर निमित्त राया मजह भी सन्ति। हो मम सीसे ^१विज्ञान बस्रयक्, वस्त को दशे कीरह । वस्लेकि मनिया किनेत काणियवर्ष । तस्त सरीर विश्व विश्व कपियवर, 'सहस्तुपासने वा क्रु²साइ। वजी रन्ता चुड्डा पुष्टिस्मा। वर्डि जाने गर्

मविये Yलासंबयपदाणा महादेवी देव एव करेह, वाशीर पूचा चैत्र कीरह । एएसेयर्ज इत्तव्य ति निविष्ठत्रण सकिएं, व माणुचमेरिस महासहसमागरह, शस्य सरीरं ^वससीसगर क्षणकरस्वासकारेहिं कक्षकिन्त्रह । ते व अविर्व रन्ता साह विस्तार्य ति सचवर्रसिको ति रस्ता ते चेव पमार्च कर ति ^अयो

पुदा नाहितेषु म्हर्वन्ते वदी हृदानुगेन महितन्तम् सो^{ठ्ये} क्रमेश पापे न प्रवक्ते अन हेतुना ! इत्याह साहराजनिकाः गुणा प्राणिमांस्युः । **सत्त प्लोक्**तम्

च्चमञ्जाससम्मी ¹सीसदरिद पि कुणह सीस्ट्ड 1 बद मेरगिरिविक्रमा तर्ज पि चलप्रजयवेड ॥१ । भगरानग्रकरचे ।

(१५) निगमो सम्बगुनार्थं मुस-

मगर्गंडक्रमंडजमूकी वजबवससिको सातिनामी बाम शामो । वत्व "पुण्डलाकगाङ्गवर् (वस्त थ) च्छसाको नाम पुची

आहेसि । ^१पयर्गरूनो पयावितीको परक्षोगगील,व । तेज बन्मस

गतका हुएँ। को उचमेसु विजयं पडसङ्, स्रो अन्मंतरे उचसु-मो होइ। तक्षो सो ममस कणमो उत्तमो ति सब्बायरेण तस्स यर पक्तो । अभया दिह्नो अवजो गामसामिस्म विजय । वदो एको वि इमो क्समो कि कणसमापुष्सिकण ाचा ^रगामाचामिमोछम्गित। क्याइ देण सर्दि गम्भे रायगिर्द । ष गामादिवं ^कमहत्त्रपस्स प्रणामात्र कुणमाणमास्रोहरूण ामो नि एस प्रधाणों सि कोछिगाओं सहतव। दिप केमस विजयपरायणमयकोइकण सेणियमोछन्मिकमारको वया तत्व मगव वद्यमाणसामी समोसहो । संजिम्रो सवस्र- वेदिर निमामो। तमो फलसाको मगवरं समोसरणक-पि 'समाइच्छित्रं 'तियच्छंहो पविनिद्दश्ची । मूणमेस सम्बुचमी प्त नरिवर्विवराणविवेषि वंदिकाइ हा स्रस्मानेहि । स्त केव विजयं करेमि । तको कावसरं पाविकाण कामानेवा-त्ये चडमेस निवडिकण विद्यवित्वं पवचो । सम्ब ! अणुजा-, च्यह मं कोल्डनामि । सगववा मित्रियं, सह ! साह सामा महत्वेदि ओडम्मिक्जामि स्टित ^परकोइरणमुहपोत्तिया पिक्ट वहा एए जन कोस्तर्माति । तम मणियं बहा तुक्से वर्षेद्र चहेबोछम्गामि । तुझो खोम्गो ति मगबया पञ्जाबिखी,-३ व पानिको। एवं निजीको धन्मारिको क्रोद्ध चि ॥

सर्भारतप्रकास है।

(11) **कुमारवासमृत्रासस्त** 

27.

जीपर्दिसाइयामी-इय जीवद्यासमं पन्नं सीकल हटविचेण ।

रमा मणियं मुणिनाइ ! साहिमो सोहणो घम्मो ॥१॥ पसो में मसिद्दमों एसी विश्वसि सम्म विविविद्दी । यसो विषयरमस्येण चक्रय भुत्तीहिं न हु सेसा ।।२॥

मझवि इसे सम्बे वं उत्तममस्यवसम्पर्धेस् । दिग्नेसु उत्तमाई, इमाई छन्मन्त परछोर ॥३॥

एव सहदक्तास कीरतिस परस्म इह कीए । वाइ चिय परसार, स्टब्सीत सर्वनगुनिवाइ ॥४॥ को कुणा नरी हिंस परस्स को अपन जीवियदिणार्थ ।

विरमक् **धोककविराहे,** संशाकक संप्रपासस्य ॥११॥ स्रो पव क्रममात्रो परक्रोप पा**रप परे**शियो। बहुसी जीविकतास सुव्वितमं संपन्नाच्छेर्य ॥६॥

वं बण्यह वं सम्महः, प्रमुख्यरमत्व नश्चि संदेहो । बनियमु कोहरेसु, स्टमंति हि कोहवा येव ॥॥॥ को रूप न इपद जीवे हो तेहिं जीविये सुई विभवें।

न इपद वची कस्स कि वं न इपद की कि परछोर ॥८॥

टा मरेग व नृतं, क्यालुक्या मध् वि पुल्लसवै ।

र्ज संविद्यन वसनाई, रज्ज्ञक्षच्छी इसा स्टा ॥९॥

व सपद् वीवर्षा कानजीवं सप् विद्यव्या । वैसंन मक्तियस्यं परिवृत्तियस्यायः पारद्वी ॥१०॥ नो देवयाच पुरस्रो, कीरड् कारमामंतिकसमक्य । ^बसुमिष्साम विज्ञासो निवारियम्बो सर सो वि ॥१९॥ वाको वि सुमद्द एवं जीववद्या म स्वस्मद सम्मो । हि क्लामुहदूराको, होइ पीकसरसमुद्री ॥१२॥ वी गुरवा बागरिय, मरिंव । तुइ यन्मवपुरा बुदी । सम्बुचमा विदेशो अणुचरं चचव्सिचं ॥१३॥ वं जीवन्यारस्त्रे, धस्म कक्षाणवणनकषकस्मे । समापबसापुरसमा - देसणे हाइ मणं कीणं ॥१४॥ दयो रम्मा रायाएसवेसणेण सञ्ज्ञतामनगरसु जमारियास व्यपद्यायणपुर्वं पवतिया जीवद्या । गुरुण मिक्को रामा महाराय ! हुप्पचया पाएक मैसगिकी । क्नो हुम मायर्ज स**रुढकहा**णार्ण जण क्रया मसनिविधी । नवद् गायद् पदसदः, पणमह परिममद् सुगद् बच्च ति । कर्णाज पि पिक्यमं विभयम पि कर्णाण वाणे विमानमत्ते ।

र्षपय मञ्जयसणनोसे सुणसु-द्वा रूपा निदा-र्णिप महरामकमची ॥१॥ सहरामपूज असी गरमागरम व याणह ॥२॥ न ह अप्यपर्श्वसेस विद्यालय सञ्जयायमुद्रमणी । बहु सम्बद्ध कप्पार्ण, पहुं पि सिक्सल्बप केंग ॥३॥ ४१४ वस्ये पसारिए सामया, विवरममेथ प्रचीत ।

कुमारपा<del>ववित्र</del>े

पहणिक्षयस्य समस्य च दुरप्ययो मञ्ज्ञमस्यस्य ॥४॥ यस्मत्यक्रमाणियं विद्वतिद्वसङ्कितिकृतिसम्बायं । मञ्जे स्वयोति पि द्व भावतं होराल कि बहुत्या । ॥४॥ स्व बास्या सराम्या स्वपत्यत्या समिद्रमा सन्यत्य च । निष्य सुरापस्या साम्या त वप पाड ॥६॥ स्व नीर्षः । बास्यो सम्बान्या सम्बन्ताः ।

वारमा विवरका सकाविती के पश्चिमिका ।। भी

पाऽञ—सभासिभ-परनागि-

# (१७)

त वि सुद्धिरण समणी म क्रोंकारेण बन्धमी । म सुणी रण्यत्रासेण, क्रसचीरेण म सम्बद्धी ॥१॥

सम्पाप समयो होत्, बग्नबरेल बंगयो । नामेल य सुगी होत्, वहेर्य होत्र वावसो ।१२॥ कम्युला कम्मजो होत्, कम्युल्य होत्र स्न सभी । बहसो कम्युला होत्, सुरो इयह कम्युला ।१३॥

बल व निसंपनियां। कसायवामा गुणेमु वजुरामा । किरियामु अप्यमामा सो कमा सिन्धुद्दोत्रामा ।।।।।

बस्यो-

कारपासु अध्यसामा सा कामा स्वयस्थानामा ॥४। कापण जीवकोरा, हो मेव करेण सिक्तिपण्याई । कम्मेन जेण जीवड, कॅल सको सेगॉई जावि ॥५॥ बनेन कुष्णस्र् पन्मेण य रिक्ट्रबर्सस्त । पन्मेण पगसिन्द्री पन्मेण सिवस्य कीसी ॥६॥ या सुबद् बनिममने, पसाद्दमन्द्रमि कीस बीसम्द । विन्ने बच्च अनुक्रमा, रोगी स्व उद्य प सच्चू का ॥॥॥ समो त्राच परामे सादस्य, सन्त्रा सुद्या मंचया । धौदाणस्राचनकी विरयप, सन्द्रशतमाधिन्यं ॥ धौदाणस्राचनकी विरयप् सन्द्रमेनाहें । से सम्य विज्ञानमाहरूण बहुति कहारया ॥८॥

### दाग-

मो वेसिं कृषियं व वुक्तमिक्षकं, आक्षोरण सम्मुक्तः मो मिस्छेद्र पर कमेक्वविद्या पासि व्य वेसि सिरी। सेक्समाद्याणा वर्षति न गुणा-८५कद्य व्य वेसिं वर्णु के शाणीम समीदिष्याकालेय कुव्यवि जल कणा ॥९॥ वहसावच्छं विद्यो विद्यसम् एक मुक्तविणिकोगो । वसमावे वससालो विद्या वि का दुगगइनिमिर्स ॥१०॥

विगुजनयि गुक्कं, समझीणे पि रम्मं

#### सच्छी

जडानि महर्मेन मेश्सर्य पि सूर्र । बहुस्थमपि हुडीले से पर्यर्पति क्षेपा मनदमायस्थमपि, व परोपद स्वस्त्री ॥११॥ बाहै सर्व निम्मा, विभिन्न वि लिसकेंद्र करेरे निस्रे । सन्द्र निस्म परिवह्नक, केन ग्रामा पायडा हुंति ॥१२॥

धर्द सीर्लं

बक्का होडू राज्या पाणियहे प्रमुख साथ होड़ । परतिष्ठिष्ट बहिरा क्रम्यमा पर्यक्रणस्य ॥१३॥ को क्षम्य परसारं, से धवद नो कपाद गरमारं । सम्बन्धि पंतुद्वेत सम्बन्धती सो नयी हाइ ॥१४॥ वर क्रांमिस वर्षको वर्ष बिहुद्देश कम्बुला गर्या। सा गविसम्बन्धरंगो सा बीक लक्ष्मिसीबस्स ॥१५॥

मापी
बा इस्में होड़ महं बहुवा तरणीय रूबवरीय ।
या बहु जिल्लरपम्मे करणकार ठिला विद्यी ॥१६॥१
या बहु जिल्लरपम्मे करणकार ठिला विद्यी ॥१६॥१
यावविद्यो निवारी, सन्दायनीयो व्य पंडियो स्रोप ।
यावविद्यो पत्मो विक्रिय में मूर्ण इतिक्षीय ॥१॥॥
वंद्य निर्मित सहस्य एउवपंडले अत्वाववेदे विच्या
सद्याया विज्ञा महस्यक्षण विद्या स्तामा ।
स्वायावेण विज्ञा पुरिपरामें नई विज्ञा सेवल
पत्न प्रमासमुज्ञामें विश्वाहर सुद्ध विच्या समय ॥१८॥।

€या~

किं तण पढिशार, परकोतीए पराबस्तायाए । कांश्राचित न नार्य परस्स पीता न कारच्या ॥१९॥ इक्तर कर निम्नीविकस्स पहुभाशे कोवकोडीशे । तुनरे ठांति में केंद्र तार्य किंसासर्य बीज है ॥१॥ क्षं वापविस्पान्नकार विश्वी वर्ष सुक्ष्यां। दि वाट व्यवकार परिमाणे पुत्ता सुप्रमाधा, व सम्बर्धान विवाद, तुम्बर्गाए एक ॥११॥

## संदर्भ-

सब्बेण कुन्यु किसी सम्बेण बर्णमि होड् बीसालो । सम्मापत्रमामुहर्ग-प्याठ बार्पयि सम्बेण ॥२२॥ पढ्य वि महापुरिसा पढिवर्ग कम्महा न हु कुणति । मन्ध्रति व बीजम (ब्रह्म) कुमति न हु पत्यणार्ममं ॥२३॥ वैस परो दूमिकाइ पाणिबहो होड् केम सम्बेण्य । बच्या पढड् कम्पत्ये न हु त अपंति बीकाव्या ॥२४॥

#### युष्य--

धंगामे गयहमाने हुयबह बाक्सवर्शसंकुके स्वारे करितन्त्रसीहबिसमें सेक्षे बहुवरूपे । बंशोहिंसि समुद्रस्यकस्त्री-संपित्रमाणंत्ररे सम्बो पुस्तमवन्निष्ठी पुरिसो पुन्नहि पाक्षिक्य ॥२०॥

## द्वानादि⊸

नार्यं सोहमहंबबारखहरी-संहारस्टरणमो माज बिट्ठ अतिहृहहुप्रध्ना-सङ्घ्यकप्यद्मो । नार्यं दुश्यकम्मार्क्डस्यक्षा-सक्ष्यकपार्ययो मार्यं जीवसमीदवस्यविसर-स्याकोक्ये कोयनं शर्दा। चहां चरो चन्त्यमारनाही भारत्सा मानी न हु च्यवस्त । पत्र सु नाली चरणेया होणो नाकस्त मानी स हु सुमाहेव ॥१७॥ सुवा वाणह चडाय, सुवा आगह पावरा ।

चमपं वि बाजह सोधा व सेवं संसमापरे ॥२८॥ वं कर्ण करण गुणा न मिच व निरत्तरं वसणे । सो अरुषो को बस्के त विज्ञानं कार्दि सम्मो ॥२९॥

#### पश्चागगादा− जाव विभ दोह सुद्धं, बाद म कीरह पिओ बजो को वि ।

पित्रसंगो अब कमी हुक्साण समस्त्रिमो करना ॥३ ॥ स 🗷 दोर सोडभव्यो, को काळगळो वर्ड समादीए । सो दोद सोदभन्यो तनसंजगदुक्वको जो स ॥३१॥ **वै विस विदि**ष्ण किहिको व विश्र परिवास**इ** संस्कारीमसः। इस काणिस्य बीस बिहुरे वि न कायस हुति ॥३२॥ पत्तं वसंवमासं रिद्धिं पाववि सरस्वप्राप्ताः । वै न करीरे पर्च वा कि दोसो बर्सनस्स ॥३३॥ पद्ममि सहस्यकरं सद्धीयणो पिच्छा समझ्योगो । र्चन प्रपृत्रो पिष्काः सहस्यविग्यास को होसी ॥३४॥ शफनमि गद्दा संदर्जमि सुनिजन्य संस्काया बजमोसु । वह बाहरीते पुरिसं बाह बिट्ट पुल्बकरमेहिँ ॥१५॥ करणह भीनो नक्ष्मं करणह कम्माई हृति मक्षिणाई । वीवस्स च कस्मस्स च, पुरुवनिवद्याई वेटाई ॥३६॥

बर्गपद रोसक्रम्स इक मंनेइ व क्यं मुक्य । सक्तो इंससदाको पिश्रह पर्य यञ्चम सीर ॥३९॥ सरगुणकिचलेण वि परिसा सञ्जवि ते महासत्ता । इयर बपरस प्रसम्बंध द्वियण न मार्येषि ॥४०॥ संदेषि भरतेष्ठि व्या परस्स कि जानिपन्नि होसर्वि । भच्छो चसो न बन्मइ, सो वि लमित्तो कञो दोइ ॥४१॥ निर्ध को धन्दंबर भावरपढियं भ जो समुद्राह । सरकार्य च रक्तार, विस एस अमेकिया पुर्वी ॥४०॥ सह बावराण सह सुभाष्याणं सह हरिससोभर्यताणं । मपन्त्राम व यसाची आजन्मी निस्की विम्मी ॥४३॥ निषय सिस्सपरिकना सुद्दवपरिकता च दोइ संगामे । बसमे भिचवरिकता दाणगरिकता च हुकाछ ॥४४॥ भारंमे मरिय इया महिस्रासगण नासय वर्म । संदार सन्भवः यस्यका बत्यसङ्गण । ४५॥ दीसद् दिविद्वच्छरिम, चाणिजद् सुमगतुलाज-दिसंसी । काप्पार्व च कक्किनगड, हिंदिरगड रोप प्रदर्शेष ॥४६॥ सत्वं विश्वयपविद्वं, भारत् वने पश्चित्रमित्रं । ष पि गुद्दजा पडपे, बीदायह पिष्क जन्करिये ॥४७॥

बीम मरणेज सम कपज्रह जुट्यण सह जराए । रिद्यौ त्रिजाससिक्षमा इस्सितिसाको म कामन्त्रो ॥३८॥ पच्छा गरकाहेज, जबसररिद्यल कि तेण रैं 1179।।
बन्धिकों न पायद्व, रिक्किं एको वि पुरुष्परिद्वियों ।
विसक्ते वि कके दिसिकों बीह्यए सब्बों दिवह ।१० ॥
बाक्ष्मुकल नीरं, रेवा ररणायरस्य वार्ण्य ।
म हू गरकह महर्षेसे सम्बं सरिका मरिकारि ।१०१।।
सा साई विष अब्द प्वकित्य आर्र गुरुके ।
केसिंगि होत विक पार्ट, विश्विक स्रार्टिम होत्र ।।
केसिंगि होत विक विष्ट वार्षिक सम्बंदास्त

वं अवसरे न हुनं दार्थं विजयो सुमासित्र वस्यं।

विश्वं विश्वं पर्यं दिग्णि वि केसिकि सम्लाजं ॥५३॥ करव वि दक्षं न गर्यो करव वि गेवो न होइ सपरतो ।

270

इन्द्रसुर्मिम महुषर! हो विध्य गुष्प न होसति ॥५४॥ क्या है बढ़े न छाया कषा है छाया न सीठळ सिळें। क्षाया न सीठळ सिळें। क्षाया न सीठळ सिळें। क्षाया न सीठळ सिळें। ए.५॥ क्या है तहो न घरें, क्या कि वर्ष न गुरुवारिलें। तस्वत्रक्षणविक्षा सुवियों है क बीठ सेहारें ॥५६॥ दुक्ताव व्य इस्त्रक्षणविक्षा सुवियों है क बीठ सेहारें ॥१६॥ दुक्ताव व्य इस्त्रक्षणविक्षा है कीठ य प्रत्यक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्षणविक्ष

वीर्षेति खमाकिना परबापविक्राणि के वि बीर्षेति । बीर्षेति उपिपविका, बहुदुष्किना न वीर्षेति ।१५९॥ वै करिव्रय बरिसं वैसुणाए क पुष्पकोद्वीय । वै विकासमित्ती हारेड्स नरी गुकुत्तेण ॥६०॥

व मिल पर व मन्धि राज्यं हेटल वि व निर्मा । बल अकारणकृषिका हो विन्ति लक्षा न हीरीति ॥६१॥ व्यवस्थ्या न कारण्या पुचकक्रतोषु सामिय निर्णे । पृष्टिम वि महिज्यत एउट क्यू न संबुद्दे ॥६२॥

वहीं नॉर्स्वर्स वरुताल पाणिम व महिमामी । वत्य प बच्चति समा जत्य प पुत्तेर्हि निष्ठति ॥६३॥ बच्छोमह गंबल्य बत्स गहिम्रण पावण प्रस्का । परकोर देह हिट्टी ग्रुलिकस्सारिक्ष्यण वेद्या ॥६४॥ दो पंत्रीह न गम्मह, होमहस्त्रह न सीवप कर्य ।

रा प्याह न गम्मह, सुप्रदेश्ह न सावय क्या । इसिन म इति कया वि हु इदियम्बल व मुक्त व ॥६९॥ वसमे विद्यासपदिया संपर्यास क्युचरा हृति । मरते वि ब्यूजियमा, सावस्थारा च समुरिसा ॥६६॥ क्युबिन्नस्स पम्म मा हु कहिन्नावि सुद्कु वि पिपस्स । विष्ठाय होत्र सुद्दं विक्यायमा धर्मस्सा ॥६९॥

विष्या होई सुद्द स्वस्थायामा वस्ततस्य स्वयंति । रामि समित्तारिसासी चीरा परवरिसा प इच्छति । वाकायरा सुनिक्त बहुकरना चेत्र दुस्मिक्त ॥६८॥

वै किंकि पसाएले न सुद्दु में वहिषे सप पुस्ति । र्खमें कामेसि काई, निस्सरको निकसानो का ॥६९॥ शुष्पसृद्धिमस्स वपणे, घपपरिसिक्तो स्व पावको माह । शुष्पद्धिमस्स न सोहह, नेहवितृष्णो बहु पहेंची ॥७ ॥

बहुबहुर्य बहुबहुर्यो बहुप्यमाण्य मोक्य ग्रुण । हापस्य य बामेस्य व मारस्य व त बाजीरंत ॥०१॥ बंदेस्य पिर्ग विषय, प्ररिष्ट बस्मेस्य पुष्ति ! पर्पति ! बस्मे वि मा विश्वसु, देहस्य य स्थ नियमह् ॥७२॥

किं स्टूर स्वित्ती वरं पिययमं किं तस्स संपन्नित्री किं कोय सञ्चयत्रय नियमुक-मामेण रेडिश्सय । किं सीसं परिकासिती प्रसन्ति किं यत्रीन पर्ण

किं बीडं परिपालिबी पसिंबरी, किं पुचमेंव पुर्व विंदा सुचिमई विकल मंत्रणे संबद्ध करवारा ११०६११ परमारामकाचे लागकमडिली—रोपायनिकारणे, मरवायादडिपाडणे सुद्रमणे—इंसस्स निष्वासर्थे ।

तुर्धि क्षेत्रम्भण्यतस्य कणण, सत्ताशुक्तगमुनो, संपादेद परिमाहो गिरिनद् पूरो व्य वह्दतको ॥४४१ हा क्षेत्रिसमुख्यको कन्द्रसिमो वायस्य वैसो मय,

वेषूर्यं ग्रह्पंकरम् व ह हा दिन्नो मसीकृषको । ही वेक्कसम्बिक्तिपस्यस्य-जुम्बूकिय सम्बन्धोः भिन्नी । सीममबुदस्याज सम्बन्धः तुक्तसम्ब कल्या कृती ॥७५॥

भिन्नी ! मीमसबुरमवाण सवर्थ, तुकरमाण खप्पा कजी ॥५५॥ कसस-नीसस-रिदेय, तुदयो सेस वसे दवद वर्ष्य । तेपाणुण्या बुक्कद, अण्यद दोसो मदे वस्स ॥५६॥

म सा सदा बत्य व संति दुद्दा धुद्दान ते के न वर्षति वस्मैं।

थम्मो स सो, बत्व चनत्वि सच्य. सर्च न त, भी छरणाणुविद्व ॥७७॥ ए व को सन्मे सीमं विविद्वेण केणह नएण । ार-बारग-गर्य, सो मणु कस्काणमित्रो सि ॥७८॥ रहुआ सुणिदार्ण पश्चिममेश निश्चीण सञ्चरिय । पमाभी महो ता महो सध्वकत्रप्राभी॥७९॥ सामर्षं सर्वं स्वयसामरणं गुष्यो । स्सामरणे नाण नाणस्सामरणे वया । ८ ॥ ग्रेमी भइतोसी, भइहासी दुम्बणहिं संवासी । उम्मडो स बेसी पद वि गरुपै पि छहुअति ॥८ ॥ सियो साहद बंभवारी अक्टिबजो सहद निकलपारी । ह्युमो मोहर रायमंती सन्त्राप्रभो सोहर एगपत्ती ॥८२॥ वस्मकरका परमुख्यि इन्हर्ज न पालिहिसा परम शकरवे । रेमरागा परमस्त्र बच्चो न बाहिसामा परमस्त्र खामो।।८३॥ पसच्चस प्रमस नासो मेसे पसवन्य इयाइ मासा । ने पसत्तस्य श्रमस्य नासो, श्रसापसत्तरस द्वहरम नासो ॥८४॥ गपसत्तसम् मुबन्धनासी, बोधिपसत्तसम् सधैरनासी । । परस्त्रीनु पसत्त्रपन्छ सम्बरम नासी महमा गई य ।८५।। । **परिश्लस पहल्ला लडी इच्छानिरोहो य सुदोह**णसा । ज्यर इंदिय-तिमादो य चत्तारि पत्राणि सुदुवसणि ॥८६॥

विविद्यसत्याधी ।

## 'पाइयवश्त–वश्चममान्ता' मो सावेका कठिन सदाना भय

पवजामि (परवे) 🛊 लीकर कां स

१. विविध्यस्थ्यां मनुद्रीमद्रावीरस्थामीयं रोक्स्य क्रंट्यं विविद्याने वर्गन करेन स

पर्ज्ञच-१- साया (विभिन्न) विक्ति । बासच- ×(जलब) क्रमेता। १-०विश्वरूप (तर्केशम् ) श्राप्तितः। १-व्यासरूप० (जनकि) नारा करना अमञ्जा (तुक्तः) तुक्तः अर्थति (हे ) वर्धाः, योगियः (श्रीमिष) काम के बच्त दनेस इस कियत्यों (१ ) परिदेश पहेंचा ४ छहेच क मत्तेज (बचेन ह अल्लन) वे उत्तलको। केसादि (क्षेत्रप्रीय) जलाना वरिनागोरके। सद्योसाचा (प्रवेदाने) क्ष्रेण सने रहमेन्द्र । ५-बीवति (ग्रेमकः) वीरे छ -१-सिक्टरस्वर्ष (विद्रावस्थ्य) सरवातु वर कव्यवारः (वर्तिकार) कमेरा बार । ११-सतबितत यण» (तारिज धन ) बीचा वनरे नारे কলে ব্যৱস্থা

(1)

 इन्द्रितनीयसम्पारतार्थ कर्न महा, श्राविका औरुवा क्रमे राजन ना पत्रि इन्दिनोमा विषयमा भाषमा देखाहेड हो परतंत्र-१ संस्ता (परदृक्ता) प्रकास नत, सोतविसर्प

(क्षेत्र क्ष्म् ) करें दिक्या शिवारे । रागशोखा (प्रक्षेत्रे) राग क्ष्मे

माना निकासी कारी राज्यार्थ है

देश। २-क्षमबार्ड (बायदुस्) नहि सुबनाने. ४-० बारस्सार्ड (बारवादिदुस्) सार नदि केताना ५-०सबेसर्ड (अपेदनिदुस्) वेदन नदि करवाने ।

१ एस्य सीसुचमांस्यामीओ मलाम् अभिनुस्वामीन उर्शने रुरेष क्यो के के "आरंग परिव्यादिमां चालक अध्येमी छेन स्थल की अञ्जवोने निर्मासरमाने रहेन् नोवंद्रे." त न्यावेज छे.

पर्नाक-। मतीमता (मिन्सा) कावणानी भा बीमहाकीर लागी है, संतु (कहा) जाना-न्यंत्र रहित स्त्रक कारात्रक (विराज्य) हमात्र कारात्रक (विराज्य) हमात्र के सामन्त्र कारात्र कार

 पुलारिकीना वर्णनमां-नवा कमकोवी मिलित कमासको वर्णन करेल के

१ बहुसेया (ब्युवेक) बनो शनक छ मेगो. १ बहुपुक्तका (ब्युवेक्स ब्युवेक्स) च्या कम्मी संवेशे. १ क्रब्रुहा (क्युवेक्स) वावकात्रके. ५ कुंडरीकियों (स्मा भेग क्रम्भवाके । पासादिया (मामध्य-त्यारिय) म्हान्तद्वर, म्युवेक्सक ७ समिकका

(4) ९ वरियमञ्जामां—मिविसा वयरीयो टेमड सन्दर्भ राज्य-वर्धयो स्वय करी स्वयुद्ध वयका ममिरावर्षियी छावे बाहेरमुन्ते सेवल क्लावेन सं पन्मैक-१ सर्प्य (सार्प्त) पूर्वमक्त धन्मने सारव करे छ। ४ कोरोह (मसोरम्) अन्युति विका (लगता) लग् ^{वर्}ने परास्तं (एकन्टम्) इंटली एकन्तं निर्देश उद्यामविस्थानः सावशे एकाना हूं एकनो में हूं, गार्द नोई तथी हूं नर्देश तथी। ९ सीयव्हाप (धीरच्यान) चीतन धाराध्यो । १ सत्ता (सर्गः) पीति वदेता । १ मा गमानम्) वे नमारं प्रदेशन न्यो। १५-अशुपस्समी (स्तुप्तः ) दुएँद्रप्रेय सूप्यमानं श्रोमण्यः। ४६ समिन्स्च (मचिनुकार्) इन्हरीक अपनि समिन्नो असे सोर्डमो । दुर्ख (१००००) विवित्र क्षाप्ता रहत । ४५-धित्रज्ञा (विदिला) जलीते । ५१-मध्युवृष (मर्भुगर्) मित्सन करनारा। ३-व्यामीविस+ (धक्निन) दानामा मियास्त्रो गर्ने। ५४-सायाः (साक्यः) सन्तरके सामानी सूप^{्र}नो त्रतिवान बाव भ्र" बुद्धमी (द्विपा) का क्षेत्र सब परशेवनी ! ५-बस्पुर्वि (गर्मन ) गामीनो वते । ५६ निर्दायकारा (मिरारण) द्र करी छ। ५ - अल्ले (क्लरूरा मल्लूरा) है पूरण है जगान, भिरमो (निरजाः) नर्सर्यक्ष । (००० तिरीखो (किरीडी) तुत्ररने भारत कानार ो ६९ सक्ती (रामग्र) प्रत्यक, वेरेडी (नेडेडी) निवेड वसना एमा क्षामच्ये पत्रहः (भागने पर्यक्तिः) करिक्षी विवे वदमवाना नवा

प्रशिविष्टतं वरिवयं इस तहिए. बुद्दासं (उद्याने) लोको है। १ साधुपुरसुद्धिया (साधुप्युतिल्याने) विवेद स्थानहर्षि सोमी. ११ उद्यास (वरिद्यूतने) सारी वाते स्वतंत्रको त्याव वरी बर्पर सोमी. १ दहुद्धा (वरिवाने) उत्तम क्रस्लियां 11 सम्बार्वति (कारणे)

क्ष वे प्रथमिता वे वे प्रदेशोगी.

(0)

 माम्ब्रुक्यी क्षेत्रः प्रामानियान-स्वामात-अत्यादान-मेनुव-विश्व को एमिनोजन के हवा त्वावनो उपनेत अपनानुबन्ध क प्रापेत निर्मा देशके के

पासंच-। जाय (सक्त) बाज्ये पापय (सक्त) स्वां । 11-मिबस्सासी (मिश्याना) मश्चि स्वाय को छ १४-विष्मं (निकारण्य) स्वेशकों स्वां उत्तरिस स्वार्थ्य (कार्यक्रावेश की सक्त के स्वार्थ्य (कार्यक्रावेश) की सक्त के स्वं है के सिंग के सिंग कि ११-पिति की सिंग की सिंग कि ११-पिति की सिंग कि ११-पिति की सिंग के 
पार्श्वक-में पुरस्क (है) जल-मीर २२-व्हस्सा (वस्त) भ्यारे १२६-तासार (व्यारी साह साहेब-दर्ग्य ग्रेड । १८-इंट्यरिमाओ साम्ब्यसुद्धे (उत्तवशीध-मध्येडस्) स्थान भ्या स्वयः के बेड्र डेके-क्यंत्रे पार्थः । १८-व्यक्तियः (प्रामेतः) स्वयः के बेड्र डेके-क्यंत्रे पार्थः । १८-व्यक्तियः (प्रमितः) स्वयः के बेड्र डेके-क्यंत्रे पार्थः । १८-व्यक्तियः (प्रमितः) मेक्यंत्रे भक्तः वस्तु । १८-विवस्ता (विवस्त्रे) सहस्र ।

१ चरपरंतो (१) वम्पाल-वंतवे २ मिहिबो (१) सर वही-वीवयो । १ मुस्बतुक्ताहियस्स (गुन्काुकारिक्र) ध्रवय इच्चो पीरावेसा । ४ प्रस्कृतेतं (तेपुरस्माल्य) वस्त्ये यु व बज्यो । १- मुसेह (वितवे) संवे वे । १० १ ठामकिसी० (स्तवितेश) एव प्राचीत सम्वी । सारववन

(संरक्षण) २. वर्षाक नियम्बिकुसमा (उर्गामिक्कैकुम्ब) सर्व कार करमाने कृत्य । ३. जोन्कबाहाची (बोग्रापित) शोष को वर्षित । ३ प्योसे (लावे) स्टब्नक्के । ५. उदिक्कापी (श्वेकम्ब) स्व मोती। ६ विदाहेट (निरातिष्य) मार्ग संकर्ष

VRC.

७ कंत्रचाणि (लाक्ष्माने) राष्ट्र व्यक्ति साविष्ट राष्ट्र । ८. वच्छती (तम्म) प्रोज्ञमां । ९. प्रावतृतियाग्य (लागुप्रेयसाना) "गण्य वर्धने कृति तांच तम् वर्षणे आली लाग्ने वर्षणे कृति तांच तम् वर्षणे आली लाग्ने वर्षणे व

कार्र (रे ) पापम-पोनार्थक स्वान्त ७ शोककारी (स्वतार) वर तर ए प्रवादे शेर्यु टे. ८. छेत्रासुदक्तिया (स्वतारमिय) स्वान्त रंता १३ संतरा (१२०००) वया. १ निष्ठक्या (निर्णात) विशेष "१९०३ वक्षा तर्र प्रव रहेण "१० स्रेष्ट (१) (१) (१०) एक रहेण "१० स्रेष्ट (१) प्रसाद एक्षा एक्षा एक्षा एक्षा १९ प्रसाद (११ प्रसाद (वक्षा १९ तंत्र १९ तंत्र (१० तंत्र १९ तंत्य १९ तंत्र 
१२

सर्वक-१ सुसाय (१९६१) खेन चाउम्प्रसी (१०५१नः) स रावाओ क्यब्रहणसङ्खा (अवदारतार्थः) क्यब्सा नाराकः विसर्वे (तस्केश्वस्) शामाविकः १०००समा (तसावस्) मलाकः १६

े बारवाँच (इस्स्वलाम्) शारिनः वसीमां र श्रेवाईणं क्रम्मधीनम्। साम वार्षः इमार्धिन १ बाहुम्स्य (मृत्यू शेष्ठ क्रिया (प्रान्ते) शिवनस्ताः ५ वाहुम्सा (१) वेष पास्त्रः, १३६ वसः, १ प्रद्युक्तां (प्रवादः) पास्त्रमा र बाह्यूक्तां एक्स्याः । विद्यानस्तिः। शास्त्र क्रम्यः, १ प्रवादः । वाह्यः (मासः) भारत्रः करित्यः । प्रतिक्रवां (शिवस्यः) वक्षाः विद्यानस्ति व क्रम्यान्तिव । विद्यानस्ति । विद्यानस्ति (शिवस्यः) वक्षाः विद्यानस्ति । व्यव्यानिव । विद्यानस्ति 
भाषात्र रितने

भ गाहापर्द (१ एमके) लार १ प्रयहमहमा (प्रके माडः) राजारी नग्डः ३ आसरिगई (भारण्युम्) हैरा-वि कराते ४ मईश्रमस (सन्तः) नवची पुन्त 'मन्त्री शामे वीर् ५ गमाइच्डिये (के नाग्यम्) मन्यत्र कावन ६ तियक्यीयो (परार्) जार्थ ररेष्ट्रम (मेटबे) बार व रमोहरवमुहपोति यापाणीट (श्रीवानक्षाीनिक्रपातिका) स्वीद्रश को हुउ।क्रिम शक्य राज्या वर सीदेसकादस्तिकारकी नाराज्यी गामेश वर्ध संगन्ध ^{रही} रामध्य स्रोकुमारपास राम जीर्राह्मा-मानाहर-शीराह वरेरेन स्थानी अनिका को से पार्वक-१. यहच तुत्तीहिं (क्ये दुक्किः) दुक्ति वह वह यहे हे ५ संप्रधानसं (सामश-ब्रंडम्) नंगतिने राष. अन्यपा (बाका) क्वान हे १०-पारसी (गर्नाक्ष) छोत्राद ११-पीद्धस (पीर्ष) वरूर १५-पुराब्दया (पुरावस) प्रावत-1 हे प्रावे लाव की शकाव (65) पंजांक-१ संबद्धां (क्रमाने) क्रेय संबदमां सुराजने निविधेय कर्य विद्या १४-परवारे (शरराज्य श्वासम्) पर्वासे अन्य परम परने सकावसी (बचनाः) की सहित सनता क्रिने रहन

¥1

९ परिन्यद्वारे (पानिद्याम्) राजी वर्तने श^{क्रमा} मान्त्रो. १ सुदूरपपुरायक् (लुदु दुगहर्ने ) नार्य गेरे होशास्त्र ब्रीस्ने • गुम्मर (शिका) कार ४ शासवयणहामा (१ स्ट प्रमान) विकासन-अति स्वेत्यकी समीसवार्ष (नवीकान्य) मला क्रमे पण नर्दे । सीमन्तिई (शीश्राम्) दीर पेल

14

९१-उद्मा (बन्धम्) मनोदर ३४-उभुको (इह्ह् ) दुरह पदी

१५-सहज्ञया (धक्ता.) धुमाञ्चम त्यत्र विक वधीओ ४३-सहज्ञाग-राष्य (मह आकरका सह स्वपना गा प्रशास्त्रको) सापै जानका यामे स्वयं करात साचे हर्ष या शाकारामान ४१-भागाय ऋखिउम्बद् (भारमा कृत्यत) भारमा बणाय 🛊 भारमाने एरानाळो कमन ४ - सत्य (चक्क्-गारम्) एक ५स मात्र -मैदलो (मन्द्र्य) इन्। १-प्रदिम्पि (प्रदिन्ध) धर्दना स्थला सिप्पाउडे (प्रकित्रहे) स्रीमधे सन्दर मुसियं (भीकिएम्) मोती ५६-ससं (कर म्) कराज्ञामा ५ -- पठ (एर४) मा ५९-- चाउद्धा (वे अह) बत्त केंद्र के पूजा खाराक नदि पामनारा" १२-वृद्धिकां (रिप) रहीं महिज्ञातं (सरफानस्) सपन करातु छहर (सुबति) लाग करे के ६४-वाधारचे (राज्याचे मरवाचेंग्र) चीडमी रहेव बोजन जो सर्वेवे सन्दं (सर्दम् ) धन-राजन परमार्घन-तराज्ञानन सुनन्दं (मीरस्) कराज्यान पास के पनन प्रदेश करीने जाते त्यांग कर के^ल मोशने पासे के 'कल्डाओं प्राप्त करीने धामान्तन पाम के " परक्रीय (परमाने) र्वेत्राधानी ज्ञार, परकारमा •सारिक्क्या (सरका.) समल. 🛨 पंथेहि (पनिकास) के मार्थ कर कीमुक्सर्य (दिमुणीम्पी) ने सुपनार्ध सोन सीवय क्रेस (बोमारि कलाम्) काले क्री छ ए-मणुपप्रि-बरस्य (बार्गिनियस्त) को सामानान वैदार नहीं बनको विकास (विच्यापा) के नेत्रवित-मनिन चर्मतस्स (कान्य) कानाने प्रकामे ६८ समिसारियामो (मनियारिकाः) नलम्मे स्वाने गाउँ संक्रेस्वले कारी बीओ अर अम्बन्धवस्त (म्बार्वनस्य) 'बोमक्यी' माटा प्रनावी ०५ कृतियुक (क्रम्पेन्य ) क्रम्प्यम्प येन श्वन्यर तथा इन्युक्त्यम् तेकोती क्षेत्र करणना निर्मेण कव्यूकियं (उद्यूक्तिया) मुख्यी स्थान-अक्टिंग्स पूल्या निरुप्तर वंदे जारे याद्वणी वैद्योगन मधी हीते ।

## यगर्या

चारिक घ्रमान वे जिलेशों का चार्यप्रदेश है।
मानुष्य भी र जाया वक्ष का हुआ हुआ। है।
हाल हि जापा शक्य महिलामुन को है।
मानुष्य मताय जाया प्रहाद मानुष्य है।
मानुष्य मताय जाया प्रहाद मानुष्य है।
मानुष्य मताय जाया प्रहाद मानुष्य है।
मानुष्य है।
मानुष्य मत्या मानुष्य मानुष्य है।
मानुष्य है।
मानुष्य मानुष्य मानुष्य मानुष्य महिलामी है
मानुष्य है।

वर्षात्रं वर्षः स्वतः स्वतः स्वतः । १४॥ वर्षः वः वर्षात्रः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । वर्षात्रः स्वतः स्वतः स्वतः । ४॥ १ स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । ४॥ १ स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । वर्षः स्वतः वः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः वर्षः । विकायविद्यार्थित्वः । सुन्तः स्वतः

विक्रपंतिम्हान्तः । इन्हरूनान्तः क्षाः १९ ४ प्रवित्रानियानम्हितः याः विज्ञपद्यान्त्रस्थाः दिः ।

भी माहाजीरतात बाटमाका बाँग्योग्यामा ॥

'' द्युद्धिपभक्तम् ''			
पानुं	with	अपुर	蜓
- 3	3	प्रस्व	<b>∕</b> 300:
1	*	٠, ٥	₹ ,,
-	15	एकम	एक्नो
٩	33	म्बेट	पो्छ
•	1	W(w/E	et-ank
	11	RMST	<b>Ęs=r</b> Ę
•	¥	भएम	भद्रम
•	•	श्रद्भाग	महत्त्रम
٦	٠	क्षेत्र	क्षेप्र
*	*	शेख	रोत्रं
		•	•
33	13	बोम्बेम	<b>रास्क्रेम</b>
1	٠,	(असे)	(भगे)
*	•	बोच	नोष
**	•	夏 神雪	तुं मच्
11	•	उपर	<b>गु</b> म्ब
-	•	<b>***</b>	<b>₹</b> ₹
	4	पाडवा	पावकी
3.5	11	नकाम	सम्बाद्ध
	33	समित्र	मधित
	4.4	कर्ष	€¥
14	14	2cc	रूल
20	२७	इस+इत्या	(a+64)
4/2			
	•		

			NJA.	
पानु	भीरी	मगुद्	EE	
1	33	नु प्रमे	<b>सुप्रत</b> मे	
*	11	(5)	(4)	
	*	भगको	अपादी	
	33	<b>(</b> तम)	(धमे)	
7.	,	Derrect	स्रोतापक	
14	*	पाइन	आस्त	
	•	246	<b>5</b> 704	
	•	पुरेसि	<b>प्र</b> देश	
	11	क्रिप <b>ि</b> व	( <del>रिज</del> मा	
٦.		तुष्य	हु•मे	
		धन्त	केंग्रे	
	1	अल्परे	वानेदरे	
	11	•	fa E	
-	1	(भिका)	( <del>1</del> )	
1	4	agawe.	सूरकर.	
	14	धन्दे ४	<u>ध</u> म्मे इ <b>पे</b>	
	1	a lifet	क्ष विश्वर	
	1	<b>₹Ċ</b>	प्री भीच प्रसाचें	
*		र्व तम	तं कामसे	
4.8	11	7	4	
	•	•	<b>₹</b> ₹	
•	٧	(₹)	( <del>4</del> .)	
3.6	•	नाम	माम्ब्रे	
		समे	ठमे	
	**	<b>Q7</b> + <b>Q</b>	हो + ०म + ६	
٦.	7	<b>ही</b> ग्जमि	होनगामि	
				2

	<b>धा</b> ल						
प्य	मीरी	argur	99K				
₹•	15	grant	होश्यारे				
į	14	₩.	हो				
	15	•	स्रो				
41	4	धरि	संदि				
13	15	<b>अस्ति</b>	सविष				
**	12	छचे	क्रम				
11	٧	<b>उपलब्ध</b>	311/196				
48	٦	विष	जिल् <b>व</b>				
*	*	<b>र</b> ने	1.4				
-	4	दुःमें स्थान	द्वाचे करी सदल				
•	•	प्रचे देवान	इ.चे करी देखान ठल				
	٦	<b>न्छ</b> ()	निस्को				
	15	इर्+उत्त	<b>इ</b> र्+वत्तर				
~	₹	हुनियमो	द <del>्विक</del> मो वृद्धिमो				
14	*	नदर	ener Carrie				
*	15	कर्मन रेज	न्यवरेष				
1	٦	MAC .	प्राप्त				
•	*	विस <del>िद्ध</del>	विसरित				
•	١	र्यमाचे छो	पंचाचेती पंजी				
44	**	विक्रोगो	विष्येजो				
*	4.4	(बोच)	( <b>a)</b> -a.)				
٠.	34	मतमा	प्रक्रिमा				
u	٦	रमस्यि	रविकारी				
*	.~	(रज्ञनिकः) वास्त्रं	(रबबीचरः)				
•	1	यास्य समितिय	पदार्श्व(				
	٠,	******	<del>-121 -</del>				

		NA/		
गर्स	***	455	धर	
15	34	(राज्य)	(दानम् )	
¥	•	et '	स्र	
	11	<b>₹</b> 1	<b>₹</b> 7	
	18	हरका	बहुमध्य	
	10	प	उरा	
*1	14		बर् (बन्) नेवनर्तु	
¥9	•	चुनो	चोरो ∼	
-	11	परक्त	प्रवर्ण	
	3.	मार्	भार्द	
×ŧ	*	पर्यामे	मूर्वामी	
	4	<b>स</b> न्	<b>ब</b> लुमी	
-	•	44	<b>ब</b> न्द	
	٦.	==	वारे	
w	1	रिवस्थि	मिम <b>ि</b>	
.,	33	सुकाव	मूक्षर	
	**	सुक्रम	म्बन	
**	4.1	सुनाम	ब्याव	
	44	चतुनी	च <u>त</u> ्रवी	
*1	•	<del>नद</del> र	<del>जेर</del> र	
**	4	<b>(</b> चर्म)	(वर्म)	
84	۹4		बिह्याई (झराकि)	
¥	•	(स्त)	(414)	
-	11	( <del>y-</del> 4)	( <del>=</del> 1)	
-	*	Real (	मानियो की	
*	44	(क्यरि)	(भिम्मिर्ग)	

		Mo.	
Ħ	#AD	भमुद्	<u>च्य</u>
*1		(अस्)	(47 ² )
-	33	( <del>19-4</del> )	(क्टिक्)
١.	33	मान् <u>य</u>	सावयो
~	14	स्रोगम् संय	शामनोग
	7.	रामुद्धि	चीचे दि
71	14	मेळक्ठा	मे <b>ळ</b> नत्य
A.A.	•	नद	नर्दि
~	34	निहरो	विक्रमी
*	15	(सधक)	(e <del>g=</del> :)
**	₹.	<b>व्यक्ति</b>	म्बंज्ञमने
~	4.4	-415	वार
44	*	(मस्त्रच) स्वच	(नस्पर्ध) <b>सर्च</b>
~	5	-71	#स्पो
**	13	<del>पूर</del> नो	पूर्वको
*	**	वस्स्य	~भाषस्यवं
.,	**	विस्समी	विस्तामो
44	3	शम्बक्रप्रंव	सम्बर् <b>ग्र</b> संब
-	33	अस्त्रीय	<del>पत्त्र</del> ेय
75	44	विपरित,	निपरीय
	١.	(****)	Appropriate Commercial
"	1	(842)	(ग्रन्द्र) (वर्म्()
-	1.	(धत्र्) मिल्लु	(अ.स्.) सेळ्लानुं
4.c	11	शरिष	भारेष
	74 94	कारण कामिस्करि	कारक फारिकारि
*	35	केटानी विकास	नैरकंति
~	• •	4000	4144

		٧١٢		
*	**		ţ.	
	•	***	arm; dreg	
•		Fee 4	(care	
		***	at-4	
		3	₹.	
	,	*4	i g	
5.9	1	4 ju -	*11*	
		-17-	معوامل من	
*	10	* 1		
	•	بدم	G ₄	
		1	}	
	•	adra, ea	shu _C es	
-	*1	Cir.	करेन	
		4-frage	er tarl	
ű	•	द्वर	F4	
-	*	44.4	-4	
-	•	44.4	44.4	
		* *	Sec.	
-	4.1	(N	54	
-	**	644	134	
10	•	र्दासरी	i crat	
	17	q*t#	efcal	
ι"	11	et Consti	MAIL Design	
•	**	કિર્મિ જિ	िक्त्र्ि धनद्	
	ü	सन्दो	करो इन्हो	
"	•	कन्तुः क्षेत्रः	448	
••	•	144	4.0	

R\$4				
पानु	संगी	गस्य	स्र	
4	11	जबु	नद	
.,	11		ओपु (गोत्) मक्तरमु	
•	1	निमरिक	विम <del>ति</del>	
*	3	मरक्यो	प्रस्वयो	
*1	٧	सुवि	मुर् <del>ष</del> ि	
**	11	समञ्ज	सन्त्रज्ञ	
-	**	( )	(ब् + स्)	
~5	*	मान्तरे	वावरे	
-	4.5	(शक्	(xx )	
A.	₹*	( पर	(पदय)	
44	35	मपुंच <b>कर्कि</b> म	मर्दुसक्तिग	
46	•	मगार	<b>अं</b> ध्यर	
4	13	कंतुम	चैत्र	
44	11	बोचु	etd.	
45	16	643	ন্তুদ্ৰ	
۷۲	14	नैक्छो	ने अस्त्री	
•	•	<del>जन्</del> यती 	<b>भवनी</b>	
33	34	माप होरबा	व्याप	
31	4	<b>दशस्य</b>	इप्रेम्सा (व. म.) मिरुद्र	
	*	। पुक्तिमधी	पुंजिलादी	
34	* 4	<del>दीर्वप</del> र	<del>र्धर्भक्</del>	
	11	397	वैन	
**	35	क्य	यनो सन्दो	
	35	<b>4</b> €	43	
31	•	( <b>° 6</b> €)	( BE).	

		We			
पानुं	सीदी	म्ह्यम	धर		
35	11	( 5=)	( <del>s</del> t)		
44	11	इंडिवर्ड	<b>ह</b> से ज्यादि		
30	4	्रित्यसम्	देशस		
٦	30	44	परे		
7 5	11	धुपी	ग्रुपी		
,,	31	লামগালা <b>ন</b>	ল <b>ান্</b> কৰি		
3.5	٩	(∦× <b>₽</b> ₹)	(日十五丈)		
	4	(व्य + दिख)	(भा+दिष्)		
	14	बोक्षिक्रमा	गोक्रिका		
,	4	<del>वि</del> च्य	Device		
	44	संबुद्ध	चंद्रस्य		
	33	(पा)	(वर्ष)		
	**	(समितिस्)	(संगर्धिम्()		
1 x	٧	धरमस्त	बरवश्स		
-	33	युव	पर्व		
7 7	18	नामक	424		
1 (	14	4	<del>=1</del>		
-	1	विविचित	समा <del>ध</del>		
1		दुरी <b>म</b> र	दुर्शम		
11	35	द्यीना	स्त्रीमा		
11	35	<b>ब</b> यो	इसो ।		
335	*	क्रीधि	<b>स्मिध्</b>		
118	15	(क्रमाध्ये)	(क्रामन्य)		
~	44	विकास	नि <del>करो</del>		
111	¥	भार्	सान्		
۳	44	मन्त्र द्वरती	<del>पार</del> श्वकारी		

	**(			
पर्स्	चीरी	महाद	स्रद	
111	30	कासिनो	<b>परि</b> च्ये	
714	•	गर्	गर्	
~	44	सम्बद्धा	<del>गर</del> ्गचो	
134	٩.	न्द्रसाय	<b>न्</b> साप्	
-	*	भएकभेड	<b>अरुव</b> मेड	
165	33		बादिमा <del>ं युन्</del> म अस्य स्यो बोदक.	
358	14	पापोना	पारम्बा	
-	*1	(पद्यकाशः)	(पाटगाका)	
354	**	ल्यमी	ल्यागी	
194	₹	स्वका	संबंध	
	31	म्पद	म्पर्द	
256	3.8	कोच	<b>ह्यम</b>	
11	11	रुपं	ते <del>न</del> ा	
~	11	à.	<b>b.</b> .	
15.0	•	–ग्रुन्ता	∽स <del>ुन्</del> तो	
164	1	मानो	भानी	
141	•	स्यक्ष	ो माझ्य माद्धा क्यो बोह्बे.	
141	44	मंजनेतुः	मे⊒नेन <mark>ु</mark>	
	4.0	(मस्)	(सच्)	
188	14	रोक्यु	रोक्शुं	
354	15	निमिलि भए	विमिन्तिभा <b>ए</b>	
34		पद्मान्त्र र	बदर्ग वृंशर क्यों के उसावी	
-		पद्योगर्ज्यम 🕽	अन्य वाहर कोङ्के.	
343	10	पद्योगुण्ड	पद्मीएक्स	

~श्रे विश्वसमी

ाप्तप्रकृष्ण कुल्ला च्याप्तिक्रम्

wur

		<b>W</b> R			
ᅋᅻ	wif:	<b>ज</b> शुद्	धर		
14	4	मानु	गम्बर्		
~	44	स्मग्रा	<del>श्</del> नमा		
175	1	नि पेइचरित	दिविद्वरित		
353	15	रुपान	बहा क्स्व		
368	15	काम + जाउँ	स्पर्भ-द		
34	14	सम्हाद-	urchil-		
1.5	15	(कामन्य)	(श्रामस्य)		
353	₹¥	(बसप्रीकृत)	(अस्पेरक)		
155	*	<b>गीनांडमें</b>	शीनगरने		
4.4	15	4 <u>5</u>	<b>43</b> -		
	•	इतामन्त्रो	<b>१</b> धा <b>रे</b> न्छो		
**	*	वेक्त्यो र	मे <del>एमा</del>		
		म्प~चो }	नमध्य		
31	*	इमेरक-रक	हासे उत्र-उद्य		
31	1	गारमा भगमा	वास्त्रप्रवामा		
	3.5	पश्चिमा	≽कियामा		
311	14	वर्षकाना	पर्कारत		
~	1	<b>'वंश्मान</b>	चेत्रमसम		
**	4.4	( <del>गम्द</del> )	(सम्बः)		
444	11	Pre	×let		
648	* 1	क्ल्यूच	यबद्धाः		
**	11	भूको	सूच		
		*1	11		
111	15	न्दिरियम्बि <del>र</del>	विमिश्चर्यचे ।		
215	14	सम्बद्ध	समित		
14	14	(पि+वीष्) धार वे	(सो. (मिनसीड्) <b>बे</b> ड करतो		

	RAS			
पानुं	भौदी	शहद	सद	
755	15	( क्षप् ) बोद करवा	(श्रप्) भाष देवो	
51	14	( विद्वय )	(-विचे)	
340		₽ŧ	Fer	
	11	सम्बद्धिलो	सम्मानिस्तो.	
444	**	(8)	( शम )	
*	3.3	भर	(朝1)	
44	3.5	(भा + श्वास)	( <b>३व + ६</b> ५न)	
360	19	(चनुनिस्ति)	( बदुवि गिर्दि )	
	₹	<b>क</b> शिस	ਵਾਸ਼ਿ	
-	24	(बसुदेखिंडी	( बसुदेवव्य	
396	4	(विदयः)	(त्रियत्)	
	11	(त्रिक्ता−	( श्रिचरम⊢	
11	1	(पष्टि)	(पिट)	
₹ <b>₩</b> ₹	1.	<b>ওছনিয়</b>	पविषय	
	15	प्रविश्व	पश्विम	
345	4	(सदर्ग)	(अध्य )	
308	14	(प्रवप्यवास)	(नवरबाक)	
	4.5	(इपष्ट)	(इस्पर)	
	44	( विख⊸सत्त)	(नियम्म	
-	4.0	(सार्दछ)	(लामिंग)	
444	٩.	( –िर्दम )	(⊸विदम)	
*	1	(स्टम्सरः)	( भद्रनस्त )	
	₹#	पूर <del>ण</del> ेह	प्रकाशकोतु	
544	**	भापनी	भागमा	
₹4	4		एवर्वार्व्	
3.3	14	पच	पंच	

	ess.			
परु	भीरी	मध्य	মূর	
३४३	c	दुर्ग)	<b>(ब</b> यन्ति)	
	15	(क्षिमचित्र)	(स्कृमिची)	
ξ¥¥	٧	NA.	राज	
120	14	(ছবিখন)	(वृष्टिक्सा)	
	15	(माबूदव)	(शानवनः)	
144	14	(EC:4:)	(হিন্দেন)	
	₹¥	केंद्रमबद केंद्र	रानां वर्तेनमा वर्तेमानां	
įv.	1	(गरीध्येत)	(मर्गाभ्येतः)	
	11	(म्बद्धसम्ब	(म <del>ाक्ष्यमामो</del> )	
\$4	٦	(साउनम्)	( <b>क्रान्<del>कस</del>म्</b> )	
	11	भरर	<del>श्रे</del> तर ,	
171	14	વુર્વ	पूर्व	
\$42	¥	(करधा)	(मिक्सम)	
-	44	(पिगम)	(पिकम्)	
34	11	<b>.£</b> ∩,	'कुपा'	
1 (	•	(प्रय)	(स्थाप)	
•	44	(As:)	( <b>ere</b> :)	
-	14	(पापुड्)	(भाइन्)	
~	1	मानको	माऊनो	
ş	1	रदक्ष	रहरमं	
*	3.8	'पार'	'प <del>ीर</del> '	
\$44	15	संख्या	<i>चंखा</i> न	
34	*	युक्ते	नरके	
	.3	<b>वाव</b>	नाव	
3.50	**	( <b>च</b> %)	( <b>1</b> 5:)	
161	44	<b>(4</b> 4)	( Table )	

#### ٩ 16 (इगः) ١ (VAC)

महार

9q }

(विश्वा)

¥

**अ**दियां

883

Ðζ

(अव्यः) (<del>41</del>1°)

ŋ<del>y i</del>

गुर्थ

अंद्र

(R≠4)

₹Ħ

मारिमा

भूराय

स्रभा

N

वा

(सक्रम्बर्ग )

प्रक्रमास्त्रतीया

(पङ्गापा

**है** मुख्या करका

**就(吗)** 

Ł

राष्ट्र (बन्ति) ** गुज्य } .

ਹੀਟੀ

ক্র

311

711

311

11

ŧ¢

7,

111

1 1

**₹** ₹

jak

34

311

٩. 12

मधर

33 ٠, ٩.

¥

٩

цич मर्था (महरम्मम्)

۹٩

١

विद 1 , पञ्चनकारनृतीका ١١

jw (पर्मापा 1 6 ١ **है**मस्बरस

11

44 96

305 14

35

31 525 ٩

ŧ

۱.

٩

345 -**4**11(4-पुर्व

à

iden men रम्भन **द**िसमिया

पश्चित

**द**र्मश्र**िया** 

-101-

दावर पूर्व बेटबाग बता • ক্ষ্যুস

**द**रियुषीया

**र**सिस**णी**या पश्चिम

पलु	<del>थे</del> री	<b>484</b>	W
343	15	44	पं <b>च</b>
443	ì	ऋता	मद्ये
344	12	सनोच्या	अयोष्य
3.5	*	( + 4)	( +1)
₹ 🕶	4	(स्यम्बह	(क्यव्यः)
	₹	( धरा + ६६)	(मर+इंस्)
266	¥	प <b>रेड</b>	प्रदेश
**	14	करका <b>य</b>	रज्ञान
252	•	भरतिस्य	मतीनि <b>त्</b> ष
858	٦.	(कान) कोच	(क्रोग) क्रोपः
354	44	बर्स्	कर्षु
.,	35	(दन्दि)	(चरिष्ड)
254	•	चिद्र (+ सिम्ब्र)	चिद्(+ [†] सिच्ह)
	3	भोर	मार्
375	2.3	बैंडमर	बर्डना
	33	( वाज )	(यात्रा)
444	**	(हवा)	(ऋ्षा)
,,	3.5	( की बू.)	( <b>al</b> ()
1 1	4	चून	बूर्ण
11	31	भी	च्यो
	3.4	200	MINE.

मास्

पत्र

पञ्चा बीरक

(प्रका+ध्) प्रमाक्यो

₹.

3 5 11 .

111 ٩ 11

714

ह्यो मापनु

(प्र+क्यक्) प्रमानः करनी पूजा पूजा पोक्क

WW

		66.	
पानु	क्यी	थश्च	व्य
234	1	(कंग्यव)	(सम्बर्)
***	1	•माबु.	<b>-माबु</b>
-	•	ब्द्यानी	भक्राभी
315	٧	(क्रिच)	(किंकु)
23	3	ग्ष्	49
	¥	(प्यारक्तन्)	(म्यक्सम् )
111	٠,	नरस€,	बरसाब,
	•	विर्धाणीय	जि <b>र्वा</b> चनीय
	11	#U	w/g
	**	विक्रमञ्जू.	विक्रमं
	**	वैष	<b>विवर्ष</b>
133	٧	क्ष्	विष
	**	(वि + घी <b>द्</b> )	( ft + eng )-
232	12	<b>सम</b> ्या	ग्रमश
	**	ত ক কৰ	श्रापन
	ŧ	उक्रवहु	बर्म एकुं
344	4	( + দুর)	( + <b>म्ब</b> ्र)
.,	14	मदीव	स्रोप
444	33	est.	ert .
350	33	(44)	(मिन्ह)
11	11	•चन्द (रेक्क्स)	•नम्द्र (वैध्यसम्)
111	3.0	(रेशनम) विकलिय	(मध्यम्म) जिनस्थि
२२५ २२	94 94	<b>97</b> 7	T.
441	14	9en	5. c.
3×3	• •	उ⊤। (विरक्षिक)	(मिरम्बित):
• • •		V. 1941-7	1

wa					
ΦĐ]	<del>र्शन्</del> टी	मद्वद	सद		
348		क्पि )	(इपरि)		
	15	(इक्सिन)	(स्कृतियो)		
jvv	٧	यत	Ug.		
140	10	(চুৰিক্টৰ)	(पृथिकेन)		
-	33	(मन्दर)	(मानदवः)		
1A	11	(इ.ग्रेंगः)	(ছিন <b>ৈ</b> ⊂)		
	48	वैद्यवर्ग केंद्र			
144	1	(नरीमोत)	(नहींभीक)		
-	11	(म्राच्यमञ्	(व्यवस्थानी)		
141	1	(बाउन्स्)	(धार्चनम्)		
	11	भरर	<b>भं</b> रर		
\$43	14	₹.	¥¥		
1 .	٧	(कासा)	(मिद्धाण)		
-	24	(पिच्य)	(किञ्)		
14		<b>'</b> &प'	'हपा'		
1.0	•	(L3)	(PI)		
-	4.8	(Xx:)	(सुरः)		
**	14	(नाइव )	(স্কুহ্)		
	•	स्यष्ठमो	मार्डमे		
1	3	रहमर्व	सर्वर्भ		
	ŧ	'पार'	'पौर'		
1.	75	र्वका	र्वसम्बद		
f 4	*	₹\$	भएके		
-		वाव (======	वाद A=D-1		
	**	( <del>परि</del> ) (च्चे	( <del>परि</del> :)		
341	**	<b>(</b> 97)	(U=E:)		

14	( <b>४</b> मः)
٩	(प्रारः)

मरर

Ŧ

न्यविमा

ন্তাৰ

मरश्रा

fic

(मद्भारम्बन् )

प**क्रमारमृती**या

(पङ्गभाषा

क्य

त्वे

–क्रमाव

क्ष्या प्रस्थ

इच्दर

इपिक्षिया

पंचरीया

वरिचनिया

हैमच्यर एक -

सन्दर्भ

W

धर

(******41:)

**(42) 25** 

(#F*)

723 ग्रह्म

क्षंत्रर

軒

मापिता

मुराय

सरभा

f\t

**M**T

भागा

पूर्व

<u>~कराक</u>~

केटमाएकना

वरियमीया

40.00

पांतरीका

**द**निमुलीका

(सक्तरम्बद् )

व**ब**स्याम्**नृतीया** 

(पङ्गमापा देशस्त्राकरम

(मिल्म )

₹,

सर (छान्न) **

पख पीरो

.

244

775

10

160

75

* 215

301

3.43

144

..

11F 1.

> ग्रम्स } ग्रम (विस्पत)

٩ 11 ۲

٠ .

٠

24

١. 11

3 4 300 140 ١.

۹\$

**

32 ٠.

ŧ

141

711

351 ٩

٩

3+

١, 33

15	पोस <b>ह</b> वा	वीसक्रम
•	<b>इ</b> स्तर	हेलन
33	महेनस्रद्धाः	महेन्दरी
- 1	भर	म्स
15	कारू	क्रक्त
96	भुकानुपन	मु <del>वासुपर्व</del>
1	पुष	পুশা
14	ŧ	६मा
1	ব্য	44

क्रमा

रोह

महत्त

पुत्राचान

विरदान

990-

पुन्धा

भएवकिया

(स्वरूप)

चुकारत े

अन्य

बूर्विकल

क्लेक्ट

φΩ.

महार

मध्यरप्

विज्

**A.** 

बोदी

16 151

٦ 355 ¥ . * 1 . . .

11

14 **1

14 443

11 .

** ***

1. ¥

39

14

33 411

पान

155 96

*11

*11 11

¥11 ٩

** 11

*** ١ WK

₽¥

सम्पुरए

agra.

नगै

बम्मो

बहित

तुशयान

নিকাৰ

**वच्चत**्

q**r**ez

स्वविषा

(त्यनत्य)

एकन

क्रम्

पूर्वितरण

वान्ति-

è

